New Beginning

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, द्वारा निर्धारित नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार

मास्टरमाइन्ड
हिन्दी

30+ Years of Educating Minds Distributing Success

विशेष आकर्षण :

- गद्य तथा काव्य खण्ड के प्रत्येक अध्याय में लेखक/कवि का परिचय संक्षेप में दिया गया है।
- गद्य तथा काव्य खण्ड के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में पाठ का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है।
- एकांकी खण्ड में एकांकीकारों व एकांकियों के विषय में जानकारी दी गई है।
- शिक्षा बोर्ड के दिशा-निर्देशों के अनुसार कूट-आधारित प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है।
- पाठ्यक्रम के अनुसार व्याकरण का समावेश किया गया है।
- पुस्तक में सभी पाठों के प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं।

लेखकगण :
रश्मि चौधरी
एम० ए० (हिन्दी), बी० एड०
पवन सक्सेना
एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत)

कक्षा 9

योग्यता आधारित प्रश्न सहित
Competency Based Education (CBE)

A New Beginning Programme for Students by MASTERMIND

गद्य-खण्ड

अतिलघु उत्तरीय व लघु उत्तरीय प्रश्न

हिन्दी गद्य के विकास पर आधारित प्रश्न

उत्तर–

1. गद्य का अर्थ है वह रचना जो छन्द के बन्धन से मुक्त हो।

2. हिन्दी-गद्य का प्रथम विकास सामान्य बोलचाल की भाषा में हुआ।

3. हिन्दी-गद्य का आविर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी के नव जागरण काल में हुआ।

4. हिन्दी-गद्य का प्राचीनतम रूप सामान्य बोलचाल की भाषा में मिलता है।

5. खड़ी बोली गद्य की प्रथम रचना 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' है। इस ग्रन्थ की रचना कवि गंग ने की है।

6. हिन्दी खड़ीबोली गद्य के प्रथम दर्शन अकबर के दरबारी कवि गंग द्वारा लिखित 'चंद छंद बरनन की महिमा' नामक ग्रन्थ और फिर 'कुतुबशतक' तथा स्वामी प्राणनाथ के ग्रन्थों में होते हैं, परन्तु उसका वास्तविक प्रादुर्भाव कई सौ वर्षों बाद उन्नीसवीं शताब्दी से ही मानना चाहिए, जब उसकी क्रमबद्ध परम्परा स्थापित हुई।

7. प्राचीन राजस्थानी गद्य हमें दसवीं शताब्दी के दान-पत्रों, पट्टे-परखानों, टीकाओं व अनुवाद-ग्रन्थों में देखने को मिलता है।

8. ब्रजभाषा-गद्य में दो प्रसिद्ध लेखकों के नाम इस प्रकार हैं1. गोस्वामी विट्ठलनाथ, 2. गोकुलनाथ जी।

9. ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात संवत् 1400 (सन् 1343 ई०) के आस-पास हुआ।

10. उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में हिन्दी गद्य के निर्माण में योगदान देने वाले दो राजाओं के नाम इस प्रकार हैं1. राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द', 2. राजा लक्ष्मण सिंह।

11. खड़ीबोली गद्य (आधुनिक गद्य) के विकास को काल-क्रमानुसार निम्न भागों में बाँटा जा सकता है1. भारतेन्दु युग, 2. द्विवेदी युग, 3. छायावादी युग (शुक्ल युग), 4. छायावादोत्तर युग (शुक्लोत्तर युग)।

12. खड़ी बोली गद्य के प्रथम चार उन्नायकों के नाम एवं उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं—मुंशी सदासुखलाल 'सुखसागर',इंशा अल्ला खाँ 'रानी केतकी की कहानी', लल्लूलाल 'प्रेम सागर' व सदल मिश्र 'नासिकतोपाख्यान'।

13. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इंशा की भाषा को रंगीन और चुलबुली कहा है।

14. खड़ीबोली गद्य के प्रथम दर्शन कवि गंग के 'चन्द छन्द बरनन की महिमा' नामक ग्रन्थ में होते हैं।

15. राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' की रचनाओं में अरबी-फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है, जबकि राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा-शैली में संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रधानता है।

16. ईसाई धर्म-प्रचारकों (मिशनरियों) का प्रधान उद्देश्य अपने धर्म का प्रचार करना था और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने प्रेस की स्थापना की। उन्होंने हिन्दी खड़ीबोली गद्य में

'बाइबिल' के अनेक अनुवाद प्रकाशित किए। स्कूलों में हिन्दी माध्यम से पढ़ाने के लिए अनेक पाठय पुस्तकें तैयार की तथा भारतीय पुराणों आदि को गद्य में लिखवाकर छपवाया। इस प्रकार उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दी गद्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

17. हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने वाले तीन लेखकों के नाम इस प्रकार हैं1. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, 2. आचार्य रामचन्द्र शुल्क, 3. डॉ० रामकुमार वर्मा।

18. सदासुख लाल—सुखसागर तथा इंशाअल्ला खाँ—रानी केतकी की कहानी।

19. 'भाषा-योग वशिष्ठ' 'पूर्व भारतेन्दु' (13वीं शताब्दी से 1868 ई० तक) की रचना है।

20. खड़ीबोली गद्य के विकास में योगदान करने वाले प्रारम्भिक मुख्य दो लेखकों के नाम हैं1. सदल मिश्र, 2. इंशा अल्ला खाँ।

21. हिन्दी गद्य का वास्तविक विकास भारतेन्दु युग (सन् 1868 ई०) से आरम्भ हुआ।

22. आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने उपदेशों का प्रचार हिन्दी भाषा में किया तथा अपने प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना भी हिन्दी भाषा में ही की। वेदों के भाष्य भी उन्होंने हिन्दी भाषा में ही लिखे। इसके अतिरिक्त उन्होंने आर्य समाज के अनुयायियों को हिन्दी भाषा का प्रयोग करने की शिक्षा दी।

23. भारतेन्दु युग का काल 1868 ई०-1900 ई० निर्धारित किया गया है।

24. भारतेन्दु युग में उपन्यास, नाटक, निबन्ध, कहानी आदि गद्य-विधाओं का विकास हुआ।

25. भारतेन्दु युग की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं—1. सामान्य बोलचाल की भाषा के शब्दों का प्रयोग, 2. गद्य की नवीन शैलियों का विकास।

26. भारतेन्दु युग की प्रमुख पत्रिका का नाम कविवचन सुधा था।

27. भारतेन्दु युग की दो रचनाओं के नाम हैं1. 'कथा-कुसुम-कलिका', 2. 'हास्य-रतन'।

28. भारतेन्दु युग के दो गद्य-लेखकों तथा उनकी एक-एक रचना निम्नलिखित हैं–1. बालकृष्ण भट्ट—नूतन ब्रह्मचारी। 2. प्रतापनारायण मिश्र–हठी हम्मीर।

29. भारतेन्दु युग में न केवल नई विधाओं का सृजन किया गया बल्कि साहित्य की विषय-वस्तु में भी नयापन लाया गया। इस प्रकार भारत में नवजागरण हुआ। इससे पहले का साहित्य दुनियावी जरूरतों से बिल्कुल कटा हुआ था। साहित्य का पूरा माहौल प्रेम, भक्ति और अध्यात्म का था। इसे सफल प्रयासों से बदला गया। हिन्दी साहित्य को देश की सामाजिक संस्कृति की खूबियों के साथ-साथ पश्चिम की भौतिक और वैज्ञानिक सोच से लैस करने के भरसक प्रयत्न किए गए।

30. द्विवेदी-युग के लगभग सभी कवियों की रचनाएँ देशभक्ति एवं राष्ट्रीय भावना से युक्त थीं, जो स्वाभाविक रूप से उस युग की राजनीतिक चेतना एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भावनाओं का परिणाम था। उनकी कविताओं में अंग्रेजों के प्रति आक्रोश एवं भारतीयों को आजादी के लिए प्रेरित करने वाला क्रान्तिकारी स्वर था।

31. किन्हीं दो छायावादी लेखकों के नाम तथा उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं1. वियोगी हरि विश्वधर्म, छत्रसाल की ग्रन्थावली, गांधी जी का आदर्श, साहित्य विहार आदि। 2. राय कृष्णदास अनादया, आँखों की थाह, सुधांशु, भारत की चित्रकला आदि।

32. 1990 ई० से 1922 ई० तक की कालावधि को द्विवेदी-युग के नाम से जाना जाता है।

33. द्विवेदी-युग में हिन्दी-साहित्य का प्रचार और सेवा करने वाली दो संस्थाओं के नाम इस प्रकार हैं—1. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 2. गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद।

34. द्विवेदी युग के हिन्दी उन्नायकों का नाम ओर उसकी दो रचनाएँ इस प्रकार हैंविशवम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' 'रक्षाबन्धन', 'प्रेम प्रतिज्ञा।'

35. द्विवेदी-युग के दो महत्त्वपूर्ण लेखकों के नाम हैं—आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, अध्यापक पूर्णसिंह।

36. द्विवेदी युग तथा शुक्ल युग दोनों में कार्य करने वाले तीन लेखक हैं1. पं० रामचन्द्र शुक्ल, 2. डॉ० श्यामसुन्दर दास, 3. पं० पद्मसिंह शर्मा।

37. द्विवेदी युग के तीन प्रसिद्ध साहित्य के इतिहास के लेखकों के नाम इस प्रकार हैं—पद्मसिंह शर्मा, श्यामसुन्दर दास व रामचन्द्र शुक्ल।

38. द्विवेदी युग की प्रसिद्ध पत्रिका का नाम 'सरस्वती' है।

39. नागरी प्रचारिणी सभा की पत्रिका का नाम हैं 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका।'

40. भारतेन्दु युग से पूर्व के चार लेखकों के नाम निम्नलिखित हैं—1. मुंशी सदासुखलाल, 2. मुंशी इंशाअल्ला खाँ, 3. पं० लल्लूलाल, 4. सदल मिश्र।

निबन्ध विधा पर आधारित प्रश्न

1. 'निबन्ध' उस गद्य-विधा को कहते हैं, जो कलात्मक नियमों के बंधन से मुक्त हो। इसमें लेखक स्वच्छन्दतापूर्वक अपने विचारों तथा भावों को प्रकट करता है।

2. निबन्ध का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से माना जाता है।

3. निबन्ध के विषय और शैली के आधार पर प्रमुख भेद (प्रकार) निम्नलिखित हैं—1. विचारात्मक निबन्ध, 2. भावात्मक निबन्ध, 3. वर्णनात्मक निबन्ध, 4. विवरणात्मक निबन्ध, 5. मनोवैज्ञानिक निबन्ध।

4. विचारात्मक निबन्ध में लेखक अपने चिन्तन और मनन के फलस्वरूप उत्पन्न विचारों को प्रस्तुत करता है, जबकि वर्णनात्मक निबन्ध में किसी घटना, दृश्य अथवा वस्तु का विस्तार से वर्णन किया जाता है।

5. विचारात्मक निबन्ध में बुद्धितत्त्व एवं तर्क की प्रधानता होती है, किन्तु भावात्मक निबन्ध में बुद्धितत्त्व गौण तथा भावतत्त्व प्रमुख होता है।

6. भावात्मक निबन्धों की दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. भावात्मक निबन्धों की भाषा-शैली कवित्वपूर्ण होती है। इसका लक्ष्य पाठक की बुद्धि की अपेक्षा उसके हृदय को प्रभावित करना होता है।
2. इसकी भाषा सरल, ललित व मधुर होती है।

7. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के एक निबन्ध का नाम है—हिन्दी भाषा।

8. भारतेन्दु युग के दो प्रमुख निबन्धकारों के नाम हैं—1. बालकृष्ण भट्ट, 2. प्रतापनारायण मिश्र।

9. बालकृष्ण भट्ट के दो निबन्धों के नाम इस प्रकार हैं—1. आँसू, 2. बातचीत।

10. प्रताप नारायण मिश्र के दो प्रमुख निबन्धों के नाम इस प्रकार हैं—1. प्रताप पीयूष, 2. निबन्ध नवनीत।

11. द्विवेदी युग के दो प्रमुख निबन्धकार हैं—1. महावीरप्रसाद द्विवेदी, 2. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'।

12. महावीर प्रसाद द्विवेदी के एक निबन्ध का नाम इस प्रकार है—कवि कर्तव्य।

13. अध्यापक पूर्णसिंह 'द्विवेदी युग' के निबन्धकार हैं।

14. हजारी प्रसाद द्विवेदी के एक निबन्ध का नाम इस प्रकार है—अशोक के फूल।

15. धर्मवीर भारती द्वारा लिखित एक निबन्ध का नाम इस प्रकार है—ठेले पर हिमालय।

16. 'लज्जा और ग्लानि' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का निबन्ध है।

कहानी विद्या पर आधारित प्रश्न

1. 'कहानी' वह साहित्यिक गद्य-विद्या है, जिसमें जीवन के किसी एक पक्ष का कल्पना मिश्रित, मार्मिक एवं रोचक चित्रण होता है।

2. कहानी के तत्त्व हैं1. कथावस्तु, 2. चरित्र-चित्रण, 3. कथोपकथन, 4. भाषा-शैली, 5. देश-काल एवं वातावरण, 6. उद्देश्य।

3. प्रारम्भ में कहानी का स्वरूप आध्यात्मिक शैली में था।

4. कहानी-कला की दृष्टि से किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' को हिन्दी की पहली मौलिक कहानी माना जाता है।

5. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक का नाम इंशाअल्ला खाँ है।

6. आधुनिक कहानी लिखने का उद्देश्य मानव-जीवन के भोगे हुए सत्य की यथार्थ अभिव्यक्ति का चित्रण करना है।

7. भारतेन्दु युग के दो कहानीकारों के नाम हैं1. अम्बिकादत्त व्यास, 2. चण्डीप्रसाद सिंह। इनकी रचनाओं के नाम क्रमश: 'कथा-कुसुम-कलिका' तथा 'हास्य-रतन' हैं।

8. द्विवेदी युग के दो प्रतिनिधि कहानीकारों के नाम हैं—1. राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह, 2. विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'।

9. प्रेमचन्द के समकालीन दो कहानीकारों के नाम हैं—1. जयशंकर प्रसाद, 2. सुदर्शन।

10. प्रेमचन्द की दो प्रमुख कहानियों के नाम हैं—1. पूस की रात, 2. प्रेमांजलि।

11. हिन्दी के दो प्रसिद्ध कहानीकारों के नाम इस प्रकार हैं—1. मुंशी प्रेमचन्द, 2. जयशंकर प्रसाद।

12. जयशंकर प्रसाद की दो कहानियों के नाम इस प्रकार हैं—1. छोटा जादूगर, 2. सिकन्दर की शपथ।

13. शिवानी आधुनिक काल की कहानीकार हैं।

नाटक विधा पर आधारित प्रश्न

1. 'नाटक' साहित्य की वह दृश्य विधा है; जिसमें अभिनय, नृत्य, संवाद, आकृति वेशभूषा और संगीत के माध्यम से अपूर्व आनन्द की अनुभूति की जाती है।

2. भारतीय आचार्यों के अनुसार नाटक के पाँच तत्त्व बताए गए हैं—1. कथावस्तु, 2. नायक/नायिका, 3. रस, 4. अभिनय, 5. वृत्ति।।

3. पाश्चात्य दृष्टि के अनुसार नाटक के निम्नलिखित प्रमुख छह तत्त्व बताए गए हैं—1. कथावस्तु, 2. चरित्र-चित्रण, 3. कथोपकथन, 4. देश-काल, 5. भाषा-शैली, 6. उद्देश्य।

4. हिन्दी-नाटक के विकास को निम्नलिखित पाँच भागों में विभक्त किया जा सकता है—
   1. पूर्व-भारतेन्दु काल — 1643 ई० से 1866 ई०
   2. भारतेन्दुकाल — 1867 ई० से 1904 ई०
   3. उत्तर-भारतेन्दु काल — 1905 ई० से 1915 ई०
   4. प्रसाद काल — 1915 ई० से 1920 ई०
   5. आधुनिक काल — 1920 ई० से अब तक।

5. हिन्दी के प्रथम नाटक का नाम 'नहुष' है, जिसकी रचना गोपालचन्द्र गिरिधरदास द्वारा की गई।

6. हिन्दी के नाटककारों में नाटक सम्राट 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' को कहा जाता है।

7. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के दो नाटकों के नाम हैं—भारत-दुर्दशा, चन्द्रावली।

8. भारतेन्दु के नाटक राष्ट्र-प्रेम,धर्म, राजनीति, समाज-सुधार आदि विषयों पर आधारित हैं।

9. भारतेन्दु युग के दो प्रमुख नाटककार हैं—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लाला श्रीनिवासदास।

10. द्विवेदी युग के दो प्रसिद्ध नाटककारों के नाम और उनकी एक-एक रचना निम्नलिखित हैं—

नाटककार		**नाटक**
1. लक्ष्मीप्रसाद	—	उर्वशी
2. शिवनन्दन सहाय	—	सुदामा।

11. 'अंधायुग' नाटक धर्मवीर भारती ने लिखा।

12. जयशंकर प्रसाद के दो नाटकों के नाम हैं—राज्यश्री, अजातशत्रु।

13. जयशंकर प्रसाद के दो ऐतिहासिक नाटकों के नाम इस प्रकार हैं—1. चन्द्रगुप्त, 2. स्कन्दगुप्त।

उपन्यास विधा पर आधारित प्रश्न

1. 'उपन्यास' शब्द संस्कृत के 'उपन्यस्त' से बना है जिसका अर्थ है, 'सामने रखना।' इस प्रकार मानव-जीवन, समाज या इतिहास के यथार्थ सत्य को संवाद एवं दृश्यात्मक घटनाक्रमों पर आधारित चित्रण के माध्यम से पाठकों के सामने रखने अथवा प्रस्तुत करने वाली विधा ही उपन्यास कहलाती है।

2. उपन्यास के छह तत्त्व हैं—1. कथावस्तु, 2. चरित्र-चित्रण, 3. कथोपकथन या संवाद, 4. भाषा-शैली, 5. देश-काल तथा वातावरण, 6. उद्देश्य।

3. हिन्दी के प्रारम्भिक उपन्यास सुधारवाद मनोरंजनपरक, ऐतिहासिक विषय पर आधारित होते थे।

4. लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा-गुरु' हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास माना जाता है।

5. गौरीदत्त द्वारा लिखित 'देवरानी-जेठानी की कहानी' हिन्दी का प्रथम सामाजिक उपन्यास माना जाता है।

6. भारतेन्दु युग के दो उपन्यासकारों और उनके उपन्यासों के नाम निम्नवत् हैं—

उपन्यासकार	**उपन्यास**

1. लाला श्रीनिवासदास — परीक्षा-गुरु
2. बालकृष्ण भट्ट — नूतन ब्रह्मचारी

7. द्विवेदी युग के तीन उपन्यासकार हैं—1. देवकीनन्दन खत्री, 2. किशोरीलाल गोस्वामी, 3. प्रेमचन्द।

8. द्विवेदी युग में प्राय: तिलस्मी, जासूसी, सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, चरित्रप्रधान तथा भावप्रधान उपन्यास लिखे गए।

9. देवकीनन्दन खत्री के एक तिलिस्मी उपन्यास का नाम है—चन्द्रकान्ता। देवकीनन्दन खत्री द्विवेदी युग के उपन्यासकार थे।

10. प्रेमचन्द के उपन्यास ग्रामीण जीवन, नारी-उद्धार, समाज-सुधार, किसान एवं मजदूरों की दीन-हीन दशा और राष्ट्रीय चेतना आदि विषयों पर आधारित हैं।

11. प्रेमचन्द के तीन उपन्यासों के नाम हैं—1. गोदान, 2. प्रेमाश्रम, 3. निर्मला।

12. फणीश्वरनाथ रेणु ने सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास लिखें।

13. आधुनिक युग के चार उपन्यासकारों के नाम इस प्रकार हैं—1. श्रीनिवास दास, 2. बालकृष्ण भट्ट, 3. राधाकृष्ण दास, 4. राधाचरण गोस्वामी।

14. जयशंकर प्रसाद के दो उपन्यासों के नाम इस प्रकार हैं—1. तितली, 2. कंकाल।

एकांकी विधा पर आधारित प्रश्न

1. एक अंक में समाप्त हो जाने वाले नाटक को 'एकांकी' कहते हैं।

2. हिन्दी में एकांकी का विकास छायावाद युग से माना जाता है।

3. एकांकी के तत्त्व हैं—1. कथावस्तु, 2. पात्र एवं चरित्र-चित्रण, 3. संवाद, 4. भाषा-शैली, 5. देश-काल तथा वातावरण, 6. उद्देश्य।

4. विषय-वस्तु की दृष्टि से एकांकी के भेद हैं—1. पौराणिक एकांकी, 2. राजनैतिक एकांकी, 3. सांस्कृतिक एकांकी, 4. ऐतिहासिक एकांकी, 5. सामाजिक एकांकी, 6. चारित्रिक एकांकी, 7. तथ्यपरक एकांकी।

5. भारतेन्दु युग के दो एकांकीकारों के नाम इस प्रकार हैं—1. राधाचरण गोस्वामी, 2. पं० बालकृष्ण भट्ट।

6. द्विवेदी युग के दो एकांकीकारों के नाम इस प्रकार हैं—1. सुदर्शन, 2. ब्रजलाल शास्त्री।

7. हिन्दी के प्रथम एकांकी का नाम—'एक घूँट' है।

गद्य की अन्य विधाओं पर आधारित प्रश्न

1. हिन्दी गद्य की विभिन्न आधुनिक विधाओं में से दो के नाम हैं—1. आत्मकथा, 2. यात्रावृत्त।

2. रेखाचित्र की दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. रेखाचित्र में शब्दों की कलात्मक रेखाओं द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना के बाह्य तथा आंतरिक स्वरूप का शब्द-चित्र इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि पाठक के हृदय में उसका सजीव तथा यथार्थ चित्र अंकित हो जाए।
2. रेखाचित्र में चित्रकला तथा साहित्य का सुन्दर समन्वय दिखाई पड़ता है।

3. हिन्दी के दो रेखाचित्रकारों के नाम इस प्रकार हैं—1. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, 2. रामवृक्ष बेनीपुरी।
4. हिन्दी के दो संस्मरण लेखकों के नाम इस प्रकार हैं—1. राहुल सांकृत्यायन, 2. श्री नारायण चतुर्वेदी।
5. संस्मरण और रेखाचित्र एक-दूसरे से मिलती-जुलती विधाएँ हैं। फिर भी 'रेखाचित्र' में चित्र अधूरा या खण्डित हो सकता है, जबकि 'संस्करण' में उसे पूर्ण बनाकर ही रही प्रस्तुत किया जाता है।
6. जीवनी साहित्य को समृद्ध करने वाले किन्हीं दो प्रसिद्ध लेखकों के नाम इस प्रकार हैं— 1. गुलाबराय 2. विष्णु प्रभाकर।
7. एक अच्छी जीवनी की दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं—1. प्रामाणिक जानकारी, 2. रंजकता।
8. बाबू गुलाबराय द्विवेदी युग के जीवनी लेखक थे।
9. जीवनी में किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का जीवन-चरित्र प्रस्तुत किया जाता है तथा इसे किसी भी व्यक्ति द्वारा लिखा जा सकता है; किन्तु आत्मकथा लेखक के स्वयं के जीवन पर आधारित होती है तथा यह उस लेखक द्वारा स्वयं लिखी गई रचना होती है।
10. हिन्दी की प्रेरणाप्रद आत्मकथा का नाम हैं—'कुछ आपबीती तो कुछ जगबीती।'
11. हिन्दी के दो आत्मकथा लेखकों के नाम तथा उनकी एक-एक रचना का नाम इस प्रकार है—
    1. राहुल सांकृत्यायन—'मेरी जीवन यात्रा।'
    2. डॉ० हरिवंशराय बच्चन—'क्या भूलूँ क्या याद करूँ।'
12. द्विवेदी-युग के दो प्रमुख आत्मकथा लेखकों तथा उनकी एक-एक रचना निम्नलिखित हैं—
    1. बाबू गुलाबराय—मेरी असफलताएँ।
    2. डॉ० श्यामसुन्दरदास—मेरी कहानी।
13. एक यात्रा लेखक का नाम तथा उसकी एक रचना का नाम इस प्रकार है—राहुल सांकृत्यायन—'मेरी तिब्बत यात्रा।'
14. हिन्दी के सर्वप्रथम यात्रावृत्त लेखक एवं उसकी एक रचना का नाम इस प्रकार है—भारतेन्दु—'सरयू पार की यात्रा।'
15. जिस गद्य-रचना में किसी घटना का आँखों देखा विवरण प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया हो, उसे 'रिपोर्ताज' कहते हैं।
16. प्रमुख दो रिपोर्ताज लेखकों के नाम इस प्रकार हैं—1. भदन्त कौशल्यायन, 2. विष्णु प्रभाकर।
17. गद्य-काव्य (गद्य-गीत) गद्य तथा काव्य के बीच की विधा है। इसमें गद्य के माध्यम से किसी भावपूर्ण विषय की काव्यात्मक अभिव्यक्ति होती है।
18. गद्य-काव्य की दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं—
    1. इसमें लेखक अपने हृदय की संवेदना की अभिव्यक्ति इस प्रकार करता है कि पाठक उसे पढ़कर रसमय हो जाता है।
    2. इसका ध्येय प्राय: निश्चित होता है तथा इसमें केवल एक ही केन्द्रीय भाव की प्रधानता होती है।

19. डायरी विधा की दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. डायरी का आकार कुछ पंक्तियों तक भी सीमित हो सकता है और कई पृष्ठों तक विस्तृत भी।
2. यह स्वतन्त्र रूप में लिखी जा सकती है और कहानी, उपन्यास या यात्रावृत्त के अंग के रूप में भी।

20. हिन्दी के दो डायरी लेखकों व उनकी एक-एक रचना का नाम इस प्रकार हैं

1. रनदवे शास्त्री	—	जेल डायरी
2. धीरेन्द्र वर्मा	—	मेरी कॉलेज डायरी

21. इंटरव्यू या भेंटवार्ता के दो लेखकों के नाम इस प्रकार हैं—1. पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' 2. रणवीर रांणा।

22. हिन्दी के दो व्यंग्यकारों के नाम इस प्रकार हैं—1. हरिशंकर परसाई, 2. श्रीलाल शुक्ल।

पत्र-पत्रिकाओं से सम्बन्धित प्रश्न

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रकाशित दो पत्रिकाओं के नाम इस प्रकार हैं—1. कविचन सुधा, 2. हरिश्चन्द्र पत्रिका।

2. भारतेन्दु युग की दो पत्रिकाओं और उनके सम्पादकों के नाम निम्नलिखित हैं—

पत्रिका का नाम		**सम्पादक**
1. हिन्दी प्रदीप	—	बालकृष्ण भट्ट
2. ब्राह्मण	—	प्रतापनारायण मिश्र

3. हिन्दी साहित्य के विकास में योगदान करने वाली दो पत्रिकाओं के नाम हैं—1. सरस्वती—आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, 2. हरिश्चन्द्र मैगजीन—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

4. 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका सम्पादक थे—बालकृष्ण भट्ट थे।

5. प्रताप नारायण मिश्र द्वारा सम्पादित दो पत्रिकाओं के नाम हैं—1. ब्राह्मण, 2. हिन्दुस्तान।

6. 'आनन्द कादम्बिनी' पत्रिका के सम्पादक बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' थे।

7. 'सरस्वती' पत्रिका के प्रथम सम्पादक आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी थे।

8. द्विवेदी युग की किन्हीं दो पत्रिकाओं के नाम हैं—1. सरस्वती, 2. इन्दु।

9. 'काशीनागरी प्रचारिणी' पत्रिका के सम्पादक का नाम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल था।

10. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से भाषा के परिमार्जन का अभूतपूर्व कार्य किया। इसके अतिरिक्त इस पत्रिका के माध्यम से नए लेखकों को मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन भी प्राप्त हुआ।

11. 'हंस' पत्रिका के संस्थापक का नाम प्रेमचन्द था।

सुमेलित प्रश्न

निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—

उत्तर—

1.	(क) गोकुलनाथ	—	**दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता**
	(ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी	—	**हंस का नीर क्षीर विवेक**

	(ग) अध्यापक पूर्णसिंह	—	**मजदूरी और प्रेम**
	(घ) श्यामसुन्दर दास	—	**हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास**
2.	(क) मथुरानाथ शुक्ल	—	**पंचांग दर्शन**
	(ख) बालमुकुन्द गुप्त	—	**चिट्ठे और खत**
	(ग) रामचन्द्र शुक्ल	—	**हिन्दी साहित्य का इतिहास**
	(घ) वृन्दावनलाल वर्मा	—	**मृगनयनी**
3.	(क) रामचन्द्र शुक्ल	—	**चिन्तामणि**
	(ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	—	**सत्य हरिश्चन्द्र**
	(ग) नाभादास	—	**अष्टायाम**
	(घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी	—	**रस रंजन**
4.	(क) बालमुकुंद गुप्त	—	**शिवशम्भू के चिट्ठे**
	(ख) वैष्णवदास	—	**भक्तमाल प्रसंग**
	(ग) अम्बिका प्रसाद	—	**इन्दु**
	(घ) अध्यापक पूर्णसिंह	—	**सच्ची वीरता**
5.	(क) कवि गंग	—	**चंद छंद बरनन की महिमा**
	(ख) प्रेमचन्द	—	**गोदान**
	(ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	—	**अंधेर नगरी**
	(घ) जयशंकर प्रसाद	—	**पुरस्कार**
6.	(क) वैकुंठमणि शुक्ला	—	**वैशाख महात्म्य**
	(ख) प्रतापनारायण मिश्र	—	**ब्राह्मण**
	(ग) प्रेमचन्द	—	**कुछ विचार**
	(घ) जयशंकर प्रसाद	—	**तितली**
7.	(क) बनारसी दास	—	**बनारसी विलास**
	(ख) डॉ० गुलाबराय	—	**नवरस**
	(ग) बालकृष्ण भट्ट	—	**विश्वास**
	(घ) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	—	**कविवचन सुधा**
8.	(क) स्वामी दयानन्द	—	**सत्यार्थ प्रकाश**
	(ख) देवकीनन्दन खत्री	—	**चन्द्रकान्ता**
	(ग) गोकुलनाथ	—	**चौरासी वैष्णवन की वार्ता**
	(घ) बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'	—	**आनन्द कादम्बिनी**
9.	(क) राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द'	—	**राजा भोज का सपना**
	(ख) इंशाअल्ला खाँ	—	**रानी केतकी की कहानी**

	(ग)	श्यामसुन्दर दास	—	**हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास**
	(घ)	प्रतापनारायण मिश्र	—	**हठी हम्मीर**
10.	(क)	गोपालचन्द्र गिरधरदास	—	**नहुष**
	(ख)	बालकृष्ण भट्ट	—	**हिन्दी-प्रदीप**
	(ग)	गुलाबराय	—	**ठलुआ क्लब**
	(घ)	वियोगी हरि	—	**विश्व धर्म**
11.	(क)	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	—	**मदालसा**
	(ख)	चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'	—	**कछुआ धर्म**
	(ग)	अम्बिका व्यास	—	**गौ संकट**
	(घ)	अध्यापक पूर्णसिंह	—	**आचरण की सभ्यता**
12.	(क)	दौलतराम	—	**पद्मपुराण**
	(ख)	श्रीनिवास दास	—	**परीक्षा-गुरु**
	(ग)	वियोगी हरि	—	**वीर हरदौल**
	(घ)	बालकृष्ण भट्ट	—	**आँसू**
13.	(क)	प्रेमचन्द	—	**हंस**
	(ख)	कृष्णाकान्त मालवीय	—	**मर्यादा**
	(ग)	रामचन्द्र शुक्ल	—	**नागरी प्रचारिणी पत्रिका**
	(घ)	डॉ० गुलाबराय	—	**साहित्य-सन्देश**
14.	(क)	कन्हैयालाल नन्दन	—	**अमृता शेरगिल**
	(ख)	गोपाल शर्मा शास्त्री	—	**दयानन्द दिग्विजय**
	(ग)	आचार्य चतुरसेन	—	**पहली सलामी**
	(घ)	अमृतराय	—	**कलम का सिपाही**
15.	(क)	गांधी जी	—	**मेरी आत्मकथा**
	(ख)	डॉ० हरिवंशराय बच्चन	—	**बसेरे से दूर**
	(ग)	राहुल सांकृत्यायन	—	**मेरी जीवन यात्रा**
	(घ)	रामविलास शुक्ल	—	**मैं क्रान्तिकारी कैसे बना**

बहुविकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तरमाला

1. (क) 2. (क) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख) 6. (ग) 7. (घ) 8. (ग) 9. (क) 10. (क) 11. (ख) 12. (घ) 13. (क) 14. (क) 15. (क) 16. (ग) 17. (ग) 18. (घ) 19. (ग) 20. (ग) 21. (ख) 22. (क) 23. (ग) 24. (ख) 25. (क) 26. (ख)

1 प्रतापनारायण मिश्र

(जन्म : सन् 1856 ई० - मृत्यु : सन् 1894 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) 2. (घ) 3. (ग) 4. (क) 5. (ग) 6. (ग) 7. (घ) 8. (ख) 9. (घ) 10. (ख) 11. (क) 12. (ख) 13. (घ) 14. (क) 15. (ख) 16. (ग) 17. (घ) 18. (ग)

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए–**

उत्तर–

(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि ये कौन-से आधुनिक हिंदी केप्रमुख लेखक और हिंदी खड़ी बोली व भारतेंदु युग के उन्नायक हैं? इनका संक्षप्ति परिचय दीजिए—**

उत्तर–यह चित्र प्रतापनाराण मिश्र का है।

जन्म 1856

मृत्यु 1894

जन्म स्थान उन्नाव, (उ० प्र०)

प्रमुख रचनाएँ– हठी हम्मीर, प्रताप समीक्षा, समझदार की मौत, भारत दुर्दशा, मन की लहर आदि।

कूट आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित में से मिश्र जी किसे व्यतित्व से अधिक प्रभावित थे?

उत्तर– (ख) केवल (ii)

2. नीति रत्नावली किस लेखक की रचना हैं?

उत्तर– केवल (iv)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. प्रताप नारायण मिश्र का जन्म सन्_____________ में हुआ था।

उत्तर– (ख) 1856 ई०

2. मिश्र जी ने अपने साहित्य में _____________ की भाषा का प्रयोग किया है।

उत्तर– (ग) साधारण बोलचाल

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की**

पहचान कीजिए–

उत्तर– (क) (ii) (i) (iv) (iii)

सत्य/असत्य कथन

- **जीवन से जुड़ी कौन-सी बातें कभी किसी को नहीं बतानी चाहिए? कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (ख) (ii) व (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर– **1.** (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

2. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. प्रतापनारायण मिश्र के समकालीन निबन्धकारों इस प्रकार हैं—भारतेन्दु हरिशचन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त,राधाचरण गोस्वामी, अम्बिकादत्त व्यास आदि।
इनमें से दो की एक-एक रचना इस प्रकार हैं—

1. बालकृष्ण भट्ट — **राजा और प्रजा**
2. बालमुकुन्द— **चिट्ठे और खत**

2. प्रतापनारायण मिश्र आजीवन 'ब्राह्मण' और 'हिन्दुस्तान' पत्रों का सम्पादन करते रहे।

3. मिश्र जी ने निबन्ध के अतिरिक्त नाटक, संपादन एवं काव्य विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. मिश्र जी का जन्म उ०प्र० के उन्नाव जिले के बैजे नामक गाँव में सन् 1856 ई० में हुआ था।

2. **जीवन-परिचय–**प्रतापनारायण मिश्र का जन्म सन् 1856 ई० में उन्नाव जिले के बैजे नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता पं० संकटाप्रसाद एक विख्यात ज्योतिषी थे और इसी विद्या के माध्यम से वे उन्नाव से कानपुर में आकर बसे थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि उनका पुत्र भी अपने पैतृक व्यवसाय को अपनाए, किन्तु मनमौजी एवं मस्त प्रकृति वाले मिश्र जी का मन ज्योतिष में न लगा। अंग्रेजी शिक्षा के लिए उन्होंने स्कूल में प्रवेश लिया, किन्तु उनका मन अध्ययन में भी नहीं जम सका। यद्यपि उन्होंने मन लगाकर किसी भी भाषा का अध्ययन नहीं किया, फिर भी उन्हें हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत और बाँग्ला का अच्छा ज्ञान हो गया था। वस्तुत: उन्होंने स्वास्थ्य एवं सुसंगति से जो ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त किया, उसे ही उन्होंने गद्य, पद्य तथा निबन्ध आदि के माध्यम से समाज को अर्पित कर दिया।

सन् 1894 ई० में मात्र 38 वर्ष की अल्पायु में ही सरस्वती-पुत्र पं० प्रतापनारायण मित्र का देहान्त हो गया।

साहित्यिक योगदान—आरम्भ में प्रतापनारायण मिश्र जी की रुचि लोक-साहित्य का सृजन करने में थी; अत: उन्होंने 'लावनियाँ' और 'ख्याल' लिखकर अपना साहित्यिक जीवन प्रारम्भ किया। कुछ वर्षों के उपरान्त ही वे गद्य-लेखन के क्षेत्र में उतर आए। वे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी

के व्यक्तित्व से बहुत अधिक प्रभावित थे और उन्हीं को अपना गुरु मानते थे। उनके जैसी ही व्यावहारिक भाषा-शैली अपनाकर मिश्रजी ने कई मौलिक एवं अनूदित रचनाएँ लिखीं तथा 'ब्राह्मण' एवं 'हिन्दुस्तान' नामक पत्रों का सफलतापूर्वक सम्पादन किया। भारतेन्दुजी की 'कवि वचन सुधा' से प्रेरित होकर उन्होंने कविताएँ भी लिखीं। प्रतापनारायण जी ने कानपुर में एक 'नाटक सभा' नामक संस्था की स्थापना भी की। उन्होंने अपनी अल्पायु में ही लगभग 50 पुस्तकों की रचना की। इनमें अनेक कविताएँ, नाटक, निबन्ध, आलोचनाएँ आदि सम्मिलित हैं। बाँग्ला के अनेक ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद करके भी आपने हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि की।

मिश्र जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

1. **निबन्ध-संग्रह**—'प्रताप पीयूष', 'निबन्ध नवनीत', 'प्रताप समीक्षा'।
2. **नाटक**—'कलिप्रभाव', 'हठी हम्मीर', 'गौसंकट'।
3. **रूपक**—'कलिकौतुक', 'भारत दुर्दशा'।
4. **प्रहसन**—'ज्वारी-खुआरी', 'समझदार की मौत'।
5. **काव्य**—'मन की लहर', 'शृंगार विलास', 'लोकोक्ति शतक', 'प्रेम-पुष्पावली', 'दंगल-खण्ड', 'तृप्यन्ताम्', 'ब्राडला-स्वागत', 'मानस-विनोद', 'शैव सर्वस्व', 'प्रताप लहरी'।
6. **संग्रह**—'प्रताप-संग्रह', 'रसखान-शतक'।
7. **सम्पादन**—'ब्राह्मण' पत्रिका।
8. **अनूदित रचनाएँ**—चरिताष्टक, पंचामृत, राजसिंह, राधारानी, वचनावली, कथामाला, संगीत शाकुन्तल आदि।

3. प्रतापनारायण मिश्र द्वारा रचित दो नाटक इस प्रकार हैं—1. कलि प्रभाव, 2. हठी हम्मीर।

4. प्रतापनारायण मिश्र की 'बात' हास्य-व्यंग्य-प्रधान भाषा-शैली में लिखी हुई है।

5. प्रतापनारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' नामक प्रसिद्ध मासिक पत्र का सम्पादन किया।

6. प्रतापनारायण मिश्र की भाषा की दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. प्रतापनारायण मिश्र की भाषा साधारण बोलचाल की भाषा है।
2. उनकी भाषा सरल, प्रवाहयुक्त और मुहावरेदार है।

7. प्रतापनारायण मिश्र द्वारा रचित दो प्रसिद्ध निबन्धों के नाम इस प्रकार हैं—1. प्रताप पीयूष, 2. निबन्ध नवनीत।

8. मिश्र जी को संस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी और बाँग्ला भाषाओं का ज्ञान था।

9. मिश्र जी का जन्म उ०प्र० के उन्नाव जिले के बैजे नामक गाँव में सन् 1856 ई० में हुआ था। सन् 1894 ई० में मात्र 38 वर्ष की अल्पायु में ही सरस्वती-पुत्र पं० प्रतापनारायण मित्र का देहान्त हो गया।

मिश्र जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

1. **निबन्ध-संग्रह**—'प्रताप पीयूष', 'निबन्ध नवनीत', 'प्रताप समीक्षा'।

2. **नाटक**— 'कलिप्रभाव', 'हठी हम्मीर', 'गौसंकट'।
3. **रूपक**— 'कलिकौतुक', 'भारत दुर्दशा'।
4. **प्रहसन**— 'ज्वारी-खुआरी', 'समझदार की मौत'।
5. **काव्य**— 'मन की लहर', 'शृंगार विलास', 'लोकोक्ति शतक', 'प्रेम-पुष्पावली', 'दंगल-खण्ड', 'तृप्यन्ताम्', 'ब्राडला-स्वागत', 'मानस-विनोद', 'शैव सर्वस्व', 'प्रताप लहरी'।
6. **संग्रह**— 'प्रताप-संग्रह', 'रसखान-शतक'।
7. **सम्पादन**— 'ब्राह्मण' पत्रिका।
8. **अनूदित रचनाएँ**—चरितराष्टक, पंचामृत, राजसिंह, राधारानी, वचनावली, कथामाला, संगीत शाकुन्तल आदि।

मूल्याधारित प्रश्न

- **यदि हम .... रहती है।**

उत्तर—

(i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का नाम **'बात'** और इसके लेखक का नाम **प्रतापनारायण मिश्र** है।

(ii) 'बात' शब्द का प्रयोग एक वैद्य की बात, एक भूगोल-वेत्ता की बात तथा एक लेखक की बात के अर्थों में प्रयोग किया गया है।

(iii) हम अपने हृदयस्थ भावों की अभिव्यक्ति बात के माध्यम से करते हैं।

(iv) भूगोल-वेत्ता किसी देश की जलवायु का अध्ययन करता है।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **जब परमेश्वर .... तो हैं।**

उत्तर—

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'बात'** नामक पाठ से उदधृत है। इसके लेखक **प्रतापनारायण मिश्र** है।

गद्यांश के पाठ का नाम— **बात** लेखक का नाम— **प्रतापनारायण मिश्र**।

(ii) जी हाँ, मनुष्य की पहचान बात से होती है।

(iii) काव्य-शास्त्रों आदि में कही गई ज्ञानात्मक बातें व्यक्ति के मन, बुद्धि और चित्त को निर्मल और पवित्र बनाती हैं, जिससे व्यक्ति लोक-परलोक की बातों का चिन्तन करने लगता है। इस प्रकार मन, बुद्धि और चित्त को एक अपूर्व दिशा मिल जाती है।

(iv) 'बड़ी बात' का अर्थ है—इज्जत अथवा प्रतिष्ठा वाला होना, 'छोटी बात' का अर्थ है—गलत अथवा अनुचित वचन और 'सीधी बात' का अर्थ है—स्पष्ट वचन।

रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

1. **बात का .... कहना चाहिए।**

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम— **बात** लेखक का नाम— **प्रतापनारायण मिश्र**।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—बात के सार अथवा वास्तविक स्वरूप को प्रत्येक व्यक्ति नहीं समझ सकता। इसी प्रकार बात तो कोई भी कर सकता है, परन्तु ऐसी बात कह देना कि वह दूसरे की बुद्धि पर अपना अधिकार जमा ले, सामान्य व्यक्तियों के वश की बात नहीं है। विलक्षण प्रतिभासम्पन व्यक्ति ही किसी को अपनी बात से प्रभावित कर सकते हैं। वस्तुत: बात के मर्म या रहस्य को समझना अत्यन्त कठिन है। बड़े-बड़े विद्वानों और महा कवियों का समग्र जीवन जीव, जगत् और परमात्मा सम्बन्धी बातों को समझने और अपनी बात दूसरों को समझाने में ही व्यतीत हो जाता है।

(iii) अपनी बातों से दूसरों की बुद्धि पर प्रभाव जमाकर उन पर अपना शासन करना ऐसों वैसों को साध्य नहीं है।

(iv) कवि और विद्वानों का जीवन संसार की गूढ़ बातों को समझने और दूसरों के जीवन को सफल बनाने वाली बातों को समझने में व्यतीत होता है।

(v) जिस व्यक्ति के मन को बच्चों की मधुर तोतली बातें, स्त्रियों की प्यारी मीठी बातें, कवियों की रसपूर्ण बातें और विद्वान की प्रभावपूर्ण जीवनोपयोगी बातें आनन्दित नहीं करती है, उसे लेखक ने पाषाण कहा है।

2. हमारे परम .... रहता है।

उत्तर—

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'बात'** नामक पाठ से उदधृत है। इसके लेखक **प्रतापनारायण मिश्र** है।

गद्यांश के पाठ का नाम— **बात** लेखक का नाम— **प्रतापनारायण मिश्र**।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—हमारे पूर्वज अपने वचन के पक्के होते थे। अपने वचन से वह तनिक भी नहीं डिगते थे। वचन के सामने वे शरीर, स्त्री, पुत्र, धन, भूमि आदि सभी वस्तुओं को तिनके के समान तुच्छ समझते थे। अपने वचन का पालन करने के लिए आर्यगण इन सब वस्तुओं का मोह त्याग देते थे। सत्यवादी हरिश्चन्द्र ने अपने वचनों का पालन करने के लिए राज-पाट, पुत्र, स्त्री, स्वजन आदि का त्याग कर दिया था। वचन-पालन का महत्व समझाते हुए मिश्रजी ने एक काव्य-पंक्ति का प्रयोग किया है, जिसका तात्पर्य है कि पुत्र प्राणों से अधिक प्यारा होता है और प्राण पुत्र से भी अधिक प्रिय होते हैं, किन्तु राजा दशरथ ने अपने वचन का पालन करने के लिए दोनों का त्याग कर दिया था। उन्होंने अपने वचनों का पालन करने के लिए अपने प्राणों से भी प्रिय पुत्र को त्याग दिया था; क्योंकि उन्होंने अपने वचन को तोड़ना अपनी मर्यादा के विरुद्ध समझा था। हमारा इतिहास इस प्रकार के अनेक उदाहरणों से भरा हुआ है। अपने वचनों का निर्वाह करने के कारण ही हमारे पूर्वजों का यश सर्वत्र फैला हुआ है और उनकी कीर्ति संसार-पटल पर स्वर्ण-अक्षरों में अंकित है।

आज कलियुगी लोग वचनपालन को उतना महत्व नहीं देते, जितना प्राचीनकाल में हमारे पूर्वज दिया करते थे। वचनपालन को गम्भीरता से न लेने के लिए लोग यह तर्क देते हैं कि आदमी की जुबान और गाड़ी की पहिया चलता-फिरता ही अच्छा लगता है। यह कथन उन्हीं स्वार्थी लोगों का है; जिनके लिए जाति, देश और संबंधों का कोई महत्व नहीं होता।

(iii) हमारे पूजनीय आर्यगणों का यह गुण था कि वे शरीर, स्त्री, पुत्र, महल, धन और राज्य (धरती) को अपने वचनों के सामने तिनके के समान (तुच्छ) मानते थे।

(iv) राजा दशरथ ने अपने प्राणों से प्रिय पुत्र और पुत्र से प्रिय प्राण दोनों को अपने वचनों की रक्षा के लिए त्याग दिया था। जिससे उनकी कीर्ति सदा स्वर्ण अक्षरों में लिखी रहेगी।

(v) यदि बात का कुछ रंग ढंग परिवर्तित कर लेने से अपनी जाति का उपकार, देश का उद्धार अथवा प्रेम के प्रचार में सहायता मिलती हो तो बात का रंग ढंग परिवर्तित कर लेना चाहिए।

(vi) यहाँ 'मर्द की जबान' के चलते-फिरते रहने से आशय यह है कि कुछ निम्नस्तरीय लोग अपनी बात को बदलते रहने अथवा कुछ भी उल्टा-सीधा कहते रहने में अपनी शान समझते हैं, भले उनके द्वारा कही गई बातों में से वे एक भी बात को पूरा न करते हों।

भाषा एवं व्याकरण

1. निम्नलिखित पदों का सनियम सन्धि-विच्छेद कीजिए–

शुकसारिकादि	=	**शुसारिका + आदि**	निराकार	=	**निः + आकार**
धर्मावलम्बी	=	**धर्म + अवलम्बी**	निरवयव	=	**निर् + अवयव**
मनोहर	=	**मनः + हर**	परमेश्वर	=	**परम + ईश्वर**
कवीश्वर	=	**कवि + ईश्वर**	युद्धोत्साही	=	**युद्ध + उत्साही**
जात्युपकार	=	**जाति + उपकार**	विदग्धालाप	=	**विदग्ध + आलय**
परमात्मा	=	**परम + आत्मा**	देशोद्धार	=	**देश + उद्धार**
शरणार्थी	=	**शरण + अर्थी**			

2. निम्नलिखित में समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए–

समस्त पद	**समासविग्रह**	**समास का नाम**
आजकल	**आज और कल**	**द्वन्द्व समास**
सुपथ	**सुन्दर रास्ता**	**तत्पुरुष समास**
पाषाणखण्ड	**पाषाण का खण्ड सम्बन्ध**	**तत्पुरुष समास**
कापुरुष	**कायर पुरुष**	**कर्मधारय समास**
यथासामर्थ्य	**सामर्थ्य के अनुसार**	**अव्ययीभाव समास**
कुमार्गी	**कुत्सित मार्गी**	**कर्मधारय समास**
धर्मभ्रष्ट	**धर्म से भ्रष्ट**	**तत्पुरुष समास**
सत्याग्रह	**सत्य का आग्रह**	**तत्पुरुष**
ज्वरग्रस्त	**ज्वर से गस्त**	**तत्पुरुष**
प्रत्येक	**हर एक**	**अव्ययीभाव**

3. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

मुहावरे **अर्थ**

बड़ी बात होना — **विशेष बात होना**

वाक्य-प्रयोग—वर्तमानसमय में किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना बहुत ही **बड़ी बात**

है।

आँखें मूँदना — **सोच-समझकर कार्य न करना**

वाक्य-प्रयोग—आँखें मूँदकर बैठना सभी परेशानियों की जड़ है।

मक्खीचूस — **बहुत ही कंजूस व्यक्ति**

वाक्य-प्रयोग—मक्खीचूस व्यक्ति सुविधाओं के होते हुए भी अपनी आदत के कारण सुविधाओं का आनन्द नहीं ले पाता।

बात की बात — **बहुत जल्द**

वाक्य-प्रयोग—बात की बात में वह चल गया।

क्या ही बात है —

वाक्य-प्रयोग—

बात मानना — **किसी की आज्ञा को मानते हुए उसके कहे अनुसार काम करना**

वाक्य-प्रयोग—वह अपनी पिता जी की आज्ञा को मानते हुए पढ़ने बैठ गया।

बातें बनाना — **बढ़-चढ़कर बातें बनाना**

वाक्य-प्रयोग—बातें बनाना सबसे आसान काम है लेकिन काम करना बहुत मुश्किल है।

बातों में उड़ाना — **हँसी-मजाक में उड़ा देना**

वाक्य-प्रयोग—कभी भी गुरु की शिक्षा को बातों में नहीं उड़ाना चाहिए।

बात बिगड़ना — **काम खराब हो जाना**

वाक्य-प्रयोग—कभी भी किसी से बात नहीं बिगाड़नी चाहिए।

बात बनना — **प्रयोजन सिद्ध होना**

वाक्य-प्रयोग—मेहनत, ईमानदारी से सफल प्रयासों द्वारा बात बन ही जाती है।

बात आ पड़ना — **मौका पेश आना**

वाक्य-प्रयोग—बात आ पड़ने पर सभी को अपनी जिम्मेदारी निभागनी चाहिए।

बात उखड़ना — **दबी हुई बात उभरना**

वाक्य-प्रयोग—जीवन में पुरानी बातें कभी नहीं उखाड़नी चाहिए, बल्कि आगे बढ़ते रहना चाहिए।

बात जमना — **एतबार होना**

वाक्य-प्रयोग—अमन की समाज में इज्जत होने की बदौलत, सभी व्यक्तियों को अमन की बार जाती है।

बात जाते रहना — **बात का महत्व न होना**

वाक्य-प्रयोग—रमेश ने बंटी को इतना अधिक प्रलोभन दिया फिर भी उसकी बात जाती रही।

बात का बतंगड़ बनाना — **छोटी-सी बात को बढ़ा देना**

वाक्य-प्रयोग—समझदार व्यक्ति का भी बात का बतंगड़ नहीं बनाते।

2 प्रेमचन्द

(जन्म : सन् 1880 ई० - मृत्यु : सन् 1936 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

  1. (क) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (घ)

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–

(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित डॉ० चड्ढा ने किसके बेटे को नहीं देखा?**

उत्तर– (ख) केवल (i)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. प्रेमचन्द जी का जन्म ____________ जिले के लमही नामक ग्राम में हुआ था।

उत्तर– (ख) वाराणसी

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ख) (iv) (iii) (ii) (i)

सत्य/असत्य कथन

- **मंत्र कहानी का संदेश है कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (d) केवल (i)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए—**

उत्तर– (क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर—

1. प्रेमचन्द ने 'मर्यादा, माधुरी, हंस, जागरण' आदि पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

2. प्रेमचन्द के चार उपन्यासों के नाम इस प्रकार हैं—सेवासदन, रंगभूमि, निर्मला, गोदान।

3. प्रेमचन्द की रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

   1. उपन्यास—'सेवासदन', 'वरदान', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान', 'प्रेमाश्रम' आदि।

2. **कहानी-संग्रह**—'सप्तसुमन', 'सप्त-सरोज', 'नवनिधि', 'प्रेम-तीर्थ', 'प्रेम-प्रसून', 'प्रेरणा', 'कफन', 'कुत्ते की कहानी', 'प्रेम-पचीसी', 'प्रेमपूर्णिमा' आदि। उनकी लगभग तीन सौ कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संकलित हैं।
3. **नाटक**—'संग्राम', 'कर्बला', 'प्रेम की बेदी', 'रूठी रानी' और 'चन्द्रहार'।
4. **निबन्ध-संग्रह**—'कुछ विचार' और 'साहित्य का उद्देश्य'।
5. **जीवन-चरित**—'कलम', 'तलवार और त्याग', 'दुर्गादास', 'रामचर्चा' और 'महात्मा शेख सादी'।
6. **सम्पादन**—'माधुरी', 'मर्यादा', 'हंस' और 'जागरण' आदि।
7. **अनूदित**—'आजाद-कथा', 'टॉल्सटाय की कहानियाँ', 'चाँदी की डिबिया', 'अहंकार', 'सृष्टि का आरम्भ', 'हड़ताल' आदि।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई, सन् 1880 ई० में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के लमही नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम अजायबराय तथा माता का नाम आनन्दी देवी था।
2. प्रेमचन्द जी की दो कहानियों के नाम इस प्रकार हैं—1. सप्त-सुमन, 2. सप्त-सरोज।
3. प्रेमचन्द के दो प्रसिद्ध उपन्यासों के नाम इस प्रकार हैं—1. सेवासदन, 2. रंगभूमि।
4. प्रेमचन्द द्वारा सम्पादित दो पत्रिकाओं के नाम इस प्रकार हैं—1. मर्यादा, 2. माधुरी।
5. **भाषा**—प्रेमचन्द जी की भाषा के दो रूप हैं—एक रूप तो वह है, जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रधानता है और दूसरा रूप वह है, जिसमें उर्दू, संस्कृत और हिन्दी के व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। यही भाषा प्रेमचन्द जी की प्रतिनिधि भाषा है। इसी भाषा का प्रयोग उन्होंने अपनी श्रेष्ठ कृतियों में किया है। यह भाषा अधिक **सजीव, व्यावहारिक** और **प्रवाहमयी** है।

   शैली—प्रेमचन्द जी ने अपने साहित्य में वर्णनात्मक शैली, विवेचनात्मक शैली, मनोवैज्ञानिक शैली, हास्य-व्यंग्यात्मक शैली, भावात्मक शैली का प्रयोग किया है।
6. **जीवन**—प्रेमचन्द का जन्म **सन् 1880 ई०** में वाराणसी जिले के अन्तर्गत 'लमही' नामक एक छोटे-से गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम अजायब राय और माता का नाम आनन्दी देवी था। प्रेमचन्द जी की बाल्यावस्था अभावों में व्यतीत हुई। इन्होंने बड़े परिश्रम और कष्ट के साथ एण्ट्रेंस की परीक्षा उत्तीर्ण की। एण्ट्रेंस की परीक्षा उत्तीर्ण करके इन्होंने इण्टरमीडिएट का अध्ययन आरम्भ किया, किन्तु परीक्षा में असफल हो जाने के कारण पढ़ाई छोड़ दी। प्रेमचन्द जी का विवाह विद्यार्थी जीवन में ही हो चुका था, परन्तु वह विवाह इनके लिए अनुकूल न था; इसलिए शिवरानी देवीके साथ इन्होंने दूसरा विवाह किया।

   हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त प्रेमचन्द जी ने 20 रुपये मासिक पर एक विद्यालय में अध्यापन का कार्य किया। इसके पश्चात् वह स्कूलों के सब-डिप्टी-इंस्पेक्टर हो गए। स्वास्थ्य बिगड़ जाने के कारण इन्हें यह पद त्यागकर पुन: शिक्षण-कार्य करना पड़ा।

अध्यापन-कार्य करते हुए इन्होंने एफ० ए० और बी० ए० की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। 'असहयोग आन्दोलन' प्रारम्भ होने पर इन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

साहित्यिक जीवन में प्रवेश करने पर सर्वप्रथम ये 'मर्यादा' पत्रिका के सम्पादक हुए। इसके पश्चात इन्होंने 'माधुरी' पत्रिका का सम्पादन अपने हाथों में ले लिया। इसके बाद काशी में अपना प्रेस खोला ओर 'हंस' तथा 'जागरण' नामक पत्र निकालकर उसका सम्पादन करने लगे। **सन् 1936 ई०** में लम्बी बीमारी के बाद इनका देहान्त हो गया।

प्रेमचन्द की मुख्य रचनाएँ इस प्रकार हैं—**सेवासदन, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान, कफन, प्रेम-पचीसी, कर्बला, कुछ विचार, साहित्य का उद्देश्य, महात्मा शेख सादी** आदि।

मूल्याधारित प्रश्न

- **अरे मूर्ख, ... हो गया।**

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'मंत्र'** नामक पाठ से उदधृत है। इसके लेखक **मुंशी प्रेमचन्द** है।

गद्यांश के पाठ का नाम— **मंत्र** लेखक का नाम— **मुंशी प्रेमचन्द**।

(ii) माता-पिता अपने लाड़ते बेटे के माथे पर से हरा बँधा देखने को लालायित थे।

(iii) 'नौका जलमग्न' होना प्रतीक है कैलाश की मृत्यु का।

(iv) मृणालिनी का 'कामना-तरु' अर्थात् उसकी कामना थी कि वह कैलाश से विवाह करे और एक सुखी जीवन जीए।

(v) कैलाश का मृतयु के समीप जाना अनहोनी था। इस प्रकार जो नहीं होना था वह हो गया।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **''वही हरा-भरा .... अश्रु-प्रवाह था।''**

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'मंत्र'** नामक पाठ से उदधृत है। इसके लेखक **मुंशी प्रेमचन्द** है।

गद्यांश के पाठ का नाम— **मंत्र** लेखक का नाम— **मुंशी प्रेमचन्द**।

(ii) चाँदनी के नि:शब्द संगीत के छाने का आशय यह है कि सब ओर मन को आनन्दित करने वाली चाँदनी छिटक रही थी तथा सब तरफ शान्ति छाई थी।

(iii) मित्र-समाज वहाँ कैलाश के जन्मदिन के उपलक्ष्य में उपस्थित था।

(iv) कैलाश को एक विषैले साँप ने काट लिया था जिस कारण हास्य के स्थान पर वहाँ अब करुण-क्रन्दन और अश्रु-प्रवाह हो रहा था।

रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

- **पर उसके .... घातक था।**

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'मंत्र'** नामक पाठ से उदधृत है। इसके लेखक **मुंशी प्रेमचन्द** है।

गद्यांश के पाठ का नाम— **मंत्र** लेखक का नाम— **मुंशी प्रेमचन्द**।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—बूढ़ा भगत अपनी पत्नी के सो जाने पर दरवाजा बन्द करके लेट गया। उसके मन की दशा ठीक वैसी थी, जैसी संगति के शौकीन किसी उपदेश सुन रहे व्यक्ति की होती है। उपदेश सुनते समय जब वाद्य-यंत्रों की आवाज उसके कानों में पड़ती है तो उसकी बार-बार इच्छा होती है कि वह किसी तरह उस मधुर ध्वनि को सुनने के लिए वहाँ से निकलकर चला जाए। शारीरिक रूप से भले ही वह उपदेशक के सामने बैठा रहे, पर उसका मन संगीत की स्वर-लहरियों में खो जाता है। यद्यपि ऐसा व्यक्ति अन्य लोगों की शर्म करके वहाँ से उठ नहीं पाता है, किन्तु उसका मन बराबर उठने के लिए तत्पर रहता है।

(iii) उपदेश सुनने वाले संगीत प्रेमी की दृष्टि चाहे कहीं भी रहे, किन्तु उसके कान सदैव बाजे की ओर ही रहते हैं। अर्थात् उसका मन एक भी क्षण के लिए बाजे की संगीत की दुनियासे अलग नहीं होता।

(iv) ''दिल में बाजे की ध्वनि गूँजती रहती है।'' इस वाक्य के द्वारा लेखक संगीत प्रेमी व्यक्ति की संगीत के प्रति तन्मयता के माध्यम से भगत की परोपकार के प्रति समर्पण की भावना को व्यक्त करना चाहता है।

(v) भगत के लिए निर्दयी प्रतिघात का भाव उपदेशक था और चड्ढा का सर्प-दश से जीवन-मरण के बीच झूलता बेटा कैलाश बाजा था।

भाषा एवं व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम बताइए–

सन्धि	**सन्धि-विच्छेद**	**सन्धि का नाम**
सज्जन	**सत् + जन**	**व्यंजन सन्धि**
निश्चल	**निः + चल**	**विसर्ग सन्धि**
औषधालय	**औषध + आलय**	**दीर्घ सन्धि**
नि:स्वार्थ	**निः + चल**	**विसर्ग सन्धि**
नि:शब्द	**निः + शब्द**	**विसर्ग सन्धि**
भारतेन्दु	**भारत + इन्दु**	**गुण सन्धि**
कवीन्द्र	**कवि + इन्द्र**	**दीर्घ सन्धि**

2. निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए–

समस्त पद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
आत्मरक्षा	**आत्मा की रक्षा**	**सम्बन्ध तत्पुरुष**
महाशय	**महान है जो आशय**	**कर्मधारय समास**
जीवनदान	**जीवन का दान सम्प्रदान**	**तत्पुरुष समास**
जलमग्न	**जल में मग्न**	**तत्पुरुष समास**
कामना-तरु	**कामना रूपी तरु**	**कर्मधारय समास**
मित्र-समाज	**मित्रों का समाज**	**सम्बन्ध तत्पुरुष समास**

सावन-भादों	**सावन और भादो**	**द्वन्द्व समास**
जीवनपर्यन्त	**जीवन भर**	**अव्ययीभाव समास**
करुण-क्रन्दन	**करुण विलाप**	**कर्मधारय समास**

3. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

मुहावरे **अर्थ**

किस्मत ठोकना — **पछताना**

वाक्य-प्रयोग—औलाद अच्छी न होने पर बेचारे माँ-बाप अपनी किस्मत ठोकते रहते हैं।

कलेजा ठंडा होना — **तृप्त या संतुष्ट होना**

वाक्य-प्रयोग—अपने बच्चों से बात करके माँ का लेजा ठंडा हो जाता है।

हाथ से चला जाना — **प्रिय वस्तु का निकल जाना**

वाक्य-प्रयोग—सविता आंटी का इकलौता बेटा बुरी संगत में पड़कर हाथ से चला गया।

आनन-फानन में — **शीघ्र**

वाक्य-प्रयोग—मेहमानों के अचानक आने की खबर सुनकर घरवालों ने उनके नाश्ते का इंतजाम आनन-फनन में किया।

आँखें पथरा जाना — **आँखें थक जाना**

वाक्य-प्रयोग—किसी के ज्यादा इंतजार से आँखें पथरा जाती हैं।

सन्नाटा छा जाना — **खामोशी छा जाना**

वाक्य-प्रयोग—अंग्रेजों के जुल्म से देश में सन्नाटा छाया रहता था।

सूरत आँखों में फिरना — **सदैव याद रहना**

वाक्य-प्रयोग—विदेश में रह रहे बेटे की सुरत माँ की आँखों में फिरती रहती है।

मिजाज करना — **टालमटोल करना**

वाक्य-प्रयोग—मृणालिनी बहुत सीधी और भोली थी, इसलिए कैलाश उससे मिजाज करता रहता था।

3 डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

(जन्म : सन् 1907 ई० - मृत्यु : सन् 1979 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

1. (ख) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (घ)

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **सिक्ख गुरओं के नीचे दिए गए चित्रों को देखिए तथा उनके नाम एवं वर्षों का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर– 1. गुरुनानक (1469-1539) 2. गुरु अंगद (1539-1552)
3. गुरु अमर (1552-1574) 4. गुरु रामदास (1574-1581)
5. गुरु अर्जन (1581-1606) 6. गुरु हरगोविंद (1606-1644)
7. गुरु हरराय (1644-1661) 8. गुरु हरकिशन (1661-1664)
9. गुरु तेगबहादुर (1665-1675) 10. गुरु गोविंद सिंह (1675-1708)

कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन शरत चन्द्र के पूर्ण चन्द्र की तरह स्निग्ध रश्मि के भण्डार थे?**

उत्तर– (ख) केवल (iv)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. गुरु नानक देव ने ____________ काम किया है।

उत्तर– (घ) सुधा लेप का

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

उत्तर– (घ) (ii) (i) (iv) (iii)

सत्य/असत्य कथन

- **गुरु नानक ने प्रेम का संदेश दिया हैंनिम्नलिखित में से कौन-सा कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (क) केवल (iv)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

1. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य
2. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. स्वयं कीजिए।

2. आचार्य द्विवेदी की मुख्य रचनाएँ–

1. निबन्ध-संग्रह–'विचार और वितर्क', 'कल्पलता', 'अशोक के फूल', 'विचार-प्रवाह', 'कुटज', 'आलोक पर्व', 'कल्पना' आदि।

2. आलोचना–'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'सूर-साहित्य', 'कबीर', 'सूरदास और उनका काव्य,' 'साहित्य के साथी', 'हमारी साहित्यिक समस्याएँ', 'साहित्य का धर्म', 'हिन्दी-

साहित्य', 'समीक्षा-साहित्य', 'साहित्य-सहचर', 'नख दर्पण में हिन्दी कविता', 'भारतीय वाङ्मय', 'कालिदास की लालित्य योजना' आदि।

3. **शोध-साहित्य**—'नाथ सम्प्रदाय', 'मध्यकालीन धर्म साधना', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद', 'प्राचीन भारत का कला-विकास' आदि।
4. **उपन्यास**—'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचन्द्रलेख', 'पुनर्नवा' और 'अनामदास का पोथा'।
5. **सम्पादन**—'संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो', 'संदेश रासक', 'नाथसिद्धों की वाणियाँ', 'सूरदास', 'मेघदूत', 'विश्व-भारती' आदि।
6. **अनूदित रचनाएँ**—'प्रबन्ध कोश', 'प्रबन्ध चिन्तामणि', 'पुरातन—प्रबन्ध संग्रह', 'विश्व-परिचय', 'मेरा बचपन', 'लाल कनेर' आदि।

3. द्विवेदी जी ने निबंध, आलोचना, शोध-साहित्य, उपन्यास, संपादन, अनुवाद आदि विधाओं पर अपनी लेखनी चाहिए।

जीवन-परिचय एवंकृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. द्विवेदी जी का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के दुबे का छपरा नामक ग्राम में 9 अगस्त, सन् 1907 ई० में हुआ था।
2. द्विवेदी जी के दो उपन्यासों के नाम इस प्रकार हैं—1. बाणभ— की आत्मकथा 2. चारु चन्द्र लेखा।
3. डॉ० द्विवेदी के दो निबन्ध संग्रहों के नाम इस प्रकार हैं—1. विचार और वितर्क, 2. कल्पलता।
4. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी की 'कबीर' रचना पर मंगल प्रसाद-पारितोषिक प्राप्त हुआ था।
5. आचार्य द्विवेदी के एक आलोचनात्मक ग्रन्थ का नाम है—हिन्दी साहित्य की भूमिका। और एक शोध ग्रन्थ का नाम है—नाथ सम्प्रदाय।
6. **भाषा**—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भाषा के प्रकाण्ड पण्डित थे। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के साथ-साथ आचार्य जी ने अपने निबन्धों में उर्दू, फारसी, अंग्रेजी तथा देशज शब्दों का भी प्रयोग किया है। इनकी भाषा प्रौढ़ होते हुए भी सरल, संयत तथा बोधगम्य है। मुहावरेदार भाषा का प्रयोग भी इन्होंने किया है।

   शैली—आचार्य द्विवेदी महान् शैलीकार थे। इन्होंने विषयानुसार अनेक प्रकारकी शैलियों का प्रयोग किया है—

   1. **गवेषणात्मक शैली**—इस शैली का प्रयोग द्विवेदी जी नेअपने सांस्कृतिक निबन्धों में किया है। इसकी भाषा संस्कृतनिष्ठ तथा वाक्य लम्बे-लम्बे हैं।
   2. **आलोचनात्मक शैली**—'हिन्दी-साहित्य का आदिकाल' और 'कबीर' जैसे ग्रन्थों में इनकी इस शैली कोदेखा जा सकता है। इस शैली में वाक्य पर आधारित वाक्य बड़े होते हुए भी विचारों की शृंखला टूट नहीं पाती।

3. **भावात्मक शैली**—'अशोक के फूल', 'वह चला गया' तथा 'कुटज' जैसे निबन्धों में भावात्मक शैली के दर्शन होते हैं। इस शैली में भावुकता, सरसता, रोचकता के साथ-साथ वैयक्तिका भी दिखाई देती है। कोमलकान्त पदावली, प्रवाहमयता, व्यंग्य तथा मनोवैज्ञानिक विवेचन इस शैली की अन्य विशेषताएँ हैं।
4. **व्यंग्यात्मक शैली**—गम्भीर विषयों का प्रतिपादन करते समय आचार्य द्विवेदी ने अनेक स्थलों पर व्यंग्य का भी सहारा लिया है। अधिकतर उन्होंने व्यक्तियों, संस्थाओं और सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य किए हैं।
5. **उद्धरण शैली**—प्राचीन भारतीय साहित्य के प्रकाण्ड होने के कारण आचार्य द्विवेदी ने अपने निबन्धों में संस्कृत तथा बाँग्ला आदि भाषाओं के उद्धरण दिए हैं।

7. **जीवनी**—आचार्य द्विवेदी का जन्म **सन् 1907 ई०** में बलिया जिले के 'दूबे का छपरा' नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री अनमोल दूबे ओर माता का नाम श्रीमती ज्योतिकली देवी था। इन्होंने हिन्दी एवं संस्कृत भाषाओं कागहन अध्ययन किया। इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद द्विवेदी ने काशी हिन्दू विशवविद्यालय से ज्योतिष तथा साहित्य में आचर्य की उपाधि प्राप्त की। ये 'शान्ति निकेतन', 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' एवं 'पंजाब विशवविद्यालय' जेसी संस्थाओं में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष रहे१ अपनी शिक्षा-समाप्ति के उपरान्त ये शान्ति निकेतन चले गए और वहाँ के हिन्दी विभाग में शिक्षण काकार्य करने लगे। यहीं वे रवीन्द्रनाथ ठाकुर और क्षिति मोहन सेन के सम्पर्क में आए ओर उनकी प्रेरणा से साहित्य-सृजन की ओर अभिमुख हो गए। **सन् 1949 ई०** में 'लखनऊ विश्वविद्यालय' ने इन्हें साहित्य के क्षेत्र में इनकी महान् सेवाओं के लिए 'डी० लिट्०' तथा **सन् 1957 ई०** में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किया। अस्वस्थता के कारण **19 मई, 1979 ई०** को इनका स्वर्गवास हो गया।

आचार्य द्विवेदी की मुख्य रचनाएँ—

1. **निबन्ध-संग्रह**—'विचार और वितर्क', 'कल्पलता', 'अशोक के फूल', 'विचार-प्रवाह', 'कुटज', 'आलोक पर्व', 'कल्पना' आदि।
2. **आलोचना**—'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'सूर-साहित्य', 'कबीर', 'सूरदास और उनका काव्य,' 'साहित्य के साथी', 'हमारी साहित्यिक समस्याएँ', 'साहित्य का धर्म', 'हिन्दी-साहित्य', 'समीक्षा-साहित्य', 'साहित्य-सहचर', 'नख दर्पण में हिन्दी कविता', 'भारतीय वाङ्मय', 'कालिदास की लालित्य योजना' आदि।
3. **शोध-साहित्य**—'नाथ सम्प्रदाय', 'मध्यकालीन धर्म साधना', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद', 'प्राचीन भारत का कला-विकास' आदि।
4. **उपन्यास**—'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचन्द्रलेख', 'पुनर्नवा' और 'अनामदास का पोथा'।
5. **सम्पादन**—'संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो', 'संदेश रासक', 'नाथसिद्धों की वाणियाँ', 'सूरदास', 'मेघदूत', 'विश्व-भारती' आदि।
6. **अनूदित रचनाएँ**—'प्रबन्ध कोश', 'प्रबन्ध चिन्तामणि', 'पुरातन—प्रबन्ध संग्रह', 'विश्व-

परिचय', 'मेरा बचपन', 'लाल कनेर' आदि।

मूल्याधारित प्रश्न

- **गुरु जी किसी .... अनुभव करता है।''**

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'गुरु नानकदेव'** नामक पाठ से उदधृत है। इसके लेखक **हजारीप्रसाद द्विवेदी** है।

गद्यांश के पाठ का नाम— **गुरु नानकदेव** लेखक का नाम— **हजारीप्रसाद द्विवेदी**।

(ii) जिस क्षण गुरु मन में अविभूत हो जाए, उस क्षण को लेखक ने शुभ ओर उल्लिसत कर देने वाला बताया है।

(iii) प्रतिक्षण आविर्भूत होकर गुरु नवीन हो रहे हैं।

(iv) भारत जनमानस महामानवों का सम्बन्ध शरत् पूर्णिमा से जोड़कर प्रसन्नता अनुभव करता है।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **विचार और आचार .... रह सकती।''**

(i) संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'गुरु नानकदेव'** नामक पाठ से उदधृत है। इसके लेखक **गुरु नानकदेव** है।

गद्यांश के पाठ का नाम— **गुरु नानकदेव** लेखक का नाम— **हजारीप्रसाद द्विवेदी**।

(ii) ऐसे सन्त गुरु नानकदेव जी है।

(iii) हिन्दी-साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को 'मध्यकाल' का नाम भी दिया गया है। गुरु नानकदेव इसी मध्यकाल में उत्पन्न हुए थे; अत: यहाँ इसी मध्यकाल का संकेत किया गया है।

(iv) गुरु नानकदेव कुसंस्कारों को बिना किसी का दिल दु:खाए और बिना किसी पर आघात किए छिन्न-भिन्न करते थे।

रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

1. धन्य हो, ... रही है।

(i) गद्यांश के पाठ का नाम— **गुरु नानकदेव** लेखक का नाम— **हजारीप्रसाद द्विवेदी**।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—प्रस्तुत पंक्तियों में आचार्य द्विवेदी ने गुरु नानकदेव के उस दृष्टिकोण को सामने रखा है, जिसमें उन्होंने प्रत्येक मनुष्य एवं प्राणी में उसी अगम, अगोचर, अलख कहलाने वाले ईश्वर की ज्यातिं देखी हे, जो स्वयं उनके हृदय में भी विराजमान है। नानकदेव मनुष्यमात्र के लिए यही सन्देश देते हैं कि उस ईश्वर की ज्योति घट-घट अर्थात् प्राणी में विद्यमान है, जो स्वयं प्रत्येक मनुष्य के हृदय एवं उसकी चेतना का प्रदर्शन किया है।

(ii) अगम अगोचर अलख अपाश, चिन्ता करहु हमारी।
जलि भलि माही अलि भरि पूरि लीना, घट-घट ज्योति तुम्हारी।।

2. किसी लकीर .... पड़ गए।

(i) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य खंड'** के **'गुरु नानकदेव'** नामक पाठ से उदधृत है। इसके लेखक **गुरु नानकदेव** है।

गद्यांश के पाठ का नाम— **गुरु नानकदेव** लेखक का नाम— **हजारीप्रसाद द्विवेदी**।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—यदि हम किसी रेखा को मिटाए बिना उसे छोटा करना चाहते हैं तो उसका एक ही उपाय है कि उस रेखा के पास उससे बड़ी रेखा खींच दी जाए। ऐसा करने पर पहली रेखा स्वयं छोटी प्रतीत होने लगेगी। इसी प्रकार यदि हम अपने मन के अहंकार और तुच्छ भावनाओं को दूर करना चाहते हैं, स्वयं को संकीर्णता के जाल से मुक्त करना चाहते हैं,तो उसके लिए भी हमें महानता की बड़ी लकीर खींचनी होगी। अहंकार, तुच्छ भावना, संकीर्णता आदि को शासत्रज्ञान के आधार पर वाद-विवाद करके या तर्क देकर छोटा नहीं किया जा सकता है; उसके लिए व्यापक और बड़े सत्य का दर्शन आवश्यक है। ऐसा करने पर ये अपने आप तुच्छ प्रतीत होने लगेंगे।

(iii) गुरु नानकदेव इस बात से भली भाँति परिचित थे कि मनुष्य के दुर्गुणों को तर्क एवं शास्त्रार्थ से मिटा पाना सम्भव नहीं है। मनुष्य के दुर्गण उसको सत्य के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होने पर ही मिट सकेंगे।

(iv) छोटी लकीर के सामने बड़ी लकीर खींच देने का अर्थ है—तुच्छ आचरण के सामने उच्च अथवा आदर्श आचरण का उदाहरण प्रस्तुत करना।

(v) अहमिकाओं और अर्थहीन संकीर्णताओं की क्षुद्रता सिद्ध करने का सही उपाय है अपने आचरण द्वारा जीवन के उच्चादर्श के रूप में बड़े सत्य को प्रस्तुत करना। ऐसा करने पर उन अहमिकाओं और संकीर्णताओं के छोटा सिद्ध करने के लिए किसी तर्क की आवश्यकता न पड़ेगी, वरन् वे उच्चादर्श के सामने स्वयं ही छोटी लगने लगेंगी।

(vi) गुरु नानकदेव ने जिस महा सत्य का उदघाटन संसार के सामने किया, उसके सामने छोटे-मोटे आदर्श अथवा सत्य स्वयं क्रान्तिहीन हो गए। अर्थात् उनका महत्व स्वयं ही कम हो गया।

भाषा एवं व्याकरण

1. निम्नांकित का समास-विग्रह करते हुए समास का नाम भी बताइए–

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
स्वर्णकमल	**स्वर्ण रूपी कमल**	**कर्मधारय समास**
चित्तभूमि	**चित्त की भूमि**	**तत्पुरुष समास**
आप्लावित प्राणधारा	**प्राणरूपी धारा**	**कर्मधारय समास**
व्यंग्य-बाण	**व्यंग्यों का बाण सम्बन्ध**	**तत्पुरुष समास**
महापुरुष	**मान् है जो पुरुष**	**कर्मधारय समास**
ज्योतिपुंज	**ज्योति का पुंज सम्बन्ध**	**तत्पुरुष समास**
ग्रामगत	**ग्राम को गत**	**तत्पुरुष समास**
यज्ञवेदी	**यज्ञ के लिए वेदी**	**तत्पुरुष समास**
रोगमुक्त	**रोग से मुक्त**	**तत्पुरुष समास**
यथासम्भव	**जहाँ तक सम्भव हो**	**अव्ययीभाव समास**

2. निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम भी लिखिए–

शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि का नाम
लोकोत्तर	**लोक + उत्तर**	**गुण सन्धि**
अमृतोपम	**अमृत + उपम**	**गुण सन्धि**
अनायास	**अन + आयास**	**दीर्घ सन्धि**
सर्वाधिक	**सर्व + अधिक**	**दीर्घ सन्धि**
कुलाभिमान	**कुल + अभिमान**	**दीर्घ सन्धि**
परीक्षार्थी	**परीक्षा + अर्थी**	**दीर्घ सन्धि**
महेश	**महा + ईश**	**गुण सन्धि**

3. निम्नलिखित में प्रकृति-प्रत्यय को अलग-अलग करके लिखिए–

शब्द प्रकृति	प्रत्यय	शब्द प्रकृति	प्रत्यय
अवतार	**आर**	स्वाभाविक	**इक**
प्रहार	**आर**	अनुग्रह	**ग्रह**
उल्लसित	**इत**	पांडित्य	**तय**
महत्त्व	**त्व**	संजीवनी	**ई**

4. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग का निर्देश कर अर्थ भी बताइए–

शब्द	उपसर्ग	अर्थ
संकीर्ण	**सम्**	**साथ**
निराभिमाना	**निर्**	**रहित, नहीं**
संस्कार	**सम्**	**अच्छा**
संजीवनी	**सम्**	**अच्छा**
उद्भासित	**उत्**	**श्रेष्ठ**
प्रशिक्षण	**प्र**	**अधिक, आगे**
सम्बन्ध	**सम्**	**साथ, संयोग**
अनुग्रह	**अनु**	**पीछे, समन**
अनुभूत	**अनु**	**पीछे या बाद में आने वाला, समान**

4 महादेवी वर्मा

(जन्म : सन् 1907 ई० - मृत्यु : सन् 1987 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

1. (ख) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (ग) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (ग) **9.** (घ) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (क) **13.** (ख) **14.** (क) **15.** (ख) **16.** (क) **17.** (ख) **18.** (क)

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

''नीचे दिया गया चित्र लेखिका और गिल्लू के मध्य के प्रगाढ़ सम्बन्धों को दर्शाता है।'' इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए–

उत्तर– चित्र में हम देख सकते हैं कि लेखिका गिलहरी (गिल्लू) के साथ भोजन कर रही हैं। उनका एक ही थाली में खाना उनके मध्य की सहजता व प्रेम को परिलक्षित करता है।

कूट आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किसने गिल्लू को थाली के पास बैठना सिखाया था?

उत्तर– (ग) केवल (i)

2. निम्नलिखित में से कौन-सी लता गिल्लू को अधिक प्रिय थी?

उत्तर– (ख) केवल (ii)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की ____________ कहा जाता है।

उत्तर– (घ) मीरा

2. गिलहरियों के जीवन की अवधी ____________ से अधिक नहीं होती है।

उत्तर– (क) दो वर्ष

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (क) (ii) (i) (iv) (iii)

सत्य/असत्य कथन

- **महादेवी वर्मा के विषय में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?**

उत्तर– (ख) केवल (iv)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

  1. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

  2. (क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. पशु-पक्षियों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। पशुओं का उपयोग परंपरागत कृति कार्यों में होता है। खेती में जुताई, बुवाई आदि अनेक कार्य पशुओं की सहायता से किए जाते हैं।

विभिन्न पशुओं जैसा—गाय, भैंस, बकरी से हमें दूध व कुछ पाुओं से मांस आदि खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं।

घोड़ा, ऊँट, गधे, हाथी, खच्चर आदि पशुओं का उपयोग बोझा ढोने व यातायात के साधनों के रूप में भी किया जाता है। कुछ पशुओं; जैसे—भेड़, बकरियों से प्राप्त रेशों से कई तरह के वस्त्र बनाए जाते हैं। पशुओं से प्राप्त गोबर की खाद का प्रयोग फसलों में डालकर उनकी पैदावार बढ़ाने के लिए किया जाता है।

वे कीड़ों-मकोड़ों को खाते हैं। कुछ पक्षी; जैसे—गिदध, कौए आदि मृत जीवों के अवशेषों को साफ रखने में सहायता करते हैं। जंगल में भी शेरों, बाघों द्वारा आधा खाकर छोड़ दिए गए जानवरों के शेष को पक्षियों द्वारा खाया जाता है। बीज-प्रसार में पक्षी महत्वपूर्ण हैं। ये एक स्थान से दूसरे स्थान तक बीजों को पहुँचाते हैं। इसलिए हम पौधों को जमीन पर विभिन्न स्थानों पर अनायास बढ़ते हुए देखते हैं। इस प्रकार पशु-पक्षियों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है।

2. मेरा परिवार।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. महादेवी का जन्म उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जनपद में 1907 ई० में हुआ था।

2. 'हिन्दी-साहित्य सम्मेलन' ने इन्हें 'नीरजा' काव्य-रचना पर 'सेकसरिया' तथा 'यामा' कविता-संग्रह पर 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' से सम्मानित किया गया। कुमाऊँ विशवविदयालय ने महादेवी जी को 'डी० लिट्०' की मानद उपाधि से विभूषित किया। इन्हें भारत सरकार से 'पदमविभूषण' पदक भी प्राप्त हुआ था।

3. महादेवी वर्मा छायावादी काव्यधारा की कवयित्री हैं।

4. भारत सरकार ने महादेवी वर्मा को पदमभूषण की उपाधि सम्मानित किया।

5. महादेवी वर्मा को युग का आधुनिक मीरा के नाम से पुकारा जाता है।

6. महादेवी वर्मा की दो रेखाचित्र रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं—1. अतीत के चलचित्र, 2. स्मृति की रेखाएँ।

7. महादेवी वर्मा की दो गद्य शैलियों का नाम इस प्रकार हैं—1. चित्रोपय वर्णनात्मक शैली, 2. विवेचनात्मक शैली।

8. **महादेवी का कृतित्व**—महादेवी के रचनाकार के दो रूप हैं। काव्य में वे पूर्णत: छायावादी हैं किन्तु गद्य में यथार्थवादी। यथार्थवादी दृष्टि से विषय को अभिव्यक्त करना इन्हें खूब आता है। विषय-वैविध्य तथा कला वैविध्य के कारण इनकी शैली भी वैविध्यमयी है।

महादेवी वर्मा की भाषा—महादेवी जी की भाषा संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दावली से निर्मित है किन्तु कहीं-कहीं उसमें अन्य भाषाओं के शब्द भी देखे जा सकते हैं। विषयानुकूल भाषा तथा वाक्य विन्यास देखकर यह सहज ही अनुमानित हो जाता है कि 'मेरा परिवार' जैसे गद्य लेखन में इनकी भाषा पूर्ण सहज और व्यावहारिक हो गई है। मुहावरों तथा लोकोक्तियों ने भाषा को कहीं-कहीं बोलचाल का रूप प्रदान कर दिया है जिससे भाषा में लोकजीवन की जीवन्तता

का समावेश हो गया है। व्यंजनापूर्ण लाक्षणिक शब्दावली इनकी भाषा की अन्यतम विशेषता है।

महादेवी वर्मा की शैली

चित्रोपम वर्णनात्मक शैली—महादेवीजी में वर्णन करने की अद्‌भुत शक्ति थी। वे किसी भी वस्तु, घटना अथवा व्यक्ति का शब्दों में हू-ब-हू चित्र उतार देती थीं। इस शैली में लिखित गद्य सरल-प्रवाहमय है। वाक्य छोटे तथा काव्यात्मक हैं। महादेवीजी ने संस्मरणों तथा रेखाचित्रों में इस शैली का प्रयोग किया है।

विवेचनात्मक शैली—महादेवीजी ने जहाँ बौद्धिक चिन्तन-मनन तथा विश्लेषण किया है, वहाँ इस शैली का प्रयोग किया है। इनके निबन्धों में इस शैली के प्रयोग देखे जा सकते हैं।

भावात्मक शैली—महादेवीजी मूलत: कवयित्री थीं अत: इनमें भावुकता का प्राधान्य था। किसी भी कष्टप्रद स्थिति को देखकर ये पीड़ा से कराह उठती थीं। एक भावुक हृदय की महिला होने के कारण इनका गद्य भी भावुकता से भरा हुआ है। इस शैली के दर्शन इनके समस्त गद्य में देखे जा सकते हैं।

व्यंग्यात्मक शैली—सामाजिक विषमताओं तथा नारी जीवन की त्रासदियों को अभिव्यक्त करने के लिए इन्होंने इस शैली का आश्रय ग्रहण किया है। 'शृंखला की कड़ियाँ' नामक निबन्ध संग्रह में इस शैली के प्रयोग देखे जा सकते हैं। इनके व्यंग्य ऊपर से सरल किन्तु अन्दर से गहरा प्रभाव छोड़ने वाले हैं।

महादेवीजी के गद्य में इन शैलियों के अतिरिक्त सूक्ति, उद्धरण तथा आत्म-कथात्मक शैली का भी अवसरानुकूल प्रयोग किया गया है।

9. **महादेवी वर्मा के जीवन**—महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई० में फर्रूखाबाद में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गोविन्दप्रसाद वर्मा तथा माता का नाम श्रीमती हेमरानी देवी था। महादेवीजी के पिता एक विद्यालय में प्रधानाचार्य तथा नाना ब्रजभाषा के कवि थे। इन सबके प्रभाव ने महादेवी को एक सफल प्रधानाचार्या और भावुक कवयित्री बना दिया। संस्कृत से एम० ए० करने के पश्चात ये 'प्रयोग महिला विद्यापीठ' की प्रधानाचार्या हो गईं। सन् 1963 ई० में इन्होंने इस पद से अवकाश ग्रहण कर लिया।

महादेवी का साहित्यिक योगदान निम्नलिखित हैं—

1. **निबंध-संग्रह**—'शृंखला की कड़ियाँ', 'साहित्यकार की आस्था', 'क्षणदा', 'अबला और सबला।' इन रचनाओं में इनके विचारात्मक और साहित्यिक निबंध संगृहीत हैं।
2. **संस्मरण और रेखाचित्र**—'स्मृति की रेखाएँ', 'अतीत के चलचित्र', 'पथ के साथी' और 'मेरा परिवार।' इन संस्करणों और रेखाचितों में इनकेममतामय हृदय के दर्शन होते हैं। इनमें इनका गद्य चित्रात्मक, भावमय भी कवितापूर्ण हैं।
3. **आलोचना**—हिंदी का विवेचनात्मक गद्य।
4. **काव्य रचनाएँ**—'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सान्ध्यगीत', 'यामा' तथा 'दीपशिखा'। इन काव्यों में पीड़ा एवं रहस्यवादी भावनाएँ व्यक्त हुई हैं। 'यामा' पर इन्हें डेढ़ लाख रुपये का 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

वृत्त (जीवनी) एवं साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

मूल्याधारित प्रश्न

- **सोनजुही में .... खोज है।**

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**गिल्लू** लेखिका का नाम—**महादेवी वर्मा**।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—लेखिका रेखांकित अंश अपनी पालतू गिलहरी 'गिल्लू' के बारे में बात कर है, जो अब मर चुका है। वह कहती है कि जब गिल्लू जीवित था तो उसे जूही के पौधे में पीली कलियों की तलाश रहती थी, परंतु आज उस छोटे-से जीव अर्थात् गिल्लू की तलाश रहती है।

(iii) लेखिका सोनजुही के माध्यम से गिल्लू को याद करती है।

(iv) यहाँ लेखिका की अपनेपन, प्रेम की भावना की अभिव्यक्ति हुई है।

(v) यहाँ लेखिका की प्रेम की भावना गिल्लू के प्रति परिलक्षित होती है।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **यह कागभुशुंडि .... प्रयुक्त करते हैं।**

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**गिल्लू** लेखिका का नाम—**महादेवी वर्मा**।

(ii) पितरपक्ष में हमारे पुरखे कौओं के रूप में अवतीर्ण होते हैं।

(iii) पितृपक्ष में हम अपने पितरों की तृप्ति के लिए जब कौओं को भोजन कराते हैं तो उन्हें अत्यधिक श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए कौए को समादरित अति सम्मानित प्राणी कहा जाता है।

दूसरी ओर किसी को काले रंग के लिए प्राय: उसे ताना मारते हुए कौआ कहा जाता है। इसी प्रकार किसी की कर्कश आवाज को कौए की काँव-काँव कहा जाता है। इन अर्थों में कौए को अनादरित, अति अवमानित प्राणी कहा जाता है।

रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

- **मेरी अस्वस्थता .... समान लगता।**

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**गिल्लू** लेखिका का नाम—**महादेवी वर्मा**।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—गिल्लू काफी कुछ आत्मीयता का अनुभव करता है। जब लेखिका का शरीर रोगी होता है अथवा वह विषादग्रसत होती है, तो गिल्लू उसके समीप रहता है। उसके सिरहाने आकर वह अपने मुलायम और छोटे-छोटे पैरों से लेखिका के बालों को सहलाता है। ऐसा किए जाने पर लेखिका अतीव सुख का अनुभव करती है। जब गिल्लू वहाँ से चला जाता है तो लगता है कि किसी सेविका का अभाव हो गया है।

(iii) लेखिका ने यहाँ सुखानभूति भाव का परिचय दिया है।

(iv) 'परिचारिका' गिल्लू को कहा गया है।

भाषा एवं व्याकरण

1. निम्नलिखित में संधि-विच्छेद कीजिए और संधि का नाम भी बताइए—

उत्तर—

शब्द	संधि-विच्छेद	संधि का नाम
दुर्गुण	**दुः + गुण**	**विसर्ग संधि**
निर्भय	**निः + भय**	**विसर्ग संधि**
तपोवन	**तपः + वन**	**विसर्ग संधि**
निश्चल	**निः + चल**	**विसर्ग संधि**
दुष्कर	**दुः + कर**	**विसर्ग संधि**
सन्तोष	**सम् + तोप**	**व्यंजन संधि**
उच्चारण	**उत् + चारण**	**व्यंजन संधि**
तन्मय	**तत् + मय**	**व्यंजन संधि**
युद्ध	**युन् + ह**	**व्यंजन संधि**
विच्छेदन	**वि + छेदन**	**व्यंजन संधि**

2. निम्नलिखित समस्त पदों में समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम भी लिखिए—

उत्तर—

समस्त पद	समास-विग्रह	समास का नाम
यथाविधि	**विधि के अनुसार**	**अव्ययीभाव समास**
आजीवन	**जीवन भर**	**अव्ययीभाव**
देश-विदेश	**देश और विदेश**	**द्वंद्व समास**
चन्द्रमुख	**चंद्र के समान मुख वाली/वाला**	**कर्मधारय समास**
श्रद्धाकण	**श्रद्धा के कण**	**तत्पुरुष समास**
विश्रामगृह	**विश्राम के लिए गृह**	**तत्पुरुष समास**
यज्ञवेदी	**यज्ञ के लिए वेदी**	**तत्पुरुष समास**
निडर	**बिना डरे**	**अव्ययीभाव समास**
तहखाना	**तह (नीचे) का खाना (स्थान)**	**तत्पुरुष समास**
गुरुभक्ति	**गुरु के लिए भक्ति**	**तत्पुरुष समास**

3. इसी प्रकार के तीन अन्य शब्दों के उदाहरण दीजिए—

उत्तर—

(क) 'वाद' में 'अप' उपसर्ग जुड़कर 'अपवाद' शब्द बना है जिसका अर्थ 'वाद' से भिन्न है।
'आदर' में 'अन्' उपसर्ग जुड़कर 'अनादर' शब्द बना है जिसका अर्थ 'आदर' के विपरीत है।
'मानित' में 'सम्' उपसर्ग जुड़कर 'सम्मानित' शब्द बना है जिसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न हो गई हैं।

(ख) 'हरित' में 'इमा' प्रत्यय जुड़कर अर्थ बदल गया है, 'दूर' में 'स्थ' प्रत्यय जुड़कर अर्थ

बदल गया है तथा 'स्वर्ण' में 'इम' प्रत्यय जुड़कर अर्थ में विशेषता उत्पन्न हो गई है।

इसी प्रकार के तीन अन्य उदाहरण—

(क) उपसर्ग — **अपकार, अनाचार, सम्माननीय**

(ख) प्रत्यय — **लालिमा, समीपस्थ, अंतिम**

5 स्मृति (श्रीराम शर्मा)

(जन्म : सन् 1892 ई० - मृत्यु : सन् 1967 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

  1. (क) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग) 5. (घ) 6. (क) 7. (ग) 8. (क)

अभिकथन-करण सम्बन्धित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से लेखक को किसकी मार का डर था?**

उत्तर– (ग) केवल (iii)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. लेखक ____________ योग्यता का पहले से ही कायल था।

उत्तर– (ख) साँप की

2. ____________ 'शिकार' कृति के लेखक हैं

उत्तर– (क) रामकुमार वर्मा

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

उत्तर– (ग) (iii) (iv) (i) (ii)

सत्य/असत्य कथन

- **''भाई द्वारा दी गई चिट्ठियाँ लेखक से कुएँ में गिर गई थी'' निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (क) केवल (ii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

  1. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. स्वयं कीजिए।
2. बोलती प्रतिमा, जंगल के जीव।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर–

1. श्रीराम शर्मा का जन्म 23 मार्च, सन् 1892 ई० में मैनपुरी जनपद के किरथरा नाम गाँव में हुआ था।

2. हिन्दी के 'शिकार-साहित्य' के जनक का नाम श्रीराम शर्मा है।

3. पं० श्रीराम शर्मा ने 'विशाल भारत' नामक पत्र का सफल संपादन किया।

4. श्रीराम शर्मा की दो रचनाओं हैं—1. जंगल के जीव, 2. बोलती प्रतिमा।

5. शर्मा जी की दो शैलियाँ हैं—1. आत्मकथात्मक शैली 2. चित्रात्मक शैली।

6. शर्मा जी की शिकार-साहित्य से सम्बद्ध एक रचना का नाम है—प्राणों का सौदा।

7. **शर्मा जी के व्यक्तित्व**—शर्मा जी एक प्रखर एवं यशस्वी पत्रकार थे। शर्मा जी शिकार-साहित्य के जनक थे। ये अपने बाल्यकाल से ही अत्यंत साहसी और आत्मविश्वासी थे। इनमें राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। स्वतंत्रता आंदोलन में इन्होंने क्रांतिकारियों के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया।

मुख्य रचनाएँ

श्रीराम शर्मा की प्रमुख रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

1. **शिकार-साहित्य**—'प्राणों का सौदा', 'जंगल के जीव', 'बोलती प्रतिमा' और 'शिकार'।
2. **संस्मरण-साहित्य**—'सेवाग्राम की डायरी' और 'सन् बयालीस के संस्मरण'।
3. **जीवनी**—'गंगा मैया' और 'नेताजी'।
4. **सम्पादन**—'विशाल भारत' और 'प्रताप'।

भाषा-शैली—

पं० श्रीराम शर्मा की भाषा सहज, सरल, बोधगम्य, प्रवाहपूर्ण और प्रभावशाली है। शर्मा जी ने अपनी भाषा को सरल बनाने हेतु उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी शब्द प्रयोग किए हैं।

शर्मा जी ने अपने साहित्य में इन शैलियों का प्रयोग किया—

1. वर्णनात्मक शैली 2. आत्मकथात्मक शैली 3. चित्रात्मक शैली 4. विवेचनात्मक शैली।

8. **श्रीराम शर्मा का जीवन-परिचय**—

श्रीराम शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जनपद के किरथरा (मक्खनपुर के समीप) नामक गाँव में 23 मार्च, सन् 1892 ई० में हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा मक्खनपुर के विद्यालय में प्राप्त की। उच्च शिक्षा (बी०ए०) इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की।

इन्होंने शिकार-साहित्य और जीवनी-संस्मरण लेखन की विधाओं में उल्लेखनीय कार्य किया। पत्रकारिता के क्षेत्र में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने 'विशाल भारत' का कुशलतापूर्वक

सम्पादन किया। शिकार-साहित्य के प्रणेता इस महापुरुष का सन् 1967 ई० में एक लम्बी बीमारी के बाद देहान्त हो गया।

श्रीराम शर्मा ने अपना साहित्यिक-जीवन एक पत्रकार के रूप में आरम्भ किया। शर्मा जी एक प्रखर एवं यशस्वी पत्रकार थे। उन्होंने राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत साहित्य की रचना करके जन-मानस में जागृति उत्पन्न की। शर्मा जी शिकार-साहित्य के जनक थे। उन्होंने अपने शिकार-साहित्य से सम्बन्धित लेखों में घटना-विस्तार के साथ-साथ पशुओं के मनोविज्ञान का सम्यक् परिचय भी दिया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने संस्मरण, लेख, जीवनी आदि विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलाई है।

मुख्य रचनाएँ

श्रीराम शर्मा की प्रमुख रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

1. **शिकार-साहित्य**—'प्राणों का सौदा', 'जंगल के जीव', 'बोलती प्रतिमा' और 'शिकार'।
2. **संस्मरण-साहित्य**—'सेवाग्राम की डायरी' और 'सन् बयालीस के संस्मरण'।
3. **जीवनी**—'गंगा मैया' और 'नेताजी'।
4. **सम्पादन**—'विशाल भारत' और 'प्रताप'।

मूल्याधारित प्रश्न

- **हम दोनों भाई .... होता था।**

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**स्मृति**, लेखिका का नाम—**श्रीराम शर्मा**।

(ii) जाड़े से बचने के लिए लेखक ने कानों को धोती से बाँध लिया।

(iii) बबूल के डंडे की तुलना रायफल और विष्णु के वाहन गरुड़ से की गई है।

(iv) 'नारायण वाहन' का अर्थ यद्यपि विष्णु की सवारी (गरुड़) है, किंतु यहाँ उसका आशय 'यमदूत' अथवा 'यमराज' है।

(v) डंडा आम तोड़ने व साँपों से बचने में काम आता था।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **अकस्मात् जैसे .... गया होता।**

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**स्मृति**, लेखिका का नाम—**श्रीराम शर्मा**।

(ii) गोली लगने पर हिरन की दशा का वर्णन लेखक ने टोपी से चिट्ठियाँ निकलने की घटना के लिए किया है।

(iii) टोपी में से चिट्ठियाँ गिर रहा था।

(iv) लेखक की दशा ऐसी हो गई थी जैसे अचानक घास चरते हुए हिरन की आत्मा गोली से छत होने पर निकल जाती है और वह तड़पता रह जाता है।

(v) चिट्ठियों को पकड़ने की घबराहट में लेखक स्वयं झटके के कारण कुएँ में गिर सकता था।

रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

- **दृढ़ संकल्प .... निर्भर है।**

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**स्मृति**, लेखिका का नाम—**श्रीराम शर्मा**।

(ii) **रेखांकित अंशों की व्याख्या**—जब कोई किसी कार्य को करने का दृढ़-निश्चय कर लेता है, तब उसके मन की उलझन स्वयं ही समाप्त हो जाती है। मन में द्विविधा की स्थिति समाप्त हो जाने से उसे किसी भी बात का भय नहीं रह जाता है।

लेखक आगे कहता है कि जब कोई व्यक्ति मूर्खता या अत्यधिक बुद्धिमत्ता के कारण जान-बूझकर अपने आपको मौत के मुँह में ढकेल दे, तब ऐसा व्यक्ति पूरे संसार से अकेला ही टक्कर लेने के लिए तैयार हो जाता है। इस संघर्ष के परिणाम की चिंता उसे नहीं रहती। कर्म करना मनुष्य का कार्य है और फल देना ईश्वर के अधीन है। मैंने भी यही सोच लिया और कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का निश्चय कर लिया।

(iii) लेखक ने कुएँ में घुसकर चिट्ठियाँ निकालने का दृढ़-निश्चय कर लिया; अत: चिट्ठियों के संबंध में उसकी दुविधा दूर हो गई।

(iv) जब व्यक्ति किसी कार्य के विषय में दृढ़-निश्चय कर लेता है तो उस कार्य को करने अथवा न करने की दुविधारूपी बेड़ियाँ कट जाती हैं।

(v) व्यक्ति उस समय सारे संसार से लड़ने के लिए तैयार हो जाता है, जब उसे मौत का भय नहीं रह जाता है और वह स्वयं मौत चुन लेता है; क्योंकि उसे पता होता है कि उसकी लड़ाई का परिणाम उसकी मौत से अधिक कुछ नहीं हो सकता।

(vi) कर्म का फल व्यक्ति के अपने हाथ में नहीं होता, बल्कि ईश्वर के हाथ मेंहोता है। व्यक्ति के कर्मफल का संचालन करनेवाली वही एक मात्र शक्ति है।

भाषा एवं व्याकरण

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

उत्तर—

दुधारी तलवार कलेजे पर फेरना = **दोहरा दुःख देना**

वाक्य प्रयोग—धनीराम ने पहले तो अपनी गाय के बच्चे को बेच दिया, फिर उसने गाय को घर से निकाल दिया। इस प्रकार उसने अपनी गाय के कलेजे पर **दुधारी तलवार फेर दी**।

बेड़ियाँ कट जाना = **कष्ट दूर हो जाना**

वाक्य प्रयोग—किसी तरह बेटी की शादी हो गई और बेठे को नौकरी भी मिल गई अब जाकर सेवा लाल की **बेड़ियाँ कट गईं**।

पीठ दिखाना = **हारकर भाग जाना**

वाक्य प्रयोग—भारतीय सैनिकों की वीरता देखकर शत्रु-सैनिकों ने **पीठ दिखा दी**।

पैंतरा बदलना = **रणनीति में बदलाव करना**

वाक्य प्रयोग—युद्ध में एक योद्धा के भारी होने पर दूसरे योद्धा ने **पैंतरा बदल दिया**।

आँखें चार होना = **आमना-सामना होना**

वाक्य प्रयोग—जब सपेरे की अजगर से **आँखें चार हुईं** तो सपेरा घबरा गया।

बेहाल होना = **बुरा हाल होना**

वाक्य प्रयोग—जून के महीने में गरमी से सभी लोग **बेहाल हो जाते हैं।**

काम समाप्त होना = **अंत हो जाना**

वाक्य प्रयोग—डंडे के एक ही वार से साँप का **काम समाप्त हो गया।**

अकल चकराना = **कुछ समझ में न आना**

वाक्य प्रयोग—कल परीक्षा में प्रश्न-पत्र देखकर मेरी **अक्ल चकरा गई।**

टूट पड़ना = **जोरदार हमला करना**

वाक्य प्रयोग—अंग्रेजों की सेना पर लक्ष्मीबाई के सैनिक ऐसे **टूट पेड़** कि उनके छक्के छूट गए।

बिजली-सी गिरना = **घोर विपत्ति आना**

वाक्य प्रयोग—विवाह के कुछ वर्ष पशचात ही गंगाधर राव की मृत्यु होने पर रानी पर **बिजली-सी गिर गई।**

नारायण-वाहन हो = **चुकना काल बनना**

वाक्य प्रयोग—लेखक का डंडा साँपों के लिए **नारायण वाहन** हो चुका था।

आकाश-कुसुम होना = **पहुँच से बाहर होना**

वाक्य प्रयोग—आम आदमी के लिए अब विधायक का पद **आकाश कुसुम हो गया है।**

2. निम्नलिखित में संधि-विच्छेद कीजिए और संधि का नाम भी लिखिए—

उत्तर—

	संधि विच्छेद	संधि का नाम
परमार्थ	**परम + अर्थ**	**दीर्घ संधि**
रजनीश	**रजनी + ईश**	**दीर्घ संधि**
सुधीन्द्र	**सुधी + इंद्र**	**गुण संधि**
गणेश	**गण + ईश**	**गुण संधि**
पुष्पेन्द्र	**पुष्प + इंद्र**	**गुण संधि**
महोदय	**महा + उदय**	**गुण संधि**
महर्षि	**महा + ऋषि**	**गुण संधि**
सदैव	**सदा + एव**	**वृद्धि संधि**
प्रत्येक	**प्रति + एक**	**यण् संधि**
स्वागतम्	**सु + आगतम्**	**यण् संधि**
सदाचार	**सत् + आचार**	**व्यंजन संधि**
तन्मय	**तत् + मय**	**व्यंजन संधि**
सन्तान	**सम् + तान**	**व्यंजन संधि**
निष्काम	**निः + काम**	**विसर्ग संधि**

3. निम्नलिखित में समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए—

उत्तर—

समस्तपद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
प्रसन्नवदन	**प्रसन्न वदन (मुख) वाला**	**कर्मधारय समास**
वानर-टोली	**वानरों की टोली**	**संबंध तत्पुरुष**
विषधर	**विष को धारण करने वाला (सर्प)**	**बहुव्रीहि समास**
मृगसमूह	**मृगों का समूह संबंध**	**तत्पुरुष समास**
चक्षु:श्रवा	**चक्षु (आँखों) से सुनने वाला**	**बहुव्रीहि समास**

6 काका कालेलकर

(जन्म : सन् 1885 ई० मृत्यु : सन् 1981 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

1. (क) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ग) **6.** (क) **7.** (ग) **8.** (ग)

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (ख) (b) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए चित्र को देखिए और महात्मा गांधी तथा कस्तूरबा गांधी के आपसी सम्बन्धों के विषय में अपने विचार स्पष्ट कीजिए। आपके मतानुसार क्या इन्हें आदर्श पति-पत्नी माना जा सकता है? अपने उत्तर के लिए कारण दीजिए।**

उत्तर–हाँ, कस्तूबा और महात्मा गांधी को आदर्श पति-पत्नी माना जा सकता है, क्योंकि उन्होंने सदैव एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ दिया। मतभेद होने पर भी उन्होंने सहजता से मनमुटाव को दूर किया। गांधी की अनुपस्थित में कस्तूरबा ने उनके राजनीतिक कार्यों को भी बखूबी करने का प्रयास किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि गांधी व कस्तूरबा आदर्श पति-पत्नी थे।

कूट आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित में से लेखक किसके अध्यक्षीय भाषण लिखते हैं?

उत्तर– (ख) केवल (i)

2. निम्नलिखित में से किससे लेखक को वात्सल्य की आर्द्रता मिलती थी?

उत्तर– (घ) (iii) व (iv)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. कस्तूरबा के सामने उनका कर्तव्य —————— था।

उत्तर– (क) दीये के समान

2. सत्याग्रहाश्रम ———— संस्था थी।

उत्तर– (घ) महात्मा जी की

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

उत्तर– (क) (ii) (i) (iv) (iii)

सत्य/असत्य कथन

- **''कस्तूरबा अनपढ़ थीं'' निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (ख) केवल (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

  1. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

  2. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. कस्तूरबा गांधी जी के सभी कार्यों में सदैव उनके साथ रहीं। गांधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अनेक उपवास रखे। इन उपवासों में वे उपवासों में बेअक्सर उनके साथ रहीं और देखभाल करती रहीं। 'बा' ने गांधी जी के गिरफ्तार होने के बाद उनके कार्य जारी रखने की जिम्मेदारी उठाई। महात्मा गांधी के जेल जाने पर 'बा' ने दो-तीन बार राजकीय परिषदों या शिक्षण सम्मेलनों का अध्यक्ष-स्थान ग्रहण किया। उन्होंने गांधी जी का संदेश प्रसारित करने के लिए गाँवों का दौरा किया तथा लोगों का मनोबल बढ़ाया। गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन के दौरान 'बा' ने घूम-घूमकर स्त्रियों का उत्साहवर्धन किया। कस्तूरबा ने अपने अंतिम समय तक महात्मा गांधी का साथ दिया। इस प्रकार 'बा' एक पतिव्रता नारी थीं।

2. कस्तूरबा जी के पातिव्रत्य, कुटुंब वत्सलता, धार्मिकता, स्पष्टवादिता सादगी के गुणों ने हमें प्रभावित किया। आलस्य नाम की चीज उनके अंदर नहीं थी। आश्रम में कस्तूरबा लोगों के लिए माँ के समान थी। वे स्पष्टवादी थीं वे किसी कार्य के संबंध में साफ कह देती थीं कि यह कार्य मुझसे होगा, यह कार्य मुझसे नहीं होगा।

3. काका कालेलकर की मुख्य रचनाओं की सूची निम्नलिखित है—1. जीवन काव्य, 2. जीवन साहित्य, 3. बापू की झाकियाँ, 4. संस्मरण, 5. हिमालय प्रवास, 6. यात्रा, 7. लोकमाता, 8. उस पार के पड़ोसी, 9. धर्मोदय, 10. जीवन-लीला।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. काका कालेलकर का जन्म सन् 1885 ई० में महाराष्ट्र के सतारा जिले में हुआ था।

2. काका कालेलकर की प्रमुख शैली शैली विवेचनात्मक रही।

3. गांधी संग्रहालय के प्रथम संचालक काका कालेलकर थे।

4. राष्ट्रभाषा-प्रचार को राष्ट्रीय कार्यक्रम मानने वाले हिन्दी लेखक का नाम काका कालेलकर है।

5. काका कालेलकर हिन्दी के अतिरिक्त गुजराती भाषा में लिखते थे।

6. काका कालेलकर की दो रचनाओं के नाम हैं—1. जीवन साहित्य 2. हिमालय प्रवास।

7. 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा' पाठ की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. इस पाठ की भाषा-शैली विवेचनात्मक है।
2. भाषा अपेक्षाकृत संस्कृतनिष्ठ एवं परिष्कृत है।

8. काका कालेलकर की मातृभाषा मराठी थी।

9. **जीवन-परिचय**—

काका कालेलकर का जन्म सन् 1885 ई० में महाराष्ट्र के सतारा जिले के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। इनकी मातृभाषा मराठी थी। इनके पिता बालकृष्ण कालेलकर कोषाधिकारी थे। इनका हिन्दी, गुजराती, बांग्ला, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं पर भी अच्छा अधिकार था। इन्होंने बम्बई (मुम्बई) विश्वविद्यालय से बी०ए० किया और बड़ौदा के 'गंगानाथ भारतीय सार्वजनिक विद्यालय' के आचार्य पद पर नियुक्त हो गए। इनकी कार्य-पद्धति, उदात्त विचार तथा मधुर व्यवहार को देखकर इनको 'काका' का विशेषण दिया गया। काकाजी ने शान्ति निकेतन में अध्यापक, साबरमती आश्रम में प्रधानाध्यापक और बड़ौदा में राष्ट्रीयशाला के आचार्य पद पर भी कार्य किया। जिन राष्ट्रीय नेताओं तथा महापुरुषों ने राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार कार्य में विशेष दिलचस्पी ली थी, उनकी प्रथम पंक्ति में काका कालेलकर का नाम आता है। हिन्दी के अतिरिक्त गुजराती में भी इन्होंने स्तुत्य कार्य किया। इन्हें महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर और राजर्षि टंडन जी के निकट सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। स्वतन्त्रता सेनानी होने के कारण ये अनेक बार जेल भी गए। जब अंग्रेज गुप्तचर इनका पीछा कर रहे थे तब कुछ समय के लिए ये संन्यासी बनकर हिमालय की पहाड़ियों में छिप गए थे। सन् 1934 ई० में इन्होंने गुजरात विद्यापीठ में अध्यापन कार्य भी किया, बाद में दिल्ली आकर हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के कार्य में संलग्न हो गए।

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी होने के कारण इन्होंने अनेक बार जेल यात्रा की। ये संविधान सभा के सदस्य भी रहे। गांधी जी की मृत्यु के पश्चात् उनकी स्मृति में स्थापित गांधी संग्रहालय के प्रथम संचालक होने का गौरव भी इन्हीं को प्राप्त हुआ। ये सन् 1952 ई० से सन् 1957 ई० तक राज्यसभा के सदस्य तथा विभिन्न आयोगों के अध्यक्ष रहे। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने इनको 'गांधी पुरस्कार' से सम्मानित किया। भारत सरकार ने 'पद्म भूषण' की उपाधि से इनको विशेष सम्मानित किया। राष्ट्रभाषा का यह सेवक 21 अगस्त सन् 1981 ई० में हमेशा के लिए इस संसार से विदा हो गया।

काका साहब ने हिन्दी और गुजराती दोनों ही भाषाओं में अपनी लेखनी चलायी। इन्होंने गुजराती भाषा की अनेक रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया। अनेक मौलिक रचनाएँ भी हिन्दी को प्रदान कीं। इनका साहित्यकार रूप (हिन्दी में) मुख्यत: निबन्धकार, संस्मरण लेखक, जीवनी और यात्रावृत्त लेखक के रूप में उभरा।

प्रमुख रचनाओं—

काका कालेलकर की प्रमुख रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

1. **निबन्ध-संग्रह**—'जीवन-काव्य', 'जीवन-साहित्य' आदि।
2. **संस्मरण**—'बापू की झाँकियाँ' और 'संस्मरण'।
3. **यात्रावृत्त**—'हिमालय प्रवास', 'यात्रा', 'लोकमाता', 'उस पार के पड़ोसी' आदि।
4. **आत्मचरित**—'धर्मोदय', 'जीवन-लीला' आदि।
5. **सर्वोदय साहित्य**—'सर्वोदय'। इसमें इनके सर्वोदय सम्बन्धित विचार हैं।

मूल्याधारित प्रश्न

- **कस्तूरबा रामायण .... प्राप्त की।**

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**निष्ठामूर्ति कस्तूरबा**, लेखिका का नाम—**काका कालेलकर**।

(ii) कस्तूरबा जी के उच्च विचारों के कारण उनकी सती सीता से तुलना की गई।

(iii) लेखक के अनुसार यद्यपि शब्द संसार को हिलाने का सामर्थ्य रखते हैं परंतु कृति अर्थात् कर्म करने से ही कार्य पूर्ण होते हैं। अत: कृति की शक्ति अंतिम है।

(iv) महात्मा गांधी शब्द और कृति को जीवनभर अपनाते रहे।

(vi) शब्द और कृति में कृति श्रेष्ठ है। कस्तूरबा ने कृति को अपनाया।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **कस्तूरबा ने .... सुना देतीं।**

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**निष्ठामूर्ति कस्तूरबा**, लेखिका का नाम—**काका कालेलकर**।
संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के **गद्य खण्ड** के **'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **'काका कालेलकर'** हैं।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—कस्तूरबा ने अपने सदगुणों और कर्मनिष्ठा के कारण अपार ख्याति प्राप्त की। उन्होंने अपनी कर्मनिष्ठा के द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि छोटे-छोटे से कार्य को भी यदि पूर्ण निष्ठा के साथ किया जाए, तो उसका महत्व अधिक हो जाता है। बहुत-सी पुस्तकों को पढ़ लेने मात्र से ही कोई महान् नहीं बन सकता, वरन् अपने प्रत्येक कार्य को लगन, रुचि, तत्परता और निष्ठा के साथ संपन्न करने वाला व्यक्ति ही महान् बन सकता है। कस्तूरबा की कर्मनिष्ठा इसका स्पष्ट प्रमाण है। जिन लोगों को केवल पुस्तकीय ज्ञान होता है, वे कर्तव्य-अकर्तव्य के संबंध में प्राय: भ्रमित हो जाते हैं। उन्हें स्पष्ट रूप में यह ज्ञात नहीं हो पाता है कि उन्हें किसी स्थिति विशेष में क्या करना चाहिए और क्या नहीं। इसके विपरीत कर्मनिष्ठ लोगों के सामने इस प्रकार की संदेहजनक स्थिति कभी भी उत्पन्न नहीं होती।

(iii) लेखक ने कस्तूरबा के कर्तव्यनिष्ठा व स्पष्टवादिता के गुणों का उल्लेख किया है।

(iv) कृति का एक कण शुद्ध और रोचक साहित्य के पहाड़ों से अधिक मूल्यवान और क्रांतिमान होता है।

(vi) किसी भी विषय की चर्चा होने पर कस्तूरबा तुरंत अपना निर्णय सुना देती थीं कि 'मुझसे यही होगा' और 'यह नहीं होगा।' इसीलिए कस्तूरबा कर्तव्य-अकर्तव्य को लेकर कभी दुविधाग्रस्त

नहीं रहती थी।

रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

- **आज के .... मजबूत हैं।**

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**निष्ठामूर्ति कस्तूरबा**, लेखिका का नाम—**काका कालेलकर**।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—आज स्त्रियों के जीवन संबंधी प्रतिमान (आदर्श) बदल गए हैं। पुराने जमाने में स्त्री-शिक्षा पर बल नहीं दिया जाता था, बल्कि जो स्त्री अधिक लज्जाशील और घरेलू होती हैं, उसे ही सद्गृहिणी माना जाता था। इसीलिए कस्तूरबा अशिक्षित थीं। आज सभी के लिए स्कूली पढ़ाई एक आवश्यकता बन चुकी है। कस्तूरबा गांधी की तरह घर पर ही रहकर गृहस्थी में रहनेवाली नारी स्फूर्तिहीन और दक्षता से विरत मानी जाएगी।

(iii) अशिक्षित स्त्री का जीवन यशस्वी या कृतार्थ इसलिए नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसमें किसी तरह की महत्वाकांक्षा का उदय नहीं दिखाई देता।

- **सचमुच, उनमें .... होता है।**

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**निष्ठामूर्ति कस्तूरबा**, लेखिका का नाम—**काका कालेलकर**।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश **'निष्ठामूर्ति कस्तूबा'** नामक पाठ से अवतरित है। इसके लेखक **काका कालेलकर** हैं।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—जब कोई व्यक्ति छोटी-छोटी बातों में भी शुद्ध भाव से साधना करता है, तो उस साधना की शक्ति अलौकिक होती है। साधना के लिए मन, वचन और कर्म की शुद्धता बहुत ही आवश्यक है। छोटी-छोटी बातों में शुद्ध भावना से साधना करनेवाले व्यक्ति के सम्मुख चाहे कोई बड़ी बात ही क्यों न आ पड़े, उसका तेज व्यापक होकर कार्य करने लगता है। लेखक का मत है कि छोटी-छोटी बातों में सदाचारी रहनेवाले व्यक्ति को बड़ी बात करने पर अपने सदगुणों का केवल विस्तार भर करना होता है; अत: असाधारण परिस्थिति का सामना करने में भी उसे कोई कठिनाई नहीं होती। यही गुण माता कस्तूरबा में विद्यमान थे; अत: वे अपने सदगुणों के विस्तार से प्रत्येक कठिनाई का सामना कर लेती थीं।

(iii) छोटी-छोटी बातों में भी शुद्ध भाव से जो साधना की जाती है, उसका तेज लोकोत्तरी होता है।

(iv) चरित्रवान व्यक्ति का यह गुण होता है कि वह कितना भी गंभीर प्रसंग आने पर अथवा जीवन की परीक्षा का प्रश्न उपस्थिति होने पर विचलित नहीं होता, बल्कि अपने चारित्रिक सदगुणों को विस्तृत भर करता है और वह अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त कर लेता है।

(v) सद्गुणों की शिक्षा परिवार में प्राप्त होती है।

(vi) असाधारण मौका और कसौटी आ पड़ने पर कस्तूरबा अपने स्वाभाविक कौटुम्बिक सद्गुणों को विस्तार देकर सफलता प्राप्त कर लेती थीं। उन्होंने जीवनभर यही किया।

भाषा एवं व्याकरण

1. निम्नलिखित पदों में सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिए—

उत्तर—

शब्द	**संधि-विच्छेद**	**संधि का नाम**
निर्भर्त्सना	**निर् + भर्त्सना**	**व्यंजन संधि**
सत्याग्रह	**सत्य + आग्रह**	**दीर्घ संधि**
प्रत्युत्पन्न	**प्रति + उत्पन्न**	**यण् संधि**
महत्त्वाकांक्षा	**महत्व + आकांक्षा**	**दीर्ध संधि**
निस्तेज	**निः + तेज**	**विसर्ग संधि**
गुणाकार	**गुण + आकार**	**दीर्घ संधि**
स्वागत	**सु + आगत**	**यण् संधि**
लोकोत्तर	**लोक + उत्तर**	**गुण संधि**
एकाक्षरी	**एक + अक्षरी**	**दीर्घ संधि**
दिगम्बर	**दिक + अम्बर**	**व्यंजन संधि**
पित्राज्ञा	**पितृ + आज्ञा**	**यण् संधि**
महोत्सव	**महा + उत्सव**	**गुण संधि**

2. निम्नलिखित विदेशज शब्दों के लिए हिन्दी शब्द लिखिए—

उत्तर—

विदेशज शब्द	**हिंदी शब्द**
हासिल	**प्राप्त**
खुद	**स्वयं**
असरदार	**प्रभावी**
आबदार	**हवावाला**
कायम	**स्थिर**
जिद्द	**हठ**
कतई	**बिल्कुल**

3. निम्नलिखित में समास-विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए—

उत्तर—

समस्तपद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
जीवन–सिद्धि	**जीवन के लिए सिद्धि**	**संप्रदान तत्पुरुष**
राष्ट्रमाता	**राष्ट्र की माता**	**संबंध तत्पुरुष**
माँ–बाप	**माँ और बाप**	**द्वंद्व समास**
देशसेवा	**देश के लिए सेवा**	**संप्रदान तत्पुरुष**
बन्धनमुक्त	**बंधन से मुक्त**	**करण तत्पुरुष**

प्राणघातक	**प्राण के लिए घातक**	**संपदान तत्पुरुष**
शब्दशास्त्र	**शब्दों का शास्त्र**	**संबंध तत्पुरुष**
धर्मनिष्ठा	**धर्म में निष्ठा**	**अधिकरण तत्पुरुष**

7 धर्मवीर भारती

(जन्म : सन् 1926 ई० मृत्यु : सन् 1997 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

1. (ख) 2. (क) 3. (क) 4. (ख) 5. (क) 6. (क) 7. (क) 8. (ख)

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

कूट आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित में से क्या सोमेशवर की घाटी के उत्तर में है?

उत्तर– (ग) केवल (iv)

2. निम्नलिखित में से क्या दर्रों में से सिर्फ छू-छू करते हुए बहते रहते हैं?

उत्तर– (घ) (iii) व (iv)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. ____________ धर्मवीर भारती को पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त हुआ

उत्तर– (घ) सन् 1972 ई० में

2. ____________ धर्मवीर भारती का प्रसिद्ध उपन्यास है

उत्तर– (क) गुनाहों का देवता

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

उत्तर– (ग) (iii) (iv) (i) (ii)

सत्य/असत्य कथन

- **''ठेले पर हिमालय' शीर्षक के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (क) केवल (b) (i)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

  1. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

2. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. **डॉ० धर्मवीर भारती ने विविध विधाओं में साहित्य की रचना की है। उनकी उल्लेखनीय रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—**
    1. **निबन्ध-संग्रह**—'कहनी-अनकहनी', 'ठेले पर हिमालय' और 'पश्यन्ती'।
    2. **आलोचना**—'मानव-मूल्य' और 'साहित्य'।
    3. **उपन्यास**—'सूरज का सातवाँ घोड़ा' और 'गुनाहों का देवता'।
    4. **कहानी-संग्रह**—'चाँद और टूटे हुए लोग'।
    5. **नाटक**—'नदी प्यासी थी'।
    6. **एकांकी-संग्रह**—'नीली झील'।
    7. **सम्पादन**—'संगम' और 'धर्मयुग'।
    8. **अनुवाद**—'देशान्तर'।
    9. **काव्य**—'कनुप्रिया', 'अंधा युग', 'ठण्डा लोहा' और 'सात गीत वर्ष'।
2. भारती जी ने निबंध, आलोचना, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई।
3. हिमालय के दर्शनीय स्थलों की सूची—1. केदारनाथ, 2. ब्रदीनाथ, 3. कैलाश मानसरोवर 4. अमरनाथ 5. श्रीनगर 6. जोशीमठ।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर, सन् 1926 ई० को इलाहाबाद में हुआ था।
2. 'ठेले पर हिमालय' निबंध साहित्यिक विधा से सम्बन्धित है।
3. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास साहित्यिक विधा से सम्बन्धित है। इसके लेखक का नाम धर्मवीर भारती है।
4. भारती जी की दो मुख्य शैलियों के नाम हैं—1. भावात्मक शैली, 2. वर्णनात्मक शैली।
5. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' रचना के लेखक का नाम धर्मवीर भारती है।
6. डॉ० धर्मवीर भारती की मुख्य कृतियाँ हैं—1. कहनी-अनकहनी, 2. ठेले पर हिमालय, 3. पश्यन्ती, 4. मानव-मूल्य, 5. साहित्य, 6. सूरज का सातवाँ घोड़ा, 7. गुनाहों का देवता, 8. चाँद और टूटे हुए लोग, 9. नदी प्यासी थी, 10. नीली झील, 11. संगम, 12. धर्मयुग, 13. कनुप्रिया, 14. अंधायुग, 15. ठंडा लोहा, 16. सात गीत वर्ष।

    भारती जी की भाषा-शैली की विशेषताएँ–

    भारतीजी की रचनाओं में संस्कृतनिष्ठ परिमार्जित भाषा का प्रयोग मिलता है। परिष्कृत भाषा होने पर भी उसमें सरलता, सहजता, सजीवता तथा आत्मीयता का पुट है। देशज, तत्सम, तद्भव तथा उर्दू-अंग्रेजी के शब्दों द्वारा भाषा में व्यावहारिकता उत्पन्न होकर यथार्थता आ गई है। नाटकों में

नाटकीयता लाने हेतु तथा उपन्यासों में सजीवता के लिए मुहावरों तथा लोकोक्तियों ने भाषा को लचीला बना दिया है। कहीं-कहीं भाषा अलंकृत भी हो गई है। सम्पूर्ण रूप से भारतीजी की भाषा में गति, बोधगम्यता तथा रमणीयता है।

7. जीवन-परिचय

साहित्यकार धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर, सन् 1926 ई० को इलाहाबाद में हुआ था। बचपन से ही इनकी साहित्य में रुचि थी। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम०ए० और पी-एच०डी० हिन्दी विषय लेकर उपाधियाँ प्राप्त कीं तथा कुछ वर्षों तक वहीं से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र 'संगम' का सम्पादन किया। कुछ समय तक ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक भी रहे। वहाँ भी ये अधिक समय तक न रहे। साहित्य सेवा की प्रबल भावना ने इनको स्वतन्त्र लेखन के लिए प्रेरित किया और ये जीवनपर्यन्त हिन्दी-साहित्य की सेवा में लीन रहे। सन् 1959 ई० में ये बम्बई (मुम्बई) से प्रकाशित होने वाले हिन्दी के प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'धर्मयुग' के सम्पादक रहे। इनकी साहित्य-साधना से प्रभावित होकर भारत सरकार ने इन्हें सन् 1972 ई० में 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया। दिनांक 4 सितम्बर, सन् 1997 ई० को कला का यह सिपाही इस असार-संसार से विदा लेकर परलोकवासी हो गया।

डॉ० भारती के जीवन पर प्रयाग के साहित्यिक वातावरण का प्रभाव बाल्यकाल से ही पड़ने लगा था। वे इलाहाबाद के निवासी थे। इलाहाबाद में ही उन्हें निराला, पंत, महादेवी वर्मा और डॉ० रामकुमार वर्मा जैसे महान् साहित्यकारों के सम्पर्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इससे उन्हें साहित्य-सृजन की प्रेरणा प्राप्त हुई और उनकी प्रतिभा में भी निखार आया। भारती जी बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक, एकांकी, आलोचना और काव्य-सृजन के क्षेत्र में अपनी विलक्षण साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने जिस भी साहित्यिक विधा का स्पर्श किया वही कंचन बन गयी। भारती जी ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को उठाते हुए कुछ बड़े ही जीवन्त चरित्र प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने अपने निबन्धों में मानव और प्रकृति से सम्बन्धित आकर्षक और मोहक दृश्यों के साथ-साथ समाज की कुरीतियों पर भी तीखा व्यंग्य किया है। आलोचक के रूप में उनका तटस्थ रूप उभरकर सामने आया है। इस प्रकार भारतीजी का साहित्यिक अवदान अनूठा है।

मुख्य रचनाओं

डॉ० धर्मवीर भारती ने विविध विधाओं में साहित्य की रचना की है। उनकी उल्लेखनीय रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

1. **निबन्ध-संग्रह**—'कहनी-अनकहनी', 'ठेले पर हिमालय' और 'पश्यन्ती'।
2. **आलोचना**—'मानव-मूल्य' और 'साहित्य'।
3. **उपन्यास**—'सूरज का सातवाँ घोड़ा' और 'गुनाहों का देवता'।
4. **कहानी-संग्रह**—'चाँद और टूटे हुए लोग'।
5. **नाटक**—'नदी प्यासी थी'।
6. **एकांकी-संग्रह**—'नीली झील'।

7. **सम्पादन**—'संगम' और 'धर्मयुग'।

8. **अनुवाद**—'देशान्तर'।

9. **काव्य**—'कनुप्रिया', 'अंधा युग', 'ठण्डा लोहा' और 'सात गीत वर्ष'।

मूल्याधारित प्रश्न

1. इन धीरे-धीरे .... झाँक रहा है।

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**ठेले पर हिमालय**, लेखिका का नाम—**धर्मवीर भारती**।

(ii) धीरे-धीरे बादल खिसक रहे थे।

(iii) बादलों के बीच हिमालय का शिखर झाँक रहा था।

(iv) कत्यूर की घाटी के पार हिमालय था।

(v) लेखक ने हिमालय को नगाधिराज, पर्वत सम्राट कहकर सम्बोधित किया है।

2. पर उस .... का जादू।'

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**ठेले पर हिमालय**, लेखिका का नाम—**धर्मवीर भारती**।

संदर्भ-प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य-खंड'** के **'ठेले पर हिमालय'** नामक पाठ से उद्धृत हैं। इसके लेखक **धर्मवीर भारती** हैं।

(ii) हिम-दर्शन से लेखक की सारी खिन्नता, निराशा, थकावट दूर हो गई।

(iii) सभी बादलों से ढकी हिमाच्छादित पर्वत चोटी का सौंदर्य फिर से देखने के लिए आकुल हो उठे।

(iv) बादलों से ढकी हिमालय की सुंदरता की तुलना के मुख पर घूँघट डाले नई-नवेली दुल्हन से की गई है।

(v) हिमाच्छादित पर्वत-चोटी के सौंदर्य दर्शन की उत्सुकता के कारण लेखक का दिल बुरी तरह से धड़क रहा था।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

1. हमारे मन .... है-चिरंतन हिम।

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**ठेले पर हिमालय**, लेखिका का नाम—**धर्मवीर भारती**।

संदर्भ-प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य-खंड'** के **'ठेले पर हिमालय'** नामक पाठ से उद्धृत हैं। इसके लेखक **धर्मवीर भारती** हैं।

(ii) कुछ विदेशियों ने हिमालय की बर्फ को चिरंतन हिम कहा है।

(iii) हिमालयी सौंदर्य को देखकर लेखक के मन में जो भावनाएँ उत्पन्न हो रही थीं, लेखक उनको शब्दों में व्यक्त कर पाने में स्वयं को असमर्थ पा रहा है, अपनी इसी असमर्थता को उसने खरोंच और पीर कहा है।

(iv) लेखक हिमाच्छादित पर्वत-शिखर के सौंदर्य की अनुभूति को कल्पना द्वारा व्यक्त कर रहा हे कि उस सौंदर्य का संवेदन (अनुभूति) कुछ-कुछ ऐसा था, मानो हम बर्फ की चट्टान के सामने खड़े हों और उससे उठती हुई भाप हमारे माथे को छूकर शीतलता प्रदान कर रही हो। अपनी इसी अस्पष्ट अनुभूति को लेखक ने धुँधला-संवेदन कहा है।

(v) पुराने योगी और साधक हिमालय पर तपस्या करने क्यों आते थे?

2. सूरज डूबने लगा .... डूब गए हों।

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**ठेले पर हिमालय**, लेखिका का नाम—**धर्मवीर भारती**।

संदर्भ-प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य-खंड'** के **'ठेले पर हिमालय'** नामक पाठ से उद्धृत हैं। इसके लेखक **धर्मवीर भारती** हैं।

गद्यांश के पाठ का नाम—**ठेले पर हिमालय**, लेखिका का नाम—**धर्मवीर भारती**।

(ii) अँधेरा होने के पश्चात् लेखक और उसके सहयात्रियों ने चाय पी।

(iii) सूर्यास्त के दृश्य हो देखने के पश्चात सभी यात्री गुमसुम और चुपचाप हो गए।

रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

1. पर धीरे-धीरे .... -''हिम्मत है? ऊँचे उठोगे?''

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—ठेले पर हिमालय, लेखिका का नाम—धर्मवीर भारती।

संदर्भ-प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के **'गद्य-खंड'** के **'ठेले पर हिमालय'** नामक पाठ से उद्धृत हैं। इसके लेखक **धर्मवीर भारती** हैं।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्याकौसानी में रात के समय चाँद निकलने पर जब भारतीजी ने हिमालय की गगनचुंबी बर्फ से ढकी चोटियों को देखा तो वे अपने मन के अंदर अपनी चेतना के विराट् होते हुए स्वरूप की अनुभूति करने लगे। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उनके अन्तर्मन में छाए अज्ञानरूपी बादल भी छँट रहे हैं और कुछ ऐसा उभरकर सामने आ रहा है; जिसकी प्रकृति हिमालय के इन शिखरों के समरूप है।** उनकी चेतना हिमालय की चोटियों के समान ही ऊँचा उठने की चेष्टा करने लगी, जिससे उन चोटियों से उनके स्तर पर ही मिला जा सके। उनके मन में ऐसी अनुभूति होने लगी, मानो हिमालय उनका बड़ा भाई हो और वह स्वयं ऊँचे चढ़कर एवं उन्हें कुंठाग्रस्त व लज्जानुभूति की मनोदशा में नीचे देखकर स्नेहपूर्ण चुनौती देते हुए कह रहा हो''हिम्मत है? ऊँचे उठोगे?''

(iii) लेखक के मन पर हिमालय का यह प्रभाव पड़ा कि उसके मन की शंकाएँ समाप्त हो गई।

(iv) यहाँ बादल 'संदेहों, शंकाओं' के प्रतीक हैं।

(v) बड़े भाई का कर्तव्य होता है कि वह पहले उन्नति का उदाहरण प्रस्तुत करके छोटे भाई का हाथ पकड़कर उसे भी अपने बराबर लाकर खड़ा कर दे। हिमालय बहुत ऊँचा उठ गया है, लेखक उसके सामने अपने आपको बहुत छोटा अनुभव कर रहा है। उसे लगा रहा है कि मानो हिमालय बड़े भाई की तरह उससे कह रहा है कि आओ मेरे समान ऊँचे उठकर मेरे बराबर में

आकर खड़े हो जाओ।

(vi) हिमालय लेखक की हिम्मत अथवा साहस को देखकर उसे चुनौती दे रहा है कि यदि हिम्मत रखते हो तो मेरे बराबर ऊँचा उठकर दिखाओ।

1. आज भी .... क्या करूँ?''

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ का नाम—**ठेले पर हिमालय**, लेखिका का नाम—**धर्मवीर भारती**।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—यह ध्यान आते ही मेरे मन में यह लालसा उत्पन्न होती है कि मैं उस ऊँचे हिमालय से पुकार-पुकारकर कह दूँ कि हे बंधु हिमालय! मैं फिर, लौटकर उन्हीं ऊँचाइयों पर आऊँगा; क्योंकि वही मेरा वास्तविक निवास-स्थल है। मेरा मन वहीं रमता है। इन्हीं ऊँचाइयों पर आकर मेरे सब ताप शीतल हो जाते हैं। मनको एक शीतल हो जाते हैं। मनको एक शीतल व सुखद स्पर्श-सा मिलता है, जिससे मुझे तृप्ति की अनुभूति होती है।

(iii) लेखक की स्मृतियाँ ठेले पर लदी बफ को देखकर जागृत हो गईं।

(iv) लेखक का मन बार-बार हिमालय जाने को करता है।

(v) लेखक हिमालय को संदेश भेजना चाहता है।

(vi) लेखक की मन:स्थिति किस प्रकार की हो गई है कि लेखक चौराहों पर खड़े ठेले पर लदकर निकलने वाली बर्फ को ही देखकर उसे हिमालय समण्कर मन बहला लेता है।

भाषा एवं व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्गों को अलग करके लिखिए—

उत्तर—

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
प्रख्यात	**प्र**	**ख्यात**
अनुगृह	**अनु**	**गृह**
निरपराध	**निर**	**अपराध**
अध्यक्ष	**अधि**	**अक्ष**
प्रतिद्वन्द्वी	**प्रति**	**द्वंद्वी**
अनुशासन	**अनु**	**शासन**
खुशकिस्मत	**खुश**	**किस्मत**
अत्याधुनिक	**अति**	**आधुनिक**
सन्देश	**सम्**	**देश**
सुललित	**सु**	**ललित**
अनासक्ति	**अन्**	**आसक्ति**
प्रतिक्रिया	**प्रति**	**क्रिया**
सुकुमार	**सु**	**कुमार**

लापरवाह	**ला**	**परवाह**
निरावृत्त	**निर**	**आवृत्त**

2. निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग करके लिखिए—

उत्तर—

शब्द	**प्रत्यय**	**मूल शब्द**
कुंठित	**इत**	**कुंठा**
कष्टप्रद	**प्रद**	**कष्ट**
कंकड़ीली	**ईली**	**कंकड़**
शीतलता	**ता**	**शीतल**
चतुराई	**आई**	**चतुर**
बड़प्पन	**पन**	**बड़ा**
मनुष्यत्व	**त्व**	**मनुष्य**
शक्तिमान	**मान**	**शक्ति**
ऊँचाई	**आई**	**ऊँचा**
कल्याणप्रद	**प्रद**	**कल्याण**
महानता	**ता**	**महान**

3. निम्नलिखित में से नियम संधि-विच्छेद कीजिए और संधि का नाम भी लिखिए—

उत्तर—

शब्द	**संधि-विच्छेद**	**नियम**	**संधि का नाम**
हर्षातिरेक	**हर्ष + अतिरेक**	**अ + आ = आ**	**दीर्घ संधि**
रवीन्द्र	**रवि + इंद्र**	**इ + इ = ई**	**दीर्घ संधि**
अत्याधुनिक	**अति + आधुनिक**	**इ + आ = या**	**यण् संधि**
अनासक्ति	**अन + आसक्ति**	**अ + आ = आ**	**दीर्घ संधि**
निष्कलंक	**निः + कलंक**	**विसर्ग + व्यंजन क = ष् का लोप**	**विसर्ग संधि**
नगाधिराज	**नग + अधिराज**	**अ + अ = आ**	**दीर्घ संधि**
सोमेश्वर	**सोम + ईश्वर**	**अ + ई = ए**	**गुण संधि**

4. निम्नलिखित में समास-विग्रह कीजिए और बताइए कि इनमें कौन-सा समास है—

उत्तर—

समस्तपद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
शीर्षासन	**शीर्ष के द्वारा आसन**	**करण तत्पुरुष समास**
पर्वतमाला	**पर्वत की माला**	**संबंध तत्पुरुष समास**

प्रसन्नवदन	**प्रसन्न वदन वाला**	**कर्मधारय समास**
तन्द्रालस	**तंद्रा से पूर्ण आलय**	**करण तत्पुरुष समास**
जलराशि	**जल की राशि संबंध**	**तत्पुरुष समास**
हिमालय	**हिम का आलय**	**संबंध तत्पुरुष समास**

8 रवींद्रनाथ टैगोर

(जन्म : सन् 1861 ई० - मृत्यु : सन् 1941 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

  1. (ग) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (क) **6.** (घ) **7.** (घ) **8.** (घ)

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **निम्नांकित चित्र को देखिए और बताइए कि इस चित्र को देखकर आप क्या निष्कर्ष निकालते हैं? क्या रटना ही परीक्षा में हमें अच्छे अंक दिला सकता है और क्या हम इसे वास्तविक शिक्षा कह सकते हैं?**

उत्तर–नहीं, केवल रटना ही परीक्षा में अच्छे अंक नहीं दिला सकता। हमें विषय की व्यावहारिक समझ होनी चाहिए। अत रटने को वास्तविक शिक्षा नहीं कह सकते हैं।

कूट आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित में से तोते को चुतकी से किसने दबाया?

उत्तर– (ग)राजा ने

2. निम्नलिखित में से पिंजरे में क्या था?

उत्तर– (ख) सिर्फ शिक्षा

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. राजा से ____________ ने पिंजरा बनवाने के लिए कहा

उत्तर– (क) राज–पण्डित ने

2. ____________ तोते को देखने शिक्षाशाला गए

उत्तर– (ख) राजा

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

उत्तर– (घ) (ii) (i) (iv) (iii)

सत्य/असत्य कथन

- **''तोता अधमरा हो गया'' निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर (घ) केवल (iv)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

 1. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य

 2. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गीतांजलि व 'गोला' नामक दो ग्रन्थों की रचना की।

2. रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने हिन्दी भाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी व बांग्ला भाषाओं में अपने ग्रन्थों की रचना की।

3. टैगोर द्वारा रचित 'काबुलीवाला' कहानी का सारांश

एक काबुलीवाला था जो काबुल से कलकत्ता आकर काजू, बादाम, किशमिश आदि बेचता है। लेखक की पाँच वर्षीय बेटी उसके पास खेलती रहती है। मिनी बहुत बातूनी व चंचल लड़की है। वह काबुलीवाले की झोली को देखकर डर जाती है, उसे लगता है कि वह शायद छोटे-छोटे बच्चों को इस झोली में छिपाए रहता है। लेखक ने काबुलीवाले, जिसका नाम रहमत है, को बुलाकर कुछ सामान खरीदा। कुछ दिनों बाद मिनी का डर रहमत से खत्म हो गया। अब वह मिनी के पास रोज ही आने लगा। मिनी को पिस्ता बादाम देकर उसके नन्हें हिल पर विश्वास पा लिया था। दोनों में कुछ बँधी हुई बातें और हँसी मजाक चलते रहते।

कुछ दिनों बाद लेखक भी रहमत से खूब घुलमिल गया था लेकिन उसकी पत्नी काबुलीवाले के प्रति संशक्ति रहती। कुछ समय बाद लेखक को अपने घर के सामने खूब शोर सुनाई देता है। वह बाहर आकर देखता है कि कुछ पुलिसवाले रहमत को पकड़े चले आ रहे हैं। उसने किसी को उधार दिए पैसे के कारण उसे चाकू मार दिया था।

चाकू मारने के अपराध में रहमत को कई वर्षों की जेल हो गई। लेखक भी कुछ समय बाद रहमत को भूल गया और उसकी बेटी मिनी भी भूल गई। उम्र बढ़ने के साथ-साथ एक-एक करके उसकी सखियाँ जुटने लगीं। कुछ वर्षों बाद मिनी का विवाहोत्सव आया। लेखक मिनी बेटी की विदाई के अवसर पर बड़ा गमनीन था। तभी वहाँ काबुलीवाला रहमत आ गया। पहले तो लेखक उसे पहचान नहीं पाया, बाद में पहचानने पर उसने बताया कि वह मिनी से मिलना चाहता है। उसके लिए वह वाही से एक डिब्बा अंगूर, किशमिश, बादाम लेकर आया हुआ है। लेखक रहमत को भगाने की कोशिश करता है, लेकिन रहमत बताता है कि उसकी भी मिनी की तरह एक छोटी बेटी है, जिसे वह अपने मुलक में छोड़कर आया हुआ है। इस बात पर लेखक द्रवित होकर अंदर से वधू केरूप में सभी मिनी को बुलाता है। काबुलीवाला वधू के वेश में मिनी को देखकर सकपका जाता है। वह मिनी को अब तक छोटी बच्ची ही मान रहा है। अब उसे समझ में आया कि उसकी बेटी भी इसी तरह बड़ी हो गई होगी। जेल में रहने के दौरान रहमत पर क्या पीती होगी, यह तो वही जान सकता है। उसका चेहरा दु:ख और चिंता से भर उठा। लेखक ने

रहमत को पैसे हुए कहा कि तुम अपने देश बेटी के पास लौट जाओ। तुम्हारा मिलन-सुख मिनी का कल्याण करें।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म सन् 1861 ई० में हुआ था।

2. रवीन्द्रनाथ टैगोर ने संगीत की एक नई शैली को जन्म दिया,जो उनके नाम पर रवींद्र संगीत कहलाई।

3. टैगोर जी ने इन विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है—काव्य, कहानी, उपन्यास, पत्र, नाटक, लघुकाि।

4. टैगोर जी की प्रथम कविता 'तत्वबोधिनी' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई।

5. टैगोर जी ने सन् 1901 में 'शांति निकेतन विद्यालय' की स्थापना की।

6. रवीन्द्रनाथ टैगोर 'साधना' नामक पत्रिका के सम्पादक बने।

7. 'तोता' कहानी प्रतीकात्मक व्यंग्य शैली की रचना है।

8. सन् 1912 में लन्दन की इण्डियन सोसायटी ने टैगोर जी की 'गीतांजलि' नामक पुस्तक को प्रकाशित किया।

9. टैगोर को सन् 1913 में 'नोबेल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

10. टैगोर जी 'नोबेल पुरस्कार' से वर्ष 1913 से सम्मानित किया गया था।

11. 'तोता' कहानी की प्रतीकात्मकता आधुनिक शिक्षा पर व्यंग्य है।

12. जीवन-परिचय

साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म सन् 1861 ई० में कलकत्ता (अब कोलकाता) के जोड़ासाँको नामक स्थान पर एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम देवेन्द्रनाथ टैगोर तथा माता का नाम शारदा देवी था। इनके पिता तथा दादा अत्यन्त सम्पन्न व्यक्ति थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा बांग्ला भाषा में घर पर ही आरम्भ हुई। प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् इनका प्रवेश पहले कलकत्ता के ओरिएण्टल सेमिनार विद्यालय और फिर नार्मल विद्यालय में कराया गया। विद्यालयीय वातावरण में इनका मन नहीं लगता था। इनको एकान्त बहुत प्रिय था। विद्यालयीय शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् इनके पिता ने बैरिस्टरी की पढ़ाई के लिए इन्हें इंग्लैण्ड भेजा, किन्तु ये बैरिस्टर की डिग्री पूरी किए बिना कलकत्ता लौट आए।

रवीन्द्रनाथ टैगोर साहित्यकार, विचारक, देशभक्त और उच्चकोटि के दार्शनिक थे। सरस्वती के इस महान् आराधक का 7 अगस्त, 1941 ई० को निधन हो गया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। विद्यालय में रुचि न होने के बाद भी साहित्य के प्रति इनका अत्यधिक लगाव था। आठ वर्ष की अल्पायु में इन्होंने पहली कविता लिखी और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। 'गीतांजलि' की रचना करके ये विश्वकवि बन गए। इसी कृति के लिए इन्हें सन् 1913 ई० में साहित्य का सर्वाधिक प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1940 में, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी ने उन्हें शान्ति निकेतन में आयोजित एक विशेष समारोह में डॉक्टरेट

ऑफ लिटरेचर से सम्मानित किया था। इन्होंने साहित्य की निबन्ध, काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि सभी मुख्य विधाओं में साहित्य-रचना की। साहित्य के साथ-साथ इन्होंने नृत्य, संगीत, चित्रकला एवं अभिनय में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। साहित्य एवं संगीत की कितनी ही नई शैलियाँ इन्होंने विकसित कीं। आज कला एवं नृत्य-संगीत में इनके द्वारा विकसित नई शैलियाँ इन्हीं के नाम से जानी जाती हैं। बांग्ला भाषा में इनके द्वारा लिखे गए दो हजार से अधिक गीत बांग्लाभाषियों के द्वारा अत्यधिक रुचि के साथ सुने जाते हैं। ये जितनी उच्चकोटि के साहित्यकार थे, उतनी ही उच्चकोटि के अभिनेता (नाटककार), गीतकार, संगीतकार, चित्रकार और नृत्य कलाकार थे। बांग्ला के मौलिक लेखन के अतिरिक्त इन्होंने कितनी ही कृतियों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया। टैगोर जी की अधिकांश कविताएँ, कहानियाँ, गीत और उपन्यास बाल-विवाह और दहेज जैसे उस समय के दौरान चल रही सामाजिक बुराइयों के बारे में होते थे। उनके द्वारा लिखे गए गीत भी काफी प्रचलित थे। उनके गीतों को 'रवीन्द्र गीत' कहा जाता है। भारत का राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' और बांग्लादेश का राष्ट्रगान 'आमार सोनार बांग्ला' भी इन्हीं की विश्वप्रसिद्ध रचनाएँ हैं। विश्व में केवल इन्हीं को दो राष्ट्रों के राष्ट्रगान का लेखक होने का गौरव प्राप्त है। टैगोरजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। इन्होंने साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं में साहित्य-रचना की।

प्रमुख रचनाओं

इनकी प्रमुख रचनाओं का परिचय इस प्रकार है—

काव्य-कृतियाँ—गीतांजलि, रवीन्द्र संगीत, निरूपमा, करना मुझको क्षमा, मानसी, सोनार तरी, नैवेद्य, खेया, पूरबी, बलाका, आरोग्य शेषलेखा, क्षणिका, चित्रा, भारत प्रशस्ति, आज दखिन पवन, चुप-चुप रहना सखी, जन्मकथा आदि।

कहानी—काबुलीवाला, अपरिचिता, अनमोल भेंट, अनाथ, अन्तिम प्यार से, कंचन, पत्नी का पत्र, गूँगी, पाषाणी, पिंजर, प्रेम का मूल्य, भिखारिन, विदा, समाज का शिकार, सीमान्त आदि।

उपन्यास—आँख की किरकिरी, गोरा, राजर्षि, चौखेरबाली, घरे बाइरे।

पत्र—रूस के पत्र।

नाटक—रुद्रचण्ड, वाल्मीकि प्रतिभा, गीतिनाट्य, चित्रांगदा, राजा, डाकघर, विसर्जन आदि।

लघुकथा—समाप्ति, संस्कार, अध्यापक, त्याग, प्रायश्चित्त आदि।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लगभग 2230 गीतों की रचना की।

मूल्याधारित प्रश्न

उत्तर—

1. तोते को शिक्षा .... घर गए।

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ—**तोता**, लेखक का नाम—**रवींद्रनाथ टैगोर**।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश **'तोता'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **'रवींद्रनाथ टैगोर'** हैं।

(ii) राजा ने तोते को शिक्षा देने का भार अपने भानजे को सौंपा।

(iii) तोते को विद्या देने के लिए सबसे पहले उसके लिए पिंजरा बनाने का निर्णय लिया गया।

(iv) तोता अपना घोंसला घास-फुस से बनाता है।

(v) तोते को शिक्षा देने का कार्य राजा के भानजे को सौंपा गया।

2. सुनार बुलाया .... नसीब है।''

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ—**तोता**, लेखक का नाम—**रवींद्रनाथ टैगोर**।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश **'तोता'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **'रवींद्रनाथ टैगोर'** हैं।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—राजा के भानजे ने सुनार बुलवाकर तोते के लिए एक स्वर्ण पिंजरा बनवाया। पिंजरा इतना सुंदर था कि दूर-दूर से लोग उसे देखने आने लगे। लोग कहते हैं कि शिक्षा की कितनी अधिकता हो गई है। कोई कहता कि तोते को शिक्षा भले न मिले परंतु यह स्वर्ण पिंजरा तो मिल गया। यह तोता तो बड़ा भाग्यशाली है।

(iii) ''शिक्षा की तो इति हो गई'' पंक्ति से आशय है कि तोते के लिए आवश्यकता से अधिक शिक्षा हो गई।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

1. पोलियों की .... ''उन्नति हो रही है।''

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ—**तोता**, लेखक का नाम—**रवींद्रनाथ टैगोर**।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश **'तोता'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **'रवींद्रनाथ टैगोर'** हैं।

(ii) शिक्षा की उन्नति की बात जा रही थी। पोलियों की नकल के ढेरों को सब शिक्षा की उन्नति समझ रहे थें।

2. संसार में .... बातें करते हैं।''

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ—**तोता**, लेखक का नाम—**रवींद्रनाथ टैगोर**।

(ii) निंदकों ने कहा की पिंजरे की उन्नति हो रही है, पर तोते की खोज-खबर लेने वाला कोई नहीं।

रेखांकित तथ्यपरक प्रश्न

1. राजा ने इतना .... खड़े हो जाते

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ—**तोता**, लेखक का नाम—**रवींद्रनाथ टैगोर**।

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश **'तोता'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **'रवींद्रनाथ टैगोर'** हैं।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या**—तोते के पिंजरे में खाने-पानी की कोई व्यवस्था नहीं थी परंतु उसे शिक्षित करने के सब उपाय किए जा रहे थे। पोलियों के कई पन्नें फाड़-फाड़कर कलम की नोक से तोते को जबरन खिलाए जाते थे। धीरे-धीरे तोते ने गाना और चीखना-चिल्लाना भी बंद कर दिया था। क्योंकि उसका मुँह पोलियों के कागज से भर चुका था।

(iii) तोते के साथ बहुत अन्यायपूर्ण व्यवहार किया जा रहा था।

राजा को देखकर पण्डित गले फाड़-फाड़कर और बूटियाँ फड़का-फड़काकर मंत्रों का पाठ करने लगे।

2. तोता दिन पर .... जुटा हुआ है।

उत्तर—

(i) गद्यांश के पाठ—**तोता**, लेखक का नाम—**रवींद्रनाथ टैगोर**।

(ii) **संदर्भ**—प्रस्तुत गद्यांश 'तोता' नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक 'रवींद्रनाथ टैगोर' हैं।

रेखांकित अंशों की व्याख्या—शिक्षालय के पंडितों द्वारा शिक्षा के नाम पर तोते के साथ अनेक प्रकार के अत्याचार किए जा रहे थे। उसे सोने के पिंजरे में तो रखा गया, परंतु उसके दाने-पानी की कोई व्यवसथा नहीं की गई थी। उसे कुछ देर के लिए भी पिंजरे के बंधन से मुक्त नहीं किया जाता था। उसे पढ़ाने के लिए जिस तरीके का प्रयोग किया जा रहा था, वह भी अत्यंत निर्ममतापूर्ण था। शिक्षालय में तोते को पढ़ाने के लिए अनेक किताबें रखी गईं व उनके पन्ने फाड़कर जबरन तोते के मुख में ठूँसा जाता। फिर तोते के लिए सोने का पिंजरा बनवाना, उसकी देखभाल में अनेक लोगों को लगाना, उसे पढ़ाने के लिए अनेक नवीन पुस्तकें लिखवाकर तैयार करवाना आदि देखने में तो अत्यंत शिष्ट या सज्जनतायुक्त तथा शिक्षा की प्रगति दर्शाने वाले तरीके थे, परंतु इन सबके परिणामस्वरूप तोता की दशा ऐसी हो गई, मानो उसके कुछ ही प्राण शेष रह गए हों। जो तोतो की देखभाल करने वाले अथवा उसके वास्तविक अभिभावक थे, उन्हें तो उन्हें तो तोते की शिक्षा हेतु की गई बाह्य आडंबरयुक्त शिक्षा-व्यवस्था ही दिखाई दे रही थी, इसलिए उन्हें तो यही समझ आ रहा था कि शिक्षा की उन्नति और तोते की देखभाल उनकी आशा के अनुकूल हो रही है।

तोते की दशा काफी चिंताजनक हो चुकी थी। वहधीरे-धीरे मरणांतक अवस्था में पहुँच रहा था, उधर अभिभावक आदि शिक्षा की व्यवस्था को देखकर यह समझ रहे थे कि सब ठीक हो रहा है। संभवत: तोते के प्राण-पखेरू अब तक उड़ जाते, अथवा उसे मुक्त होने का अवसर प्राप्त हो जाता, परुंतु वह अपने स्वभागत दोष के कारण ऐसा अवसर प्राप्त नहीं कर पाया। वह उस पिंजरे और स्वयं पर होने वाले अन्याय से छुटकारा न पा सका। इसका कारण यह था कि वह अपने पक्षी-स्वभावानु रूप मुक्त होकर उछलना, कूदना, उड़ना व गाना चाहता था।

(iii) तोते की प्रगति भद्र रीति के अनुसार आशाजनक रूप से हो रही थी।

(iv) तोते की स्वाभाविक दिनचर्या थी—सुबह होते ही उजाले की ओर लगातार देखना, उड़ने के लिए अपने डैने फड़फड़ाना।

(v) तोता अपनी चोंच से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ था।

भाषा एवं व्याकरण

1. मुहावरों का अर्थ स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—

नमक-हराम — **अर्थ** — **कृतघ्न**

अफवाह फैलाना — **अर्थ — झूठी खबर फैलाना**

मुँह लटकाना — **अर्थ — उदास होना**

सूखे पत्ते खड़खड़ाना — **अर्थ — आहट होना**

2. निम्नलिखित में समास विग्रह कीजिए और बताइए कि इनमें कौन-सा समास है—

उत्तर—

समस्तपद	**समास विग्रह**	**समास का नाम**
अविद्या	**विद्याहीन नञ्**	**तत्पुरुष समास**
राजा-मण्डी	**राजा की मण्डी संबंध**	**तत्पुरुष समास**
कायदा-कानून	**कायदा और कानून द्वन्द्व**	**तत्पुरुष समास**
निन्दक	**निन्दा करने वाला**	**कर्मधारय समास**

काव्य-खण्ड

काव्य-खण्ड

आदिकाल (वीरगाथा काल)

उत्तर—

1. आदिकाल में देश अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। इन राज्यों के राजपूत राजा आपस में लड़ते रहते थे। उसी युग में मुसलमानों के आक्रमण भी आरंभ हो गए थे। इस समय वीर पुरुषों की वीरता का अतिशयोक्ति वर्णन ही कविता का मुख्य विषय रहा, इसलिए इस युग को 'वीरगाथा काल' क्यों कहा जाता है?

2. आदिकाल (वीरगाथा काल) का समय सन् 743 से 1343 ई० (800 विक्रमी संवत से 1400 विक्रम संवत तक)।

3. हिंदी के प्रथम उत्थानकाल को आदिकाल, वीरगाथा काल, चारणकाल, अपभ्रंशकाल आदि नाम दिए गए। इस काल की प्रमुख रचना चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' है।

4. वीरगाथा काल के कवि चारण या भाट थे। इसलिए वीरगाथाकाल को 'चारणकाल' भी कहा जाता है।

5. वीरगाथा काल के प्रथम कवि का नाम चंदबरदाई था।

6. **वीरगाथा काल की प्रमुख विशेषताओं हैं**—1. आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा, 2. सामूहिक राष्ट्रीयता की भावना का अभाव, 3. युद्धों का सजीव वर्णन, 4. वीर रस के साथ श्रृंगार रस का भी वर्णन, 5. ऐतिहासिक कथाओं में कल्पना की अधिकता आदि।

7. **कवियों के नाम रचनाओं के नाम**

दलपति विजय	—	खुमान रासो	चंदबरदाई	—	पृथ्वीराज रासो
शारंगधर	—	हम्मीर रासो	नल्ल सिंह	—	विजयपाल रासो
जगनिक	—	परमाल रासो	नरपति नाल्ह	—	बीसलदेव रासो
केदारभट्ट	—	जयचंद्र प्रकाश	जगनिक	—	आल्हाखण्ड
विद्यापति	—	पदावली और कीर्तिकला	स्वयंभू	—	पउमचरिउ
मधुकर	—	जयमयंक जसचंद्रिका	जोइंदु	—	परमात्मा प्रकाश
अब्दुल रहमान	—	संदेश रासक			

8. आदिकाल के दो प्रमुख कवि हैं—1. चंदबरदाई, 2. नरपति नाल्ह।

9. आदिकाल की रचनाएँ—1. प्रबंध काव्य, 2. वीर-गीतों के रूप में मिलती हैं। प्रबंध काव्य की एक रचना 'पृथ्वीरास रासो' एवं वीर-गीतों की एक रचना 'बीसलदेव रासो' है।

10. आदिकाल (वीरगाथा काल) की रचनाओं की भाषा डिंगल ओर पिंगल हैं।

11. रासो ग्रन्थ हिन्दी-साहित्य के वीरगाथाकाल (आदिकाल) युग में लिखे गए। चार रासो ग्रंथों के नाम हैं—1. खुमाण रासो 2. हमीर रासो 3. पृथ्वीराज रासो 4. परमाल रासो।

12. वीरगाथा काल के काव्य ग्रन्थों में महाकवि चंदबरदाई द्वारा रचित 'पृथ्वीराज रासो' सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ है। यह एक छंदबद्ध विशाल महाकाव्य है, जिसे हिंदी भाषा में लिखा गया प्रथम

काव्य-ग्रंथ माना जाता है। इस महाकाव्य में दिल्ली के अंतिम सम्राट पृथ्वीराज चौहान का जीवन-चरित्र वर्णित है।

13. वीरगाथा काल की रचनाओं में दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, छप्पय, कुंडलिया, त्रोटक, गाथा, आर्या आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है।

14. वीर-गीत काव्यों में सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ जगनिक कवि का 'परमाल रासो' (आल्हा खण्ड) है। इसमें महोबा के दो प्रसिद्ध वीरों आल्हा तथा ऊदल की वीरता का वर्णन हुआ है।

15. आदिकालीन कविता का प्रमुख विषय राजाओं अथवा वीर पुरुषों की वीरता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करना व उनका यशोगान करना था।

मध्यकाल (केवल भक्ति)

उत्तर—

1. भक्तिकाल सन् 1343 से 1643 ई० (संवत् 1400 से संवत् 1700) तक लिखे गए काव्य में भक्तिभाव की प्रधानता है। इसी कारण आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल को 'भक्तिकाल' नाम दिया है।

2. भक्तिकाल की समय-सीमा 1343 ई० से 1643 ई० तक निर्धारित की गई है।

3. भक्तिकाल में भक्ति-भावना ईश्वर के निराकार व साकार रूप में प्रकट हुई है।

4. भक्तिकाल में—1. निर्गुण एवं 2. सगुण—दो प्रकार की काव्यधाराएँ मिलती है। निर्गुण काव्यधारा में—1. ज्ञानमार्गी, 2. प्रेममार्गी धाराएँ और सगुण काव्यधारा में—1. रामभक्ति, 2. कृष्णभक्ति धाराएँ प्रवाहित हुई हैं।

5. भक्तिकाल में कबीर, जायसी, सूर एवं तुलसी जैसे प्रसिद्ध कवियों की दिव्य वाणी देश में सर्वत्र छा गई। भक्तिकाल भाव, भाषा, शिल्प आदि सभी दृष्टियों से अन्य कालों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ रहा है। इस युग के कवियों ने अपने काव्य में सुधारवाद, अध्यात्मवाद, गुरु-महिमा एवं ईश्वर-महत्व को बड़ी ही स्पष्टता एवं मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से भी इस युग का काव्य उच्चकोटि का है। इन्हीं कारणों से भक्तिकाल को हिंदी-साहित्य का स्वर्ण-युग कहा जाता है।

6. भक्तिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं के नाम निम्नलिखित हैं—

कवियों के नाम		**रचनाओं के नाम**
कबीरदास	—	कबीर ग्रंथावली (संकलित)
सूरदास	—	सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य-लहरी
तुलसीदास	—	श्रीरामचरितमानस, बरवै रामायण, दोहावली, कवितावली, विनयपत्रिका आदि
नरोत्तमदास	—	सुदामाचरित
मीराबई	—	नरसीजी का मायरा, राग सोरठ के पद, गीत गोविन्द की टीका एवं राग गोविन्द।
रसखान	—	प्रेमवाटिका एवं सृजान-रसखान।

7. भक्तिकाल को हिन्दी काव्य का 'स्वर्ण-युग' कहा जाता है।

8. हिन्दी पद्य साहित्य की भक्तिकाल को साहित्यिक देन यह है कि भक्तिकाल में अवधी एवं ब्रजभाषा में विभिन्न रसों से परिपूर्ण श्रेष्ठ भक्ति काव्य की रचना हुई।

9. भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ) निम्नलिखित हैं—

1. रहस्य की भावना, 2. गुरु की महत्ता, 3. भक्ति की प्रधानता, 4. सुधारवादी दृष्टिकोण, 5. निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल, 6. दार्शनिकता एवं रहस्यवादी भावना, 7. अलौकिक प्रेम की व्यंजना, 8. प्रकृति-चित्रण, 9. मिश्रित भाषा का प्रयोग, 10. माया की निंदा।

10. निर्गुण काव्यधारा की दो शाखाओं के नाम हैं—1. ज्ञानाश्रयी काव्यधारा, 2. प्रेमाश्रयी काव्यधारा।

11. निर्गुणशाखा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—
    1. निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल दिया गया है।
    2. आडंबर एवं भेदभाव का विरोध किया गया है।
    3. गुरु को विशेष महत्व प्रदान किया गया है।
    4. उच्चकोटि की दार्शनिकता पर आधारित काव्य की रचना की गई है।
    5. रहस्यवादी भावना पर आधारित काव्य की रचना की गई है।
    6. अलौकिक प्रेम की व्यंजना हुई है।

12. निर्गुण काव्यधारा के दो कवियों के नाम हैं—1. कबीर 2. रैदास।

13. निर्गुण भक्तिधारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि 'संत कबीरदास' हैं।

14. संत काव्यधारा (ज्ञानाश्रयी शाखा) के दो प्रमुख कवि कबीरदास एवं सुंदरदास थे।

15. ज्ञानाश्रयी (संत) काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—
    1. ज्ञानाश्रयी संत एकेश्वरवादी हैं। उन्होंने ईश्वर की उपासना निराकार रूप में की है।
    2. संतकाव्य में गुरु को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।
    3. अधिकांश संत कवियों ने जाति-पाँति के भेदभाव का खंडन किया है।
    4. संत काव्य में विशेष रूप से रहस्यवादी प्रवृत्ति दिखाई देती है।
    5. संत कवियों ने माया की निंदा की है और उसे महाठगिनी बताया है।
    6. संत कवियों की भाषा सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी है।

16. प्रेमाश्रयी (सूफी) काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि का नाम मलिक मौहम्मद जायसी है।

17. प्रेमाश्रयी (सूफी) काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—
    1. सूफियों ने फारसी की मसनवी पद्धति पर प्रेमगाथाओं की रचना की है।
    2. सूफीकाव्य में हिंदू-संस्कृति का मार्मिक चित्रण हुआ है।
    3. सूफियों ने लौकिक प्रेम के आधार पर अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है।
    4. सूफी प्रेमगाथाओं की रचना प्रबंध शैली में हुई है।
    5. सूफी प्रेमगाथाओं की रचना अवधी-भाषा में हुई है।

18. प्रेममार्गी (सूफी) काव्यधारा के प्रमुख कवियों और उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं—

मलिक मुहम्मद जायसी (पद्मावत), कुतुबन (मृगावती), मंझन (मधुमालती),उस्मान (चित्रावली), शेखनवी (ज्ञानदीप), कासिमशाह (हंस-जवाहिर), नूर मुहम्मद (इंद्रावती) आदि।

19. सूफी कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं में फारसी भाषा की मसनवी शैली का प्रयोग किया।

20. प्रेमाश्रयी कवियों ने अपनी कविताओं में दोहरा और चौपाई छंद का प्रयोग किया है।

21. प्रेममार्गी काव्यधारा के तीन कवियों तथा उनकी एक-एक रचना है—1. मलिक मुहम्मद जायसी (पद्मावत), 2. मंझन (मधुमालती), 3. शेखनवी (ज्ञानदीप)।

22. सगुण काव्यधारा की दो शाखाएँ हैं—1. कृष्णभक्ति काव्यधारा, 2. रामभक्ति काव्यधारा।

23. कृष्ण काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि भक्त सूरदास थे।

24. कृष्ण काव्यधारा के प्रवर्त्तक स्वामी वल्लभाचार्य हैं। इस शाखा के सभी कवियों ने श्रीकृष्ण के बाल और किशोर जीवन की अनेक लीलाओं का चित्रण किया है। इसके साथ ही गोपियों के साथ की गई क्रीडाओं में शृंगार रस की प्रधानता है। इस प्रकार श्रीकृष्ण के लीला रूप को आधार मानकर जिस काव्य की रचना की गई, उसे कृष्ण काव्यधारा का नाम दिया गया।

25. कृष्णाश्रयी भक्तिशाखा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (विशेषताएँ) निम्नलिखित हैं—

1. कृष्ण के बाल एवं किशोर जीवन की विभिन्न लीलाओं का वर्णन किया गया है।
2. वात्सल्य एवं शृंगार की प्रधानता है।
3. सखा एवं कांता (प्रिया) भाव भक्ति की अभिव्यक्ति की गई है।
4. अधिकांश काव्य गेय-मुक्तकों के रूप में है।
5. भावुकता एवं सहृदयता के साथ वाग्वैदग्ध्य की प्रधानता है।
6. प्रकृति का उद्दीपन रूप में वर्णन है।

26. सगुण भक्ति की कृष्णाश्रयी शाखा के सर्वप्रथम कवि स्वामी वल्लभाचार्य थे।

27. कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि हैं—नन्ददास, कुम्भनदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, छीतस्वामी, गोविन्दस्वामी, मीराबाई, रसखान, नरोत्तमदास आदि।

28. **अष्टछाप कवि समुदाय से क्या तात्पर्य**—सन्त गुरु वल्लभाचार्य के आठ शिष्य-कवियों के समुदाय को अष्टछाप कवि-समुदाय कहा जाता है। ये कृष्णभक्ति-धारा के कवि थे।

अष्टछाप कवि-समुदाय के कवि—इस समुदाय के कवि सूरदास, नन्ददास, परमानन्दास, कृष्णदास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी एवं गोविन्दस्वामी थे।

29. कृष्णभक्ति शाखा के काव्यों की रचना ब्रजभाषा में की गई है।

30. सूरदास रचित दो रचनाएँ हैं—**1.** सूरसागर, **2.** साहित्य लहरी।

31. कृष्णभक्त कवि रसखान का पूरा नाम **सैयद इब्राहीम रसखान** है।

32. कृष्णभक्त कवियों की रचनाओं का प्रतिपाद्य विषय—कृष्ण की भक्ति, उनकी बाल-लीलओं वरास-लीलाओं का वर्णन तथा गोपियों की विरहपूर्ण दशा का वर्णन करना आदि था।

33. रामाश्रयी काव्यधारा के मुख्य प्रेरक रामानन्द माने जाते हैं। राम-काव्य में राम का लोकोपकारी रूप व्यक्त हुआ है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि के साहित्य में राम के

विभिन्न रूप चित्रित हुए हैं। हिंदी-साहित्य में इस भक्ति का परम उज्जवल प्रकाश गोस्वामी तुलसीदास की रचना के द्वारा हुआ।

34. गोस्वामी तुलसीदास, अग्रदास, नाभादास, सेनापति, दयाराम, सूदन आदि राम काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं।

35. रामभक्ति शाखा की विशेषताएँ (प्रवृत्तियाँ) इस प्रकार हैं—

1. रामभक्ति-शाखा के काव्य में दास्य-भाव की प्रधानता है।
2. राम के लोकरक्षक रूप का चित्रण हुआ है।
3. प्रबंध और मुक्तक दोनों प्रकार की रचनाएँ की गई हैं।
4. दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, सोरठा आदि छंदों का प्रयोग किया गया है।
5. अवधी और ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।
6. समंवय की व्यापक चेष्टा की गई है।

36. राम काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि का नाम **गोस्वामी तुलसीदास** और उनकी प्रसिद्ध रचना का नाम **रामचरितमानस** है।

37. राम काव्यधारा के काव्यों की रचना अवधी एवं ब्रजभाषा में हुई है।

38. रामाश्रयी काव्यधारा की दो प्रमुख रचनाओं के नाम हैं—**1.** कुण्डलिया **2.** अष्टछाप।

39. गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के कवि हैं। उन्होंने 'रामचरितमानस' नामक महाकाव्य की रचना की।

40. 'पद्मावत' प्रेममार्गी (सूफी) शाखा की रचना है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तरमाला

1. (ग) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (घ)।

1 कबीरदास (साखी)

(जन्म : सन् 1398 ई० मृत्यु : सन् 1518 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) 2. (क) 3. (क) 4. (ख) 5. (क) 6. (ख) 7. (क) 8. (क) 9. (क) 10. (क) 11. (क) 12. (क) 13. (घ) 14. (क) 15. (ख) 16. (क) 17. (ख) 18. (क) 19. (ग) 20. (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. कबीर ने अपने विचार सधुक्कड़ी (पंचमेल खिचड़ी) भाषा में प्रकट किए जिसमें अवधी, खड़ीबोली, ब्रज, संस्कृत, पूर्वी हिंदी, अरबी, फारसी, राजस्थानी, पंजाबी, भोजपुरी, बुंदेलखंडी

आदि भाषाओं के शब्द मिलते हैं।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. कबीर का जन्म सन् 1398 ई० में काशी में हुआ था।

2. कबीरदास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के कवि हैं।

3. **जीवन-परिचय**—कबीरदास का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा, सोमवार, संवत् 1455 वि० (सन् 1398 ई०) को हुआ था। बाबू श्यामसुन्दर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भी 1455 वि० को ही कबीर का जन्म-संवत् स्वीकार करते हैं। कहा जाता है कि इनके जीवन का अधिक समय काशी में ही बीता। बड़े होकर ये अपने माता-पिता के कार्यों में हाथ बँटाने लगे और बचे समय में ईश्वरभक्ति करते तथा विभिन्न सम्प्रदाय के धर्माचार्यों की संगति में रहते। इस अन्धविश्वास को दूर करने के लिए कि काशी में मृत्यु होने से स्वर्ग मिलता है, ये अन्तिम समय काशी छोड़कर मगहर (गोरखपुर से लगभग 40 किमी दूर) चले गए और वहीं शरीर त्यागा।

इनकी मृत्यु के सम्बन्ध में यह दोहा प्रचलित है—

''संवत् पन्द्रह सौ पचहत्तर, किए मगहर को गौन।
माघ सुदी एकादशी, रह्यो पौन में पौन।।''

कबीर हिन्दी साहित्य सागर के अमूल्य रत्न हैं। उन्होंने काव्य और जीवन दोनों में क्रान्ति का बिगुल बजाया।

कबीर का धर्म **मानव धर्म** था। मन्दिर, तीर्थाटन, माला, नमाज, पूजा-पाठ आदि धर्म के बाहरी आचार-व्यवहार तथा कर्मकाण्डों की उन्होंने कठोर शब्दों में निन्दा की और सत्य, प्रेम, सात्विकता, पवित्रता, सत्संग, इंद्रिय-निग्रह, सदाचार, गुरु-महिमा, ईश्वर-भक्ति आदि पर विशेष बल दिया। पुस्तकों से ज्ञान-प्राप्ति की अपेक्षा अनुभव पर आधारित ज्ञान को ये श्रेष्ठ मानते थे। ईश्वर की सर्वव्यापकता और राम-रहीम की एकता के महत्त्व को बताकर उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों के भेद-भाव को मिटाने का प्रयास किया। ये मनुष्य मात्र को एक समान मानते थे।

साहित्यिक सेवा—कबीर को शिक्षा-प्राप्ति का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था; अत: यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि इन्होंने स्वयं अपनी रचनाओं को लिपिबद्ध नहीं किया। इसके उपरांत भी उनके द्वारा रचित कई ग्रंथों का उल्लेख मिलता है। इन ग्रंथों से कबीर की विलक्षण प्रतिभा का परिचय प्राप्त होता है। वस्तुत: कबीर संत कवियों में सर्वाधिक प्रतिभाशाली थे। ये एक जन्मजात कवि, उपदेशक और संत थे। अपने मन की अनुभूतियों को उन्होंने स्वाभाविक रूप से अपने दोहों में व्यक्त किया। ये भावना की प्रबल अनुभूति से युक्त, उत्कृष्ट रहस्यवादी, समाज-सुधारक, पाखंड के आलोचक तथा मानवता की भावना से ओत-प्रोत कवि थे।

4. **कबीर की रचना**—कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। ऐसी दशा में उन्होंने जो कुछ अपनी वाणी में कहा, उसे उनके शिष्यों ने लेखनीबद्ध कर लिया। उनके शिष्यों द्वारा लेखनीबद्ध किए गए,

उनके दोहे और पद संगृहीत अवस्था में उनकी कृतियाँ या रचनाएँ कहलाए। इनकी संख्या 57 बतायी जाती है, परन्तु कबीर की रचनाओं को दो भागों में बाँटा जाता है—1. बानी और 2. बीजक।

बीजक के तीन भाग हैं—

1. **साखी**—इनमें कबीर ने अपनी अनुभूति तथा अन्य तथ्यों को प्रस्तुत किया है। इनकी रचना प्राय: दोहा छन्द में हुई है। इनमें उपदेश की प्रधानता है।
2. **सबद या पद**—इनमें कबीर के गेय पद संगृहीत हैं। गेय पद होने के कारण इनमें संगीतात्मकता है। इनमें उपदेशात्मकता के स्थान पर कबीर की प्रेम-साधना व्यक्त हुई है।
3. **रमैनी**—इनका वर्ण्य विषय है—स्तुति-वर्णन, उपदेश-वर्णन, लोकोपकार तथा रहस्यवादी और दार्शनिक विचारधारा का निरूपण। इनकी रचना चौपाई छन्द में की गयी है।

कबीर की समस्त रचनाएँ 'कबीर ग्रंथावली' और 'कबीर वचनावली' में भी संगृहीत हैं।

भाषा-शैली—वस्तुत: कबीर की भाषा एक संत की भाषा है। संतों की संगति में ही इन्होंने सब कुछ सीखा था। यही कारण है कि इनकी भाषा साहित्यिक नहीं हो सकी। इनकी भाषा में अरबी, फारसी, भोजपुरी, पंजाबी, बुंदेलखण्डी, ब्रज, खड़ीबोली आदि विभिन्न भाषाओं के शब्द मिलते हैं। इसी कारण इनकी भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा जाता है। फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं कि भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था। भाव प्रकट करनेकी दृष्टि से कबीर की भाषा पूर्णत: सक्षम है।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. कबीर ने संसार को सेमल का फूल इसलिए कहा है क्योंकि संसार सेमल के फूल के समान क्षणभंगुर और अस्थायी है। सेमल का फूल देखने में आकर्षक लगता है; किंतु उसका यह आकर्षण क्षणिक होता है। कुछ ही दिनों में वह टूटकर गिर पड़ता है। इस संसार की भी ऐसी ही स्थिति है।
2. शरीर की क्षणभंगुरता को व्यक्त करने के लिए कबीर ने उसकी उपमा कच्चे घड़े से इसलिए दी है क्योंकि उनके अनुसार जिस प्रकार कच्चा घड़ा तनिक से धक्के से टूट जाता है, उसी प्रकार यह शरीर भी मृत्यु के तनिक से धक्के से नष्ट हो जाएगा।
3. मोक्ष प्राप्त करने के लिए कबीरदास ने मन को वश में करने, लोभ, मोह और भ्रम का त्याग करके सत्संगति, मन की दृढ़ता और सच्चे गुरु के उपदेशों पर मनन करने का उपदेश दिया है।
4. गुरु और गोविन्द की प्राप्ति एक-दूसरे पर निर्भर है, क्योंकि गोविंद की कृपा से गुरु की प्राप्ति होती है और गुरु ईश्वर का ज्ञान कराता है।
5. सतगुरु की सरस बातों से कबीर का प्रत्येक अंग भीग गया अर्थात् कबीर को अनुपम संतोष की प्राप्ति हुई और मन प्रेममय हो गया।
6. कबीरदास ने धर्म का संबंध सत्य से जोड़कर समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परंपरा का खंडन

किया। उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों व कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविशवास, पाखंड, मूर्ति पूजा छुआछूत व हिंसा का विरोध किया। उन्होंने हिंदू-मुस्लिम की बढ़ती खाई को पाटने का काम किया। उन्होंने अपनी व्यंग्यात्मक वाणी से तत्कालीन समाज के कलुषित जीवन पर तीखे प्रहार करके अज्ञान में डूबी जनता को ज्ञान का प्राकश दिया।

7. कच्चे घड़े की उपमा शरीर को दी गई है क्योंकि जिस प्रकार कच्चा घड़ा तनिक से धक्के से टूट जाता है उसी प्रकार शरीर भी मृत्यु के तनिक से धक्के से नष्ट हो जाता है।

8. कबीर मनुष्य को गर्व न करने का उपदेश इसलिए देते हैं क्योंकि मनुष्य का शरीर और सभी भौतिक वस्तुएँ नश्वर हैं।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए–**

उत्तर–

(क) सतगुरु हम सूँ .... सब अंग।।

संदर्भ—प्रस्तुत साखी महान् संत ओर कवि **कबीरदास** की गुरु-महिमा संबंधी **'साखियों'** से उद्धृत है। यह हमारी पाठ्यपुस्तक के **काव्य-खण्ड** में **कबीर ग्रंथावली** से **साखी** शीर्षक के अंतर्गत संकलित है।

प्रसंग—इस साखी में कबीरदास ने अपने गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव प्रकट किया है। साथ ही उन्होंने गुरु के प्रति अपनी कृतज्ञता भी व्यक्त की है।

व्याख्या—कबीरदास जी कहते हैं कि सद्‌गुरु ने प्रसन्न होकर हमें ज्ञान का एक उपदेश दिया। इस उपदेश से हमारे हृदय में व्यापक भक्ति का जन्म हुआ। भक्ति के इस बादल से प्रेम और स्नेह की वर्षा हुई, जिससे हमारा एक-एक अंग भीग गया (सिक्त हो गया) है। भाव यह है कि गुरु ईश्वर का ज्ञान कराता है, उसकी भक्ति से अनुपम संतोष की प्राप्ति होती है और मन प्रेममय हो जाता है। इसलिए मानव-जीवन में सद्‌गुरु का अत्यधिक महत्व है।

काव्य-सौंदर्य-

1. प्रस्तुत साखी में कवि ने ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र में गुरु की महत्ता को अत्यंत सुंदर एवं उपयुक्त अभिव्यक्ति दी है। 2. **भाषा**—सधुक्कड़ी। 3. **रस**—शांत। 4. **छंद**—दोहा। 5. **अलंकार**—रूपक।

(ख) ग्यान प्रकास्या गुरु .... मिलिया आइ।।

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग—इस साखी में कबीर ने गुरु की महानता और राम-राम की महत्ता का वर्णन किया है।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि मेरे गुरु ने राम के नाम का जो उपदेश दिया है, उसकी समानता और तुलना कोई नहीं कर सकता। राम का नाम देकर गुरु ने मेरा जो उपकार किया है, उसके बदले में मैं उन्हें दक्षिणा के रूप में क्या दूँ? अर्थात् मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। मेरे

मन में तो निरंतर यही अभिलाषा बनी हुई है कि मैं अपने गुरु को क्या दूँ, जिससे मुझे संतोष मिल सके।

आशय यह है कि कबीर को अपने गुरु से राम-राम गुरुमंत्र मिला, किंतु उनके मन में यह असंतोष बना हुआ है कि अपने गुरु को देने के लिए उनके पास कुछ है ही नहीं।

काव्य-सौंदर्य–

1. यहाँ गुरु एवं ईश्वर की महानता की तुलनात्मक अभिव्यक्ति का कलात्मक रूप प्रस्तुत किया गया है। 2. कबीर कहते हैं कि गुरु ने ईश्वर का ज्ञान दिया, परंतु सच्चा गुरु भी तभी प्राप्त हुआ, जब ईश्वर की अनुकम्पा हुई। 3. **भाषा**—सधुक्कड़ी। 4. **रस**—शांत। 5. **छंद**—दोहा। 6. **अलंकार**—अनुप्रास।

(ग) माया दीपक नर .... आध उबरंत।।

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग—इस साखी में कवि ने गुरु की महिमा का वर्णन किया है। उनका कहना है कि गुरु की कृपा होने पर ही मनुष्य मायारूपी आग से बच सकता है।

व्याख्या—संत कबीर कहते हैं कि मायारूपी दीपक के सामने मनुष्य पतंगे के समान है। जिस प्रकार पतंगा दीपक को देखकर उसकी तरफ दौड़ता है और भ्रमित होकर उस पर गिरकर जल जाता है, उसी प्रकार मनुष्य भी माया के चारों चक्कर काटता रहता है और अंत में नष्ट हो जाता है। कबीर कहते हैं कि गुरु से ज्ञान प्राप्त करके ही मनुष्य माया के इस बंधन से बच जाता है, किंतु कोई विरला व्यक्ति ही इस ज्ञान को प्राप्त करके मायारूपी दीपक की आग में जलने से बच पाता है।

काव्य-सौंदर्य—

1. गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से सांसारिक माया से मुक्ति मिलने और उस ज्ञान के वास्तविक स्वरूप को कुछ व्यक्तियों द्वारा ही समझने के भाव की, सुंदर शब्दों में अभिव्यक्ति की गई है। 2. **भाषा**—सधुक्कड़ी। 3. **रस**—शांत। 4. **छंद**—दोहा। 5. **अलंकार**—अनुप्रास, रूपक और पुनरूक्तिप्रकाश।

(घ) अंषड़ियाँ झाँईं पड़ी .... पुकारि-पुकारि।।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत साखी में कबीर ने विरह से व्याकुल जीवात्मा का वर्णन किया है।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि परमात्मारूपी प्रियतम का रास्ता देखते-देखते मेरी आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा है, अर्थात् मेरी दृष्टि मंद पड़ने लगी है। परमात्मा के नाम को पुकारते-पुकारते मेरी जीभ में छाले पड़ गए हैं। तात्पर्य यह है कि परमात्मा का दर्शन करने के लिए मैं अत्यधिक व्याकुल हूँ, किंतु अभी तक उनके दर्शन नहीं हुए हैं। मैं निरंतर उनके नाम को पुकार रहा हूँ, किंतु उन्होंने अभी तक मेरे ऊपर कृपा नहीं की है।

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ परमात्मा के विरह में व्याकुल जीवात्मा का मार्मिक वर्णन हुआ है। 2. रहस्यवादी

विचारधारा व्यक्त हुई है। 3. **भाषा**—सधुक्कड़ी। 4. **रस**—शांत। 5. **छंद**—दोहा। 6. **अलंकार**—पुनरूक्तिप्रकाश तथा अनुप्रास।

(ङ) जब मैं था तब .... देख्या माँहि।।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत साखी में बताया गया है कि ईश्वर-प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा अहंकार है, इसलिए ईश्वर को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपने अहंकार का परित्याग कर देना चाहिए।

व्याख्या—कबीर कहते हैं कि जब तक मेरे मन में अहंकार की भावना थी, तबतक परमात्मा मुझसे दूर ही रहा। जब से ईश्वरने मेरे हृदय में प्रवेश किया है, तब से मेरा अहंकार समाप्त हो गया है। अंत में कबीर कहते हैं कि ज्ञानरूपी समस्त अंधकार मिट गया है। आशय यह है कि ईश्वर के दर्शन होने पर अज्ञानरूपी अंधकार स्वयमेव नष्ट हो जाता है।

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ ईश्वर के ज्ञानात्मक स्वरूप की दार्शनिक अभिव्यक्ति की गई है। 2. **भाषा**—सधुक्कड़ी। 3. **रस**—शांत। 4. **छंद**—दोहा। 5. **अलंकार**—रूपकातिशयोक्ति तथा अनुप्रास।

(च) यहु ऐसा .... न भूल।।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत साखी में कबीर ने जीवात्मा को चेतावनी दी है और संसार की असारता पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या—कबीर का कथन है कि संसार सेमल के फूल के समान क्षणभंगुर और अस्थायी है। सेमल का फूल देखने में आकर्षक लगता है; किंतु उसका यह आकर्षण क्षणिक होता है। कुछ ही दिनों में वह टूटकर गिर पड़ता है। इस संसार की स्थिति भी ऐसी ही है। कबीर उपदेश देते हैं कि हे मानव! तू संसार के थोड़े दिनों के चमत्कार और व्यवहार में पड़कर वास्तविकता को मत भूल और भ्रम में मत पड़।

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ संसार की नश्वरता का प्रभावशाली चित्रण किया गया है। 2. **भाषा**—सधुक्कड़ी। 3. **रस**—शांत। 4. **छंद**—दोहा। 5. **अलंकार**—उपमा व अनुप्रास।

(छ) यह तन .... आया हाथि।।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत साखी में कबीर ने नाशवान् शरीर से मोह न रखने का उपदेश दिया है।

व्याख्या—कबीर का कथन है कि हे प्राणी! तू जिस शरीर को साथ लिए फिरता है और जिस पर घमंड करता है, वह तो कच्चे घड़े के समान है। जिस प्रकार कच्चा घड़ा तनिक से धक्के से टूट जाता है ओर उसमें भरा हुआ समस्त पदार्थ बिखर जाता है, उसी प्रकार यह शरीर भी मृत्यु के तनिक से धक्के से नष्ट हो जाएगा और तुझे कुछ भी प्राप्त नहीं होगा।

काव्य-सौंदर्य—

1. इस साखी में मानव-शरीर की नशवरता का मार्मिक वर्णन हुआ है। 2. कबीर ने यहाँ शरीर को कच्चे घड़े के समान बताया है। 3. **भाषा**—सधुक्कड़ी। 4. **रस**—शांत। 5. **छंद**—दोहा। 6. **अलंकार**—रूपकऔर अनुप्रास।

(ज) कबिरा कहा गरबियौ .... काँचली भुवंग।।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—कबीर ने अपनी इस साखी में मनुष्य को सावधान किया है कि उसे अपने शरीर का अधिक मोह नहीं करना चाहिए।

व्याख्या—कबीरदासजी पूछते हैं कि हे प्राणी! तू अपने शरीर की सुंदरता का अभिमान क्यों करता है। यह शरीर एक दिन तुझसे छूट जाएगा। फिर यह तुझे उसी प्रकार प्राप्त नहीं होगा, जिस प्रकार साँप की केंचुली जब उसके शरीर से अलग हो जाती है, तब फिर उसके शरीर पर नहीं चढ़ती।

काव्य-सौंदर्य—

1. जीवन की नश्वरता को यहाँ सुंदरता से व्यक्त किया गया है। 2. **भाषा**—सधुक्कड़ी। 3. **रस**—शांत। 4. **छंद**—दोहा। 5. **अलंकार**—उपमा और अनुप्रास।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

उत्तर—

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

उत्तर—

तद्भव शब्द	**तत्सम रूप**	**तद्भव शब्द**	**तत्सम रूप**
ब्यौहार	**व्यवहार**	सतगुरु	**सद्गुरु**
दुक्ख	**दुख**	ग्यान	**ज्ञान**
अंधियारा	**अंधकार**	सीतलु	**शीतल**
पूत	**पुत्र**		

2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार और छन्द का नाम लिखिए—

उत्तर—

(क) अलंकार — **रूपक**, छन्द — **दोहा**।

(ख) अलंकार — **उपमा**, छन्द —**दोहा**।

3. निम्नलिखित पंक्ति का काव्य-सौन्दर्य लिखिए—

उत्तर—

काव्य-सौंदर्य—1. यहाँ माया को 'दीपक' तथा नर को पतंगा कारूप देकर सुंदर भावाभिव्यक्ति की गई है। 2. **भाषा**—सधुक्कड़ी, 3. **रस**—शांत, 4. **छंद**—दोहा, 5. **अलंकार**—रूपक।

4. कबीर की साखियों में दोहा छन्द का प्रयोग हुआ है।

2 संत रैदास

(जन्म : सन् 1399 ई० मृत्यु : सन् 1527 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (क) **6.** (क) **7.** (घ) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (ख) **11.** (क) **12.** (क) **13.** (क) **14.** (ख) **15.** (क) **16.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. छात्र स्वयं करें।
2. छात्र स्वयं करें।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर–

1. संत रैदास हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल काल के कवि हैं।

2. रैदास का जन्म वाराणसी में हुआ था।

3. रविदास के पिता का नाम रग्घू और माता का नाम 'धुरबनिया' या कर्मा था।

4. रैदास की पत्नी का नाम लोना और पुत्र का नाम विजयदास था।

5. रैदास ने अपनी रचनाओं को लोक-जीवन की भाषा में लिखा। इसमें अवधी तथा ब्रजभाषा दोनों का प्रभाव दृष्टिगत होता है।

6. रविदास को मीराबाई ने अपना गुरु बनाया।

7. **जीवन परिचय**–संत रविदास का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी नगर में 15वीं शताब्दी में चर्मकार परिवार में हुआ था। रैदास के माता-पिता के नाम के विषय में भी विद्वानों में मतैक्य नहीं है। रैदास की गद्दी के उत्तराधिकारियों तथा अखिल भारतीय रविदासी महासभा के सदस्यों एवं 'रैदास वाणी' के संपादक के अनुसार उनके पिता का नाम रग्घू और माता का नाम धुरबनिया या कर्मा था।

रविदास के पिता जूतों का व्यापार और उनकी मरम्मत करते थे। संत रैदास ने अपना पैतृक पेशा ही अपनाया। रविदास सम्प्रदाय में यह मान्यता है कि उन्होंने अपने जीवन-यापन के लिए चर्मकारी का व्यवसाय किया था। हालाँकि उनके जन्म की तिथि को लेकर विवाद भी है, क्योंकि कुछ का मानना है कि ये 1376 ई० और कुछ का कहना है कि इनका जन्म 1399 ई० सीइ में हुआ था। कुछ अध्येता के आँकड़ों के अनुसार ऐसा अनुमान लगाया गया था कि रविदास का पूरा जीवनकाल 15वीं से 16वीं शताब्दी में 1450 ई० से 1520 ई० के बीच तक रहा।

उनके पदों में भी इसका स्पष्ट संकेत मिलता है–"चमरठा गांठि न जनई, लोग गठावै पनही।"

रैदास अपने व्यवसाय में रुचि दिखाने की अपेक्षा साधु-संतों की सेवा में लगे रहते थे। उन्होंने पंडित शारदा नन्द की पाठशाला में शिक्षा प्राप्त की। वैसे उनके माता-पिता ने उनका वैराग्य के

प्रति लगाव देखकर बहुत कम उम्र में श्रीमती लोना देवी से विवाह कर दिया। इसके बाद रविदास को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। उसका नाम विजयदास था।

संत रैदास की सांसारिक जीवन के प्रति अनासक्ति और वैरागी प्रवृत्ति को देखकर उनके पिता ने उन्हें अलग कर दिया। इसके पश्चात् रैदास मकान के पीछे छप्पर डालकर रहने लगे। इस प्रकार यह संत पुरुष और भी स्वतंत्रता के साथ ईश्वर भजन में लीन रहने लगा। दूर-दूर तक इस संत की ख्याति फैलने लगी। संत रैदास को मीराबाई के आध्यात्मिक गुरु के रूप में माना जाता है, जो कि राजस्थान में राजा की पुत्री और चित्तौड़ की रानी थी। वे संत रविदास के अध्यापन से बहुत प्रभावित थीं और उनकी बड़ी अनुयायी बनीं। मीरा ने अपने अनेक पदों में संत रैदास को अपने गुरु के रूप में स्मरण किया है—**''गुरु मिलीया रविदास जी दीनी ज्ञान की गुटकी।''**

रविदास दर्शनशास्त्री होने के साथ-साथ कवि समाज-सुधारक और ईश्वर के अनुयायी थे। निर्गुण सम्प्रदाय अर्थात् संत परम्परा में एक प्रसिद्ध विभूति थे। संत रैदास ने संदेश दिया कि जीव की न तो कोई जाति है, न कोई वर्ण है, न कोई कुल है। उन्होंने कर्म का उपदेश दिया। उनकी मृत्यु वर्ष सम्वत् 1597 में वाराणसी में मानी जाती है।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. 'प्रभु' तुम चन्दन हम पानी', पद का भाव है—जैसे चंदन की सुगंध पानी की बूँद-बूँद में समा जाती है वैसे ही प्रभु की भक्ति भक्त के अंग-अंग में समा जाती है।

2. रैदास ने अपनी रचनाओं से समाज को जातिगत भेदभाव मिटाकर सामाजिक एकता को बढ़ाने का संदेश दिया है। उन्होंने मानवतावादी मूल्यों की स्थापना कर ऐसे समाज की स्थापना का संदेश दिया जिसमें किसी प्रकार का भेदभाव लोभ-लालच तथा दरिद्रता न हो।

3. रैदास ने अपने पद में चन्दन, धन और दीपक शब्दों को प्रभु के लिए प्रयोग किया है।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य सौन्दर्य भी लिखिए—**

उत्तर—

(क) प्रभु जी तुम चन्दन............... ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

संदर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक के **काव्य-खण्ड** में **संत रैदास** द्वारा रचित **'प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी'** कविता से उद्धृत हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में भक्त-कवि रैदास ने अपने इष्ट प्रभु को विभिन्न उपमाओं से सुशोभित कर उनका गुणगान किया है। साथ ही स्वयं को उनका कृपापात्र मानकर उनके प्रति अपनी असीम व अनन्य भक्ति का परिचय दिया है।

व्याख्या—कवि रैदास अपने प्रभु का गुणगान करते हुए कहते हैं कि आप उस चंदन के समान शीतल, पवित्र और सुव्यवस्थित हैं, जिसे पानी के साथ मिलाकर घिसने से वह पानी भी चंदन के समान शीतल और सुव्यविस्थत हो जाता है। यही नहीं वह चंदन मिश्रित पानी इतना पवित्र बन जाता है कि भक्तजन उसका तिलक अपने मस्तक पर धारण कर स्वयं में पावनता, शीलता, शांति और आनंद की अनुभूति करते हैं। इसी प्रकार हे प्रभु! आप भी हमारे

लिए उस चंदन के समरूप हैं, जिसका प्रत्येक रूप या अंग पावन व हमारे जीवन को सुरभित करने वाला है और जिसकी कृपा के फलस्वरूप हम भी शीतलता, शांति व आनंदानुभूति करते हुए तथा संपूर्ण संसार में अपने व्यक्तित्व एवं चरित्र की सुगंध विस्तीर्ण करते हुए यशस्वी बन जाते हैं। इसी प्रकार हे प्रभु! आप वनों में छाए उन घने बादलों के समान हैं, जिनके बरसने की आशा में मयूर हर्षित होकर नृत्य करने लगता है अथवा जिस प्रकार चकोर पक्षी निरंतर चंद्रमा की ओर दृष्टि लगाए उसे निहारता रहता है। वन के उस मयूर के समान आपकी कृपादृष्टि की आशा और उल्लास की मन:स्थिति में हमारा मन–मयूर भी हर्षित होकर झूमने, नाचने लगता है। साथ ही चकोर पक्षी के समान सतत रूप से एकाग्रचित्त होकर केवल आपके ध्यान में ही मग्न रहता है। भक्तिभाव में विभोर कवि रैदास आगे कहते हैं कि हे प्रभु! आप उस दीपक के समान हैं, जिसमें पड़ी बाती की ज्योति दिन–रात प्रज्वलित रहती है। इसी प्रकार हम मन भी आपके संसर्ग और ध्यान के फलस्वरूप सदैव ज्ञान के प्रकाश से आलोकित रहता है। यही नहीं आप एक चमकते हुए, आकर्षक व मूल्यवान मोती के समान हैं और हम उस धागे के समान, जिसमें मोती को पिरोते ही उस धागे का महत्व कई गुना बढ़ जाता है। इसी प्रकार आपका सानिध्य प्राप्त करते ही हमारा जीवन एवं हमारा अस्तित्व सार्थक बन जाता है। ऐसे ही स्वर्ण को गलाने और उसे चमकदार बनाने के लिए सुहागे का प्रयोग किया जाता है। मेरे लिए आपका और मेरा संबंध भी इसी प्रकार से अन्योन्याश्रित है, आपका और मेरा अनन्य संबंध है, आपके बिना मेरा उद्धार एवं शुद्धीकरण असंभव है। अंत में कवि रैदास कहते हैं कि हे प्रभु! आप मेरे स्वामी है और मैं आपका दाास हूँ। मैं रैदास इसी दासत्व के भाव से आपका शरणागत होकर दिन–रात आपकी भक्ति में लीन रहता हूँ।

काव्य सौंदर्य—

1. कवि ने ईश्वर से अपनी तुलना करते हुए जो उपमाएँ दी हैं, वे अत्यंत प्रभावोत्पादक एवं मनोरम हैं। 2. अपने प्रभु के प्रति कवि का अनन्य भाव, समर्पण भाव व दासत्व भाव द्रष्टव्य है। 3. **भाषा**—अवधी और ब्रजभाषा। 4. **रस**—भक्ति। 5. **गुण**—प्रसाद। 6. **अलंकार**—अनुप्रास, उपमा, पुनरुक्तिप्रकाश। 7. **छंद**—गेय पद।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित पद्यांश का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—

काव्य सौंदर्य—1. यहाँ प्रभु को 'दीपक', भक्तों को 'बाती' की उपमा देकर सुंदर भावाभिव्यक्ति की गई है। 2. **भाषा**—अवधी और ब्रजभाषा। 3. **रस**—भक्ति। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **छंद**—गेय पद। 6. **अलंकार**—उपमा।

2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए—

उत्तर—

(क) अनुप्रास अलंकार। (ख) अनुप्रास अलंकार।

3. निम्नलिखित पंक्तियों में रस का नाम बताइए—

उत्तर—

(क) रस—श्रृंगार रस **(ख) रस**—भक्ति रस।

3 मीराबाई (पदावली)

(जन्म : सन् 1498 ई० - मृत्यु : सन् 1546 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

  उत्तरमाला

  1. (ग) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ग) **6.** (ग) **7.** (क) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (क) **13.** (क) **14.** (घ) **15.** (क) **16.** (ग) **17.** (ख) **18.** (क) **19.** (ख) **20.** (घ) **21.** (ख) **22.** (ग) **23.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर—

1. छात्र स्वयं करें।

2. मीराबाई की रचनाओं की सूची—1. नरसी जी का मायरा, 2. गीत गोविंद की टीका, 3. राग सोरठ के पद, 4. मीराबाई की मलार, 5. फुटकर पद, 6. राग गोविंद, 7. राग विहाग, 8. गरबा गीत, 9. मीरा की पदावली।

3. मीरा लोक-लाज खोकर कृष्ण के प्रेम में लीन रहती थीं। मंदिर में जाकर कृष्ण की प्रतिमा के सामने आनंद-विह्ल होकर नृत्य करती थीं। उनके इस रूप में रुष्ट होकर राणा ने उन्हें मार डालने के लिए कई बार प्रयास किया। इस प्रकार राणा ने मीरा के साथ अनुचित व्यवहार किया।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. मीरा का जन्म 1498 ई० को राजस्थान में मेड़ता के पास चौकड़ी गाँव में हुआ था।

2. मीरा कृष्ण भक्ति शाखा की कवयित्री थीं।

3. मीरा की दो रचनाओं के नाम हैं—1. राग गोविन्द 2. मीरा की पदावली।

4. मीरा ने अपने काव्य की रचना ब्रजभाषा भाषा में की है।

5. मीरा के काव्य की शैली मुक्तक है।

6. मीरा के काव्य का मुख्य स्वर कृष्णभक्ति है।

7. मीरा गोपियों की भाँति माधुर्य-भाव से कृष्ण की उपासना किया करती थीं। मीरा मंदिर में जाकर कृष्ण की प्रतिमा के समक्ष आनंद-विह्ल होकर नृत्य करती थी। तथा कृष्ण की भक्तिके गीत गाती थीं।

8. **जीवन-परिचय**—राव रत्नसिंह की पुत्री कृष्ण की प्रेम दीवानी मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई० (संवत् 1555 विक्रमी) के आसपास राजस्थान में मेड़ता के पास चौकड़ी गाँव में हुआ था। इनकी माता का नाम कुसुम कुँवर था। इनके पर दादा जोधपुर के संस्थापक राव जोधाजी एवं दादा राव दूदाजी थे। बचपन में ही माँ का देहान्त हो जाने के कारण ये अपने दादा (राव दूदाजी) के पास रहीं। इनके पितामह बड़े ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अत: मीराबाई के जीवन पर भी इसका पूरा प्रभाव पड़ा। उदयपुर के राणा साँगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह 1516 ई० में हुआ था। विवाह के सात वर्ष बाद ही अर्थात् 25 वर्ष की अवस्था में ही ये विधवा हो गई

थीं।

मीरा बचपन से ही कृष्ण की भक्त थीं। गोपियों की भाँति मीरा माधुर्य–भाव से कृष्ण की उपासना किया करती थीं।

ये श्रीकृष्ण को ही अपना पति कहती थीं और लोक–लाज खोकर कृष्ण के प्रेम में लीन रहती थीं। मन्दिर में जाकर अपने आराध्य की प्रतिमा के समक्ष ये आनन्द–विह्वल होकर नृत्य करती थीं। उनके इस रूप ने राणा को और भी अधिक रुष्ट कर दिया। इन्होंने मीरा को मार डालने के लिए कई बार प्रयास किया। अन्त में मीरा राणा के दुर्व्यवहार से दु:खी होकर वृन्दावन चली गईं। उनकी कीर्ति चारों ओर फैल गयी। राणा को अपनी भूल पर भारी पश्चात्ताप हुआ, परन्तु वह मीरा को वापस नहीं बुला सके। **अन्त में यह प्रेम–दीवानी द्वारिका में कृष्ण की मूर्ति के समक्ष 'हरि तुम हरो जन की पीर' पद गाती हुई उस मूर्ति में सन् 1546 ई० में विलीन हो गईं।** इस प्रकार वह कृष्ण की दीवानी कृष्णमय हो गईं।

साहित्यिक सेवाएँ—मीरा के काव्य का मुख्य स्वर कृष्ण–भक्ति है। ये श्रीकृष्ण की उपासिका थीं और अपने जीवन के संपूर्ण उतार–चढ़ावों में भी ये अपने 'गिरिधर गोपाल' का गुणगान करती रही। इनकी भक्ति–साधना ही इनकी काव्य–साधना है। दाम्पत्य–प्रेम के रूप में व्यक्त इनके संपूर्ण काव्य में इनके हृदय के मधुर भाव गीत बनकर बाहर उमड़ पड़े हैं। विरह की स्थिति में इनके वेदनापूर्ण गीत अत्यंत हृदयस्पर्शी बन पड़े हैं। इनका प्रत्येक पद सच्चे प्रेम की पीर से परिपूर्ण है। भव–विभोर होकर गाए गए तथा प्रेम एवं भक्ति से ओत–प्रोत इनके गीत आज भी तन्मय होकर गाए तथा प्रूम'

रचनाएँ—मीरा कृष्ण की भक्ति में लीन होकर जिन पदों को नाचते, खड़ताल बजाते हुए अपने उपास्यदेव की मूर्ति के सम्मुख गाया करती थीं, वे ही उनकी रचनाएँ हैं। मीरा के नाम से सात–आठ कृतियों का उल्लेख मिलता है—

1. **नरसी जी का मायरा**—इसमें मुख्य रूप से गुजरात के प्रसिद्ध भक्त नरसिंह मेहता की भक्ति एवं भात भरने की कथा का वर्णन है।
2. **गीत गोविन्द की टीका**—यह जयदेव के द्वारा रचित गीत गोविन्द की टीका है।
3. **राग सोरठ के पद**—इसमें मीरा, कबीरदास आदि की पदावली संकलित हैं।
4. **मीराबाई की मलार**—इस नाम के गीत मिलते हैं।

इसके अतिरिक्त **'फुटकर पद'**, **'राग गोविन्द'**, **'राग विहाग'** तथा **'गरबा गीत'** भी इनकी रचनाएँ हैं। परन्तु इनकी प्रसिद्धि का आधार **'मीरा की पदावली'** है।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. मीरा भगवान के साकार रूप की उपासिका थीं। कृष्ण के श्याम सुंदर रूप, कान में कुंडल, हाथ में मुरली और गले में वनमाला श्रीकृष्ण के इस रूप पर मीरा मोहित थीं।
2. मीना ने गोविंद श्रीकृष्ण को मोल लिया है।
3. मीरा कृष्ण के मिलन में यह कठिनाई अनुभव करती हैं कि मीरा के चारों मार्ग (कर्म, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य) बंद हैं अर्थात् इनमें से कोई भी मार्ग मीरा के लिए खुला नहीं है।
4. मीरा को राम–नामरूपी धन प्राप्त हो गया है। उस धन की यह विशेषता है कि उसे खर्च करके भी

समाप्त नहीं किया जा सकता। इसे कोई चोर भी चुरा नहीं सकता। यह धन खर्च करने से निरंतर बढ़ता रहता है।

5. मीरा के द्वारा कृष्ण को मोल लेने के सम्बन्ध में संसार के लोगों की अलग-अलग धारणा है। कोई कहता है कि मीरा कृष्ण को चुपचाप खरीदा है। कोई कहता है कि यह सौदा महँगा पड़ा है, कुछ लोगों का कहना है कि मीरा ने श्रीकृष्ण को सस्ते में खरीद लिया है। कुछ लोग कहते हैं कि खरीदी गई यह वस्तु काली हे, कुछ लोग कहते हैं कि गोरी है।

6. कृष्ण को मोल लेने के सम्बन्ध में मीरा कहती हैं कि मैंने श्रीकृष्ण को न तो छिपाकर खरीदा है और न चुपचाप, मैंने तो उन्हें ढोल बजाकर डंके की चोट पर खरीदा है। मैंने कृष्ण को ठीक नाप-तौलकर (अच्छी तरह से सोच-विचार कर) खरीदा है। इस सौदे में मैं बिल्कुल खरी उतरी हूँ। मैंने तो यह अमूल्य वस्तु मोल ले ही ली है, मैंने बहुत अधिक मोल देकर श्रीकृष्ण को खरीदा है।

7. मीरा संसार-सागर को पार करने का उपाय बताती हैं कि राम नाम का बेड़ा बाँधकर संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है। राम नाम का बेड़ा बाँधने से मीरा का अभिप्राय भगवान की भक्ति करने से है।

8. मीरा ने प्रेम की लता को आँसुओं के जल से सींच-सींचकर पल्लवित किया। उस लता से उसे आनंद रूपी फल प्राप्त हुआ।

9. **'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई' पद का सारांश**

मीराबाई कहती हैं कि एकमात्र श्रीकृष्ण ही मेरे हैं, जिन्होंने इंद्र के अत्याचार से ग्वालों को बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत धारण किया था और जो गौओं का पालन करनेवाले हैं। श्रीकृष्ण के अतिरिक्त मेरा किसी और से कोई नाता नहीं है। मैं उन्हीं श्रीकृष्ण को अपना पति मानती हूँ, जिनके सिर पर मोर-पंख का मुकुट है। श्रीकृष्ण के अतिरिक्त और सब संबंध नगण्य हैं, अतएव न कोई मेरा पिता है न माता, न भाई और न कोई बंधु। श्रीकृष्ण को पाने के लिए मैंने अपने कुल की तथाकथित मर्यादाओं को भी तिलांजलि दे दी है। मुझे पता है कि अब मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। संतों के पास बैठना और उनकी संगति का लाभ लेना ही मेरा उद्देश्य बन गया है, लोक-लाज का मेरे लिए कोई महत्व नहीं रह गया है। ईशवर-प्रेम की जो बेल मैंने आँसुओं के जल से सींची है, यह बेल अब दूर-दूर तक फैल गई है और उस पर आनंदरूपी फल भी आ गए हैं। इस आनंद का सुफल यह है कि मैं भक्ति को देखती हूँ तो प्रसन्नता मिलती है। इस संसार के व्यवहारों में मेरी रुचि नहीं रह गई है। इस संसार को देखकर मुझे रोना आता है। मीराबाई कहती हैं कि हे गिरिधर श्रीकृष्ण! मैं तुम्हारी दासी हूँ, तुम मेरा उद्धार करो।

10. **'पायो जी मैंने राम रतन धन पायो', मीरा-रचित इस पद का सारांश (मूलभाव)**

मीरबाई कहती हैं कि मैंने राम-नाम-रूपी बहुमूल्य रत्न प्राप्त कर लिया है। मेरे गुरु ने राम-नाम के रूप में मुझे अमूल्य वस्तु प्रदान की है, जिसे मैंने गुरु की कृपा समझकर अपना लिया है। इस राम-नाम-रूपी धन को प्राप्त करके मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो मुझे जन्म-जन्मांतर का खोया हुआ खजाना मिल गया हो; क्योंकि मैंने अब तक जो कुछ भी प्राप्त किया था, वह सभी इस भौतिक संसार में खो दिया था।

राम-नाम-रूपी इस धन को खर्च करके भी समाप्त नहीं किया जा सकता। इसे कोई चोर भी चुरा नहीं सकता। यह धन तो खर्च करने से निरंतर बढ़ता रहता है।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—**

उत्तर—

(क) बसो मेरे नैनन .... बछल गोपाल।।

संदर्भ—श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त **मीराबाई** द्वारा उचित **'मीरा सुधा-सिन्धु'** से हमारी पाठयपुस्तक के **काव्य-खण्ड** में संकलित **पदावली** शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग—मीरा भगवान श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य पर मुग्ध हैं। यहाँ उनके द्वारा श्रीकृष्ण के उसी रूप-सौंदर्य का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—मीराबाई भगवान् श्रीकृष्ण की मोहक मूर्ति को अपने हृदय में बसा लेना चाहती हैं। वे कहती हैं कि नंदजी के पुत्र श्रीकृष्ण तुम मेरे नैनों में बस जाओ। श्रीकृष्ण के सुंदर स्वरूप का वर्णन करते हुए वे आगे कहती हैं कि भगवान श्रीकृष्ण सिर पर मोर पंख का मुकुट धारण किए हुए हैं। वे कानों में मछली की आकृति के कुंडल पहने हुए हैं। उनके मस्तक पर लाल रंग का तिलक लगा हुआ है। ऐसे भगवान श्रीकृष्ण मेरे (मीरा के) नेत्रों में बस जाएँ। श्रीकृष्ण की आकृति मोहित करनेवाली है, उनका रंग साँवला है और नेत्र बड़े-बड़े हैं। उनके (श्रीकृष्ण के) होंठों पर अमृत के समान मधुर रस बरसाने वाली मुरली सुशोभित है, गले में वैजयंतीमाल शोभायमान् है तथा उनकी कमर में छोटी-सी घंटी और पैरों में सरस एवं मधुर ध्वनि उत्पन्न करने वाले घुँघरू सुशोभित हैं। मीराबाई कहती हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण संतों को सुख देनेवाले और भक्तों से प्रेम करनेवाले हैं। ऐसी मनोहार छवि वाले श्रीकृष्ण मेरे नेत्रों में आकर बस जाएँ।

काव्य सौंदर्य-

1. भगवान् श्रीकृष्ण के मनमोहक रूप का बड़ा सजीव, सुंदर, हृदयग्राही और चित्रात्मक वर्णन हुआ है। 2. **भाषा**—राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा। 3. **रस**—भक्ति। 4. **गुण**—माधुर्य। 5. **अलंकार**—अनुप्रास।

(ख) पायो जी म्हैं तो .... हरख जस गायो।।

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग—इस पद में श्रीकृष्ण के प्रेम में दीवानी और उनकी अनन्य आराधिका मीराबाई ने भगवान के नाम की महिमा का वर्णन किया है।

व्याख्या—मीरबाई कहती हैं कि मैंने राम-नाम-रूपी बहुमूल्य रत्न प्राप्त कर लिया है। मेरे गुरु ने राम-नाम के रूप में मुझे अमूल्य वस्तु प्रदान की है, जिसे मैंने गुरु की कृपा समझकर अपना लिया है। इस राम-नाम-रूपी धन को प्राप्त करके मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो मुझे जन्म-जन्मांतर का खोया हुआ खजाना मिल गया हो; क्योंकि मैंने अब तक जो कुछ भी प्राप्त किया था, वह सभी इस भौतिक संसार में खो दिया था।

राम-नाम-रूपी इसधन को खर्च करके भी समाप्त नहीं किया जा सकता। इसे कोई चोर भी चुरा नहीं सकता। यहधन तो खर्च करने से निरंतर बढ़ता रहता है। मीराबाई कहती हैं कि मुझे सत्य की नाव मिल गई है ओर इसका खेवनहार (नाविक) मेरा सदगुरु है। सत्यरूपी इसी

नाव के सहारे मैं संसाररूपी अपार सागर को पार कर लूँगी; अर्थात् मुझे मोक्ष प्राप्त हो जाएगा। अंत में मीराबाई कहती हैं कि मेरे प्रभु तो चतुर गिरध गोपाल श्रीकृष्ण हैं। उनके यश का वर्णन मैं उल्लासपूर्वक करती हूँ।

काव्य सौंदर्य-

1. यहाँ सदगुरु की महिमा का वर्णन किया गया है। 2. भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति और श्रद्धा-भावना व्यक्त हुई है। 3. मीरा के आराध्यदेव भगवान् श्रीकृष्ण हैं। यहाँ 'राम' शब्द उनके लिए ही प्रयुक्त हुआ है। 4. **भाषा**—राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा। 5. **रस**—शांत। 6. **गुण**—प्रसाद। 7. **अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास और रूपक। 8. **छंद**—गेय पद।

(ग) मैं तो साँवरे के .... रसीली जाँची।।

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत पद में मीराबाई कहती हैं कि मैं तो श्रीकृष्ण के रंग में रँग गई हूँ और श्रीकृष्ण का नाम ही मुझे सरल प्रतीत होता है।

व्याख्या—मीराबाई श्रीकृष्ण के प्रेम में आत्मविभोर होकर कहती हैं कि मैं तो साँवले श्रीकृष्ण के रंग में पूरी तरह से रँग गई हूँ, अर्थात् मैं भगवान् श्रीकृष्ण के प्रेम में पूरी तरह से निमग्न हो गई हूँ। मैंने पूरी तरह से अपना शृंगार किया है और पेरों में धुँघरू बाँधकर लोक-लज्जा को त्यागकर नृत्य कर रही हूँ। साधुओं की संगति के कारण मेरे हृदय की सारी कलुषताएँ समाप्त हो गई हैं। मीरा कहती हैं कि मैं प्रभु (भगवान् श्रीकृष्ण) के गुणों का गान कर करके कालरूपी सर्प के भय से बच गई हूँ, अर्थात् मुझे संसार में आवागमन (जन्म-मृत्यु) के चक्र से मुक्ति मिल गई है। अब मुझे श्रीकृष्ण के बिना यह संपूर्ण संसार व्यर्थ और सूना लगता है और उनकी बातों को छोड़कर अन्य बातें भी व्यर्थ और सूना लगता है और उनकी बातों को छोड़कर अन्य बातें भी व्यर्थ प्रतीत होती हैं। मीराबाई कहती हैं कि मैंने भगवान् श्रीकृष्ण से सदैव रसीली (रसयुक्त) भक्ति की याचना ही की है। यह रसीली भक्ति मेरी दृष्टि में उचित भी है।

काव्य सौंदर्य-

1. इस पद में मीरा की अनन्य भक्ति-भावना का भावात्मक चित्रण हुआ है। 2. मीरा ने स्वयं को श्रीकृष्ण के समक्ष समर्पित कर दिया है। 3. प्रेम दीवानी मीरा के लिए यह संसार निस्सार और व्यर्थ है। 4. **भाषा**—राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा। 5. **रस**—शांत और भक्ति। 6. **गुण**—माधुर्य। 7. **अलंकार**—अनुप्रास, रूपक और पुनरूक्तिप्रकाश। 8. **छन्द**—गये पद।

(घ) माई री मैं तो .... जनम कौ कौल।।

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग—इस पद में मीरा कहती हैं कि मैंने तो गोविंद, अर्थात् श्रीकृष्ण को मोल ले लिया और क्योंकि मैंने श्रीकृष्ण को खरीद लिया है; अत: मेरा उन पर पूरा-पूरा अधिकार हो गया है।

व्याख्या—मीराबाई कहती हैं कि अरी मैया! मैंने तो श्रीकृष्ण को मोल ले लिया है। किसी वस्तु की खरीद कोई छिपाकर करता है और कोई चुपचाप; किंतु मैंने श्रीकृष्ण को न तो छिपाकर खरीदा है और न चुपचाप, मैंने तो उन्हें ढोल बजाकर डंके की चोट पर खरीदा हे।

कोई कहता है कि यह सौदा महँगा पड़ा है और कुछ लोगों का कहना है कि मैंने श्रीकृष्ण को सस्ते में ही खरीद लिया है। वास्तविकता यह है कि मैंने गोविंद को ठीक नाप-तौलकर (अच्छी तरह सोच-विचारकर) खरीदा है। इस सौदे में मैं बिल्कुल खरी उतरी हूँ। लोगों की अलग-अलग विचारधाराएँ हैं। कुछ लोग कहते हैं कि खरीदी गई यह वस्तु काली है, कुछ लोग कहते हैं कि गोरी है; किंतु मैया! मैंने तो यह अमूल्य वस्तु मोल ले ही ली है, मैंने बहुत अधिक मोल देकर श्रीकृष्ण को खरीदा है। लोगों को मेरे इस सौदे की सच्चाई अब समझ में आने लगी है। अब सभी जान गए हैं कि मैंने गोविंद को खूब आँख खोलकर लिया है, सोच-विचारकर खरीदा है। किसी को इस बात का जरा भी आभास नहीं है कि भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी पूर्वजन्म की प्रतिज्ञा के अनुसार मुझे दर्शन दिए हैं।

काव्य सौंदर्य—

1. प्रस्तुत पद में श्रीकृष्ण के प्रति मीरा का अनन्य समर्पण भाव व्यक्त हुआ है। जिस प्रकार जब कोई सौदागर किसी वस्तु को खरीदता है तो उसकी खरीद पर तरह-तरह की प्रतिक्रिया हुआ करती है; उसी प्रकार श्रीकृष्ण को अपना लेने पर मीराबाई की तरह-तरह की आलोचनाएँ हो रही हैं; किंतु मीरा को इसकी कोई चिंता नहीं है। उनके अनुसार तो उनका सौदा सोलह आने ठीक है। 2. **भाषा**—पद की भाषा ब्रज है, किंतु इसमें राजस्थानी भाषा का पुट है। 'बजन्ता ढोल', 'तराजू तोल' ओर 'आँखें खोल' मुहावरों का सुंदर प्रयोग द्रष्टव्य है। 3. **रस**—भक्ति। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—रूपक और अनुप्रास।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित पद्यांश का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ मीरा के ह्रदय में भारी कष्टों के मध्य कृष्ण-प्रेम उत्पन्न होने व उसे कृष्ण-प्रेम के परिणामस्वरूप आनंद रूपी फल की प्राप्ति होने वाली है। 2. **भाषा**—राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा। 3. **रस**—भक्ति। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश, रूपक और अनुप्रास।

2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए—

उत्तर—

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) अनुप्रास अलंकार।

3. मीरा ने अपने पदों में गेय छंद का प्रयोग किया है।

4. शांत रस।

5. निम्नलिखित पदों में नाम सहित समास-विग्रह कीजिए—

उत्तर—

समस्तपद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
चरण-कमल	**कमल रूपीचरण**	**कर्मधारय समास**
अमोल	**बिना मोल का नञ्**	**समास**
नन्दलाल	**नंद का लाल**	**संबंध तत्पुरुष समास**

कुमति	**कुत्सित है जो मति**	**कर्मधारय समास**
ब्रजवासी	**ब्रज का वासी**	**संबंध तत्पुरुष समास**

6. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

उत्तर—

तद्भव शब्द	**तत्सम रूप**	**तद्भव शब्द**	**तत्सम रूप**
विसाल	**विशाल**	सबद	**शब्द**
आणंद	**आनंद**	नैनन	**नयन**
विपत	**विपद**	किरपा	**कृपा**

4 रहीम

(जन्म : सन् 1556 ई० मृत्यु : सन् 1627 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

  उत्तरमाला

  1. (ख) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (क) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (घ) **9.** (ख) **10.** (क) **11.** (ख) **12.** (क) **13.** (ख) **14.** (क) **15.** (ग) **16.** (क) **17.** (ग) **18.** (ग) **19.** (क) **20.** (ख)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. रहीम अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक थे। अकबर ने इन्हें बहुत-सी जागीरें प्रदान की थी। अकबर ने इन्हें 'खानखाना' की उपधि से विभूषित किया। अकबर की मृत्यु के बाद जहाँगीर राजगद्दी पर बैठा। जहाँगीर से रहीम की नहीं बनी। उसने इन पर राजद्रोह का मुकदमा लगाकर इनहें बंदी बना लिया तथा इनकी समसत जागीरें जब्त कर लीं। कैद से छूटने पर इनकी दशा शोचनीय हो गई। इन्हें चित्रकूट में नजरबंद कर दिया गया। इस प्रकार अकबर के बाद रहीम को अपने जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ा।

2. स्वयं करें।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. रहीम का जन्म सन् 1556 ई० (संवत् 1613 विक्रमी) में लाहौर में हुआ था।

2. रहीम ने ब्रज भाषा में अपने काव्य की रचना की।

3. रहीम की दो रचनाएँ हैं—1. रहीम सतसई 2. श्रृंगार सोरठा।

4. **रचनाएँ**—रहीम ने अनेक ग्रंथों की रचना की। उनमें से प्रमुख कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

1. बरवै नायिका भेद-वर्णन—इसमें कवि ने बरवै छन्द के माध्यम से नायक-नायिका भेदों

का सुन्दर और सरस वर्णन किया है। इसकी भाषा अवधी है।

2. **रहीम सतसई**—इसमें नीति और उपदेशात्मक दोहों की भरमार है। इस कृति में कवि की भावुकता, मार्मिकता और जीवन की अनुभूतियाँ देखने को मिलती हैं। इसमें लगभग तीन सौ दोहे हैं।
3. **शृंगार सोरठा**—यह ग्रन्थ अधूरा है, अभी तक इसके केवल छह छन्द ही प्राप्त हैं, जो सोरठा छन्द में रचित हैं। इसमें शृंगार रस की प्रधानता है।
4. **बरवै**—इस ग्रन्थ में शृंगार विषय को लेकर एक सौ एक बरवै रचे हैं। कुछ बरवै देवताओं की प्रार्थना से भी सम्बन्धित हैं।
5. **मदनाष्टक**—यह रहीम की सर्वश्रेष्ठ काव्य-रचना मानी जाती है। इसमें श्री कृष्ण और गोपियों की प्रेम सम्बन्धी लीलाओं का सरस वर्णन किया गया है। यह ब्रजभाषा में रचित है।
6. **नगर शोभा**—इस ग्रन्थ में एक सौ बयालीस दोहे हैं। इसमें रहीम ने विभिन्न जातियों और व्यवसायों की स्त्रियों का वर्णन प्रस्तुत किया है।
7. **रास पंचाध्यायी**—यह श्रीमद्भागवत् पुराण के आधार पर लिखा गया ग्रन्थ है, जो अप्राप्य है।

इन कृतियों के अतिरिक्त शृंगार-सतसई, रहीम काव्य, खेट कौतुकम आदि भी रहीम की रचनाएँ हैं। इनकी रचनाओं का पूर्ण संग्रह रहीम रत्नावली के नाम से प्रकाशित हुआ है।

भाषा-शैली—रहीम का ब्रज और अवधी भाषाओं पर समान अधिकार था। इनकी भाषा, सरल, स्पष्ट तथा प्रभावपूर्ण है। इनकी भाषा में अवधी और संस्कृत के शब्दों के साथ-साथ अरबी, फारसी और तुर्की भाषा के शब्द भी मिलते हैं, जिसके माध्यम से इनकी भावाभिव्यक्ति अत्यधिक कुशलतापूर्वक हुई है।

रहीम की शैली का रूप मुक्तक है किन्तु इन्होंने दोहा, कवित्त, सोरठा तथा बरवै छन्दों के प्रयोग में इन विभिन्न शैलियों को अपनाया है। प्राय: सभी प्रमुख रस तथा अलंकारों का प्रयोग इनके काव्य में मिलता है।

5. **जीवन-परिचय**—रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खानखाना था। इनका जन्म लाहौर (अब पाकिस्तान में) सन् 1556 ई० (संवत् 1613 विक्रमी) के लगभग हुआ था। इनके पिता बैरमखाँ, मुगल सम्राट अकबर के संरक्षक थे। किन्हीं कारणों से अकबर बैरम खाँ से रुष्ट हो गया था और उसने उन्हें हज पर भेज दिया था। रास्ते में बैरम खाँ के शत्रु ने उसकी हत्या कर दी। बालक रहीम और उनकी माँ की अकबर ने देखभाल की व रहीम की शिक्षा-दीक्षा की उचित व्यवस्था की।

   रहीम अपनी योग्यता और प्रतिभा के कारण अकबर दरबार के नवरत्नों में से एक थे। ये अकबर के प्रधान सेनापति और मंत्री भी थे। ये वीर योद्धा थे और बड़े कौशल से सेना का संचालन करते थे। अकबर ने इन्हें बहुत-सी जागीरें प्रदान की थीं। ये बड़े उदार और विद्या-प्रेमी थे तथा पंडितों और कवियों का विशेष सम्मान करते थे। ये बहुत बड़े दानी भी थे। कहा जाता है कि अकबर के दरबारी कवि गंग ने इनकी प्रशंसा में एक कविता लिखी थी, जिस पर प्रसन्न होकर रहीम ने उनको 36 लाख रुपए पुरस्कार में दिए थे। अकबर इनसे बहुत खुश था।

उसने इन्हें 'खानखाना' की उपाधि से विभूषित किया था। अकबर की मृत्यु के उपरान्त इनके भाग्य ने पलटा खाया। जहाँगीर गद्दी पर बैठा। इससे इनकी नहीं बनी, उसने इन पर राजद्रोह का मुकदमा लगाकर इन्हें बन्दी बना लिया तथा इनकी समस्त जागीरें जब्त कर लीं। कैद से छूटने पर इनकी दशा शोचनीय थी। इन्हें चित्रकूट में नजरबन्द कर दिया गया। इस प्रकार रहीम ने जीवन के सुख-दु:ख दोनों पक्षों का अनुभव प्राप्त किया। इन अनुभवों को उन्होंने अपने दोहों में अंकित किया है। सन् 1627 ई० में इनका स्वर्गवास हो गया।

हिन्दी साहित्य-संसार में रहीम अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके नीति के दोहे तो सर्वसाधारण की जिह्वा पर रहते हैं। इनके दोहों में कोरी नीति की नीरसता नहीं है। उनमें मार्मिकता तथा कवि-हृदय की सच्ची संवेदना भी मिलती है।

साहित्यिक सेवाएँ–रहीम के पिता बैरम खाँ अपने युग के एक अच्छे नीतिज्ञ एवं विद्वान् थे; अत: बाल्यकाल से इनमें साहित्य के प्रति अनुराग उत्पन्न हो गया था। योग्य गुरुओं के सान्निध्य में रहकर इनमें अनेक काव्य-गुणों का विकास हुआ। इन्होंने अपने अध्यवसाय से भी कई भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। इन्होंने कई ग्रन्थों का अनुवाद किया तथा ब्रज, अवधी और खड़ीबोली में अपनी कविताएँ भी लिखीं। इन्होंने पुराण एवं अनेक शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। एक सफल नीतिज्ञा एवं विद्वान् होने के साथ ही ये मानवीयता की भावनाओं से ओत-प्रोत सहृदय व्यक्ति थे। यही कारण है कि नीति-संबंधी काव्य का सृजन करने के साथ ही इन्होंने प्रेम एवं भक्ति पर आधारित काव्य की रचना भी की थी।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. रहीम उस प्रीति की सराहना करते हैं जिससे मिलने पर प्रेम का रंग द्विगुणित हो जाता है। जैसे हल्दी और चूने के मिलने पर हल्दी अपना पीलापन छोड़ देती है और चूना अपनी सफेदी त्याग देता है तथा दोनों मिलकर लाल रंग में परिवर्तित हो जाते हैं।
2. कवि रहीम के अनुसार जो व्यक्ति हीन व्यक्तियों के प्रति दया-भाव रखता है, वहीं दीनबंधु के समान होता है।
3. रहीम के अनुसार जिस प्रकार चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद अर्थात् दुर्लभता के बाद मनुष्य को शरीर प्राप्त होता है, उसी प्रकार इस संसार में स्वार्थरहित प्रेम प्राप्त करना दुर्लभ है।
4. रहीम ने मछली द्वारा जल से अलग होने पर प्राण त्यागने को देश-प्रेम की भावना के दृष्टांत के तौर पर प्रयोग किया है।
5. सज्जन से प्रेम-सम्बन्ध के एक बार टूट जाने पर उसे बार-बार मनाना चाहिए।
6. रहीम के अनुसार अच्छे स्वभाव के व्यक्ति पर कुसंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता ओर सुसंग से दुर्जन व्यक्ति भी सज्जन बन जाते हैं।
7. रहीम जी कहते हैं कि प्रेम का बंधन एक बार टूट जाता है तो दोबारा जोड़ने पर उसमें गाँठ पड़ जाती है और वह गाँठ कभी खत्म नहीं होती अर्थात् प्रेम-संबंध पहले जैसा विश्वसनीय और स्थायी नहीं रहता।
8. ओछे (नीचे) प्रकृति के लोगों से मित्रता और शत्रुता दोनों ही अच्छी नहीं होती। जैसे—कुत्तों का

चाटना और काटना दोनों ही कष्टदायी हैं यदि कुत्ता चाटता है तो अपवित्र कर देता है और कुत्ता काटता हैं तो शरीर में विष फैलता है।

9. इस दोहे का भाव यह है कि यदि कोई सज्जन व्यक्ति रूठ जाए तो उसे बार-बार मनाना चाहिए। जैसे मोतियों का हार टूट जाता है तो उसे बार-बार पिरो लिया जाता है।

10. रहीम के अनुसार हमारे नेत्रों से आँसू निकलकर हृदय के दुख को प्रकट करते हैं।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नांकित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—**

उत्तर—

(क) जो रहीम उत्तम .... रहत भुजंग।।

संदर्भ—'रहीम-ग्रंथावली' से संकलित प्रस्तुत दोहा हमारी पाठयपुस्तक के **काव्य-खण्ड** के अंतर्गत **दोहा** शीर्षक से उदधृत है। इसके रचयिता **कविवर रहीम** हैं।

प्रसंग—इस दोहे में रहीम ने उत्तम व्यक्तियों के स्वभाव का वर्णन किया है।

व्याख्या—कविवर रहीम कहते हैं कि जो अच्छे स्वभाव के व्यक्ति हैं, बुरी संगत भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। जिस प्रकार चंदन के वृक्ष पर अनेक सर्प लिपटे रहते हैं, फिर भी उनके विष का चंदन के गुणों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, उसी प्रकार सज्जनों के ऊपर दुर्जनों की किसी भी बुरी बात का कोई असर नहीं होता।

काव्य सौंदर्य—

1. यहाँ पर सज्जनों की महिमा का वर्णन किया गया है। 2. कवि का यह मत है कि दृढ़ चरित्र के व्यक्ति पर कुसंग का कोई प्रभाव नहीं होता। 3. **भाषा**—ब्रज। 4. **रस**—शांत। 5. **गुण**—प्रसाद। 6. **छंद**—दोहा। 7. **अलंकार**—अनुप्रास।

(ख) रहिमन असुआँ नैन .... भेद कहि देई।।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—रहीम ने स्पष्ट किया है कि घर से निकाले जाने पर हर व्यक्ति के भेद कह देता है।

व्याख्या—कवि रहीम कहते हैं कि आँखों से ढलकते ही आँसू हृदय के सारे दु:ख को प्रकट कर देते हैं। उनका मत है कि जिसको घर से निकाला जाएगा, वह घर के सारे भेदों को क्यों न कह देगा? तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार घर से निकाले जाने पर व्यक्ति दूसरों के सामने घर के सारे भेदों को प्रकट कर देता है; उसी प्रकार से आँसू आँखों से निकलने पर हृदय के भेद को प्रकट कर देते हैं।

काव्य सौंदर्य—

1. यहाँ आँखों से ढलकते आँसुओं को देखकर किसी के मन की पीड़ा के अभिव्यक्त हो जाने के तथ्य को बड़े ही कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। 2. जिस प्रकार घर से निकाला गया व्यक्ति, अपने घर का सारा भेद खोल देता है, उसी प्रकार मनुष्य की आँखों से निकले आँसू भी उसके मन का भेद खोल देते हैं। 3. कवि की काव्यात्मक प्रतिभा इस उदाहरण में

व्यक्त होती है। 4. **भाषा**—ब्रज। 5. **रस**—शांत। 6. **गुण**—प्रसाद। 7. **छंद**—दोहा। 8. **अलंकार**—मानवीकरण।

(ग) रहिमन प्रीति सराहिए .... तजै सफेदी चून॥

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—इस दोहे में सच्चे और वास्तविक प्रेम के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है।

व्याख्या—रहीम कहते हैं कि हमें ऐसे प्रेम की सराहना करनी चाहिए, जिसमें प्रेमी से मिलने पर प्रेम का रंग द्विगुणित हो जाता हो। ठीक वैसे ही जैसे हल्दी ओर चूने के मिलने पर हल्दी अपना पीलापन छोड़ देती है और चूना अपनी सफेदी त्याग देता है तथा दोनों मिलकर लाल रंग में परिवर्तित हो जाते हैं।

काव्य सौंदर्य—

1. जब तक स्वयं का अस्तित्व भुला न दिया जाए, प्रेम का वास्तविक स्वरूप प्रकट नहीं होता। कवि ने हल्दी-चूने के मिलन का उदाहरण देकर इस प्रेम की प्रकृति के भाव का सुंदर चित्रण किया है। 2. **भाषा**—ब्रज। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **छंद**—दोहा। 6. **अलंकार**—उदाहरण और अनुप्रास।

(घ) कहि रहीम संपत्ति .... साँचे मीत॥

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में कवि ने सच्चे मित्र के लक्षण बताए हैं।

व्याख्या—कविवर रहीम कहते हैं कि संपत्ति आने पर तो मनुष्य के बहुत-से सगे-संबंधी बन जाते हैं; अर्थात् धनी व्यक्ति के साथ बहुत-से लोग तरह-तरह के संबंध दिखाकर उसके सगे बने रहते हैं, किंतु सच्चे मित्र तो वे होते हैं, जो विपत्ति की कसौटी पर सदा खरे उतरते हैं अर्थात् विपत्ति में भी मित्र का साथ निभाते हैं।

काव्य सौंदर्य—

1. सच्चे मित्र की पहचान विपत्ति में होती है—इस तथ्य को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 2. **भाषा**—ब्रज। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **छंद**—दोहा। 6. **अलंकार**—अनुप्रास तथा रूपक।

(ङ) जाल परे जल .... छाँड़त छोह॥

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में रहीम ने सच्चे प्रेम की व्याख्या की है।

व्याख्या—रहीम कवि कहते हैं कि मछलियों को पकड़ने के लिए जब मछुआरा अपना जाल फेंकता है तो मछलियों के मोह ओर प्रेम को छोड़कर जल आगे बह जाता है, लेकिन मछली उस स्थिति में भी जल के प्रेम को नहीं छोड़ पाती और जल से निकाले जाने पर अपने प्राण त्याग देती है। कहने का तात्पर्य है कि सच्चा प्रेम करनेवाला कभी अपने साथी का साथ नहीं छोड़ता, भले ही उसे अपने प्राणों का त्याग क्यों न करना पड़े।

काव्य सौंदर्य—

1. यहाँ मछली और जल के संबंध के द्वारा प्रेम के स्वरूप को अत्यंत हृदयग्राही रूप में स्पष्ट किया गया है। 2. **भाषा**—ब्रज। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **छंद**—दोहा। 6. **अलंकार**—अनुप्रास और अन्योक्ति।**(च) दीन सबन को .... दीनबन्धु सम होय।।**

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत दोहे में स्पष्ट किया गया है कि हमें गरीबों, दीन-दु:खियों पर विशेष दया रखनी चाहिए।

व्याख्या—रहीम कहते हैं कि दीन पुरुष सभी मनुष्यों को कृपा की दृष्टि से देखता है, लेकिन कोई व्यक्ति उसे उपकार करने की भावना से नहीं देखता। रहीम कहते हैं कि जो मनुष्य दीनों को दया की कामना से देखता है, वह दीनबंधु के समान होता हे। आशय यह है कि हमें दीन-दु:खियों को हीन-भावना से कभी नहीं देखना चाहिए, वरन् जहाँ तक हो सके हमें उन पर दया करनी चाहिए।

काव्य सौंदर्य—

1. 'सर्वभूतहिते रत:' की भावना होनी चाहिए। 2. **भाषा**—सरल तथा प्रवाहपूर्ण। 3. **छंद**—दोहा। 4. **अलंकार**—अनुप्रास। 5. **रस**—शांत।

(छ) रहिमन ओछे नरन .... भाँति विपरीति।।

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग—इस दोहे में नीच व्यक्तियों के प्रेम और द्वेष दोनों को ही कष्टदायी बताया गया है।

व्याख्या—कविवर रहीम कहते हैं कि नीच व्यक्तियों से किया गया प्रेम और द्वेष दोनों ही घातक होते हैं, इसलिए इनसे प्रेम ओर वैर दोनों को छोड़ देना चाहिए। जिस प्रकार कुत्ते का काटना और चाटना दोनों ही कष्टदायी हैं; अर्थात् कुत्ता काटता है तो विष फैलाता है और चाहता है तो अपवित्र कर देता है; ठीक उसी प्रकार दुष्ट व्यक्ति की मित्रता और वैर दोनों ही कष्टदायक होते हैं।

काव्य सौंदर्य—

1. यहाँ रहीम ने नीच एवं दुष्ट व्यक्तियों की प्रकृति की तुलना कुत्ते सेकी है और उनसे मित्रता एवं शत्रुता दोनों को ही हानिकारक बताया है। 2. **भाषा**—ब्रज। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **छंद**—दोहा। 6. **अलंकार**—अनुप्रास।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

- **निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—**

1. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए—

उत्तर—

आँख	—	**अक्षि, नेत्र, लोचन**	मछली	—	**मीन, मत्स्य, शकरी**
फूल	—	**पुष्प, सुमन, कुसुम**	वृक्ष	—	**तरु, पेड़, विटप**
भुजंग	—	**सर्प, साँप, व्याल**	स्वान	—	**कुक्कुर, कुत्ता, सारमेय**

2. उत्तर—

(क) **काव्य सौंदर्य**—1. यहाँ पर सज्जनों की महिमा का वर्णन किया गया है। 2. कवि का यह मत है कि दृढ़ चरित्र के व्यक्ति पर कुसंग का कोई प्रभाव नहीं होता। 3. **भाषा**—ब्रज। 4. **रस**—शांत। 5. **गुण**—प्रसाद। 6. **छंद**—दोहा। 7. **अलंकार**—अनुप्रास।

(ख) **काव्य सौंदर्य**—1. रहीम ने यहाँ स्वाति की बूँद का उदाहरण देते हुए संगति के परिणाम की जो व्याख्या की है, वह व्यावहारिक दृष्टि से अनुकरणीय है। 2. **भाषा**—ब्रज। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **छंद**—दोहा। 6. **अलंकार**—दृष्टांत।

3. **निम्नलिखित में प्रयुक्त अलंकारों का लक्षण सहित नामोल्लेख कीजिए—**

(क) अनुप्रास, **लक्षण**—'ब' वर्ण की आवृत्ति।

(ख) पुनरुक्तिप्रकाश, **लक्षण**—टूटे शब्द की पुनरावृत्ति।

4. ''गाँठ पड़ना'' मुहावरे का प्रयोग रहीम की इन पंक्तियों में हुआ है—

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरेउ चटकाय।
टूटे से फिरि न जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।।

''मन लगाना'' मुहावरे का प्रयोग रहीम की इन पंक्तियों में हुआ है—

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछे कौन।।

5. शांत रस।

6. **दोहा का लक्षण**—दोहे में दो पंक्तियाँ होती हैं। दोहे में चार चरण (पाद) होते हैं। इसके पहले व तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे व चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

छन्द का लक्षण—छंद मेंचार पंक्तियाँ होती है। छंद की एक पंक्ति का नाम 'पाद' है, इसी पाद को उस छंद का चरण कहा जाता है। पहले और तीसरे चरण को विषम तथा दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहते हैं। छंद के प्रत्येक चरण में वर्णों का क्रम अथवा मात्राओं की संख्या निश्चित होती है।

5 भारतेन्दु हरिशचन्द्र (प्रेम-माधुरी)

(जन्म : सन् 1850 ई० - मृत्यु : सन् 1885 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (ख) **9.** (ख) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (क) **13.** (ख) **14.** (घ) **15.** (क) **16.** (ग) **17.** (क) **18.** (ग) **19.** (क) **20.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें।

2. **भारतेन्दु जी की रचनाओं की सूची निम्नलिखित हैं—**

1. भक्ति सर्वस्व, 2. प्रेम-माधुरी, 3. भक्त माल, 4. प्रेम मालिका, 5. प्रेम-तरंग, 6. दान-लीला, 7. कृष्ण-चरित, 8. प्रेमाश्रु-वर्षण, 9. सतसई-शृंगार, 10. प्रेम-फुलवारी, 11. प्रेम-सरोवर, 12. विजय-वैजयंती, 13. भारत-वीरत्व, 14. विजय-वल्लरी, 15. समुनांजलि, 16. बंदर-सभा, 17. बकरी विकल्प, 18. होली, 19. वर्षा विनोद, 20. राज-संग्रह 21. 'मधु मुकुल', 22. वसंत, 23. श्रीराम लीला, 24. भारत-शिक्षा, 25. प्रबोधिनी, 26. अंधेर नगरी, 27. वैदिक हिंसा-हिंसा न भवति, 28. सत्य हरिशचंद्र, 29. चंद्रावली, 30. भारत दुर्दशा, 31. नील देवी, 32. पूर्ण प्रकाश, 33. चंद्रप्रभा, 34. कश्मीर कुसुम, 35. महाराष्ट्र देश का इतिहास, 36. रामायण का समय, 37. अग्रवालों की उत्पत्ति, 38. बूँदी का राजवंश, 39. चरितावली, 40. कवि वचन सुधा।

3. छात्र स्वयं करें।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. भारतेन्दु जी का जन्म सन् 1850 ई० में काशी में हुआ था।

2. भारतेन्दु जी की किन्हीं दो रचनाओं के नाम हैं—1. प्रेम-तरंग 2. कृष्ण-चरित्र।

3. भारतेन्दु जी ने 'कवि वचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र मैगसीन' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

4. भारतेन्दु जी की कविता का मुख्य विषय सामाजिक चेतना है।

5. **जीवन-परिचय**—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म सन् 1850 ई० में काशी में हुआ था। बाबू गोपालचन्द्र इनके पिता थे, जो 'गिरधरदास' उपनाम से ब्रजभाषा में कविता करते थे। सात वर्ष की अवस्था में भारतेन्दु जी ने निम्नलिखित दोहा लिखकर अपने पिताजी से श्रेष्ठ कवि होने का आशीर्वाद प्राप्त किया—

लै ब्यौढ़ा ठाढ़े भये, श्री अनिरुद्ध सुजान।
बाणासुर की सैन को, हनन लगे भगवान॥

भारतेन्दु जी को माता-पिता का दुलार अधिक दिनों तक नहीं मिल पाया। वे इन्हें अल्पावस्था में ही अनाथ करके इस संसार से चल बसे। भारतेन्दु कुशाग्र बुद्धि थे। इन्होंने घर पर ही संस्कृत, अंग्रेजी, बांग्ला, गुजराती आदि भाषाओं का गहन अध्ययन किया और साहित्य की सेवा में संलग्न हो गए। चौदह वर्ष की अवस्था में इनका विवाह रईस गुलाबराय की पुत्री मुन्नी देवी के साथ हुआ। इन्होंने अपने परिवार जनों के साथ पूरे देश का भ्रमण किया। इनके हृदय में देशप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। इन्होंने हिन्दी भाषा के विकास और प्रसार के लिए अनेक संस्थाओं, सभाओं, पुस्तकालयों, विद्यालयों आदि की स्थापना की। इनको ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया, परन्तु कुछ दिनों के बाद इन्होंने इस पद से स्वत: त्याग-पत्र दे दिया।

इन्हें हिन्दी के प्रति अटूट प्रेम था। भारतेन्दु जी अत्यन्त सरल, विनोदी, स्वाभिमानी एवं उदार स्वभाव के थे। इन्होंने न केवल हिन्दी साहित्य की सेवा की वरन् शिक्षा के प्रसार के लिए भी धन जुटाया। लक्ष्मी और सरस्वती दोनों की इन पर अगाध कृपा थी। अपनी अत्यधिक उदारता के कारण ही ये पूर्वजों से प्राप्त विपुल धनराशि को परोपकार, संस्थाओं में दान, हिन्दी के साहित्यकारों, कवियों आदि की सहायता पर मुक्तहस्त से आजीवन खर्च करते रहे। ये उर्दू में 'रसा' उपनाम से कविताएँ करते थे। सन् 1885 ई० में अत्यधिक लघुवय में इनका देहावसान हो गया।

भारतेन्दु जी ने अपनी विलक्षण बहुमुखी प्रतिभा का परिचय देते हुए हिन्दी साहित्य के विकास में अमूल्य योगदान दिया। इन्होंने केवल अठारह वर्ष की आयु में 'कवि वचन सुधा' नामक पत्रिका का सम्पादन एवं प्रकाशन आरम्भ किया। इसके कुछ वर्षों के उपरान्त इन्होंने 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का सम्पादन एवं प्रकाशन भी आरम्भ कर दिया। भारतेन्दु विख्यात नाटककार, कवि, निबन्धकार, इतिहासकार, उपन्यासकार एवं सम्पादक थे। इन्हें नाटक एवं कविता के क्षेत्र में विशेष ख्याति प्राप्त हुई। इन्होंने हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने के लिए न केवल स्वयं साहित्य का सृजन किया, अपितु अनेक लेखकों को भी इस दिशा में प्रेरित किया। इन्होंने अपने बहुमुखी साहित्य-सृजन से हिन्दी साहित्य का जो उपकार किया है, वह अविस्मरणीय है।

प्रमुख कृतियाँ–इनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं

1. **काव्य-कृतियाँ–**'भक्त-सर्वस्व', 'प्रेम-माधुरी', 'प्रेम-तरंग', 'प्रेमाश्रु-वर्षण', 'दान-लीला', 'प्रेम-सरोवर' तथा 'कृष्ण-चरित' भक्ति तथा दिव्य प्रेम की भावनाओं पर आधारित रचनाएँ हैं। इनमें श्रीकृष्ण की विविध लीलाओं के गान हुए हैं।

   'भारत-वीरत्व', 'विजय-वल्लरी', 'विजयिनी', 'विजय-पताका' आदि इनके द्वारा रचित देशप्रेम की रचनाएँ हैं। 'बंदर-सभा' और 'बकरी-विलाप' में इनकी हास्य-व्यंग्य शैली के दर्शन होते हैं।
2. **नाटक–**'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'सत्य हरिशचंद्र', 'चंद्रावली', 'भारत-दुर्दशा', 'नीलदेवी' और 'अँधेरनगरी' आदि।
3. **उपन्यास–**'पूर्णप्रकाश' तथा 'चंद्रप्रभा।'
4. **इतिहास और पुरातत्व संबंधी–**'कश्मीर-कुसुम', 'महाराष्ट्र देश का इतिहास', 'रामायण का समय', 'अग्रवालों की उत्पत्ति', 'बूँदी का राजवंश' तथा 'चरितावली'।

   भाषा-शैली—भारतेन्दु जी खड़ीबोली गद्य के जनक माने जाते हैं, परन्तु इन्होंने कविता ब्रजभाषा में ही की, इन्होंने ब्रजभाषा का रूढ़िगत रूप ही अपनाया। लोकोक्तियों और मुहावरों का भी प्रयोग इन्होंने अनोखे ढंग से किया है। इनकी भाषा अत्यन्त सरल, सरस, मधुर एवं प्रभावशाली बन पड़ी है। उसमें नवीनता एवं सजीवता का गुण भी विद्यमान है।

   भारतेन्दु जी की शैली इनके भावों के अनुसरण करने में पूर्ण सफल है, इन्होंने मुख्य रूप से अपने काव्य में मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त इनके काव्य

में परिहासपूर्ण व्यंग्यात्मक और अलंकारात्मक दो प्रकार की शैलियाँ विशेष रूप से मुखरित हुई हैं। इन्होंने कवित्त, सवैया, दोहा, कुंडलियों, छप्पय, लावनी, चौपाई, सरसी आदि छन्दों को अपनाया है। भारतेन्दु जी की शैली सरल, सरस, भावपूर्ण एवं प्रवाहपूर्ण बन पड़ी है।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. 'उतै चलि जात' में किधर श्रीकृष्ण गए (मथुरा की ओर) उधर जाने की ओर संकेत है।

2. श्रीकृष्ण को भूलने में गोपियाँ अपने को असमर्थ इसलिए पाती हैं क्योंकि उनका स्वयं का मन ही श्रीकृष्ण में बस गया है।

3. भारतेन्दु कहते हैं कि वर्षा के जल से धुले हुए पत्तों हिल–मिलकर सुशोभित हो रहे हैं। मेंढक बोलने लगे हैं, मयूर नृत्य करने लगे हैं। वर्षा का आगमन जानकर संयोगी व्यक्ति हृदय में प्रफुल्लित और हर्षित होने लगे हैं। वर्षा के कारण धरती हरी–भरी हो गई है और शीतल मंद हवा चलने लगी है।

4. 'आग लगाकर पानी के लिए दौड़ने' का आशय अपनी की हुई गलती को छिपाना है। आग लगाकर पानी के लिए दौड़ने वाला यह दिखाना चाहता है कि आग उसने नहीं लगाई, बल्कि वहतो आग से बचाना चाहता है। विरहिणी गोपी को उसकी सखी ने पहले प्रिय से मिलाने का वायदा किया और उसके मन में उत्कंठा पैदा की और फिर उसे समझाने लगी।

5. गोपियाँ श्रीकृष्ण को भूलने में अपने को इसलिए असमर्थ पाती हैं क्योंकि उनका स्वयं का मन ही श्रीकृष्ण में बस गया है।

6. बादलों को निगोड़े इसलिए कहा गया है क्योंकि बादलों ने उमड़–घुमड़कर ऐसा वातावरण बना दिया हे कि उनकी विरह–वेदना और बढ़ गई है। उनके अनुसार बादलों ने उनके साथ ऐसा करके दुष्टता का काम किया है।

7. 'कूपहिं में यहाँ भाँग परी है' से कवि का क्या तात्पर्य है—कुएँ में ही भाँग पड़ी हुई है; अर्थात् सारे ब्रजवासियों पर श्रीकृष्ण के प्रेम का नशा चढ़ा हुआ है।

8. गोपयिों के नेत्रों को स्वप्न में भी चैन प्राप्त नहीं है। श्रीकृष्ण के वियोग में गोपियों के प्राण निकलना चाहते हैं किंतु नेत्र उनके साथ नहीं जान चाहते। अपने नेत्रों की व्याकुलता का वर्णन करती हुई गोपियाँ कहती हैं कि श्रीकृष्ण के दर्शन के अभाव में मरने पर भी हमारे आँखें खुली की खुली रह जाएँगी।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या करते हुए इनका काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—**

उत्तर—

(क) कूकै लगीं कोइलैं .... झुकि-झुकि बरसै लगे।।

संदर्भ—**भारतेंदु ग्रंथावली** से संकलित प्रस्तुत छंद हमारी पाठयपुस्तक के **काव्य-खण्ड** के अंतर्गत **प्रेम-माधुरी** शीर्षक से उद्‌धृत है। इसके रचयिता **भारतेंदु हरिश्चंद्र** हैं।

प्रसंग—इस छंद में कवि ने वर्षा-ऋतु का मनोहारी वर्णन किया है।

व्याख्या—भारतेंद्र हरिश्चंद्र कहते हैं कि कोयल कदंब के वृक्षों पर बैठकर कूकने लगी हैं। वर्षा के जल से धुले हुए पत्ते हिल-हिलकर सुशोभित हो रहे हैं। मेंढक बोलने लगे हैं, मयूर पुन: नृत्य करने लगे हैं। वर्षा का आगमन जानकर संयोगी व्यक्ति हृदय में प्रफुल्लित और हर्षित होने लगे हैं। वर्षा के कारण धरती हरी-भरी हो गई है और शीतल मंद हवा चलने लगी है। हरिश्चंद्र जी कहते हैं कि वियोगी व्यक्तियों का हृदय प्रिय के दर्शनों के लिए तरसने लगा हे। वर्षा-ऋतु झूम-झूमकर फिर से आ गई है और निगोड़े बादल झुक-झुककर अर्थात् नीचे आ-आकर बरसने लगे हैं।

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ पर वर्षा-ऋतु का बड़ा मनोहारी चित्रण हुआ है। 2. वर्षा-ऋतु के आगमन पर वियोगी का मन व्याकुल हो जाता है और संयोगी का मन आनंदित हो जाता है। 3. **भाषा**—ब्रज। 4. **रस**—श्रृंगार। 5. **गुण**—माधुर्य। 6. **छंद**—कवित्त। 7. **अलंकार**—अनुप्रास तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

(ख) पहिले बहु भाँति .... आपुहिं धावती हैं।।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—इस पद में श्रीकृष्ण से मिलन न होने पर एक गोपी अपनी सखियों को उलाहना देती हुई कहती है—

व्याख्या—हे सखि! इन सखियों ने पहले तो तरह-तरह का आशवासन दिया था कि हम अभी श्रीकृष्ण को लाती हैं और तुमसे मिलवाती हैं। मैं उनके भरोसे बैठी रही, जो मेरी सबियाँ कहलाती हैं। अब मेरी वे सखियाँ भी मुझसे अलग जा रही हैं। श्रीकृष्ण से मिलवाने की बात ही खराब हो गया है। इन्होंने पहले तो मेरे मन में प्रेम की ज्वाला जला दी; अब उसे शीतल करने हेतु पानी के लिए दौड़ती हैं, अर्थात् उपदेश देती हैं।

काव्य-सौंदर्य—

1. नायिका-भेद की दृष्टि से यह खंडिता नायिका की उक्ति है। 2. **भाषा**—ब्रज। अंतिम पंक्ति में लोकोक्ति का सुंदर प्रयोग हुआ है। 3. **रस**—विप्रलम्भ (वियोग) श्रृंगार। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **छंद**—सवैया। 6. **अलंकार**—अनुप्रास।

(ग) ऊधौ जू सूधो गहो .... भाँग परी है।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—उद्धव गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का उपदेश देने आए थे। गोपियों ने उनके ज्ञान की एक बात नहीं सुनी, वरन् वे उनका उपहास करने लगी।

व्याख्या—गोपियों ने उद्धव से कहा कि हे उद्धव! वह सीधा रास्ता पकड़ो जहाँ तुम्हारे ज्ञान की गुदड़ी रखी है। इस ब्रज में तुम्हारी एक नहीं चलेगी, तुम्हारी सीख कोई भी नी मानेगा। यहाँ तो सभी को केवल श्रीकृष्ण की प्रीति पर ही भरोसा है। यहाँ रहनेवाली सभी ब्रजबालाएँ एक-सी हैं। कवि हरिश्चंद्र कहते हैं कि गोपियों ने उद्धव को समझाया कि यहाँ तो मंडली-की-

मंडरी बिगड़ी हुई है। यदि किसी एक गोपी की दशा खराब होती तो तुम्हारे ज्ञान का उपदेश सफल हो भी सकता था, लेकिन यहाँ तो पूरे कुएँ में भाँग पड़ी हुई; अर्थात् कृष्ण-प्रेमरूपी भाँग पीकर सभी गोपियाँ प्रमोन्मत्त हैं। किसे-किसे निर्गुण ब्रह्म का ज्ञानदोंगे; यहँ तुम्हारे ज्ञन को कोई नहीं सुनेगा।

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ कवि ने गोपियों की कृष्ण-भक्ति को चित्रित करते हुए निर्गुण भक्ति की अपेक्षा सुगण भक्ति की श्रेष्ठता को अत्यंत कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। 2. **भाषा**—ब्रज। 3. **रस**—शृंगार एवं भक्ति। 4. **गुण**—माधुर्य। 5. **छंद**—सवैया। 6. **अलंकार**—अनुप्रास।

(घ) इन दुखियान को न .... खुली ही रहि जायँगी।।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत छंद में विरह-व्याकुल गोपियों के नेत्रों की व्याकुलता का हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है।

व्याख्या—वियोगिनी गोपिका कह रही है कि मेरी इन दु:खियारी आँखों को स्वप्न में भी चैन नहीं मिल पाता, इसलिए ये प्रियतम के दर्शनों के लिए सदैव व्याकुल और अकुलाती रहती हैं। प्रिय श्रीकृष्ण के आगमन की अवधि समाप्त हुई जानकर मेरे प्राण तो निकल जान चाहते हैं; लेकिन ये आँखें मरने पर भी मेरे साथ नहीं जान चाहती। हे प्रिय! मेरी आँखों ने एक बार भी तुम्हें जी भरकर नहीं देखा है; अत: ये आँखें जिस-जिस लोक में भी जाएँगी उसी में पछताती रहेंगी। हे प्राण प्यारे श्रीकृष्ण! तुम्हारे देशन किए बिना ये आँखें मृत्यु के उपरांत भी तुम्हारे दर्शन के लिए खुली-की-खुली रह जाएँगी।

काव्य-सौंदर्य—

1. इस कविता में एकनिष्ठ प्रेम की अभिव्यंजना हुई है। 2. श्रीकृष्ण के दर्शनों की तीव्र लालसा ने कवि के भावों की दयनीयता को बहुत अधिक बढ़ा दिया है और उसकी दशा के सजीव वर्णन में कवि की काव्यात्मक प्रतिभा के दर्शन होते हैं। 3. **भाषा**—ब्रज। 4. **रस**—वियोग। 5. **गुण**—माधुर्य। 6. **छंद**—कवित्त। 7. **अलंकार**—अनुप्रास तथा श्लेष।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—

(क) काव्य-सौंदर्य—1. यहाँ गोपियों की श्रीकृष्ण-दर्शन की तीव्र लालसा का सुंदर चित्रण है। 2. **भाषा**—साहित्यिक ब्रज। 3. **रस**—वियोग शृंगार। 4. **गुण**—माधुर्य। 5. **छंद**—सवैया। 6. **अलंकार**—अनुप्रास।

(ख) काव्य-सौंदर्य—1. यहाँ पर कवि ने बंसत ऋतु के आगमन का सुंदर वर्णन करते हुए गोपियों की विरह अवस्था का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। प्रकृति के उद्दीपन रूप का सजीव चित्रण है। 2. **भाषा**—साहित्यिक ब्रज। 3. **रस**—विप्रलम्भ शृंगार। 4. **गुण**—माधुर्य। 5. **छंद**—सवैया। 6. **अलंकार**—अनुप्रास।

2. **निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार के नाम का उल्लेख करते हुए उसका लक्षण भी लिखिए—**

उत्तर—

अलंकार—वृत्यानुप्रास

लक्षण—यहाँ व्यंजनों की अनेक बार स्वरूपत: व क्रमश: आवृत्ति हो रही है।

3. 'धर्म, युद्ध, विद्या .... माँहि समान'। में प्रयुक्त छन्द का नाम तथा लक्षण भी लिखिए।

4. 'प्रेम–माधुरी' में 'सवैये' व 'कवित्त' छन्दों का प्रयोग किया गया है।

6 मैथिलीशरण गुप्त (पंचवटी)

(जन्म : सन् 1886 ई० मृत्यु : सन् 1964 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (ग) **13.** (क) **14.** (ख) **15.** (ख) **16.** (क) **17.** (ग) **18.** (क) **19.** (घ) **20.** (क) **21.** (ख) **22.** (ग) **23.** (ख) **24.** (घ) **25.** (क) **26.** (ग) **27.** (ख) **28.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर—

1. लक्ष्मण धैर्यशाली, निर्भय वीर थे। वे महान धनुर्धर और भाई के सेवक थे। जब सारा संसार सोता था तब वे अपने भाई राम न भाभी सीता की का सुरक्षा के लिए रातभर जागते थे। वे अपने बड़े भाई श्रीराम के साथ 14 वर्षों के वनवास के लिए आए थे। जबकि वनवास केवल श्रीराम को मिला था।

2. छात्र स्वयं करें।

3. 'साकेत' महाकाव्य में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की करुण कथा प्रस्तुत की गई है।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई० में झाँसी जनपद के चिरगाँव नामक स्थान पर हुआ था।

2. मैथिलीशरण गुप्त को मंगला प्रसाद पारितोषिक 'साकेत' नामक काव्य के लिए दिया गया।

3. गुप्त जी को भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित किया।

4. 'साकेत' और 'पंचवटी' के रचयिता का नाम मैथिलीशरण गुप्त है।

5. 'पंचवटी' लघु खंडकाव्य है।

6. गुप्त जी ने शुदध, साहित्यिक व परिमार्जित खड़ीबोली भाषा में लिखा है।

7. **'पंचवटी' का सारांश (केन्द्रीय भाव)**—चंद्रमा की स्वच्छ चाँदनी पृथ्वी तब ओर आकाश में छायी हुई है। पृथ्वी पर हरी-भरी दूब उगी हुई है। मंद पवन के झोंकों से पेड़ मस्त होकर झूम रहे हैं। प्राकृति सौंदर्य से परिपूर्ण पंचवटी पर श्रीराम की कुटी बनी हुई है। इस कुटी के सामने श्वेत शिला पर कामदेव की भाँति धनुष धारण कर लक्ष्मणयोगी के रूप में कुटी की रक्षा में संपूर्ण राज्य-सुखों को त्यागकर लीन हैं। आज तीनों लोकों की रानी सीता ने इस कुटी को अपना लिया है। रानी सीता रघुवंश की लाज हैं। इसलिए लक्ष्मण इस कुटी का प्रहरी वीर-वेश धारण किए हुए हैं।

प्रकृति सुंदरी यहाँ अपना नाटक पूरा करती है। इसलिए वह प्रतिदिन शाम को पृथ्वी पर सुंदर मोती (ओस-कण) बिखेर देती है और सूर्य सवेरा होते ही उन्हें समेट लेता है।

इस प्रकार वन में राम, लक्ष्मण और सीता को रहते हुए तेरह वर्ष बीत चुके। लक्ष्मण जी सोचते हैं—श्रीराम प्रजा के हित के लिए अतिशीघ्र राज्य ग्रहण करेंगे और लोक का उपकार करेंगे। राज्यभार ग्रहण करके वे अति व्यस्त हो जाएँगे। व्यस्तता में वे हमें भी भूल जाएँगे परंतु लोकोपकार की भावना में ऐसा होने पर हमें कोई दुख नहीं होगा। इसी समय लक्ष्मण के मन में विचार उठता हैकि क्या संसार के लोग स्वयं अपना उपकार नहीं कर सकते?

8. **जीवन-परिचय**—महाकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई० में झाँसी जनपद के चिरगाँव नामक स्थान पर एक वैश्य कुल में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण गुप्त निष्ठावान् भारतीय और हिन्दी काव्य-प्रेमी थे। वे स्वयं भी कविता किया करते थे। गुप्त जी की शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। इनके घर का वातावरण साहित्यिक था। इसीलिए गुप्त जी के मन में कविता के प्रति रुचि जाग्रत हुई। बचपन में गुप्त जी ने अपने पिता जी की कॉपी पर स्वरचित एक छप्पय लिख दिया, जिसे पढ़कर इनके पिता जी ने इन्हें आशीर्वाद दिया—'तुम सफल सिद्ध कवि हो।' पिता का यह आशीर्वाद राष्ट्रकवि के लिए भविष्य में सत्य ही सिद्ध हुआ। गुप्त जी के छोटे भाई श्री सियाराम शरण गुप्त भी हिन्दी के अच्छे कवि रहे हैं। पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने से गुप्त जी के काव्य-जीवन को नयी प्रेरणा मिली। ये आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को अपना गुरु मानते थे। द्विवेदी जी की प्रेरणा से गुप्त जी ने सर्वप्रथम खड़ीबोली में 'भारत-भारती' नामक कृति की रचना की। गुप्त जी का स्वभाव, वेशभूषा और रहन-सहन सादा और सरल था। इनके ऊपर गांधी जी के विचारों की छाप थी। गुप्त जी के काव्य में राष्ट्र-प्रेम की अभिव्यक्ति होने के कारण इन्हें राष्ट्रकवि होने का सम्मान प्राप्त हुआ। इनकी निरन्तर काव्य-साधना और राष्ट्रीयता ने इनको इतना ऊँचा उठा दिया था कि आगरा और प्रयाग विश्वविद्यालयों ने इन्हें डी०लिट्० की मानक उपाधि से विभूषित किया। इनके 'साकेत' नामक महाकाव्य पर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया। गुप्त जी को दो बार राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया गया। भारत सरकार ने सन् 1954 ई० में इनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। सरस्वती के अमर पुत्र गुप्त जी 12 दिसम्बर, सन् 1964 ई० में स्वर्गवासी हो गए।

मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक युग की खड़ीबोली के निर्माता और उन्नायक कवियों में से हैं।

गुप्त जी द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। इनमें बाल्यकाल से ही काव्य-सृजन की प्रतिभा विद्यमान थी। आचार्य द्विवेदी जी के सम्पर्क में आने के उपरान्त इनकी रचनाएँ 'सरस्वती पत्रिका' में प्रकाशित होने लगीं। गुप्त जी ने अपनी अलौकिक प्रतिभा से हिन्दी-जगत को विपुल मात्रा में महान् साहित्य प्रदान किया। हिन्दी साहित्य का प्रत्येक पाठक अपने इस सरल, सीधे एवं प्रतिभाशाली कवि से परिचित है। इनके काव्य में सम्पूर्ण भारत की आत्मा मुखरित हो उठी है, तभी तो इन्हें भारत का सच्चा राष्ट्रकवि माना जाता है। इनकी काव्य-धारा ऐसी पवित्र गंगा है, जिसमें अवगाहन कर आत्मा पवित्र और उन्मुक्त हो जाती है।

रचनाएँ—गुप्त जी की चालीस मौलिक तथा छह अनूदित रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। इनकी प्रसिद्ध रचनाओं का विवरण इस प्रकार है—

1. **भारत-भारती**—इस काव्य-कृति में गुप्त जी ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता का गुणगान किया है। इसी काव्य-रचना के कारण इन्हें राष्ट्रकवि होने का गौरव प्राप्त हुआ।
2. **साकेत**—यह गुप्त जी का महाकाव्य है। इसमें उपेक्षित उर्मिला की करुण कथा को प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही इसमें कैकेयी के चरित्र को नवीनता प्रदान की गई है।
3. **यशोधरा**—इसकी रचना उपेक्षित यशोधरा के चरित्र को आधार बनाकर की गई है।
4. **पंचवटी**—लघु खण्डकाव्य में गुप्त जी ने सुन्दर प्रकृति की पृष्ठभूमि के साथ लक्ष्मण के चरित्र को उजागर किया है।
5. **द्वापर**—इस कृति में कवि ने द्वापर युद्ध के साथ आधुनिक समस्याओं को चित्रित किया है। इसमें नारी समस्या को विशेष रूप से उभारा गया है।
6. **जयद्रथ वध**—इस खण्डकाव्य में चक्रव्यूह भेदन और अर्जुन द्वारा जयद्रथ के वध की घटना को आधार बनाया गया है। इसमें वीर और करुण रस की प्रधानता है।
7. **जयभारत**—इसमें महाभारत की घटना को नए परिदृश्य में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही इसमें भारत के अतीत की गौरव गाथा का वर्णन है।

इनके अतिरिक्त गुप्त जी की अन्य प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं—'चन्द्रहास', 'कुणालगीत', 'सिद्धराज', 'मंगल-घट', 'अनघ', 'मेघनाद-वध', 'रंग में भंग', 'विष्णुप्रिया', 'गुरुकुल', 'झंकार', 'नहुष' आदि।

9. **साहित्यिक योगदान**—मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे। इनमें बाल्यकाल से ही काव्य-सृजन की प्रतिभा विद्यमान थी। इनकी प्रारंभिक रचनाएँ कलकत्ता से प्रकाशित होनेवाली पत्रिका 'वैश्योपकारक' में प्रकाशित होती थीं। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के संपर्क में आने के उपरांत इनकी रचनाएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगी। सन् 1909 ई० में इनकी सर्वप्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन हुआ। सन् 1912 ई० में इनके द्वारा रचित सुप्रसिद्ध कृति 'भारत-भारती' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक से इन्हें अपार ख्याति प्राप्त हुई। इसके उपरांत गुप्तजी ने 'पंचवटी', 'झंकार', 'साकेत' और 'यशोधरा' जैसी अद्वितीय कृतियों का सृजन कर संपूर्ण हिंदी-साहित्य-जगत् को विस्मित कर दिया। इनकी कविताओं में राष्ट्र-भक्ति और राष्ट्र-प्रेम का स्वर प्रमुख रूप से मुखरित हुआ है। इसी कारण इन्हें 'राट्रकवि' की उपाधि से विभूूति किया गया।

रचनाएँ–इनकी प्रसिद्ध काव्य-रचनाएँ निम्नलिखित हैं

1. **भारत-भारती–**इसमें देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाओं पर आधारित कविताएँ लिखी हुई हैं। इसी से वे राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए।
2. **साकेत–**'मानस' के पश्चात् हिंदी में राम-काव्य का दूसरा अनुपम ग्रंथ मैथिलीशरण गुप्तकृत 'साकेत' ही है।
3. **यशोधरा–**इसमें उपेक्षित यशोधरा के चरित्र को काव्य का आधार बनाया गया है।
4. **द्वापर, जयभारत, विष्णुप्रिया–**इनमें हिडिम्बा, नहुष, दुर्योधन आदि के चरित्रों को नवीन रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

गुप्तजी की अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं'पंचवटी', 'चन्द्रहास', 'कुणालगीत', 'सिद्धराज', 'मंगल-घट', 'अनुघ' तथा 'मेघनाद-वध'।

भाषा-शैली—मैथिलीशरण गुप्त ने अपने काव्य की रचना शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित और साहित्यिक खड़ीबोली में की है। इन्होंने संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में किया है, परन्तु फिर भी उसमें क्लिष्टता नहीं आ पायी है। इन्होंने खड़ीबोली के सहज रूप को अपने काव्य का आधार बनाया है। इनकी भाषा भावों के अनुकूल है। उसमें मुहावरों और लोकोक्तियों का पर्याप्त प्रयोग देखने को मिलता है। इनकी भाषा व्याकरण सम्मत और सरल तथा ओज एवं माधुर्य गुण से युक्त है। गुप्त जी की भाषा में शुद्धता और शक्ति दोनों ही विद्यमान हैं।

गुप्त जी ने अपने काव्य में विविध शैलियों का प्रयोग किया है। इन्होंने मुख्य रूप से प्रबन्धात्मक शैली, गीति शैली, नाट्य शैली, अलंकृत शैली, उपदेशात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, आत्म प्रधान शैली और मिश्र शैली को अपने काव्य में प्रयुक्त किया है। इन्होंने शिखरिणी, मालिनी, द्रुतविलम्बित, दोहा, घनाक्षरी, सवैया, रोला, छप्पय आदि छन्दों को अपने काव्य में स्थान दिया है। गुप्त जी की शैली सरल, सुबोध, प्रवाहमय और मधुर है।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. पृथ्वी पर निकली हरी घास की नोकें हिल रही हैं, मानो पृथ्वी उन्हीं के द्वारा अपनी प्रसन्नता को प्रकट कर रही है। रात्रि के समय चारों ओर चाँदनी छिटकी हुई है और वातावरण शांत है। प्रात:काल सूर्य के निकलने पर ओस की बूँदें गायब हो जाती हैं। संध्या के समय तारे निकल आते हैं जिससे उसका सौंदर्य और अधिक बढ़ जाता है।
2. 'लक्ष्मण जी प्रहरी बनकर सीतारूपी महान् धन की रक्षा कर रहा है।
3. भोगी कुसुमायुध से बने लक्ष्मण दिखाई देते हैं। कवि ने उनको 'भोगी कुसुमायुध' इसलिए कहा है क्योंकि उनके रूप-सौंदर्य और तन्मयता को देखकर ऐसा लगता है कि मानो भोगी कामदेव ही योगी का रूप धारण करके यहाँ आकर बैठ गया हो।
4. संध्या के सूर्य को 'विरामदायिनी' इसलिए कहा गया है, क्योंकि सूर्य दिनभर आकाश मार्ग में चलता है जब संध्या होती है तब सूर्य की यात्रा सकती है। कवि की कल्पना के अनुसार संध्या कोसूर्य विश्राम करता है। सूर्य के अतिरिक्त संध्या पक्षियों, किसानों आदि के लिए

विरामदायिनी है।

5. राम के राज–काज सँभालने से लक्ष्मण को इस बात की आशंका हो रही है कि राज्यभर ग्रहण करके श्रीराम अतिव्यस्त हो जाएँगे। व्यवस्तता मेंवे हमें भी भूल जाएँगे।

6. संसार के मनुष्यों से लक्ष्मण यह आशा करते हैं कि संसार के सभी मनुष्य लोकोपकार में लगे रहें, अपने हित का चिंतन करे और अपने हित के लिए दूसरों पर निर्भर न हों।

7. प्रकृति हर पल हमारा पालन–पोषण करती है। ये हमारे चारों ओर एक सुरक्षात्मक कवच प्रदान करती है जो हमें नुकसान से बचाती है। हवा, पानी, जमीन, आदि प्रकृति के बिना हम लोग धरती पर जीवित नहीं रह सकते।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की व्याख्या करते हुए इनके काव्य-सौन्दर्य को भी स्पष्ट कीजिए—**

उत्तर—

(क) चारु चन्द्र की .... के झोंकों से।

व्याख्या—गुप्तजी पंचवटी की रात्रि–सुषमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सुंदर चंद्रमा की चंचल किरणें, जल और स्थल सब जगह क्रीडा करती हुई प्रतीत हो रही हैं। पृथ्वी और आकाश में चंद्रमा का प्रकाश ऐसे फैला हुआ है जैसे किसी ने धरती पर स्वच्छ चादर बिछा दी हो। पृथ्वी अपना हर्ष और उल्लास हरी–हरी घास की हिलती हुई नोंकों से प्रकट कर रही है। वृक्ष मंद–मंद वायु के झोंकों से हिल रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है, मानो वे भी अपनी प्रसन्नता को प्रकट करते हुए झूम रहे हों।

काव्य सौंदर्य—

1. यहाँ पंचवटी की रात्रिकालीन सुंदरता साकार हो उठी है। 2. प्रकृति का चित्रण आलंबन रूप में हुआ है। 3. **भाषा**—खड़ीबोली। 4. **रस**—श्रृंगार। 5. **गुण**—माधुर्य। 6. **अलंकार**—अनुप्रास, उत्प्रेक्षा तथा मानवीकरण। 7. **छंद**—मात्रिक।

(ख) किस व्रत में .... जीवन है।

व्याख्या—यह धनुर्धर वीर किस कठिन व्रत को धारण किए हुए हैं? मेरे मन में यह प्रश्न रह–रहकर उठ रहा है कि इसने अपनी नींद का त्याग क्यों कर दिया है; अर्थात् इस रात में भी यह क्यों जाग रहा है? जहाँ तक इसके व्यक्तित्व का प्रश्न है, यह तो राजभवन के सुख पाने–योग्य है; पता नहीं यह वैराग्य धारणकर वन में क्यों बैठा हुआ है? कहाँ इसका भव्य व्यक्तित्व और कहाँ वन की सत्विकता? मैं देख रहा हूँ कि यह एक कुटी का पहरा दे रहा है। यह जिस कुटिया का पहरेदार बना हुआ है,उसमें ऐसा क्या धन रखा हुआ है—मेरी यह जिज्ञासा बार–बार उभरकर आ रही है। निशचय ही इसमें कोई बहुत महत्वपूर्ण वस्तु है; जिसकी रक्षा में इसने अपना शरीर, मन और जीवन लगा रखा है।

काव्य सौंदर्य—

1. कवि की जिज्ञासा की काव्यपूर्ण अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में हुई है। 2. **भाषा**—खड़ीबोली।

3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **छंद**—मात्रिक। 6. **अलंकार**—अनुप्रास।

(ग) मर्त्यलोक-मालिन्य .... माया ठहरी।

व्याख्या—राष्ट्रकवि गुप्तजी कहते हैं कि तीनों लोकों की महारानी सीता ने इस कुटिया को अपनाया है। वह अपने स्वामी के साथ मर्त्यलोक के सांसारिक दु:खों और क्लेशों को समाप्त करने के लिए यहाँ आई हैं। पंचवटी निर्जन प्रदेश है, अभी रात्रि के समाप्त होने में पर्याप्त देरी है और चारों ओर राक्षसों का मायाजाल फैला हुआ है। इस कुटिया में रहनेवाली सीता वीर-वंश की मर्यादा हैं, इसलिए इस कुटी का प्रहरी अत्यधिक वीर होना चाहिए।

काव्य सौंदर्य—

1. प्रहरी के रूप में लख्मण का सजीव चित्रण हुआ है। 2. सीता को यहाँ सांसारिक पापों को मिटानेवाली कहकर गुप्तजी ने सीता ने प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। 3. **भाषा**—परिमार्जित खड़ीबोली। 4. **रस**—शृंगार। 5. **गुण**—माधुर्य। 6. **अलंकार**— अनुप्रास। 7. **छंद**—मात्रिक।

(घ) है बिखेर देती .... रूप झलकाता है।

व्याख्या—लक्ष्मण सोचते हैं कि रात्रि में सबके सो जाने पर यह पृथ्वी चारों ओर ओसरूपी मोतियों को बिखरा देती है; अर्थात् ओस की बूँदें मोतियों के समान प्रतीत होती हैं, इसलिए ऐसा लगता है कि मानो धरती ने अपनी झोली से मोती बिखेर दिए हों। इसके बाद रात्रि समाप्त होने पर जब प्रात:काल होता है और सूर्य अपनी रश्मियों के साथ उदित होता है तो वह इन मोतियों को बटोरकर गोदी में भर लेता है; तात्पर्य यह है कि प्रात:काल में ओस की बूँदें सूर्य के ताप से सूख जाती हैं। सूर्य इन मोतियों को एकत्र करके अपने पास नहीं रखा, वह भी इन सारी मोतियों को, आराम देनेवाली सन्ध्या को अर्पित कर देता है; मानो सूर्य आराम के बदले में मोती सैंपता है। सूर्य के द्वारा दिए गए वेमोती आकाश में, तारागणों के रूप में फिर से हमारे नेत्रों के सामने चमकने लगते हैं। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है; जैसे सन्ध्या ने अपने श्ययाम-शरीर को इन मोतियों से सजा लिया हो ओर उसका नवीन सौंदर्य झलक रहा हो।

काव्य सौंदर्य—

1. कवि ने यहाँ प्रात:कालीन धरती एवं सायंकालीन आकाश का मनोरम आलंकारिक चित्रण किया है। 2. ओस की बूँदों का मोती और फिर उनका तारों के रूप में आलंकारिक रूपांतर अद्‌भुत है। 3. **भाषा**—परिमार्जित खड़ीबोली। 4. **रस**—शृंगार। 5. **गुण**—माधुर्य। 6. **छंद**—मात्रिक। 7. **अलंकार**—अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, रूपक तथा मानवीकरण।

(ङ) सरल तरल जिन .... से सेती है।

व्याख्या—कविवर गुप्तजी कहते हैं कि प्रकृति अपनी ओस की जिन बूँदों के माध्यम से अपनी प्रसन्नता और अपने हर्ष को प्रकट करती है, उन्हीं तरल-सरल ओस-कणों से अपनी आत्मीयता के कारण वेदना की स्थिति में भी वह हमारी सहभागिनी बन जाती है। प्रकृति के न्याय-विधान की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए लक्ष्मण कहते हैं कि यह जहाँ अनजाने में भी हुई हमारी भूलों और अपराधों के लिए हमें निर्दय-भाव से दंड देती है, वहीं यह वृद्धजनों का भी उसी प्रकार पोषण करती है, जैसे कोई माता अपने अबोध बच्चों का पालन-पोषण करती है। तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार माता हमारे द्वारा किए गए अपराधों के लिए हमें दंड देती है,

उसी प्रकार प्रकृति भी। जिस प्रकार माता अपने सभी बच्चों का पालन-पोषण करती है, उसी प्रकृति भी बाल, वृद्ध सभी का समान भाव से पालन-पोषण करती है।

काव्य सौंदर्य—

1. प्रकृति ओस के कणों को मोतियों के रूप में पृथ्वी पर बिखेरकर अपना हर्ष प्रकट करती है और यही ओस-कण हमारी वेदना में अश्रु की बूँदें बनकर लुढ़कते हैं। आँसू को बहुधा मोती की उपमा दी जाती है। 2. प्रकृति को माता के रूप में चित्रित करके उसके भावात्मक स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। 3. यहाँ प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। 4. **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। 5. **रस**—शृंगार। 6. **गुण**—माधुर्य। 6. **छंद**—मात्रिक। **७. अलंकार**—रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, तथा मानवीकरण।

(च) और आर्य को .... है यह नरलोक?

व्याख्या—वनवास की समाप्ति पर जब हम लोग अयोध्या चले जाएँगे, तब पूज्य भाई श्रीराम को राज्य का कार्य देखना होगा। राज्य प्राप्त करने की उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं है। राज्य-भार तो वे केवल प्रजा के लिए ही धारणा करेंगे। इस कार्य में वे कितने व्यस्त रहेंगे, इसका मैं अनुमान कर सकता हूँ। उनकी व्यस्तता ऐसी होगी कि प्रजा के हित-चिंतन में वे हमें भी भूल जाएँगे। भूलना उनकी आदत नहीं विवशता होगी, किंतु हमें इसलिए इसका कोई दु:ख नहीं होगा; क्योंकि वे लोकोपकार के कारण ऐसा करेंगे। परंतु मेरी समझ में यह नहीं आता कि लोकहित करने के लिए राजा की आवश्यकता ही क्या है; क्या दुनिया के आदमी अपना हित स्वयं नहीं कर सकते? तात्पर्य यह है कि यदि ये लोग अपना और समस्त लोक का हित कर सकते तो संसार कितना मधुर और सुखद होता।

काव्य सौंदर्य—

1. यहाँ राम की महानता के साथ-साथ लक्ष्मण के सेवा-भाव का भी चित्रण हुआ है। कवि ने लक्ष्मण की सोच में एक साथ दो भावों को समाहित करके अपनी काव्यात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। 2. **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—माधुर्य। 5. **छंद**—मात्रिक। 6. **अलंकार**—उत्प्रेक्षा।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए—

उत्तर—

शब्द	**संधि-विच्छेद**	**नियम**
पंचवटी	**पाँच वटों (वृक्षों) का समाहार**	**द्विगु समास**
वसुन्धरा	**वस्तुओं को धारण करने वाली**	**बहुव्रीहि समास**
नरलोक	**नरों का लोक**	**संबंध तत्पुरुष समास**
रामजानकी	**राम और जानकी**	**द्वंद्व समास**

2. निम्नलिखित में नियम निर्देशपूर्वक सन्धि-विच्छेद कीजिए—

उत्तर—

शब्द	संधि-विच्छेद	नियम
कुसुमायुध	**कुसुम + आयुध**	**अ + आ**
लोकोपकार	**लोक + उपकार**	**अ + उ**
निरानन्द	**निर + आनन्द**	**र् + आ**
धनुर्धर	**धनुः + धर**	**: + ध**

3. निम्नांकित काव्य-पंक्तियों में उपमा, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, रूपक में से जो-जो अलंकार हों उन्हें लिखिए—

उत्तर—

(क) रूपक अलंकार, (ख) अनुप्रास अलंकार (ग) उपमा अलंकार (घ) उत्प्रेक्षा अलंकार।

4. निम्नांकित पद्यांश का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—

काव्य सौंदर्य—

1. यहाँ कवि ने पंचवटी की कुटिया पर पहरा देने वाले लक्ष्मण जी को सुंदरता का वर्णन किया है। 2. **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **छंद**—मात्रिक। 6. **अलंकार**—अनुप्रास, उपमा।

5. मात्रिक छंद।

7 जयशंकर प्रसाद (पुनर्मिलन)

(जन्म : सन् 1890 ई० - मृत्यु : सन् 1937 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (घ) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (ग) **13.** (क) **14.** (क) **15.** (ख) **16.** (क) **17.** (ख) **18.** (क) **19.** (घ) **20.** (घ)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर—

1. जयशंकर प्रसाद जी ने कविता के अतिरिक्त 'निबंध', 'नाटक', 'उपन्यास' व 'कहानी' विधाओं पर अपनी लेखनी चाहिए।

2. प्रसाद जी की काव्य-कृतियों की सूची—1. कामायनी, 2. आँसू, 3. झरना, 4. लहर, 5. कानन कुसुम, 6. चित्राधार 7. करुणालय, 8. प्रेम-पथिक।

3. 'कामायनी' में मनु और श्रद्धा के माध्यम से प्रसाद जी ने त्याग, बलिदान, प्रेम और सबके कल्याण की चाह का संदेश दिया है।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. प्रसाद जी का जन्म 1890 ई० में सुँधनी साहू नामक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ था।
2. 'कामायनी' कवि जयंशकर प्रसाद और छायावादी युग की रचना है।
3. प्रसाद जी की दो मुख्य शैलियों के नाम हैं—1. भावात्मक 2. चित्रात्मक।
4. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य का नाम कामायनी है।
5. छायावाद का प्रवर्त्तक जयशंकर प्रसाद जी को माना जाता है।
6. प्रसाद जी की दो प्रसिद्ध काव्य-कृतियों का नाम हैं—1. आँसू 2. झरना।
7. **जीवन परिचय**—जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी में सुँघनी साहू के नाम से प्रसिद्ध एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में 1890 ई० में हुआ था। इनके पितामह बाबू शिवरतन साहू तम्बाकू के बहुत बड़े व्यापारी और समृद्ध व्यक्ति थे।

   वे विद्वानों, कलाकारों और धार्मिकों को पर्याप्त मान-सम्मान प्रदान करते थे। प्रसाद जी के पिता श्री देवीप्रसाद में भी ये सभी गुण विद्यमान थे। इनके माता-पिता तथा बड़े भाई का देहावसान इनकी अल्पायु में ही हो गया था। लाड़-प्यार से विमुख प्रसाद जी को व्यवसाय तथा परिवार का समस्त उत्तरदायित्व वहन करना पड़ा। परिणामत: इन्होंने विद्यालयीय शिक्षा छोड़ दी और घर पर ही अंग्रेजी, हिन्दी, बांग्ला, उर्दू, फारसी, संस्कृत आदि भाषाओं का गहन अध्ययन किया। अपने पैतृक कार्य को करते हुए इन्होंने अपने भीतर काव्य-प्रेरणा को जीवित रखा। प्रसाद जी के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए डॉ० इन्द्रनाथ मदान ने अपनी पुस्तक "कविता का मूल्यांकन" में लिखा है, "प्रसाद गम्भीर और शान्त प्रकृति के थे। कभी किसी कवि-सम्मेलन या सभा-सोसायटी में नहीं जाते थे। शायद ही उन्होंने किसी कवि-सम्मेलन में कविता पढ़ी हो। वे कटु-से-कटु आलोचना का भी कभी उत्तर नहीं देते थे। वे निरन्तर साहित्य-साधना में व्यस्त रहते और दलबन्दी से दूर रहा करते थे। उनकी छोटी-सी मित्र-मण्डली थी, उसी में वे हँसते और खुलकर बात करते थे। वे साहित्यिक वृत्ति के व्यक्ति थे, शिव के उपासक थे, मांस-मदिरा से दूर रहते थे, स्वाभिमानी और विनम्र थे। वे नियमित रूप से पाँच-छह घण्टे पौराणिक और ऐतिहासिक ग्रन्थों का अध्ययन करते रहते थे।" अत्यधिक विषम परिस्थितियों—परिवार-जनों की मृत्यु, अर्थ-संकट, पत्नी-वियोग आदि—को अत्यन्त जीवटता से झेलता हुआ यह अलौकिक प्रतिभासम्पन्न युगस्रष्ठा साहित्यकार हिन्दी के मन्दिर में अपूर्व गन्धमय रचना सुमन अर्पित करता रहा और अन्तत: 15 नवम्बर, 1937 को इनका देहावसान हो गया।

   साहित्यिक सेवाएँ—जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिंदी-काव्य के सर्वप्रथम कवि थे। इन्होंने अपनी कविताओं में सूक्ष्म अनुभूतियों का रहस्यवादी चित्रण प्रारंभ किया, जो इनके काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। इनके इस नवीन प्रयोग ने काव्य-जगत् में एक क्रांति उत्पन्न कर दी और एक नए युग का सूत्रपात किया। हिंदी-साहित्य के इतिहास में यह नया युग 'छायावाद' के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के प्रवर्त्तक थे। इनके द्वारा रचित 'कामायनी' एक अप्रतिम कृति और छायावाद का कीर्तिस्तंभ है। इसमें छायावादी प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं का समावेश हुआ है। प्रेम और सौंदर्य इनके काव्य के प्रमुख विषय

रहे। इन्होंने काव्य-सृजन के साथ ही 'हंस' और 'इंदु' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी कराया।

रचनाएँ—प्रसादजी कुल 27 कृतियों की रचना की। इनमें से प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं—

1. **काव्य-संग्रह**—'कामायनी', 'चित्राधार', 'लहर', 'झरना'।
2. **नाटक**—नाटककार के रूप में इन्होंने 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'कामना', 'एक घूँट', 'विशाखा', 'राज्यश्री', 'कल्याणी', 'अजातशत्रु' तथा 'प्रायश्चित्त' नाटकों की रचना की है।
3. **उपन्यास**—'कंकाल', 'तितली' तथा 'इरावती' (अपूर्ण)।
4. **कहानी-संग्रह**—'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आँधी' तथा 'इन्द्रजाल' इनके प्रसिद्ध कहानी-संग्रह है।।

निबन्ध—'काव्य और कला'।

भाषा-शैली—प्रसादजी की भाषा पूर्णत: साहित्यिक, परिमार्जित एवं परिष्कृत है। भाषा में ओज, माधुर्य एवं प्रवाह सर्वत्र दर्शनीय है। इनके काव्य में सुगठित शब्द-योजना दृष्टिगोचर होती है। इनका वाक्य-विन्यास तथा शब्द-चयन अद्वितीय है। अपने सूक्ष्म भावों को व्यक्त करने के लिए प्रसादजी ने लक्षणा और व्यंजना का आश्रय लिया है तथा प्रतीकात्मक शब्दावली को अपनाया है।

प्रसादजी की शैली काव्यात्मक चमत्कारों से परिपूर्ण है। ये छोटे-छोटे वाक्यों में भी गंभीर भाव भरने में दक्ष थे। संगीतात्मकता एवं लय पर आधारित इनकी शैली अत्यंत सरस एवं मधुर है।जहाँ दार्शनिक विषयों पर आधारित अभिव्यक्ति हुई है, वहाँ इनकी शैली अवश्य गंभीर हो गई है।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. कामायनी को अपनी यह भूल बार-बार हृदय में चुभती प्रतीत हो रही थी कि मनु के नाराज होने पर उसने उसे मनाया क्यों नहीं।
2. कामायनी अत्यंत दुबली हो गई थी। रात्रि में गहन अँधेरा छाया था। इस कारण इड़ा को वह धुँधली छाया-सी लग रही थी।
3. विरहिणी कामायनी बहुत कमजोर हो गयी है। उसने अपने वस्त्र भी ठीक प्रकार से नहीं पहन रखे हैं। उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी ने कली का मकरंद लूट लिया हो और वह मुरझा गई हो।
4. कामायनी का पुत्र अपनी माँ की अंगुली पकड़कर चुपचाप और धैर्य के साथ चल रहा था, क्योंकि वह अपने पिता को ढूँढ़ते-ढ़ँढ़ते बहुत थक गया था।
5. मनु को श्रद्धा का स्पर्श उबटन के समान लग रहा था।
6. **'पुनर्मिलन' कविता का मूल भाव (सारांश)**—रात्रि के समय श्रद्धा अपने पुत्र के साथ यह कहती हुई जा रही थी कि कोई मुझे यह बात दे कि मेरा प्रिय कहाँ है? वह मुझसे रूठकर चला आया था और मैं उसे मना नहीं पाई थी। 'इड़ा' इन शब्दों को सुनकर उठी और उसने सड़क

पर शिथिल शरीर और अस्त-व्यस्त वस्त्रों को पहने हुए श्रद्धा को देखा। उसका पुत्र कुमार उसकी उँगली पकड़े हुए था। इड़ा उसकी ऐसी दशा देखकर बोली कि तुम्हें किसने बिसराया है? तुम बैठो और मुझे अपनी कथा सुनाओ। श्रद्धा, इड़ा के साथ जलती हुई अग्नि के पास पहुँची। उसने वहाँ मनु को देखा। वह वहाँ पहुँच गई और बोली, मेरा स्वप्न सच्चा निकला है। अरे प्रिय! तुम्हारा यह क्या हाल है? वह मनु के पास बैठकर उसे सहलाने लगी, जिससे मनु की मूर्च्छा दूर हो गई और उन्होंने अपनी आँखें खोलीं। जैसे ही दोनों की आँखें मिलीं, उनकी आँखों में आँसू आ गए। इस समय कुमार राजमहल की ओर देख रहा था। श्रद्धा ने उसे पुकारकर कहा कि तेरे पिता यहाँ हैं। तू भी यहाँ आ जा। वह पिता-पिता कहते हुए वहाँ आया और बोला कि हे माँ ये प्यासे होंगे। तू इनको पानी पिला। इस प्रकार वहाँ सबका मिलन हो गया।

7. श्रद्धा अपने पुत्र के साथ मनु को खोजती चलती जा रही है। वह लोगों से उनका पता पूछ रही हे और पश्चात्ताप कर रही है कि यदि मैं उन्हें मना लेती तो संभवत: वे न जाते। इड़ा उसकी आवाज सुनकर चौंक जाती है। वह देखती है कि पथ पर अस्त-व्यस्त वस्त्रों में एक युवती चली आ रही है। उसके साथ एक किशोर भी है। इड़ा ने उसके रोने का कारण पूछा। तभी श्रद्धा को घायल अवस्था में लेटे हुए अपने पति मनु दिखायी पड़े। उन्हें देखते ही श्रद्धा की आँखों से आँसू बहने लगे। जब श्रद्धा ने अपने हाथों से मनु को सहलाया तो उनमें चेतना आई। श्रद्धा को अपने पास देखकर उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। उनका पुत्र यज्ञ भूमि के ऊँचे मंदिर, यज्ञ मंडल और यज्ञ की वेदी को देख रहा था, तभी श्रद्धा ने कहा—"देख पुत्र! तेरे पिता यहाँ हैं। यह सुनकर वह दौड़कर पास आ गया तथा अपनी माँ से अपने पिता को जल पिलाने के लिए कहा। उसी समय सारा मंडल नवनिर्मित परिवार की प्रसन्नता से भर उठा।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या करते हुए इनके काव्य-सौन्दर्य को भी स्पष्ट कीजिए—**

उत्तर—

(क) चौंक उठी अपने .... हूँ मैं फेरा।

संदर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के प्रसिद्ध कवि **जयशंकर प्रसाद** द्वारा रचित 'कामायनी' महाकाव्य के 'निर्वेद' सर्ग से हमारी पाठयपुस्तक के **काव्य-खण्ड** में संकलित 'पुनर्मिलन' शीर्षक कविता से उद्धृत की गई हैं।

प्रसंग—यहाँ मनु के विरह में व्याकुल, भटकती हुई श्रद्धा की व्यथा एवं उसकी विरह-दशा का चित्रण हुआ है।

व्याख्या—जिस समय इड़ा सुंदर भविष्य की मधुर कल्पना में खोई हुई थी, उसी समय वह अचानक दूर से आनेवाली एक ध्वनि को सुनकर चौंक गई। उसकी विचार-शृंखला भंग हो गई। उस नीरव रात्रि में कोई सत्री यह कहती हुई चली आ रही थी—अरे! दया करके कोई मुझे यह बात दो कि मेरा प्रवासी पति कहाँ है—उसी बावले से मिलने के लिए मैं इधर-उधर खोज करती हुई चक्कर लगा रही हूँ।

काव्य-सौंदर्य—

1. कवि ने यहाँ श्रद्धा के, विरह व्याकुल हृदय एवं उसकी व्यथा का सजीव एवं मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। 2. इड़ा को भविष्य की सोच में डूबे दिखाकर कवि ने मानव-मन की विभिन्न दशाओं का तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत किया है। एक ही समय में इड़ा मनु को लेकर सुखद भविष्य के सपने देख रही है और श्रद्धा विरह की व्यथा से पीड़ित है। 3. 'प्रवासी' शब्द का प्रयोग करके श्रद्धा के यह घोषणा की है कि मनु का एकमात्र स्थान उसका हृदय है। 4. 'बावले' में स्नेह की अधिकता की अभिव्यंजना है। 5. 'फेरा डालना' मुहावरे का प्रयोग हुआ है। 6. **भाषा**—मुहावरेयुक्त खड़ीबोली। 7. **रस**—वियोग शृंगार। 8. **गुण**—प्रसाद। 9. **अलंकार**—रूपक तथा अनुप्रास।

(ख) रूठ गया था .... जैसी जलती।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—मनु श्रद्धा से रूठ गए थे। वह उन्हें खोजती हुई निकल पड़ी। इड़ा ने दूर से आती हुई ध्वनि सुनी। यह धवनि श्रद्धा की थी। श्रद्धा यह कह रही थी कि मैं अपने बिछुडे हुए प्रियतम से मिलने के लिए ही भटक रही हूँ।

व्याख्या—श्रद्धा आगे कहती है कि "मेरा प्रियतम मनु मुझसे क्या रूठ गया है, मानो अपने आप से ही रूठ गया है। उसमें और मुझमें कोई अंतर तो है नहीं; यह सोचकर ही मैं रूठे हुए प्रियतम को मना भी नहीं सकी थी। भला कोई स्वयं को मनाता थोड़े ही है। किंतु वस्तुत: यह एक भूल ही हुई थी। मुझे उसे मनाना चाहिए था। मेरी वह भूल अब काँटे की तरह मेरे मन में चुभ रही है। कोई मुझे यह तो बताए कि मैं उसे किस प्रकार पा सकती हूँ। पता नहीं वह कहाँ-कहाँ भटकता फिर रहा होगा।"

इन शब्दों को सुनते ही इड़ा चौंक पड़ी। वह उठ खड़ी हुई। उसे राजमार्ग दिखाई दिया। उसने उस राजमार्ग पर देखा कि कोई धूमिल-सी छाया चल रही है, जिसकी वाणी में करुणामय वेदना छलक रही थी। उसकी वह पुकार, विरह के ताप में ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे जल रही हो।

काव्य-सौंदर्य—

1. कवि ने यहाँ श्रद्धा के शब्दों में नारी-हृदय की व्यथा, संबंधों एवं रिश्तों के बीच में उत्पन्न होनेवाले भ्रमों तथा उसके व्यावहारिक कारणों को एक साथ अभिव्यक्ति दी है; जो उनकी काव्यात्मक प्रतिभा की परिचायक है। 2. **भाषा**—मुहावरेयुक्त खड़ीबोली। 3. **रस**—वियोग शृंगार। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—रूपक, अनुप्रास तथा उत्प्रेक्षा।

(ग) शिथिल शरीर वसन .... माता को जकड़े।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—इन पंक्तियों में अपने बिछुड़े हुए पति मनु की खोज करती हुई श्रद्धा की स्थिति का चित्रण किया गया है।

व्याख्या—श्रद्धा का शरीर अत्यधिक थका हुआ था। उसके वस्त्र अस्त-व्यस्त थे, वेणी खुली हुई थी और हवा की तीव्र वेदना से व्याकुल वह विरहिणी मुरझाई हुई एक ऐसी कली के

समान दिखाई दे रही थी; जिसकी सभी पँखुड़ियाँ झड़ गई हों और जिसका मकरंद भी लुट गया हो।

उसी विरहिणी नारी श्रद्धा की अंगुलि पकड़कर एक बालक साथ-साथ चल रहा था। उस बालक की अवस्था किशोर थी। वह उस दु:खिया नारी का एकमात्र नवीन और कोमल सहारा प्रतीत होता था। वह बालक चुपचाप अपनी माँ की अंगुलि कसकर पकड़े हुए उसके साथ चला आ रहा था। वह किशोर साक्षात् मूक धैर्य के समान प्रतीत हो रहा था; अर्थात् वह धैर्य, मौन तथा शांतिपूर्ण सहनशीलता की मूर्ति बना हुआ था।

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ कवि ने विरह से व्याकुल श्रद्धा का शब्द चित्र अंकित किया है। 2. कली की टूटी हुई पँखुड़ियों के साथ श्रद्धा के जर्जर अंगों की, लुटे हुए मकरंद के साथ श्रद्धा के नष्ट हुए माधुर्य की ओर कली के मुरझा जाने के साथ श्रद्धा के उपेक्षित सौंदर्य की तुलना की गई है। 3. मनु के पुत्र मानव का भी चित्र अंकित किया गया है और उसे श्रद्धा का सहारा कहा गया है; क्योंकि पति के न रहने पर पुत्र को ही नारी का सहारा कहा जाता है। 4. **भाषा**—परिमार्जित खड़ीबोली। 5. **रस**—वियोग शृंगार। 6. **गुण**—प्रसाद। 7. **अलंकार**—अनुप्रास तथा उपमा।

(घ) इस रजनी में कहाँ .... दु:ख की रातें।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—इड़ा का पालन-पोषण भौतिक सभ्यता में हुआ है; फिर भी उसका हृदय कठोर नहीं है। यहाँ कवि ने इड़ा के कोमल हृदय का चित्रण किया है। वह श्रद्धा के दु:ख को देखकर द्रवित हो जाती है और उससे उसके दु:ख का कारण पूछती है।

व्याख्या—इड़ा कहती है कि इस अंधकारपूर्ण रात्रि में तुम इस तरह भटकती हुई कहाँ जाओगी? यह तो बताओ। देखो, मैं भी दु:ख से अत्यधिक बेचैन हूँ, इसलिए तुम मेरे पास बैठकर अपनी वेदना का कारण मुझे बताओ। इड़ा उसे धैर्य प्रदान करती हुई कहती है कि जीवन की यात्रा बहुत लंबी है, अर्थात् जीवन बहुत बड़ा है। इस लंबी जीवन-यात्रा में जो हमसे बिछड़ जाते हैं; वे कहीं-न-कहीं, कभी-न-कभी अवश्य ही मिल जाते हैं। यदि जीवन है तो मिलन भी अवश्य होगा; अत: किसी के बिछुड़ने से चिन्तित नहीं होना चाहिए। धीरे-धीरे दु:ख की रात्रियाँ स्वत: ही समाप्त हो जाते है।

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ कवि ने इड़ा के हृदय की व्याकुलता और किसी दु:खी व्यक्ति के साथ बैठकर पीड़ा बाँटने की स्वाभाविक मानवीय प्रकृति को अभिव्यक्ति दी है। 2. **भाषा**—खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—अनुप्रास तथा रूपक।

(ङ) उस मूर्च्छित नीरवता .... लगते जी को?

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—इन पंक्तियों में प्रसाद जी ने श्रद्धा और मनु के मिलने का मार्मिक चित्रण किया है।

व्याख्या—श्रद्धा का सुखद एवं मधुर स्पर्श पाकर शब्दहीन, मूर्च्छित पड़े मनु के शरीर में

हल्की-सी हलचल उत्पन्न हो गई। मनु ने आँखें खोलीं और एक-दूसरे को प्रेमपूर्वक देखते रहे, तब दोनों की आँखों से पश्चात्ताप के आँसू बहने लगे। उधर श्रद्धा का पुत्र मानन यज्ञभूमि के ऊँचे मंदिर, यज्ञ-मंडल और यज्ञ की वेदी को देख रहा था, वह सोचने लगा कि यह सब कितना मोहक, सुंदर और नवीन है, जो मेरे मन को आकर्षित कर रहा है।

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ कवि ने पति परायण स्त्री के सहज प्रेम और सेवा भाव का चित्रण किया है। 2. भाषा—साहित्यिक खड़ीबोली। 3. **रस**—शृंगार। 4. **गुण**—माधुर्य। 5. **अलंकार**— उपमा।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए—

उत्तर—

शब्द	**संधि-विच्छेद**
गणेश	**गण + ईश**
विद्यालय	**विद्या + आलय**
परोपकार	**पर + उपकार**

2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम बताइए—

उत्तर—

(क) करुण रस (ख) करुण रस।

3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए—

उत्तर—

(क) मानवीकरण (ख) उपमा।

4. उत्तर—

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ कवि ने विरह से व्याकुल श्रद्धा का शब्द चित्र अंकित किया है। 2. कली की टूटी हुई पँखुड़ियों के साथ श्रद्धा के जर्जर अंगों की, लुटे हुए मकरंद के साथ श्रद्धा के नष्ट हुई माधुर्य और कली के मुरझा जाने के साथ श्रद्धा के अपेक्षित सौंदर्य की तुलना की ई है। 3. **भाषा**—परिमार्जित खड़ीबोली। 4. **रस**—शांत। 5. **गुण**—प्रसाद। 6. **अलंकार**—उपमा।

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

उत्तर—

शब्द	**विलोम शब्द**	**शब्द**	**विलोम शब्द**
कोमल	**कठोर**	अनुराग	**विराग**
दु:खी	**सुखी**	नया	**पुराना**
सपूत	**कपूत**	कीर्ति	**अपकीर्ति**
पुण्य	**पाप**		

8 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(जन्म : सन् 1897 ई0 मृत्यु : सन् 1961 ई0)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (ख) **2.** (ख) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (घ) **7.** (क) **8.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. निराला जी की रचनाओं की सूची निम्नलिखित हैं—1. परिमल, 2. गीतिका, 3. अनामिका, 4. राम की शक्ति-पूजा, 5. तुलसीदास, 6. कुकुरमुत्ता, 7. नये पत्ते, 8. सरोज-स्मृति, 9. अणिमा, 10. अपरा, 11. बेला, 12. आराधना, 13. अर्चना।

2. निराला जी ने पाखंडियों के क्रियाकलाप और दीन-दुखियों का वास्तविक चित्रण किया है कुछ लोग प्रभु की अराधना करके व उन्हें प्रसाद चढ़ाकर व जानवरों को फल, भोजन खिलाकर प्रभु की भक्ति का बाहरी दिखावा करते हैं और सोचते हैं कि वे प्रभु के सच्चे भक्त हैं जबकि दीन-दुखियों को भोजन कराना उनकी सेवा करना प्रभु की सच्ची भक्ति है। दीन दुखी बेचारे कोई सहारा न होने पर मंदिर के भक्तों से आशा करते हैं कि वे उनकी सहायता करेंगे जबकि प्राय: ऐसा नहीं होता है।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न–

उत्तर—

1. निराला जी का जन्म सन् 1897 ई० में बंगाल के मेदिनीपुर नामक गाँव में हुआ था।

2. निराला जी छायावादी युग के कवि माने जाते हैं।

3. निराला जी की दो काव्य-रचनाओं के नाम हैं—1. अनामिका, 2. गीतिका।

4. निराला जी ने इन पत्रिकाओं का सम्पादन किया—1. समंवय 2. मतवाला।

5. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने हिंदी काव्य में मुक्त छंद को स्थापित कर क्रान्तिकारी परिवर्तन किया।

6. **जीवन परिचय**—युग प्रवर्त्तक महाकवि निराला का जन्म बंगाल के महिषादल राज्य की शस्य-श्यामला भूमि के अन्तर्गत मेदिनीपुर नामक ग्राम में सन् 1897 ई० में हुआ था। इनके पिता पंडित रामसहाय त्रिपाठी महिषादल राज्य के संरक्षक थे, वैसे तो मूलत: ये उत्तर प्रदेश राज्य के उन्नाव जिले के निवासी थे। निराला जी की प्रारम्भिक शिक्षा महिषादल में हुई। संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का अध्ययन इन्होंने घर पर ही किया। बचपन से ही इनको कुश्ती, घुड़सवारी और खेलों में विशेष रुचि थी। बचपन में ही निराला जी के सिर से माता-पिता का साया उठ गया।

जब निराला लगभग चौदह वर्ष के थे, तब उनका विवाह साहित्यिक अभिरुचि की कन्या मनोहरा देवी से हुआ। परन्तु वह भी एक पुत्र और पुत्री का भार सौंपकर इस संसार से विदा हो गयीं। इनकी पुत्री सरोज का भी विवाह के कुछ दिनों बाद देहान्त हो गया। इन्हें अपनी

विवाहिता पुत्री के निधन से अपार कष्ट हुआ। इस प्रकार निराला जी का पारिवारिक जीवन अत्यन्त असफल और कष्टमय रहा। इन्होंने आर्थिक संकट से जूझते हुए भी सरस्वती की आराधना की। महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने पर निराला जी ने इनके सहयोग से 'समन्वय' और 'मतवाला' पत्रों का सम्पादन किया, परन्तु इसमें इनका मस्तमौला मन नहीं लगा। निराला जी के मन में दीन-हीन जनों के प्रति बहुत सहानुभूति थी। वे गरीबों को अपने वस्त्र भी उतार कर दे देते थे। ये बहुत ही स्पष्टवादी और स्वाभिमानी थे। निराला जी स्वामी रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द से बहुत प्रभावित थे। सरस्वती के इस अमर पुत्र ने अपने पार्थिव शरीर को प्रयाग में 15 अक्टूबर, सन् 1961 ई० को त्याग दिया।

रचनाएँ—निराला जी ने पद्य और गद्य दोनों विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। इसकी मुख्य काव्य-कृतियाँ इस प्रकार हैं—

परिमल—निरालाजी ने इसमें सड़ी-गली मान्यताओं का विरोध पूर्ण आक्रामक तेवरों के साथ किया है।

गीतिका—इसमें प्रकृति-वर्णन तथा देश-प्रेम की भावना का चित्रण निरालाजी ने बड़े सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है।

अनामिका—इस संग्रह की रचनाएँ कलात्मक प्रकृति की हैं।

राम की शक्ति-पूजा—इसमें कवि का ओज तथा पौरुष राम के ओज तथा पौरुष में एकाकार होकर अद्‌भुत काव्य सृष्टि कर रहा है।

तुलसीदास—यह तुलसीदास के जीवन पर आधारित छायावादी शैली में लिखा खण्डकाव्य है।

कुकुरमुत्ता, **नये पत्ते**—ये दोनों निराला जी के व्यंग्य प्रधान कविताओं के संग्रह हैं।

सरोज-स्मृति—यह कवि का अपनी पुत्री को समर्पित सर्वश्रेष्ठ शोकगीत है। इसके अतिरिक्त—अणिमा, अपरा, बेला, आराधना तथा अर्चना आदि इनकी अनुपम काव्य रचनाएँ हैं।

निरालाजी की गद्य रचनाएँ इस प्रकार हैं—लिली, चतुरी-चमार, अप्सरा, अलका, प्रभावती और निरुपमा।

साहित्यिक योगदान—महाकवि निराला का उदय छायावादी कवि के रूप में हुआ। इन्होंने कोमल एवं मधुर भावों पर आधारित छायावादी कविताओं के सृजन से अपना काव्य-जीवन प्रारंभ किया, परंतु काल की क्रूरता ने इन्हें एक विद्रोही कवि बना दिया। निरालाजी ने 'सरस्वती' और 'मर्यादा' पत्रिकाओं का निरंतर अध्ययन करके हिंदी का ज्ञान प्राप्त किया। इन्होंने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारंभ 'जन्मभूमि की वंदना' नामक एक कविता की रचना करके किया। सन् 1929 ई० में इनका एक लेख 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुआ सर्वप्रथम लेख था। इसके उपरांत 'जूही की कली' नामक कविता की रचना करके इन्होंने हिंदी-जगत् में अपनी पहचान बना ली। ये छायावाद के चार स्तंभों में से एक माने जाते हैं। प्रगतिवादी विचारधारा की ओर उन्मुख होने पर इन्होंने शोषित एवं पीड़ित वर्ग की व्यथा को स्वर प्रदान किया।'

भाषा-शैली—निरालाजी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध एवं परिमार्जित खड़ीबोली का प्रयोग

किया। विदेशी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी अपने अनेक स्थानों पर किया है। भाषा में अनेक स्थलों पर शुद्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिसके फलस्वरूप इन भावों को सरलता से समझने में कठिनाई होती है। विशेषकर छायावादी रचनाओं में भाषा की क्लिष्टता देखने को मिलती है। इसके विपरीत इनके द्वारा रचित प्रगतिवादी रचनाओं की भाषा अत्यंत सरल, सरस एवं व्यावहारिक है। भाषा पर भी निरालाजी का पूर्ण अधिकार था।

निरालाजी ने अपनी रचनाओं के सृजन हेतु कठिन एवं दुरूह तथा सरल एवं सुबोध शैली का प्रयोग किया। छायावाद पर आधारित इनकी रचनाओं में कठिन एवं दुरूह शैली तथा प्रगतिवादी रचनाओं में सरल एवं सुबोध शैली का प्रयोग हुआ है।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. 'कानों में प्राणों की कहती' से कवि का तात्पर्य है कि जब सौरभ वसना समीर कानों के निकट से गुजरती है, तो वह मानो कानों में प्राणों को मुलकित करनेवाला प्रेम मंत्र व हृदय की बातें चुपचाप कर जाती है।
2. पुल पर खड़े होकर कवि सोचता है कि इस सृष्टि का निर्माण करने वाले के नियम अटल हैं। यहाँ जो जैसा करता है उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होता है।
3. कवि ने प्रकृति को सहृदय इसलिए कहा है क्योंकि प्रकृति दयाभाव से सभी मनुष्यों को उनके कर्मों का फल प्रदान करती है।
4. पहले कवि मनुष्य के अंदर दयाभाव को देखकर यह सोचा करता था कि वास्तव में मनुष्य सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है। परंतु एक दिन एक दृश्य को देखकर उसकी धारणा में परिवर्तन हो गया। उसने देखा कि उसके पड़ोस में रहने वाले एक सज्जन जो प्रतिदिन गोमती नदी के तट पर स्नान करने के लिए आते थे और बंदरों को तो मालपुए खिलाए परंतु एक गरीब भिखारी के माँगने पर उसे दानव कहकर झिड़क दिया। उस दिन से कवि की धारणा में यह परिवर्तन हुआ कि यदि मनुष्य, मनुष्य के प्रति दयाभाव नहीं दिखा सकता तो वह श्रेष्ठ कहलाने के योग्य नहीं हो सकता।
5. कवि को अपने इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिला—यह दीन-हीन भिखारी कौन-सा शाप, कौन-सा प्रबल पाप भोग रहा है?
6. पुल से नीचे झुककर देखने पर कवि के मन में यह आशा जाग्रत हुई कि उनके सज्जन पड़ोसी पूजा करके दीन-हीन भूखे गरीब को कुछ न कुछ खाने को देंगे।
7. मानव को प्रकृति से सौंदर्य, गीतात्मकता, विविध रंग, गंध, भाषा, भाव-रचना, छंदों के बंध आदि वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।
8. **मूल भाव (सारांश)**—दान 'कविता' में कवि ने पहले मनुष्य को ईशवर की श्रेष्ठ कृति बताया है जो अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति प्रकृति से करता है। प्रकृति भी मनुष्यों को उनके कर्मों के अनुसार फल देती है। इसलिए कवि ने प्रकृति को सदया कहा है। प्रकृति ने मनुष्य को बहुत-सी सुंदर चीजें दी हैं, जो उसका मन हर लेती हैं। प्रकृति द्वारा दी गई चीजें और मनुष्य द्वारा निर्मित अधिक सुंदर चीजें उसके प्रयत्नों द्वारा अनायास ही उसके पास चली आती हैं। इसलिए कवि ने मानव को विश्व में श्रेष्ठ बताया है। परंतु एक दृश्य को देखकर

कवि की धारणा परिवर्तित हो जाती है, जब एक दिन एक सज्जन गोमती नदी के तट पर स्नान करने व शिवजी की उपासना करके ऊपर आते हैं तब वह गोमती के पुल पर बैठे बंदरों को तो मालपुर खिलाते हैं परंतु उसी मार्ग पर बैठे दीन-हीन भिखारी को मालपुए माँगने पर दानव कहकर झिड़क देते हैं। पृथ्वी पर मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना समझने वाले कवि को मानव की ऐसी निंदनीय उपेक्षा देखकर दुख होता है। अचानक उनके मुँह से व्यंग्य निकलता है—'श्रेष्ठ मानव! तुम धन्य हो।'

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनके काव्य-सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए—**

उत्तर—

(क) निकला पहिला .... आवेश चपल।

संदर्भ—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ प्रसिद्ध छायावादी कवि **पं० सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** द्वारा रचित **'दान'** नामक कविता से उद्‌धृत की गई हैं। यह कविता उनके 'अपरा' नामक काव्य-संग्रह से हमारी पाठयपुस्तक के **काव्य-खण्ड** में संकलित है।

प्रसंग—इस कविता में कवि ने पूस के महीने की प्रात:कालीन सुंदरता का चित्रण किया है।

व्याख्या—निरालाजी कहते हैं कि प्रकृति के सुंदर और रहस्य से भरे हुए श्रृंगार को देखता हुआ पहला कमल उपवन में खिल गया है। इस प्रात:काल में हवा सौरभ अर्थात् सुगंध के वस्त्र पहने हुए बह रही है। जब यह हवा हमारे कानों के पास से गुजरती है तो ऐसा लगता है, मानो वह चुपचाप हृदय की बातें कर रही हो। पास में ही पतली धारावली गोमती बह रही हे। उसे देखकर ऐसा लगता है जैसे पतली कमरवाली, नवयौवन से भरी हुई कोई नर्तकी चपलता ओर आवेश के साथ नृत्य कर रही हो।

काव्य-सौंदर्य—

1. इस पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के सौंदर्य का चित्रण करते हुए उसमें रहस्यात्मक अनुभूति का निरूपण किया है। 2. सूर्य की पहली किरण से प्रात:कालीन प्रथम कमल के खिलने की कल्पना, इस प्राकृतिक सौंदर्य को कोमल सुंदरता के भाव से प्लावित करती है। 3. गोमती नदी का नवयौवना एवं नृत्यांगना के रूप में मानवीकरण किया गया है। 4. छायावादी रहस्यवाद का समावेश हुआ है। 5. **भाषा**—परिष्कृत खड़ीबोली। 6. **रस**—श्रृंगार। 7. **गुण**—माधुर्य। 8. **अलंकार**— मानवीकरण, रूपक तथा अनुप्रास।

(ख) मैं प्रात: पर्यटनार्थ .... धन्य मानव।

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के विविध साधनों को देखा है और मानव की श्रेष्ठता को स्वीकार किया है।

व्याख्या—निरालाजी प्रात:काल घूमने निकले और गोमती के पुल पर आकर खड़े हो गए। उस समय होने वाली अनुभूति का सजीव वर्णन निरालाजी की इन पंक्तियों में हुआ है। निरालाजी सोचते हैं कि प्रकृति के सभी कार्य निश्चित नियम के अनुसार चलते हैं। जो जैसा कर्म करता है उसको उसी के अनुसार फल की प्राप्ति होती है। यह कलापूर्ण प्रकृति स्वयं ही

कर्म का फल प्रदान कर देती है। कवि का कथन है कि प्रकृति के इस नियम के विषय में सोचने के लिए कुछ बचा ही नहीं है।

निरालाजी अपनी अनुभूति को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि प्रकृति ने मानव को सौंदर्य, गीतात्मकता, विविध रंग, गंध, भाषा, भाव-रचना, छंदों के बंध आदि वस्तुएँ स्वयं प्रदान की हैं। यहाँ तक कि उच्चतम आनंद भी मानव ने प्रकृति से ही प्राप्त किया है। प्रकृति ने ही दयापूर्वक ये सारे उपहार मानव को बिना प्रयास के प्रदान किए हैं। मानव को ये समस्त उपहार इसलिए मिले हैं; क्योंकि विश्व में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। वास्तव में इन उपहारों को पाकर मानव धन्य हो गया है।

काव्य-सौंदर्य–

1. प्रस्तुत पंक्तियों में निराला की दार्शनिक प्रकृति का परिचय प्राप्त होता है। 2. मानव अपने उपयोग की समस्त वस्तुएँ प्रकृति से प्राप्त करता है, इसलिए प्रकृति को दयालु कहा गया है। 3. **भाषा**–परिमार्जित और संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली। 3. **रस**–शांत। 4. **गुण**–प्रसाद। 5. **अलंकार**–अनुप्रास।

(ग) अति क्षीण कण्ठ है, ... एक, उपायकरण!

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग–प्रस्तुत पंक्तियों में कविवर 'निराला' ने दान का ढोंग करने वाले व्यक्तियों से संबंधित एक घटना का वर्णन किया है।

व्याख्या–निराला जी कहते हैं कि भिखारी का गला बहुत दुर्बल हो चला था। वह तेजी से साँसें ले रहा था। लगता था जैसे वह जीवन से उदास होकर जी रहा हो।

मेरे भाव-मार्ग से रह-रहकर ये प्रश्न उठ रहे थे कि यह कौन-सा शाप भोग रहा है? यह कौन-सा प्रबल पाप भोग रहा है? मार्ग से गुजरने वाले सभी लोग यही सोचते थे, किंतु किसी के भी पास इसका उत्तर केवल मौन ही था, अर्थात् कोई उत्तर नहीं था। कोई अधिक दया करता भी था तो वह उसके उपायस्वरूप उसे एक पैसा दान दे देता था।

(घ) मैंने झुक नीचे को देखा .... धन्य, श्रेष्ठ मानव।

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग–प्रस्तुत पंक्तियों में कविवर 'निराला' ने दान का ढोंग करनेवाले व्यक्तियों की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या–निरालाजी कहते हैं कि यह सोचते-सोचते मैंने पुल से नीचे की ओर झाँका। मुझमें आशा का संचार होने लगा; अर्थात् निराशा के अँधेरे में आशा की रेखाएँ जगने लगीं। देखा कि एक श्रेष्ठ ब्राह्मण स्नान करके और शिवजी पर दूब की नाल, चावल, तिल तथा जल चढ़ाकर अपनी झोली सँभाले ऊपर की ओर आ रहे हैं। उन्हें देखकर बंदर उनकी ओर बड़ी मुस्तैदी से चल पड़े।

ये ब्राह्मण रामजी के भक्त थे। भक्ति की आशा में बारहों महीने शिवजी का भजन और रामायण का नियमित पाठ करके 'श्रीनारायण' का जप किया करते थे। जब-जब ये दु:खी होते, स्वयं को अनाथ समझने लगते और उत्पन्न हुए संकट से मुक्ति दिलाने के लिए बंदरों की हाथ जोड़कर प्रार्थना किया करते थे। इन्हें मैं अच्छी तरह जानता हूँ; क्योंकि ये सज्जन मेरे

ही पड़ोस में रहते हैं। ये प्रतिदिन नदी में स्नान करते हैं। पुल पर आते ही इन्होंने अपनी झोली से पुए निकाले और जो बंदर इनकी ओर बढ़ रहे थे, ये उन्हें पुए देने लगे। जिस ओर वह दूसरा भिखारी बैठा था, उधर उन्होंने मुड़कर भी नहीं देखा, वरन् जब उसने पुआ माँगा तो उन्होंने उसे 'दाव' कहकर झिड़क दिया। उनकी इस दानशीलता और मानव के प्रति उपेक्षा भाव को देखकर मेरे मुँह से अचानक व्यंग्य के साथ निकल गया—"श्रेष्ठ मानव! तुम धन्य हो।" अर्थात् मानव पर दया न दिखाने से तुम नतो श्रेष्ठ हो ओर न ही धन्य हो।

काव्य-सौंदर्य—

1. इस पंक्तियों में कवि ने मानव की दयालुता, उसके धार्मिक स्वरूप एवं समाज की विसंगतियों का मार्मिक एवं हृदयग्राही चित्रण किया है। 2. कवि के हृदय की करुणा एवं मानव-प्रेम की अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में रस की धारा बनकर बहती है। 3. **भाषा**—साहित्यिक खड़ीबोली। 4. **रस**—करुण। 5. **गुण**—माधुर्य। 6. **अलंकार**—अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास तथा वक्रोक्ति।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित में नाम-सहित समास-विग्रह कीजिए—

उत्तर—

समस्तपद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
कृष्णकाय	**कृष्ण (साँवला) शरीर**	**कर्मधारय समास**
दूर्वादल	**दूर्वा का दल**	**संबंध तत्पुरुष समास**
रामभक्त	**राम का भक्त**	**संबंध तत्पुरुष समास**
अनिन्द्य	**निंदा से रहति नञ् (अपादान)**	**तत्पुरुष समास**
छन्द-बन्ध	**छंद का बंध**	**संबंध तत्पुरुष समास**
सरिता-मज्जन	**सरिता में मज्जन**	**अधिकरण तत्पुरुष समास**

2. निम्नलिखित शब्दों में सनियम सन्धि कीजिए—

उत्तर—

शब्द	**संधि-विच्छेद**	**नियम**
गर्जितोर्मि	**गर्जित + ऊर्मि**	**अ + ऊ = ओ**
पर्यटनार्थ	**पर्यटन + अर्थ**	**अ + अ = आ**
निश्चल	**निः + चल**	**: + च = श्च**
श्रीमन्नारायण	**श्रीमत् + नारायण**	**त् + न = न्न**
सज्जन	**सत् + जन**	**त् + ज = ज्ज**

3. निम्नांकित पद्यांश का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—

(क) काव्य-सौंदर्य—

1. कवि कहता है कि प्रात:काल में हवा सौरभ अर्थात् सुगंध के वस्त्र पहने हुए बह रही है। यह हवा कानों के पास से गुजरती है तो ऐसा लगता है मानों चुपचाप हृदय की बातें कह रही हो। 2. **भाषा**—परिष्कृत खड़ीबोली। 3. **रस**—शृंगार। 4. **गुण**—माधुर्य।

5. **अलंकार**—रूपक।

(ख) काव्य-सौंदर्य—

1. कवि कहता है कि पास में पतली धारावाली गोमती बह रही है। उसे देखकर ऐसा लगता है जैसे पतली कमरवाली, नवयौवन से भी हुई कोई नर्तकी चपलता और आवेश के साथ नृत्य कर ही हो। 2. **भाषा**—परिष्कृत खड़ीबोली। 3. **रस**—शृंगार। 4. **गुण**—माधुर्य। 6. **अलंकार**—रूपक।

4. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए—

उत्तर—

(क) मानवीकरण, रूपक। (ख) अनुप्रास, उत्प्रेक्षा।

9 सोहनलाल द्विवेदी (उन्हें प्रणाम)

(जन्म : सन् 1906 ई० - मृत्यु : सन् 1988 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (क) **6.** (ग) **7.** (ख) **8.** (ख) **9.** (ग) **10.** (ग) **11.** (ख) **12.** (क) **13.** (घ) **14.** (क) **15.** (क) **16.** (क) **17.** (ख) **18.** (घ) **19.** (ग) **20.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर—

1. सोहनलाल द्विवेदी जी ने अपनी 'उन्हें प्रणाम' कविता में महापुरुषों, सत्पुरुषों, कवि, क्रांतिकारियों, देशभक्तों, जनसेवकों के चरणों में प्रणाम किया है।

2. द्विवेदी जी ने 'अधिकार' नामक राष्ट्रीय पत्र का सम्पादन किया।

3. द्विवेदी जी के राष्ट्रीय कविता संग्रहों की सूची निम्नलिखित हैं—1. भैरवी 2. पूजागीत 3. प्रभाती 4. युगाधार 5. चेतना।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर–

1. द्विवेदी जी का जन्म सन् 1906 ई० में फतेहपुर जिले के बिन्दकी कस्बे में हुआ था।

2. द्विवेदी जी के दो प्रसिद्ध काव्य-संग्रहों के नाम हैं—1. पूजा गीत 2. युगाधार।

3. द्विवेदी जी की कविता का मुख्य विषय राष्ट्रप्रेम की भावना है।

4. **जीवनी**—सोहनलाल द्विवेदी का जन्म सन् 1906 ई० (डॉ० नगेंद्र के 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के पृ० 622 के अनुसार सन् 1905 ई०) में फतेहपुर जिले के बिन्दकी (फतेहपुर, उ०प्र०) कस्बे के एक धनाढ्य परिवार में हुआ था। इनके पिता पं० वृन्दावन प्रसाद द्विवेदी एक सत्कर्मनिष्ठ कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनकी हाईस्कूल तक की शिक्षा फतेहपुर में हुई तथा

बी० एच० यू० बनारस से इन्होंने एम० ए०, एल० एल० बी० की उच्च शिक्षा प्राप्त की। वहाँ के पवित्र राष्ट्रीय वातावरण में महामना मालवीय जी के सम्पर्क से इनके हृदय में राष्ट्रीयता की भावना जगी और इन्होंने राष्ट्रीय भावना-प्रधान कविताएँ लिखना आरम्भ किया। सन् 1938 ई० से सन् 1942 ई० तक इन्होंने लखनऊ से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र 'अधिकार' का सम्पादन कार्य किया। कुछ वर्षों तक 'बाल-सखा' के अवैतनिक सम्पादक भी रहे। कानपुर विश्वविद्यालय से सन् 1976 ई० में इन्होंने डी० लिट० की उपाधि प्राप्त की। माखनलाल चतुर्वेदी के सान्निध्य और गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर इन्होंने राष्ट्रीय आंदोलनों में भी भाग लिया तथा अपनी राष्ट्रीय भावना-प्रधान रचनाओं के लिए कवि सम्मेलनों में भी सम्मानित होते रहे। 29 फरवरी, सन् 1988 ई० में इनका देहावसान हो गया।

सोहनलाल द्विवेदी आदि कवि थे। इन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में ही कविताएँ लिखनी आरम्भ कर दी थीं। द्विवेदी जी गांधीवादी कवि हैं। यही कारण है कि इनकी कविताओं में खादी-प्रचार, ग्राम-सुधार, सत्य, अहिंसा और प्रेम जैसी प्रवृत्तियों को प्रधानता मिली है। इनकी कविताओं का मुख्य विषय राष्ट्रीय उद्‌बोधन है। इनमें जागरण का सन्देश है। द्विवेदी जी का प्रथम काव्य-संग्रह 'भैरवी' सन् 1941 ई० में प्रकाशित हुआ। द्विवेदी जी का हिन्दी साहित्य में वही स्थान है जो गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का है।

साहित्यिक योगदान—द्विवेदीजी जन्मजात कवि थे। अपने विद्यार्थी जीवन से ही इन्होंने कविताएँ लिखनी प्रारंभ की दी थी। अपनी कविताओं के माध्यम से इन्होंने देश के नवयुवकों में अभूतपूर्व उत्साह एवं देश-प्रेम की भावना का संचार किया। इनके द्वारा लखनऊ से प्रकाशित होने वाले 'अधिकार' नामक पत्र का सफलतापूर्वक सम्पादन किया गया। इन्होंने 'बाल-सखा' नामक मासिक पत्रिका का संपादन भी किया। गांधीजी से ये विशेष रूप से प्रभावित थे। इसी कारण इनके काव्य में गांधीवादी विचारधारा के दर्शन होते हैं। सन् 1941 ई० में आपका प्रथम काव्य-संग्रह 'भैरवी' प्रकाशित हुआ। इसके बाद से ये निरंतर साहित्य-साधना में संलग्न रहे। बालकों को प्रेरित करने के उद्देश्य से भी इन्होंने श्रेष्ठ साहित्य का सृजन किया।

रचनाओं

इनकी प्रमुख काव्य-कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

1. **राष्ट्रीय कविता-संग्रह**—द्विवेदी जी के 'भैरवी', 'पूजागीत', 'प्रभाती', 'युगाधार' और 'चेतना' ऐसे कविता-संग्रह हैं, जिनमें राष्ट्रीयता, ग्राम-सुधार, खादी-प्रेम आदि विषयों की प्रधानता है।
2. **प्रेम गीतों का संग्रह**—'वासन्ती', द्विवेदी जी का प्रेम गीतों का संग्रह है, जिसमें प्रेम के उदात्त रूप की निश्छल अभिव्यक्ति है।
3. **आख्यान-काव्य**—'विषपान', 'वासवदत्ता', और 'कुणाल' द्विवेदी जी के आख्यान काव्य हैं। इनमें इतिहास और कल्पना का सुन्दर समन्वय हुआ है।
4. **बाल-कविता संग्रह**—बालकों को प्रेरणा प्रदान करने वाले द्विवेदी जी के 'शिशु-भारती', 'दूध-बताशा', 'बाल-भारती' 'बच्चों के बापू' और 'झरना' बाल-कविता संग्रह

हैं।

भाषा-शैली—द्विवेदी जी ने अपने काव्य की रचना खड़ीबोली भाषा में की है। इनकी भाषा सरल, सुबोध, स्वाभाविक आडम्बरहीन और मधुर है। स्पष्टता और स्वाभाविकता इनकी भाषा के प्राण हैं। इन्होंने अपनी भाषा में संस्कृत और उर्दू के शब्दों को पर्याप्त रूप में अपनाया है। इनकी भाषा में मुहावरों का प्रयोग बड़े सार्थक ढंग से हुआ है। इनकी भाषा इतनी सहज, सीधी-सादी और बोधगम्य है कि उसे व्यावहारिक भाषा का नाम दिया जा सकता है।

द्विवेदी जी ने अपने काव्य में मुख्य रूप से प्रबन्ध और मुक्तक शैलियों को अपनाया है। इनकी शैली में सरसता, रोचकता, स्पष्टता और प्रवाह सर्वत्र दिखायी देता है। इनकी राष्ट्रीय कविताएँ ओजपूर्ण हैं। इनकी गीतात्मक शैली में गम्भीरता, तन्मयता, संगीतात्मकता और संक्षिप्तता जैसे गुणों के दर्शन होते हैं। कहीं-कहीं इनके काव्य में इतिवृतात्मक, आलंकारिक और प्रतीकात्मक शैलियों का प्रयोग भी दिखायी देता है।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. कवि की दृष्टि में वन्दनीय पुरुष वे महापुरुष हैं जो अपने देश के गरीब, पीड़ित लोगों की सेवा करने और उन्हें उन्नत करने में सदैव तत्पर रहते हैं।

2. कवि उस मंगलमय दिन को अपना प्रणाम अर्पित करता है, जिस दिन सब स्वतंत्र हों, सब सुखी हों और सबको समृद्धि प्राप्त हो।

3. क्रान्ति के आश्रयदाताओं के निम्नलिखित लक्षण बताए गए हैं—

1. उनकी आत्मा सदा सत्य का शोध करती है।
2. उन्हें अपनी गौरव-गरिमा का बोध रहता है।
3. उन्हें दुखियों पर दया आती है।
4. उन्हें क्रूर पर क्रोध आता है।
5. वे अत्याचारों का प्रतिशोध करना चाहते हैं।

4. देशभक्तों द्वारा नगर-नगर और ग्राम-ग्राम की धूल छानने के पीछे उनका उद्देश्य रह रहता है कि वे सोयी जनता में चेतना उत्पन्न करना चाहते हैं। वे नहीं चाहते कि देश में कोई ऐसा व्यक्ति बच जाए जिसमें अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम जाग्रत नहो।

5. कवि ने कर्मनिष्ठों, पीड़ित उद्धारकों, बलिदानी देशभक्तों और स्वतंत्रता के दीवानों को प्रणाम करने कही कही की बात कही हैं।

6. राष्ट्र के प्रति समर्पित लोगों को कवि ने स्वदेश का स्वाभिमान कहा है।

7. 'उन्हें प्रणाम' कविता में कवि की आशा का स्वरूप उन सभी महापुरुषों को अपने श्रद्धा५सुमन अर्पित करता है जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में किसी न किसी रूप में अपना योगदान दिया। कवि ने इस कविता के माध्यम से महापुरुषों, सत्पुरुषों, कवि, क्रांतिकारियों, देशभक्तों, जनसेवकों आदि को प्रणाम करते हुए अपनी श्रद्धांजलि दी है।

8. **मूल भाव**— 'उन्हें प्रणाम' कविता के माध्यम से कवि उन महापुरुषों को नमन कर रहा है जो शोषितों और दलितों के बीच रहकर उनके उत्थान के लिए कार्य करते हैं, जिनकी जीवन-

शैली और बलिदानों का स्मरण करके मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है, जो पीड़ित मानवता को सुखी बनाने हेतु तत्पर रहते हैं, जिन्होंने राजा से भिखारी बनकर देश और जाति की सेवा स्वीकार की है, जो सभी को गौरवमय, स्वाभिमानी और अन्याय-विरोधी जीवन अपनाने की प्रेरणा देते हैं, जिन्होंने देशहित में अपनी जवानी समर्पित कर दी, जो देश के लिए जेल के सीखचों में बंदी बनेरहे, जिनका जीवन लोभ, लाभ और स्वार्थ से दूर रहा और जो देश के लिए हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ गए।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—**

उत्तर—

(क) भेद गया है .... सतत् प्रणाम!

संदर्भ—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ **पं० सोहनलाल द्विवेदी** द्वारा रचित 'जय भारत जय' काव्य-संग्रह से हमारी पाठयपुस्तक के **काव्य-खण्ड** में संकलित 'उन्हें प्रणाम' शीर्षक कविता से उदधृत हैं।

प्रसंग—इस गीत में कवि ने निर्धन के धन, निर्बल के बल, त्यागी, स्वाभिमानी, धीर, साम्राज्यवाद की दीवार को ढहानेवले महापुरुषों के चरणों में अपना प्रणाम निवेदित किया है।

व्याख्या—निर्धन और साधनहीन व्यक्तियों के आँसुओं से जिनका हृदय बिंध गया है, कंगालों और गरीबों के साथ रहने में जो लज्जा का अनुभव नहीं करते, जो हर स्थान पर और हर रूप में केवल कर्तव्य-कर्म में लगे रहते हैं और जिनका उद्देश्य मानवता की स्थापना करना है; ऐसे अज्ञात नाम वाले महापुरुषों के चरणों में मैं निरंतर प्रणाम करता हूँ।

देश के करोड़ों वस्त्रहीनों, भिक्षुओं के साथ जो कंधे-से-कंधा लगाए हुए खड़े हैं, जिनको गरीबों के साथ रहने में लज्जा का अनुभव नहीं होता, जो अपने मस्तक को ऊँचा उठाए रहते हैं, जो सताए हुए और शोषित प्राणियों के हाथ को पकड़कर उन्हें यथेष्ट मुक्ति प्रदान करने के लिए बढ़ते चले जा रहे हैं; उन ज्ञात और अज्ञात और अज्ञात नामवाले वंदनीय सत्पुरुषों के चरणों में मैं सदैव अपना प्रणाम निवेदित करता हूँ।

काव्य सौंदर्य—

1. यहाँ कवि ने मानवता को स्थापित करनेवाले ज्ञात और अज्ञात सभी महापुरुषों को अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए हैं। 2. **भाषा**—सरल, सुबोध खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश तथा अनुप्रास।

(ख) मरण मधुर बन जाता .... को मेरे कोटि प्रणाम!

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने वंदना करने योग्य देशभक्तों को नमन करते हुए उनके देशप्रेम का वर्णन किया है कि उन्हें देशप्रेम में मृत्यु भी वरदान के समान लगती है।

व्याख्या—कवि उन क्रांतिकारियों को प्रणाम करता है, जिन्हें देशहित में मृत्यु भी ऐसी लगती

है, जैसे कोई वरदान मिल गया हो। इन क्रांतिकारियों को मृत्यु का भय कभी भी दु:ख नहीं दे सकता। क्रांतिकारी तो मृत्यु का वरण हँस-हँसकर कर लेते हैं और मदभरी मुसकान के साथ फाँसी के फंदे पर झूल जाते हैं। कवि उन महापुरुषों को भी प्रणाम करता है, जो संसार में अन्याय के प्रसार और उसकी छत्रछाया सहन नहीं किया करते और जिनका शुभ-संकल्प यही रहता है कि इस अन्याय के विरुद्ध लड़ा जाए। ऐसे महापुरुषों के प्राण बलिवेदी पर चढ़ जाने को तत्पर रहते हैं।

कवि ने अंत में उन सहृदयजनों को प्रणाम किया है, जो ऐसे-ऐसे काम करते हैं जिनसे घावों पर मरहम लगे। ऐसे सहृदयों के हृदय को कवि करोड़ों-करोड़ प्रणाम अर्पित करता है।

(ग) उन्हें जिन्हें है .... सतत् प्रणाम!

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग—कवि ने उन लोगों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है, जिन राष्ट्रप्रेमी लोगों ने अपने समस्त सुखों को न्योछावर कर मातृभूमि की सेवा की है।

व्याख्या—जिन परोपकारी व्यक्तियों को अपना कोई काम (इच्छा) नहीं है; अर्थात् जिनके सामने स्वार्थ का कोई मूल्य नहीं है, जिन्होंने दूसरों के लिए अपना सुख छोड़ दिया है, जो वैभव को त्यागकर राजा से भिखारी हो गए, जो दूसरों के कल्याण के लिए बार-बार भीख माँगते हैं और वर्षा वधूप की चिंता नहीं करते, दो सूखी रोटियाँ खाकर ही जिनकी तृप्ति हो जाती है जो सदैव सत्य की खोज में लगे रहते हैं, जिन्हें अपने मान-सम्मान का पूरा ज्ञान हे, जो दु:खी और कातर प्राणियों पर दया करते हैं तथा दुष्ट और क्रूर व्यक्ति जिनके क्रोध का आलंबन बनते हैं, जो अत्याचारों के प्रतिकार को ही अपना लक्ष्य मानते हैं—मैं उनको सदैव प्रणाम करता हूँ।

काव्य सौंदर्य—

1. इन पंक्तियों में कवि ने जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस आदि महान् नेताओं का स्मरण किया है। 2. कवि ने अत्याचारों के प्रतिरोध को उचित माना है। 3. **भाषा**—परिमार्जित खड़ीबोली। 4. **रस**—शांत। 5. **गुण**—प्रसाद। 6. **अलंकार**—अनुप्रास तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

(घ) जिनके गीतों के .... टिकती क्रान्ति।

संदर्भ–पूर्ववत।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कविवर पं. सोहनलाल द्विवेदी ने वंदना करने योग्य श्रेष्ठ पुरुषों के गुणों का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि ने उन कवियों की वंदना की है जिनके गीत पढ़कर और सुनकर चित्त को सुख-शांति मिलती है। उन संगीतकारों को भी कवि ने अपना प्रणाम निवेदित किया है,जिनके संगीत में स्वरों का कलापूर्ण विस्तार दिखाई देता है और जिनकी तानों में संसार की समस्त भ्रांतियों को दूर कर सकने की सामर्थ्य है। कवि ने उन क्रांतिकारियों को भी प्रणाम किया है, जिनका आश्रय पाकर ओर जिनकी संकल्प-धारा को आधार बनाकर क्रांति स्थायित्व प्राप्त करती है। इतना ही नहीं, इनके संपर्क में आनेवाले व्यक्ति के मुखमंडल पर, युवावस्था में

प्रस्फुटित होने वाली आभा छा जाती है।

काव्य सौंदर्य—

1. यहाँ कवि ने कलाकारों, गीतकारों, संगीतकारों और सज्जन हृदयवाले लोगों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि को काव्यात्मक स्वरूप दिया है। 2. यहाँ हृदय-प्रधान भाव को श्रेष्ठ रूप में प्रदर्शित किया गया है। 3. **भाषा**—साहित्यिक हिंदी। 4. **रस**—वीर। 5. **गुण**—ओज। 6. **अलंकार**—अनुप्रास श्लेष।

(ङ) जो फाँसी के तख्ते .... किरण ललाम!

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—कवि ने उन बलिदानी वीरों के प्रति अपनीश्रद्धा व्यक्त की हे जिनके कारण मंगलमय नवयुग की प्राप्ति होती है।

व्याख्या—कवि ने उन वीर पुरुषों के चरणों में प्रणाम निवेदित किया है, जो हँसते-हँसते सूली को चूम लेते हैं और फाँसी के तख्ते पर चढ़ जाते हैं। कवि उन भोले-भाले वीरों की वंदना करता है,जो अपने प्रण की रक्षा में जीवित दीवार में चुनवा दिए गए, लेकिन उन्होंने अपनी आन नहीं छोड़ी। ऐसे महान् व्यक्ति विष के धुएँ को भी प्रसन्नता से पीकर काल-कोठरी में अपना जीवन व्यतीत कर देते हैं।

ऐसे ही महापुरुषों के कारण वर्तमान का सुख मिला है। दिव्य एवं मंगलकारी भविश्य भी उन्हीं के कारण आएगा। इनके बलिदान की पवित्र अग्नि में सारे पाप भस्म हो जाएँगे। कवि उस नए युग के नए प्रभात की सुंदर किरणों की कल्पना करता है, जिसके प्रकाश में सब स्वतंत्र होंगे, सब सुखी होंगे और सर्वत्र सुख-समृद्धि का वातावरण होगा।

काव्य सौंदर्य—

1. कवि ने देश के लिए फाँसी पर चढ़ जानेवाले महान् क्रांतिकारियों का स्मरण किया है। 2. दीवारों में चुनवा दिए जाने का संकेत देकर कवि ने गुरु गोविंद सिंह के उन दो मासूम पुत्रों की ओर संकेत किया है, जिनहें विधर्मियों ने दीवार में चिनवा दिया था। 3. **भाषा**—परिमार्जित और प्रवाहपूर्ण खड़ीबोली। 4. **रस**—शांत। 5. **गुण**—प्रसाद। 6. **अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश, रूपक तथा यमक।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—

(क) काव्य सौंदर्य—

1. कवि ने सदैव सत्य की खोज में लगे रहने वाले महापुरुषों का वर्णन किया है। 2. **भाषा**—परिमार्जित खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश।

(ख) काव्य सौंदर्य—

1. कवि ने जनजागृति उत्पन्न करने वाले महापुरुषों का वर्णन किया है।

2. **भाषा**—साहित्यिक हिंदी। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश।

(ग) काव्य सौंदर्य—

1. कवि ने उन महापुरुषों का वर्णन किया है जो निर्धनों का सहारा व निर्बलों की शक्ति हैं। 2. **भाषा**—साहित्यिक हिंदी। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—अनुप्रास।

2. अनुप्रास अलंकार, लक्षण—'ह' वर्ण की आवृत्ति।

3. **वीर रस, लक्षण**—यहाँ सींकचों के पीछे जंजीरों में जकड़े हुए होने के उपरांत भारतमाता की जय-जयकार करने (हृदय में उत्साह का भाव जागृत होने) का कार्य हो रहा है।

4. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए—

उत्तर—

शब्द	**संधि-विच्छेद**	**शब्द**	**संधि-विच्छेद**
स्वाभिमान	**स्व + अभिमान**	सर्वोदय	**सर्व + उदय**
अनागत	**अन + आगत**	अरुणोदय	**अरुण + उदय**
अत्याचारी	**अति + आचारी**		

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

उत्तर—

शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
उन्नत	**अनवत**	ज्ञात	**अज्ञात**
शान्ति	**अशांति**	स्वतन्त्र	**परतंत्र**
जय	**पराजय**	सबल	**निर्बल**

10 हरिवंशराय 'बच्चन'

(जन्म : सन् 1907 ई० मृत्यु : सन् 2003 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (ख) **7.** (क) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (घ) **11.** (क) **12.** (क) **13.** (क) **14.** (क) **15.** (घ) **16.** (क) **17.** (ख) **18.** (ग) **19.** (क) **20.** (ख)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर—

1. छात्र स्वयं करें।

2. बच्चन जी की रचनाओं की सूची निम्नलिखित हैं—1. मधुशाला, 2. मधुबाला, 3. मधुकलश,

4. निशा-निमंत्रण, 5. एकांत-संगीत, 6. सतरंगिनी, 7. मिलनयामिनी 8. प्रणय-पत्रिका, 9. आकुल अंतर, 10. बंगल का काल, 11. बुद्ध पर नाच घर, 12. आरती और अंगारे, 13. दो चट्टानें, 14. धार के इधर-उधर।

3. बच्चन जी की एक लोकप्रिय रचना का नाम 'मधुशाला' है।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर-

1. बच्चन जी का जन्म सन् 1907 ई० में प्रयाग में एक सम्मानित कायस्थ परिवार में हुआ था।

2. बच्चन जी की दो प्रसिद्ध काव्य-कृतियाँ 'मधुशाला' और 'सतरंगिनी' हैं।

3. बच्चन जी ने अपने काव्य में मुक्तक या गीत शैली का प्रयोग किया है।

4. **जीवनी**—कवि हरिवंशराय 'बच्चन' का जन्म एक सम्मानित कायस्थ परिवार में प्रयाग (उत्तर प्रदेश) में सन् 1907 ई० में हुआ। इनके पिता श्री प्रतापनारायण एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। इन्होंने काशी और प्रयाग में शिक्षा प्राप्त की और अंग्रेजी विषय से एम० ए० करने के बाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। कुछ समय तक ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापक रहे। 1926 में हरिवंशराय बच्चन की शादी श्यामा से हुई थी जिनका टी०बी० की लंबी बीमारी के बाद 1936 में निधन हो गया। इस बीच वे नितांत अकेले पड़ गए। 1941 में बच्चन ने तेजी सूरी से शादी की। सन् 1955 ई० में बच्चन जी भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय में हिन्दी-विशेषज्ञ कार्यरत् रहे और वहीं से अवकाश ग्रहण किया। सन् 1966 ई० में ये राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए। बाद में अपने परिवार के साथ ये मुम्बई आ गए और यहीं पर 18 जनवरी, सन् 2003 ई० को 96 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गयी।

हरिवंशराय 'बच्चन' छायावादोत्तर काल के उन प्रसिद्ध कवियों में से हैं, जिनका दृष्टिकोण अत्यन्त व्यावहारिक, आशावादी और स्वतन्त्र है। उन्होंने श्रृंगार के संयोग और वियोग पक्षों पर ही अधिक रचनाएँ लिखीं हैं। उल्लास और वेदना पर उनकी कविताएँ बड़ी मार्मिक और हृदयस्पर्शी हैं। आरम्भ में बच्चन जी उमर खैयाम के जीवन-दर्शन से बहुत प्रभावित रहे। इसी ने उनके जीवन में मस्ती भर दी। उमर खैयाम की रूबाइयों पर आधारित उनकी रचना 'मधुशाला' ने बहुत लोकप्रियता प्राप्त की।

काव्य-कृतियों—काव्य-कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

1. 'मधुशाला', 'मधुबाला' और **'मधुकलश'** बच्चन जी के तीन काव्य-संग्रह एक के बाद एक शीघ्र प्रकाशित हुए। इन संग्रहों की कविताओं में प्यार और कसक की प्रधानता है। इन्हें हालावाद की रचनाएँ कहा जाता है।

2. 'निशा-निमंत्रण' तथा **'एकान्त-संगीत'**—ये दोनों काव्य-संग्रह बच्चन जी की सर्वोत्कृष्ट रचनाओं के अन्तर्गत आते हैं। इन संग्रहों में कवि के हृदय की वेदना साकार हो उठी है।

3. सतरंगिनी—इस कविता-संग्रह में कवि ने आशा, उल्लास और आनन्द को वाणी प्रदान की है।

4. **मिलनयामिनी**—यह बच्चन जी के संयोग श्रृंगार के मधुर गीतों का संग्रह है।

5. **प्रणय-पत्रिका**—यह बच्चन जी का विरह गीतों का संकलन है।

इनके अतिरिक्त बच्चन जी के 'आकुल अन्तर', 'बंगाल का काल', 'बुद्ध का नाच घर', 'आरती और अंगारे', 'दो च—ानें', 'धार के इधर-उधर' आदि काव्य-संग्रह हैं।

भाषा-शैली–इन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में अत्यंत सरल, मधुर प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अनेक भाषाओं से शब्द ग्रहण किए गए हैं। 'बच्चन' जी ने मुक्तक शैली में अपनी रचनाओं का सृजन किया। सरलता, स्वाभाविकता, संगीतात्मकता और प्रवाहमयता इनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. बाधाओं और कठिनाइयों के लिए कवि ने 'पथ की पहचान' कविता में नदी, पर्वत, गुफाओं व काँटों आदि प्रतीकों काप्रयोग किया है।

2. 'पथ की पहचान' कविता के द्वारा कवि यह सन्देश देना चाहता है कि जीवन-मार्ग पर बढ़ने वाले मनुष्य (पथिक) इस मार्ग पर चलने से पहले तुम्हें अपने लक्ष्य व मार्ग का निर्धारण कर लेना चाहिए। अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए रास्ते के बारे में सोचकर समय नष्ट नहीं करना चाहिए। आस्था के साथ अपने चुने मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए।

3. 'स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो, सत्य का भी ज्ञान कर ले' कहने का तात्पर्य यह है कि सुख के स्वप्नों में न डूबकर जीवन की वास्तविकताओं क भी ज्ञान होना आवश्यक है, तभी उन्नति का पथ प्रशस्त हो सकता है। जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ने से पूर्व उचित लक्ष्य या मार्ग का भी निर्धारण कर लेना चाहिए।

4. 'पथ की पहचान' कविता के आधार पर जीवन-यात्रा को सरल बनाने के लिए बच्चन जी ने सलाह दी है कि जीवन के मार्ग का निर्धारण करके उस पर दृढ़ निश्चय के साथ चल पड़ना ही श्रेयस्कर है। निश्चय के साथ मार्ग पर चलने से लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

5. 'आँख में हो स्वर्ग लेकिन पाँव पृथ्वी पर टिके हों' पंक्ति के द्वारा कवि कहना चाहता है कि यथाथ्र जीवन की कठोरता मनुष्य की कोमल कल्पना को साकार नहीं होने देती है। जीवनमें कोमल कल्पना और यथार्थ के बीच समंवय होना चाहिए। इसलिए आँखों में स्वर्ग के सुख की कल्पना तो अवश्य करो, परंतु अपने पैरयथार्थ के धरातल पर ही जमाए रखो। अर्थात् मनमें चाहे कितनी ऊँची कल्पना हो, परंतु कार्य व्यावहारिक होना चाहिए।

6. **सारांश (मूल भाव)**—कवि 'बच्चन' जी ने पथिक के माध्यम से यह प्रेरणा दी है कि मनुष्य को अपने पथ की पहचान स्वयं करनी चाहिए, क्योंकि जीवन के मार्ग में अपने ही अनुभव सबसे श्रेष्ठ होते हैं। इस मार्ग का निर्धारण किसी दूसरे के उपदेश से या पुस्तकों को पढ़कर नहीं किया जा सकता है। कुछ मनुष्य ऐसे अवश्य रहे हैं, जो अपने पथ पर अपने कदमों के निशान छोड़ गए हैं। हमें उनसे अवश्य कुछ सहायता प्राप्त हो सकती है। कवि कहते हैं कि जीवन के मार्ग का निर्धारण करके उसपर दृढ़ निश्चय के साथ चल पड़ना ही श्रेयस्कर है। अनिश्चय की स्थिति में बार-बार मार्ग बदलने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पाती। किसी भी

मनुष्य का यह सोचना कि पथ के निर्धारण में उसे ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है,गलत है। पूर्व के सभी मनुष्यों को भी अपने पथ का निर्धारण करना पड़ा था और बाधाएँ उनके सामने भी आई थीं।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—**

उत्तर—

(क) पूर्व चलने के बटोही .... पहचान कर ले।

संदर्भ-प्रस्तुत पंक्तियाँ कविवर हरिवंशराय 'बच्च' द्वारा लिखित 'पथ की पहचान' शीर्षक गीत से उदधृतहैं। ये उनकी कृति 'सतरंगिनी' से हमारी पाठयपुस्तक के 'काव्य-खण्ड' में संकलित हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने पथिक को संबोधित करके उसे अपने जीवन-मार्ग का निर्धारण करने को कहा है।

व्याख्या—यात्रा के लिए तत्पर बटोही के माध्यम से कवि जीवन-मार्ग पर आगे बढ़नेवाले मनुष्य को संबोधित करता हुआ कहता है कि हे पथिक! तेरे लिए यह अच्छा होगा कि आगे बढ़ने से पहलू तू अपने मार्ग को भली-भाँति पहचान ले।

काव्य-सौंदर्य—

1. प्रस्तुत पंक्तियों में पथिक को अपने जीवन-मार्ग का निर्धारण करने को कहा है। 2. **भाषा**—साहित्यिक हिंद। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—ओज। 5. **अलंकार**—अनुप्रास।

(ख) पुस्तकों में है नहीं .... पहचान कर ले।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—सफल जीवनयापन के लिए मनुष्य को साहस के साथ जीवन-मार्ग पर आगे बढ़ते रहना चाहिए। इस कविता में इसी केंद्रीय विचार को लयात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या—जीवन-मार्ग में अपने अनुभव सबसे श्रेष्ठ होते हैं; क्योंकि प्रत्येक का अपना-अपना मार्ग है तथा अपने-अपने व्यक्तिगत अनुभव हैं। अत: इस मार्ग का निर्धारण पुस्तकों से नहीं हो सकता। तुम्हें जो मार्ग का निर्धारण पुस्तकों से नहीं हो सकता। तुम्हें जो मार्ग अपनाना है, उसकी कहानी पुस्तकों में छपी नहीं मिलेगी। तुम्हारे अपने जीवन-मार्ग का दूसरों के द्वारा पता नहीं चल सकता, इसका अध्ययन तुम्हें स्वयं ही करना होगा। जीवन-मार्ग एक ऐसा मार्ग है, जिससे अनगिनत राहगीर गुजरे हैं और गुजरते रहेंगे, किसी के पास इसका लेखा-जोखा नहीं है। हाँ, कुछ पथिक ऐसे अवश्य रहे हैं, जो जीवन-मार्ग पर अपने पैरों की निशानी छोड़ गए हैं। भाव यह है कि जीवनधारा निरंतर चल रही हे। जन्म से मृत्यु तक प्रत्येक व्यक्ति इस मार्ग पर चलता है। कुछ लोग जो इस मार्ग पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं, वे इतिहास-पुरुष माने जाते हैं। उनके पदचिहन अर्थात् उनकी जीवन-पद्धति यद्यपि हमारे लिए मौन हैं, तथापि हम उसमें से बहुत-कुछ ले सकते हैं। आज उनके मौनक्रिया-कलाप भी हमारे लिए मुखर होकर बाले सकते हैं। तुम उनके जीवन-सूत्रों की व्याख्या करो, उनका अर्थ खोलो। हे

पथिक, तुम अपनी राह का अनुमान कर लो। चलने से पहले अपने मार्ग की पहचान कर लो।

काव्य-सौंदर्य—

1. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बटोही (पथिक) को संबोधित करके उसे कर्तव्य के मार्ग पर बढ़ने का संदेश दिया है और इसके लिए सुंदर काव्य-योजना की है। 2. आत्म-प्रेरणा का भाव मुखरित हुआ है। 3. **भाषा**—साहित्यिक हिंदी। 4. **रस**—वीर। 5. **गुण**—ओज। 6. **अलंकार**—अनुप्रास तथा विरोधाभास।

(ग) है अनिश्चित .... पहचान कर ले।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—इस अवतरण मेंकवि ने पथिक को जीवन के मार्ग में आनेवाली सफलताओं एवं असफलताओं के प्रति सचेत किया है। निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए बच्चन जी कहते हैं—

व्याख्या—हे पथिक! यह कहना बहुत कठिन है कि तुझे किस स्थान पर नदी, पहाड़ अथवा गड्ढे मिलेंगे, अर्थात् यह कहना कठिन है कि तेरे मार्ग में कठिनाइयाँ और बाधाएँ कब आकर उपस्थित हो जाएँगी। यह भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि किन-किन स्थानों पर तुझे सुख का अनुभव होगा। निश्चित रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि तेरी यह जीवन-यात्रा किस स्थान पर जाकर समाप्त होगी।

कवि का कथन है कि यह बात बिल्कुल भी निश्चित नहीं है कि तुझे पुण्य कब प्राप्त होंगे और कब काँटों के तीखे बाण तेरे शरीर में चुभकर तुझे घायल कर देंगे। तात्पर्य यह है कि यह सब भविष्य के गर्भ में है कि कब तुझे सुख की प्राप्ति होगी और कब दु:ख की। यह कहना भी कठिन है कि मार्ग में तेरी भेंट अचानक किससे हो जाए अथवा कब तेरा कोई प्रिय व्यक्ति तुझसे बिछुड़ कब और कहाँ होगा, यह कहना नहीं जा सकता। हे पथिक! तू अपने मन में यह दृढ़ प्रतिज्ञा कर ले कि तेरे मार्ग में चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएँ, फिर भी तू उन सबका धैर्य और साहस के साथ सामना करेगा और बिना रुके अपने मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ता जाएगा।

अंत में कवि कहता है कि हे पथिक! तू अपने पथ पर आगे बढ़ने से पहले अपने रास्ते को अच्छी तरह समझ ले, अर्थात् यात्रा के मार्ग में आनेवाले समस्त सुख-दु:खों पर भली प्रकार विचार कर ले।

काव्य-सौंदर्य—

1. कवि ने यहाँ पथिक को माध्यम बनाकर जीवन-पथ की यथार्थता पर प्रकाश डालता है। 2. इन पंक्तियों में कवि ने स्पष्ट किया है कि दृढ़-निश्चय से ही सफलता मिल सकती है। 3. **भाषा**—सरस खड़ीबोली। 4. **रस**—शांत। 5. **गुण**—ओज। 6. **अलंकार**—अनुप्रास तथा रूपक।

(घ) स्वप्न आता स्वर्ग .... पहचान कर ले।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने पथिक को सचेत किया है कि वह अपने जीवन में आदर्श और

यथार्थ का उचित समंवय करे।

व्याख्या—बच्चन जी पथिक को संबोधित करते हुए कहते हैं कि जब तू अपने मन में आदर्श के, सुखों के और वैभव के स्वप्न सँजोता है, तब तेरे नेत्रों में एक विशेष प्रकार की आभा भर जाती है। तेरे पैरों में पंख लग जाते हैं और अर्थात् अपने आदर्शों को प्राप्त करने के लिए तेरे पेरों में गतिशीता आ जाती है और तेरा ह्दय उमंग और उत्साह से भर उठता है; किंतु जीवन-पथ पर एक ही काँटा (अर्थात् यथार्थ का एक ही झटका) तेरे पैरों की गति को अवरुद्ध कर देता है। इसके बाद तेरे पैरों से रक्त की दो बूँदें गिरती हैं और उनमें तेरे आदर्शों का पूरा संसार डूब जाता है (नष्ट हो जाता है)। उस समय ऐसा प्रतीत होता है, मानो आदर्शों की अपेक्षा यथार्थ अधिक दु:खदायी और कठोर होता है तथा यथार्थ की कठिनाइयाँ आदर्शों के सपनों को साकार नहीं होने देंगी।

बच्चनजी का मत है कि आदर्श और यथार्थ के बीच समझौता आवश्यक है। उनका विचार है कि हमारी आँखों में सुख, वैभव और आदर्श के स्वप्न तो हों, किंतु हमारे पैर यथार्थ की भूमि पर टिकें हो। कवि का कथन है कि जीवन के मार्ग में आने वाली बाधाएँ और कठिनाइयाँ हमें यही अद्‌भुत शिखा देती हैं। इसलिए जीवन-पथ के पथिक, तू अपने मार्ग पर आगे बढ़ने से पहले अपने मार्ग की पहचान भली प्रकार से कर ले। तेरे लिए यही आवश्यक है।

काव्य-सौंदर्य—

1. कवि ने पथिक को माध्यम बनाकर प्रेरणा दी है कि हमें आदर्श और यथार्थ के बीच समंवय करके ही अपने जीवन-पथ पर आगे बढ़ना चाहिए। 2. मनुष्य कठिनाइयों और बाधाओं से बहुत-कुछ सीखता है। 3. कवि ने यहाँ प्रतीकों का सहारा लेकर अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है। भाषा की लाक्षणिकता और प्रतीकात्मकता द्रष्टव्य है। 4. **भाषा**—मुहावरेदार खड़ीबोली। 5. **रस**—शांत। 6. **गुण**-प्रसाद। 7. **अलंकार**—उपमा, रूपकातियोविक्तथा अनुप्रास।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नांकित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—

काव्य-सौंदर्य—1. कवि ने यहाँ पथिक को माध्यम बनाकर जीवन-पथ की यथार्थतापर प्रकाश डाला है। 2. **भाषा**—सरस खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**-ओज। 5. **अलंकार**—अनुप्रास।

2. निम्नलिखित में प्रयुक्त अलंकार का नाम तथा उसका लक्षण लिखिए—

उत्तर—

(क) अलंकार—अतिशयोक्ति, लक्षण—पैरों को पंख लग जाने के कारण अतिशयोक्ति अलंकार है।

(ख) अलंकार—रूपकातिशयोक्ति, लक्षण—आँखों में स्वर्ग होने के कारण रूपकातिशयोक्ति अलंकार है।

3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रसों की पहचान कर उसमें स्थायी भाव लिखिए—

उत्तर—

रस—वीर, **स्थायी भाव**—उत्साह।

4. निम्नलिखित पदों से उपसर्ग और प्रत्ययों को अलग-अलग करके मूल-शब्द के साथ लिखिए—

उत्तर—

शब्द	मूल शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय
उन्मुक्त	**मुक्त**	**उन्**	
अनुमान	**मान**	**अनु**	
सफलता	**सफल**	**ता**	
पंथी	**पंथ**	**ई**	
असम्भव	**संभव**	**अ**	
अवधान	**धाव**	**अव**	
अनिश्चित	**निशिचत**	**अ**	

11 नागर्जुन

(जन्म : सन् 1911 ई० - मृत्यु : सन् 1998 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (क) **6.** (ग) **7.** (ग) **8.** (ख) **9.** (क) **10.** (ग) **11.** (ख) **12.** (ख) **13.** (घ) **14.** (क) **15.** (ख) **16.** (ख) **17.** (क) **18.** (घ) **19.** (ख) **20.** (क) **21.** (क) **22.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर—

1. 'बादल को घिरते देखा है' कविता में निर्मल,चाँदी के समान शवेत बर्फ से ढकी मंडिल पर्वत की चोटियों पर घिरते हुए बादलों से मनोरम दृश्य उपस्थित हो गया। मानसरोवर में खिलने वाले स्वर्ण जैसे सुंदर कमल–पुष्पों पर वर्षा की मोती के समान चमकदार अत्यधिक शीतल बूँदें गिरनेलगीं।

2. नागार्जुन प्रगतिवादी विचारधारा के कवि हैं क्योंकि उनके हृदय में दलित वर्ग के प्रति संवेदना रही है।

3. नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र है।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर–

1. नागार्जुन का जन्म सन् 1911 ई० में दरभंगा (बिहार) जिले के सतलखा नाम ग्राम में हुआ था।

2. नागार्जुन जी के काव्य का मुख्य स्वर प्रेम और प्रकृति का चित्रण है।

3. नागार्जुन जी की दो प्रसिद्ध काव्य-कृतियों के नाम है—1. युगधारा, 2. भस्मांकुर।

4. **जीवन-परिचय**—नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था, परन्तु पहले ये 'यात्री' के नाम से लिखा करते थे। इनका जन्म दरभंगा (बिहार) जिले के सतलखा नामक ग्राम में सन् 1911 ई० में हुआ था। इनकी आरम्भिक शिक्षा संस्कृत पाठशाला से शुरू हुई किन्तु आगे तक जारी न रह सकी। इनका आरम्भिक जीवन अभावों का जीवन था। जीवन के इन्हीं अभावों ने इन्हें शोषण के प्रति विद्रोह की भावनाओं से भर दिया, साथ ही जीवन में घटित दु:खद घटनाओं ने इन्हें मानवमात्र का दु:ख समझने की क्षमता प्रदान की। ये घुमन्तू प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अत: देश-विदेश में घूमते हुए ये सन् 1936 ई० में श्रीलंका जा पहुँचे और वहाँ संस्कृत के आचार्य बन गए। स्वाध्याय से ही इन्होंने अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। श्रीलंका प्रवास में ही इन्होंने बौद्ध-धर्म की दीक्षा ले ली। सन् 1941 ई० में ये भारत लौट आए। अपने निर्भीक और कटुसत्य सम्भाषण के कारण नागार्जुन जी ने कई बार जेल-यात्रा भी की। स्वतन्त्र भारत में भी इन्हें अपनी विद्रोही प्रवृत्ति के कारण जेल जाना पड़ा। 5 नवम्बर, सन् 1998 ई० को 87 वर्ष की आयु में यह महान् विभूति इस संसार से चली गयी।

नागार्जुन जी ने जीवन के कठोर यथार्थ एवं कल्पना पर आधारित अनेक रचनाओं का सृजन किया। अभावों में जीवन व्यतीत करने के कारण इनके हृदय में समाज के पीड़ित वर्ग के प्रति सहानुभूति का भाव विद्यमान था। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का शोषण करने वाले व्यक्तियों के प्रति इनका मन विद्रोह की भावना से भर उठता था। सामाजिक विषमताओं, शोषण और वर्ग संघर्ष पर इनकी लेखनी निरन्तर आग उगलती रही। अपनी कविताओं के माध्यम से इन्होंने दलित, पीड़ित और शोषित वर्ग को अन्याय, अनीति और अत्याचार का विरोध करने की प्रेरणा दी। ये स्वतन्त्र विचारधारा के कवि थे। अपने स्वतन्त्र एवं निर्भीक विचारों के कारण इन्होंने हिन्दी साहित्य जगत में अपनी विशेष पहचान बनाई। समसामयिक राजनीति, प्रेम और प्रकृति सौन्दर्य पर भी इनकी कई रचनाएँ लोकप्रिय हुईं। इनकी गणना वर्तमान युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में की जाती है।

रचनाएँ—नागार्जुन जी 'रा रचित काव्य-कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

1. युगधारा—यह नागार्जुन जी का प्रारम्भिक काव्य-संकलन है।

2. सतरंगे पंखों वाली—इस काव्य-संग्रह में प्रकृति का मार्मिक चित्रण हुआ है।

3. भस्मांकुर—यह नागार्जुन का खण्डकाव्य है। इसमें भस्मासुर की पौराणिक कथा को कवि ने नए रूप में प्रस्तुत किया है।

खून और शोले—इसमें नागार्जुन द्वारा रचित ओजस्वी कविताएँ हैं।

इनके अतिरिक्त नागार्जुन जी की अन्य रचनाएँ हैं—'हजार-हजार बाँहों वाली', 'तुमने कहा था' आदि।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. 'बादल को घिरते देखा है' कविता में कवि ने हिमालय पर्वत की चोटी पर घिरते बादलों के सौंदर्य का वर्णन किया है।

2. 'बादल को घिरते देखा है' में कवि ने बादलों के सौंदर्य, ओस की बूँदों का कमलों पर गिरने के दृश्य का, अनेक छोटी-बड़ी सुंदर झील-झरनों, झीलों में तैरते हँसों, हिमालय में पर्वत श्रेणियें, चकवा-चकवी के प्रेम, कस्तरूी मृग द्वारा सुगंध की खोज में इधर-उधर भागने, कविता में कवि ने अद्‌भुत प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण किया है। किन्नर-किन्नरियों के दृश्य का चित्रण किया है।

3. कालिदास एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने बादल को अपनी रचना 'मेघदूत' में एक दूत के रूप में दर्शाया था। धनपति कुबेर के द्वारा एक यज्ञ को भगा दिया गया था। उस यक्ष ने मेघ को अपना दूध बनाकर अपनी प्रिया को संदेश भेजा। कालिदास ने जिन स्थानों को नहीं खोज पाया। इसलिए कवि जब भी बादलों को देखताहै तो उसे कालिदास की याद आ जाती है।

4. **सारांश (मूल भाव)**—'बादल को घिरते देखा है' कविता में हिमालय पर्वत पर स्थित कैलाश पर्वत की चोटी पर घिरते बादलों के सौंदर्य का वर्णन किया गया है। कवि के अनुसार निर्मल, चाँदी के समान सफेद बर्फ से मंडित पर्वत चोटियों पर घिरते हुए बादलों से संपूर्ण वातावरण अत्यंत मनोहारी दिखाई देने लगता है। कैलाश पर्वत पर छाए बड़े-बड़े बादल, तूफानी हवाओं को उड़ा ले जाती है, फिर भी बादलअपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत रहता है। आकाश में बादल छा जाने से किन्नर प्रदेश की शोभा अद्वितीय हो जाती है। सैकड़ों छोटे-छोटे झरने अपनी कल-कल ध्वनि से देवदार के वन को गुंजित कर देते हैं। इनवनों में किन्नर और किन्नरियाँ विलासितापूर्ण क्रीड़ाएँ करने लगती हैं।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी लिखिए—**

उत्तर—

(क) कहाँ गया धनपति कुबेर .... गरज-गरज भिड़ते देखा है।

संदर्भ—प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ कवि नागार्जुन द्वारा रचित 'बादल को घिरते देखा है' नामक कविता से अवतरित हैं। यह कविता हमारी पाठयपुस्तक के 'काव्य-खंड' में उनके काव्य-संग्रह 'प्यासी पथरायी आँखें' से संकलित है।

प्रसंग—कवि ने यहाँ स्पष्ट किया है कि दुर्गम परिस्थितियों में मनुष्य को अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होना चाहिए। साथ ही कवि ने उस यथार्थ का चित्रण किया है जो कल्पनाओं से भी अधिक प्रभावी है।

व्याख्या—कवि प्रश्न करता है कि वह धनपति कुबेर, जिसने यक्ष को शाप दे दिया था, आज कहाँ गया? सुनते हैं उसकी अलका नगरी बहुत बड़ी थी; वह भी आज दिखाई नहीं देती। कालिदास ने अपनी कविता में जिस आकाशवाहिनी गंगा की चर्चा की है, उस गगा का जल

भी आज दिखाई नहीं देता, उसका भी कोई ठिकाना नहीं रहा। यक्ष ने अपनी प्रिया के पास मेघ को दूत बनाकर भेजा था। उस मेघरूपी दूत का भी पता नहीं चल पा रहा है। लगता है उस मेघ ने दूत का कार्य संपन्न नहीं किया। वह तो घुमक्कड़ था; अत: यहीं कहीं बरस गया होगा और उसने संदेश पहुँचाया ही नहीं होगा। इन बातों को छोड़ो। ये सब तो कवि की कल्पना थी। कल्पनाओं में कब तक और कहाँ तक डूबें? कवि कहता है कि मैंने उस यथार्थ को देखा है, जो कल्पनाओं से भी अधिक प्रभावी है। भयंकर जाड़ों में गगनचुंबी कैलास-पर्वत के शिार पर टिके बहुत बड़े बादल को तूफानी हवाओं से गरज-गरजकर दो-दो हाथ करते मैंने देखा है। माना कि हवा बादल को उड़ा देती है, पर मैंने बादल को भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत देखा है।

काव्य-सौंदर्य—

1. कवि ने कहा है कि विपरीत दशाओं में भी मनुष्य को अपने कर्तव्य का पथ नहीं छोड़ना चाहिए। 2. **भाषा**—साहित्यिक। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—उपमा।

(ख) दुर्गम बर्फानी घाटी में .... पर चिढ़ते देखा है।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—कवि ने मनुष्य की विवशताओं का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि सैकड़ो-हजारों फीट ऊँचे पर्वत-शिखरों की दुगर्म बर्फीली घाटियों में निवास करनेवाले कस्तूरी मृग की दशा भी क्या विचित्र होती है। उसकी नाभि में कस्तूरी होती है। कस्तूरी की गंध बहुत तेज और आकर्षक होती हे। मृग सोचता है कि यह गंध किसी और स्थान से आ रही है, किंतु अपनी नाभि को वह देख नहीं पाता है। मृग अपनी ही कस्तूरी की पागल बना देनेवाली गंध के लिए दौड़ता फिरता है, कस्तूरी उसे मिल नहीं पाती। मैंने उस चंचल और युवा मृग की उस विवशता को देखा है, जबकि वह कस्तूरी की खोज में अपने ही चिढ़ता-कुढ़ता है; अपने पर झुँझला-झुँझला उठता है।

काव्य-सौंदर्य—

1. कवि ने कस्तूरी मृग के उदाहरण से यह भी स्पष्ट किया है कि सफलता की चाबी मनुष्य के पास ही है, किंतु वह उसे न जानने के कारण ही भटकता है। 2. **भाषा**—साहित्यिक। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—अनुप्रास।

(ग) रजत-रचित .... फिरते देखा है।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—यहाँ कवि ने किन्नर-प्रदेश की शोभा का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि किन्नर प्रदेश के नर-नारियों के मदिरापान करनेवाले बर्तन चाँदी के बने हुए हैं। वे मणि जटित तथा कलात्मक ढंग से बने हुए हैं। वे अपने धब्बों से रहित तिपाई पर मंदिरा के पात्रों को रख लेते हैं और स्वयं कस्तूरी मृग के नन्हे बच्चों की कोमल छाल पर आसन लगाकर बैठ जाते हैं। मदिरा पीने के कारण उनके नेत्र लाल रंग के हो जाते हैं और उनमें उन्माद छा जाता है। मदिरा पीने के बाद वे लोग मस्त को प्रकट करने के लिए

अपनी कोमल और सुंदर अंगुलियों से सुमधुर स्वरों में वंशी की तान छेड़ने लगते हैं। कवि कहता है कि इन सभी मनोहारी दृश्यों को मैंने देखा है।

काव्य-सौंदर्य–

1. यहाँ किन्नर प्रदेश के सत्री-पुरुषों के विलासमय जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। 2. **भाषा**–संस्कृनिष्ठ खड़ीबोली। 3. **रस**–श्रृंगार। 4. **गुण**–माधुर्य। 5. **अलंकार**– अनुप्रास, उपमा तथा पुनरुक्तिप्रकाश।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित में सविग्रह समास का नाम लिखिए–

उत्तर–

समस्त	**पद समास-विग्रह**	**समास का नाम**
धनपति	**धन का पति संबंध**	**तत्पुरुष समास**
महामेघ	**महान मेघ**	**कर्मधारय समास**
शतदल	**जिसके सौ दल हों अर्थात् कमल**	**बहुव्रीहि समास**
त्रिपदी	**तीन पदों का समाहार**	**द्विगु समास**
प्रणय-कलह	**प्रणय की क्रीड़ा संबंध**	**तत्पुरुष समास**

2. निम्नलिखित में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए–

उत्तर–

(क) **अलंकार**–अनुप्रास। (ख) **अलंकार**–अनुप्रास।

3. निम्नलिखित पंक्ति में प्रयुक्त रस को पहचानकर उसका स्थायी भाव लिखिए–

उत्तर–

रस–श्रृंगार, **स्थायी भाव**–रति।

4. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

उत्तर–

(क) काव्य-सौंदर्य–

1. मानसरोवर में लिखने वाले कमलों पर मोती जैसी चमकदार शीतल जल की बूँदों के गिरने का सुंदर वर्णन किया गया। 2. **भाषा**–सरल प्रवाहपूर्ण। 3. **गुण**–माधुर्य। 4. **रस**–श्रृंगार। 5. **अलंकार**–उपमा अलंकार।

(ख) काव्य-सौंदर्य–

1. यहाँ किन्नर प्रदेश के सत्री-पुरुषों के विलासमय जीवन का सजीव चित्रण किया गया है। 2. **भाषा**–संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली। 3. **रस**–श्रृंगार। 4. **गुण**–माधुर्य। 5. **अलंकार**–अनुप्रास।

12 केदारनाथ अग्रवाल (अच्छा होता, सितार-संगीत की रात)

(जन्म : सन् 1856 ई० - मृत्यु : सन् 1894 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (क) **9.** (ग) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (ख) **13.** (ग) **14.** (क) **15.** (घ)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. केदारनाथ जी की रचनाओं की सूची निम्नलिखित हैं—1. युग की गंगा, 2. नींद के बादल, 3. फूल नहीं रंग बोलते हैं, 4. लोक और आलेक, 5. पंख और पतवार, 6. हे मैरी तुम, 7. अपूर्वा, 8. पुष्प-दीप, 9. जमुन जल तुम, 10. बोले बोल अबोल, 11. गुल मेंहदी, 12. आत्म गंध, 13. खुली आँखें खुले डैने, 14. मार प्यार की थापें, 15. कहे केदार खरी-खरी।

2. 'अच्छा होता' का मुख्य भाव यह है कि यदि मनुष्य में मानवीय गुणहों ओर अमानवीय गुण न हों तो यह संसार बहुत अच्छा बन जाए।

3. संगीत मनोरंजन काएक बड़ा स्रोत है। यह लोगों को एक साथबाँधता है। यह अतीत से कई अच्छी यादें वापस लाता है। संगीत हमारी उदासीनता को दूर करके हमें तरोताजा करता है। संगीत हमारी थकावट दूर करता है। संगीत सभी तक सकारात्मक संदेश पहुँचाता है। संगीत सभी नकारात्मक विचारों को हटाकर हमारी एकाग्रता की शक्ति कोबढ़ाने का कार्य भी करता है। संगीत हमारे दिमाग को शांत करता है और हमारे शरीर को आराम देता है।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर–

1. केदारनाथ जी का जन्म 1 अप्रैल, सन् 1911 ई० को कमासिन जनपद, बाँदा, उत्तर प्रदेश में हुआ था।

2. केदारनाथ जी काव्य की प्रगतिवादी काव्यधारा के कवि हैं।

3. केदारनाथ जी के दो काव्य-संग्रहों के नाम हैं—1. युग की गंगा 2. पंख और पतवार।

4. **जीवनी**—केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल, सन् 1911 ई० को कमासिन जनपद बाँदा, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनकी माता का नाम घसि—ो एवं पिता का नाम हनुमान प्रसाद था। इनके पिता बहुत ही रसिक प्रवृत्ति के थे। वे रामलीला में अभिनय करने के साथ ब्रजभाषा में कविता भी लिखते थे। केदार बाबू ने काव्य के संस्कार अपने पिता से ही ग्रहण किए थे।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई थी और आगे की शिक्षा बरेली और कटनी-जबलपुर में हुई थी। इनका विवाह कम उम्र में ही एक धनी परिवार की लड़की पार्वती देवी से हो गया था।

केदारनाथ अग्रवाल ने स्नातक इलाहाबाद विश्वविद्यालय से तथा एल-एल०बी० डी०ए०वी०

कॉलेज कानपुर से की थी।

केदारनाथ जी अपनी युवावस्था के आरम्भ से ही कविताएँ करने लगे थे। उनके अध्यापक शिलीमुख जी ने उन्हें कविताएँ लिखने के लिए प्रोत्साहन दिया। 1930 से इन्होंने लेखन-कार्य आरम्भ किया। उनकी कुछ कविताएँ माधुरी पत्रिका में भी छपीं। वे आगे चलकर प्रगतिवादी आन्दोलन के साथ जुड़ गए। उनके व्यक्तित्व पर कविवर निराला और डॉ० रामविलास शर्मा का गहरा प्रभाव पड़ा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए सन् 1989 में साहित्य वाचस्पति की मानक उपाधि तथा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी ने सन् 1995 में डी०लिट्० की उपाधि प्रदान की। केदारनाथ जी को सन् 1973 में सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार, सन् 1979-80 में उ० प्र० हिन्दी संस्थान लखनऊ का विशिष्ट सम्मान, सन् 1986 में साहित्य अकादमी आदि अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्होंने सोवियत संघ की यात्रा भी की। उनकी 22 जून, सन् 2000 में मृत्यु हो गई।

केदारनाथ अग्रवाल को प्रगतिवादी कवि माना जाता है। इसीलिए उनकी कविताओं में वास्तविक जीवन की कटुताओं का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। सत्यता यह है कि केदारनाथ जनवादी चेतना के सजग प्रहरी हैं। उनकी कविताएँ व्यापक जीवन संघर्षों के साथ मनुष्य की सौन्दर्य चेतना से जुड़ी हैं। उनकी कविता में सामान्यजन की हित-चिन्ता की आकुल अभिवृद्धि है।

काव्य-कृतियाँ—केदारनाथ जी ने विविध विधाओं में साहित्य-रचना की। इनमें निबन्ध, उपन्यास, यात्रा-वृत्तांत और पत्र-साहित्य प्रमुख हैं। **परन्तु मूल रूप से केदानाथ जी ने कवि के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। इनके कुल काव्य-संग्रह 24 हैं।** उनमें प्रमुख काव्य-संग्रह हैं—**'युग की गंगा', 'नींद के बादल', 'फूल नहीं रंग बोलते हैं', 'आग का आछना', 'लोक और आलोक', 'पंख और पतवार', 'हे मेरी तुम', 'अपूर्वा', 'पुष्प-दीप', 'जमुन जल तुम', 'बोले बोल अबोल', 'गुल मेंहदी', 'आत्मगंध', 'खुली आँखें खुले डैने', 'मार प्यार की थापें', 'कहे केदार खरी-खरी'** आदि।

भाषा-शैली—केदारनाथ जी के काव्य की भाषा आम जनता की भाषा है। वह 'किसान की वाणी', मजदूर की वाणी और जन-जन की वाणी है।

केदारनाथ जी की कविता की भाषा को लोकभाषा के निकट लाने में पूर्ण सफल हैं। यही कारण है कि वे जनता के बीच प्रचलित शब्दों को सुन्दर प्रयोग करने में बड़े कुशल हैं। उनकी भाषा में कहीं भी किसी प्रकार की जटिलता दिखाई नहीं देती है। बुन्देली बोली के शब्दों का प्रयोग केदार जी की भाषा में खूब मिलता है। इस प्रकार उनकी भाषा सहज, सरल और कलात्मक बन पड़ी है।

भाषा की तरह केदारनाथ जी की शैली सरस, रोचक, रमणीय और प्रभावशाली बन पड़ी है। उनकी शैली में संगीतात्मकता, लय एवं गति है। सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव को वे चित्रात्मकता के साथ सजीव कर देने हैं। छन्दात्मकता और मुक्तछन्दता दोनों पर ही उनका सम्मान अधिकार है। उनकी कविताएँ गेय भी है और पाठ्य भी।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. कवि ईमानदारी, अच्छे चरित्र, परोपकार, साहस वाले गुणों के आदमी को अच्छा मानता है।
2. कविता के केन्द्रीय भाव यह है कि यदि मनुष्य, परोपकारी, चरित्रवान, ईमानदार व दूसरों के दुख को समझने वाला होता, तो आज इस धरत का स्वरूप कुछ और होता।
3. 'शहद की पंखुड़ियाँ' से कवि का आशय है—ऐसी पंखुड़ियाँ जो शहद से भरी हुई हैं।
4. 'चरित्र का कच्चा' का तात्पर्य है—चरित्रहीन मनुष्य को सच्चरित्र होना चाहिए जिससे वह मानवीय आचरण कर सके।
5. 'स्वार्थ का सह बच्चा' का भाव—अपने स्वार्थों का खजाना (स्वार्थी) होना।
6. आज समाज में हिंसा एवं रक्तपात मचा हुआ है। निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं। कवि को आशंका है कि यह संपूर्ण समाज कहीं मौत का बाराती न बन जाए।
7. आग के ओंठ व्यथा-कथा के बोल बोलते हैं।
8. जब संगीत समारोह अपने यौवन को प्राप्त कर लेता है और व्यक्ति के मन में कोमल भावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं; उस समय आनंद का हंस अबाध गति से तैरने लगता है। इसी आनंदरूपी हंस परसवार होकर सरस्वती काव्य लोक में विचरण करने लगती है।
9. 'सितार-संगीत की रात' कविता का मूल भाव—'सितार संगीत की रात' कविता में कवि कहता है कि सितार की ध्वनि जब निकलती है तो हर्ष एवं उल्लास का माहौल छा जाता है। शहद से परिपूर्ण पंखुड़ियाँ खुलती चली जाती हैं। अंगुलियाँ जब सितार पर थिरकती हैं तो ऐसा मालूम पड़ता है जैसे वे नृत्य कर रही हैं। हर्ष रूपी हंस दूध पर तैरने लगता है जिस पर सवार होकर सरस्वती काव्य लोक में भ्रमण करती है।
10. जब व्यक्ति संगीत समारोह में एक बार संगीत इसमें डूब जाता है और व्यक्ति मन की खिड़की से झाँकर आनंद के असीम आकाश पर अपनी दृष्टि डालता है तो वह अपने शताब्दियों पुराने अतीत में गोते लगाने लगता है। वह जो-ज्यों अपने अतीत की स्मृतियों में खोने लगता है,त्यों-त्यों संगीत समारोह में कौमार्य बरसता है।
11. **सारांश**—प्रस्तुत कविता में कवि ने समान में अमन-चैन एवं सच्ची मानवता की कामना की है। कवि कहता है कि व्यक्ति को व्यक्ति के सुख-दुख में साथ रहना चाहिए। मनुष्य को मनुष्य के कष्ट में भागीदार होना चाहिए। मनुष्य को नि:स्वार्थ होकर अपनी नियति को साफ रखना चाहिए। मनुष्य को सचचे आचरण वाला होना चाहिए। मनुष्य को ईमानदार एवं जनप्रिय होना चाहिए। आदमी को ठगी और हिंसा में लिप्त नहीं होना चाहिए। तभी एक स्वच्छ समान की कल्पना की जा सकती है। यदि मनुष्य एवं समाज का भला होगा तो राष्ट्र भी उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इनका काव्य-सौन्दर्य भी लिखिए—**

(क) अच्छा होता .... कच्चा होता।

संदर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक के काव्य-खण्ड में प्रगतिवादी कवि केदारनाथ

अग्रवाल द्वारा रचित 'अपूर्वा' काव्य-संग्रह से संकलित कविता 'अच्छा होता' से उद्धृत हैं।

प्रसंग—इस पंक्तियों में कवि ने मानवता के प्रति व्यक्ति के कर्तव्य-अकर्तव्य का सुंदर विवेचन किया है।

व्याख्या—कवि केदारनाथ कहते हैं कि यदि एक आदमी दूसरे के लिए सब प्रकार से सदभावी, सदाचारी हो तो कितना अच्छा हो। अर्थात् यदि प्रत्येक आदमी सब प्रकार से दूसरे आदमी के कल्याण की कामना करता हुआ वैसा ही आरण करे तो मानवता के लिए इससे अच्छी और कोई बात हो ही नहीं सकती।

यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के कल्याण की बात सोचे और दूसरों की भलाई को ही अपने जीवन का उद्देश्य बना ले; वह दूसरों के कल्याण का दृढ़ संकल्प कर ले; अपने वचनों का पक्का हो अर्थात् जो कुछ भी अपने मुख से कहे उसे अपने आचरण द्वारा पूरा करके दिखाए; अपनी नीयत अथवा स्वभाव का सच्चा हो, उसमें छल-कपट का लेशमात्र भी नहो; स्वार्थों का खजाना (चहबच्चा) वह न हो, अर्थात् जो कुछभी अपने मुख से कहे उसे अपने आचरण द्वारा पूरा करके दिखाए; अपनी नीयत अथवा स्वभाव का सच्चा हो, उसमें छल-कपट का लेशमात्र भी न हो; स्वार्थी का खजाना (चहबच्चा) वह न हो, अर्थात् वह चोरी-छिपे भी अपने स्वार्थों का पोषण न करे; किसी भी प्रकार के आरोप-प्रत्यारोप का कलंक (दाग) उसके माथे पर न लगा अर्थात् उसका व्यक्तित्व सब प्रकार से स्वच्छ छविवाला हो और वह चरित्र का कच्चा अर्थात् दुश्चरित्र ने हो तो कितना अच्छा हो। कवि के कहने का आशय यही है कि यदि सभी मनुष्य इसप्रकार के गुणों से संपन्न हों तो यह संसार स्वर्ग बन जाए। संसार से ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट-धोखा, वैमनस्य, शत्रु, आतंकवाद यहाँ तक साम्राज्यवाद का अंत हो जाए और संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार के समान प्रेम, सौहार्द, सहयोग और बंधुत्व की भावना से परिपूर्ण हो जाए, किंतु आज के मनुष्य में इन सब गुणों का अभाव है। काश ऐसा हो जाए तो कितना अच्छा हो।

काव्य-सौंदर्य—

1. कवि ने वर्तमान में मनुष्य के संवेदना शून्य और जीवन-मूल्य-विहीन होने पर चिंता व्यक्त की है और साथ ही आशा की एक किरण भी बचाए रखी है कि अच्छा होता यदि आदमी में यह सब न होता। 2. **भाषा**—उर्दू शब्दावली से युक्त सरल, साधारण, किंतु भावाभिव्यक्ति में प्रभावपूर्ण खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—अनुप्रास। 6. **छंद**—मुक्त।

(ख) दिलदार .... बराती होता।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने कल्पना की है कि मनुष्य मनुष्य के प्रति उदारता व दयालुता का भाव रखे।

व्याख्या—कवि विश्वबंधुत्व की संभावनाओं की कल्पना करता हुआ आगे कहता है कि यदि आदमी आदमी के लिए उदारता का भाव रखे, प्रत्येक के दु:ख-विपत्ति में उसकी सहायता के लिए तैयार रहे; यदि किसी पर प्राणों का संकट भी आ जाए तो वह अपने प्राणों की चिंता न

करके दिलेरी के साथ उसकी रक्षा करे; ईश्वर ने व्यक्ति के हृदय में जो प्रेम-प्यार, दया, करुणा, उदारता, सहानुभूति आदि भावनाओं की धरोहर सँजोकर रखी है, यदि व्यक्ति अपने हृदय की इन भावनाओं की आवाज को अनसुना करके इन्हें विनष्ट करने के बजाय इनके अनुरूप आचरण करके इस अमूल्य धरोहर (थाती) को अक्षुण्ण बनाए रखे; अपने ईमान की हत्या न करे; न दूसरों को धोखा देकर ठगे; न शक्तिसंपन्न होकर संसार का स्वामी (प्रभु) बने अथवा स्वयं के ज्ञानी होने का ढकोसला करके अपने आपको ठाकुर (ईश्वर/गुरु) बनाए और न अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए मौत का बरात अथवा सौदागर बने तो कितना अच्छा होता। निश्चय ही ऐसा होने पर संपूर्ण मानवता का कल्याण हो जाए, किंतु विडंबना यह है कि आज व्यक्ति से ये सभी गुण विलुप्त हो गए हैं। व्यक्ति में न उदारता बची है, न दूसरों के लिए मर-मिटने का साहस; उसका हृदय भी संवेदनाशून्य हो चला है; अतः उसका ईमान-धर्म भी कुछ शेष नहीं रह गया है। व्यक्ति अपने बाहुबल और बुद्धिबल पर दूसरों का शोषण कर उन्हें ठगता है और स्वयं को ईश्वर मानने लगता है। अपनी हित-साधना के लिए वह मौत का खेल खेलने से भी नहीं चूकता। काश, आदमी आदमी के लिए वास्तव में आदमी बन जाए तो संसार से भय और आतंक का अंत हो जाए।

काव्य-सौंदर्य—

1. कविता में यद्यपि कवि ने आज के मनुष्य के दोषों का उल्लेख किया है कि वास्तव में उसने 'अच्छा होता' कहकर इन दोषों को त्यागने का संकल्प ही व्यक्त किया है। 2. **भाषा**—उर्दू शब्दावली से युक्त सरल, साधारण, किंतु भावाभिव्यक्ति में प्रभावपूर्ण खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—सर्वत्र अनुप्रास। 6. **छंद**—मुक्त।

(ग) आग के ओंठ .... शहद की पंखुरियाँ।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने वास्तविक संगीत के उदभव पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या—शांत-सुनसान रात में आग/ताप (दुःखों) से जलते-तपते हृदय को शीतलता प्रदान करने के लिए जब कोई सितार पर संगीत की तान छेड़ता है, तब सितार से जो संगीत के स्वर फुटते हैं, वे वास्तव में आग से जलते ओठों की व्यथा-कथा होती है। संगीतकार जैसे-जैसे संगीत की धारा में डूबता जाता है, उसके अचेतन मन की एक-एक परत खुलती चली जाती है और उसी के साथ संगीत की मधुरता मधुर से मधुरतम होती जाती है। जैसे-जैसे संगीत का माधुर्य बढ़ता है, वैसे-वैसे उससे प्राप्त होनेवाले आनंदरस की मधुरता और गाढ़ी होती जाती है।

काव्य-सौंदर्य—

1. कवि का मानना है कि वास्तविक संगीत का स्रोत जीवन में दुःख हैं। 2. **भाषा**—संस्कृत शब्दावली से युक्त सरल खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**— प्रसाद। 5. **अलंकार**—अनुप्रास, रूपक तथा मानवीकरण। 6. **छंद**—मुक्त।

(घ) शताब्दियाँ झाँकती .... विचरण करती है।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—कवि यहाँ स्पष्ट करना चाहता है कि दु:खों से आनंद रस ग्रहण करने पर संगीत और साहित्य (काव्य) की रचना होती है।

व्याख्या—कवि कहता है कि संगीत रस में एक बार डूब जाने पर जब व्यक्ति मन की खिड़की से झाँककर आनंद के असीम आकाश पर अपनी दृष्टि डालता है तो वह अपने शताब्दियों पुराने अतीत में गोते लगाने लगता है। वह ज्यों-ज्यों अपने अतत की स्मृतियों में खोने लगता है, त्यों-त्यों संगीत समारोह अपने यौवन को प्राप्त करता जाता है अर्थात् व्यक्ति के मन में कोमल-सौम्य भावनाओं की झड़ी लग जाती है। इस समय व्यक्ति का मन श्वेत दूध की भाँति निर्मल और स्वच्छ हो उठता है और उस पर हर्ष अथवा आनंद का हंस निर्द्वंद्व हो अबाध गति से तैरने लगता है। इसी आनंदरूपी हंस पर सवार होकर सरस्वती काव्य-लोक में विचरण करने लगती है। आशय यही है कि संसार के दु:खों से उत्पन्न आनंद ही काव्य और संगीत की देवी सरस्वती सक्रिय होकर भाव जगत् में विचरण करने लगती है, जिसके परिणामस्वरूप काव्य और संगीत का जन्म होता है।

काव्य-सौंदर्य—

1. काव्य और संगीत का स्रोत कवि ने दु:खों को माना है। 2. **भाषा**—संस्कृनिष्ठ, शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—रूपक और मानवीकरण।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—

काव्य-सौंदर्य—1. कवि आशा करता है कि सभी मनुष्यों में मानवीय गुण हों, कोई भी अमानवीय गुण न हो। 2. **भाषा**—लोकभाषा के शब्दों से युक्त खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **गुण**—प्रसाद। 5. **अलंकार**—अनुप्रास। 6. **छंद**—मुक्त।

2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए—

उत्तर—

अलंकार—अनुप्रास।

3. 'हर्ष का हंस दूध पर तैरता है।' पंक्ति में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए।

उत्तर—**रस**—श्रृंगार रस।

13 शिवमंगल सिंह 'सुमन'

(जन्म : सन् 1856 ई० - मृत्यु : सन् 1894 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (ग) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (क) **6.** (ख) **7.** (क) **8.** (ख) **9.** (घ) **10.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. कवि में 'पूर्णिमा' और 'अमावस्या' को दीन-दुखियों के प्रति उपेक्षा के संदर्भ में किया है।
2. **समय की पुकार**—समाज की प्रगतिशीलता में श्रमिक कृषक वर्ग का महत्वपूर्ण योगदान है इस वर्ग की खुशहाली में ही संपूर्ण समाज और देश की खुशहाली निहित है। परंतु श्रमिक कृषक वर्ग की उपेक्षा की जाती है। इसलिए समय की पुकार यही कि इस वर्ग की उपेक्षा न ही जाए। शासकों व पूँजीपतियों को इन असहायों की मूल समस्या का समाधान करना चाहिए। इन्हें इनके श्रम का मूल्य उचित समय पर मिलना चाहिए तथा बीमार श्रमिक-कृषक वर्ग का मुक्त इलाज होना चाहिए तथा इस वर्ग के लोगों के बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान की जाए।

जीवन-परिचय एवं कृतित्व पर आधारित प्रश्न

उत्तर–

1. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म सन् 1916 में उत्तर प्रदेश के उन्नाव (झगरपुर) जिले में हुआ था।
2. शिवमंगल सिंह 'सुमन' के दो कविता-संग्रहों के नाम हैं—1. पर आँखें भरी नहीं 2. विन्ध्य हिमालय।
3. **साहित्यिक सेवाएँ**—सुमन जी ने छायावाद के अंतिम चरण में काव्य-क्षेत्र में प्रवेश किया। प्रारंभ में ये प्रेमगीत लिखते रहे। धीरे-धीरे इन्हें अनुभव हुआ कि प्रेम से भी अधिक कोई महतवपूर्ण भाव या विचार है और वह है कर्तव्य। प्रकृति के विशाल क्षेत्र से उठती हुई मानवता की अकुलाहट को इन्होंने सुना और फिर ये देश के राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित हुए। इनके मन में क्रांति की आग धधक उठी।

   सुमन जी की कविताएँ हर्ष और पुलक, राग और विराग तथा आशा और उत्साह से परिपूर्ण हैं। प्रगतिवाद और राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण इनकी अनेक सुंदर रचनाएँ हिंदी-साहित्य की शोभा बढ़ा रही है।
4. **जीवन-परिचय**—डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव (झगरपुर) जिले में 5 अगस्त सन् 1915 ई० को हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा भी वहीं हुई। ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज से बी०ए० और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम०ए० तथा डी० लिट् की उपाधियाँ प्राप्त कर ग्वालियर, इन्दौर और उज्जैन में उन्होंने अध्यापन-कार्य किया।

   वे कुछ समय तक विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। कुछ समय तक सुमन जी नेपाल में भारतीय दूतावास के सांस्कृतिक सचिव भी रहे थे। नवम्बर, सन् 2002 ई० में हिन्दी की यह महान् आत्मा स्वर्गवासी हो गई।

   सुमन जी ने आरम्भ में प्रेमगीत लिखे। समय के साथ इनके विचार बदलते गए और इन्होंने प्रेम का स्थान कर्त्तव्य-भावना को दे दिया, उन्होंने मानवीय कर्त्तव्य को अधिक महत्त्वपूर्ण समझकर उन्हें अपनी सबल लेखनी से काव्य का अंग बनाया। प्रकृति के विशाल क्षेत्र से उठती हुई त्रस्त मानवता की कराह ने इनके ध्यान को आकर्षित किया और वे देश के राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित हुए थे। उनके मन में क्रान्ति की आग धधक उठी। उनका हृदय पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के प्रति विरक्ति से भर गया। इनकी रचनाओं में साम्राज्यवाद विरोधी

स्वर मुखर हो उठे। इसी भावना ने इन्हें प्रगतिवादी कवि बना दिया।

शिवमंगल सिंह 'सुमन' का कार्यक्षेत्र अधिकांशत: शिक्षा जगत् से सम्बद्ध रहा। वे ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज में हिन्दी के व्याख्याता, माधव महाविद्यालय उज्जैन के प्राचार्य और फिर कुलपति रहे। अध्यापन के अतिरिक्त विभिन्न महत्त्वपूर्ण संस्थाओं और प्रतिष्ठानों से जुड़कर उन्होंने हिन्दी साहित्य में श्रीवृद्धि की। सुमन जी प्रिय अध्यापक, कुशल प्रशासक, प्रखर चिंतक और विचारक भी थे। वे साहित्य को बोझ नहीं बनाते, अपनी सहजता में गंभीरता को छिपाए रखते। वे साहित्य प्रेमियों में ही नहीं अपितु सामान्य लोगों में भी बहुत लोकप्रिय थे।

रचनाएँ—सुमन जी की प्रमुख काव्य-कृतियों का विवरण इस प्रकार है—

1. प्रेमगीत-संग्रह—सुमन जी के 'हिल्लोल' एवं पर आँखें भरी नहीं' प्रेम गीतों के संग्रह हैं। इनमें हृदय की कोमल भावनाएँ, सौन्दर्य तथा प्रेम का चित्रण है।

2. राष्ट्रीय कविता-संग्रह—'विन्ध्य हिमालय' कविता संग्रह में देश-प्रेम और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कविताएँ संकलित हैं।

3. क्रान्तिकारी भावनाओं से युक्त कविता-संग्रह—'जीवन के गान', 'प्रलय सृजन', तथा 'विश्वास बढ़ता ही गया' सुमन जी के क्रान्तिकारी भावनाओं से ओतप्रोत, प्रगतिवादी रचनाओं के संग्रह हैं।

भाषा-शैली—सुमन जी की भाषा स्वच्छ, प्रांजल, ललित, कोमल और स्पष्ट खड़ीबोली है। विषय एवं भावों के अनुरूप भाषा का प्रयोग करने में ये सिद्धहस्त थे। उन्होंने पांडित्य प्रदर्शन के लिए अपनी भाषा में दुरुह शब्दों का प्रयोग नहीं किया है, न शब्दों को तोड़ा-मरोड़ा है। उनकी भाषा का चुटीलापन मोहक और प्रभावकारी है।

सुमन जी की **शैली** उनके व्यक्तित्व के अनुसार ही सरल और सुबोध है, उसमें कहीं भी बनावटीपन नहीं है। सुमन जी मुक्त शैली के कवि थे। इन्होंने गीति शैली में अनेक रचनाएँ लिखी हैं। इनके गीतों में संगीतात्मकता, मस्ती और लय है। इनकी शैली प्रसाद तथा ओजगुण से पूर्ण है। मुक्त छन्द लिखते हुए भी वे परम्परागत छन्दों की समृद्धि में अपना सहयोग देते रहे।

तथ्यपरक एवं काव्य-सारांश पर आधारित प्रश्न

उत्तर—

1. **सारांश (मूल भाव)**—कवि श्रमिक एवं कृषक वर्ग को संबोधित करते हुए कहता है कि मैंने क्यारी-क्यारी में तुम्हारे ही पद चिह्नों के दर्शन किए हैं। तुमने परिश्रमपूर्वक जो क्यारियाँ बोई थीं उन पर बढ़ती हुई फसल में आज भी तुम्हारे श्रमशील कदम झाँकते दिखाई दे रहे हैं। विकास का यही नियम है, जगह-जगह मुस्कान बिखर जाती है। इतना कठिन परिश्रम करनेमें भी सर्वहारा वर्ग परेशान है। कवि शासक एवं पूँजीपति वर्ग को चेतावनी होता है कि यदि तुम असहायों की मूलसमस्या का समाधान करने की अपेक्षा इनके साथ खिलवाड़ करोगे तो तुम्हें समय कभी माफ नहीं करेगा। तुम्हारा अस्तित्व स्वयं खतरे में पड़ जाएगा।

2. 'धरती की छाती में दरार पड़ जाएगी', पंक्ति में सुमन जी संदेश देना चाहते हैं कि यदि बाँध बाँधने से पहले ही पानीसूख जाए, तब धरती की छाती में दरार पड़ जाएगी, अर्थात् बाँध

इसलिए बाँधा जाता है ताकि पानी इकटठा रहे। पानी सूख गया, तब बाँध का क्या औचित्य रहेगा? अत: समय रहते चेत जाओ और निर्धनों को सँभालो, उन्हें उनके अधिकार सौंपों।

3. 'इनको भूलूँ तो मेरी मिट्टी हैं' पंक्ति में कवि ने दु:ख व भूख से तड़पते हुए लोगों के भूलने की बात कही है। और कवि ने अपने को इसलिए धिक्कारा है क्योंकि ये लोग अन्याय और अनीति के विरुद्ध आवाज तक नहीं उठा पाते हैं यदि मैं ऐसे व्यक्तियों को भुला देता हूँ तो मेरा मानव-शरीर धारण करना व्यर्थ है। ऐसी स्थिति में मेरा शरीर मिट्टी का लोमिड़ा-मात्र होगा।

4. 'युगवाणी' कविता में कवि ने मानवता का कल्याण करने और राष्ट्र के विकास के कार्य निरंतर चलते रहने का संदेश दिया है।

पद्यांश व्याख्या

- **निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा इनके काव्य-सौन्दर्य को भी स्पष्ट कीजिए—**

उत्तर—

(क) क्या उम्र ढलेगी .... .कहीं बढ़ जाएगी।

संदर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठयपुस्तक के **काव्य खण्ड** में कवि **शिवमंगल सिंह सुमन** द्वारा रचित युगवाणी काव्य-संग्रह सुमन : 'विन्ध्य हिमालय' से संकलित कविता 'युगवाणी' से उदधृत है।

प्रसंग—कवि ने जीवन और मृत्यु की यथार्थता का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या—कवि कुछ गंभीर होकर पूछता है—क्या जब उम्र ढलने लगेगी तो यह सब कुछ, जो आज इतना लुभावना लगा रहा है, चला जाएगा? क्या उम्र के साथ-साथ सूरज और चाँद की कांति निष्प्राण हो जाएगी? जिन मनोहर दृश्यों को सँजोए मैंने जीवन-मरण का स्वर साध लिया है, क्या उनका आकर्षण साँसों को धोखा दे देगा?

कवि पुन: कहता है कि मैं जिस दिन स्वप्नों, अपनी परिकल्पनाओं का मोलभाव करने बैठूँगा; उस दिन मेरे संघर्षों पर जाला चढ़ जाएगा, मेरा संघर्ष थक जाएगा और जिस दिन विवशता मुझ पर तरस दिखाएगी अर्थात् जिस दिन मैं विवशता का दास बन जाऊँगा, उस दिन जीवन की अपेक्षा मृत्यु का पलड़ा भारी होगा; उस दिन मुझे थाम लेगी।

काव्य सौंदर्य—

1. कवि ने जीवन और मृत्यु की यथार्थता को रेखांकित करने का प्रयास किया है। 2. **भाषा**—खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **शब्दशक्ति**—लक्षणा। 5. **अलंकार**— 'जीवन' में श्लेष—1. पानी, 2. जिंदगी; अनुप्रास।

(ख) विश्वास सर्वहारा का .... दरार पड़ जाएगी।

संदर्भ-पूर्ववत।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने दीन-दुखियों के प्रति उपेक्षा पर प्रहार किया है।

व्याख्या—कवि चेतावनी देता है कि यदि तुमने सर्वहारा अर्थात् गरीब-निर्धन जन का विश्वास खो दिया तो निकट आती मृत्यु की गहरी फाँस तुम्हारे जीवन में गुड़ जाएगी। बड़े

प्रयत्नों के बाद गरीब जागा है, इसकी जागृति का अभिनंदन करना चाहिए। अगर बाँध बाँधने से पहले ही पानी सूख जाए, तब तो धरती की छाती में दरार पड़ जाएगी अर्थात् बाँध इसलिए बाँधा जाता है, ताकि पानी इकट्ठा रहे। पानी सुख गया, तब बाँध का क्या औचित्य रहेगा? अत: समय रहते चेत जाओ और निर्धन को सँभालो, उसे उसके अधिकार सौंपो।

काव्य-सौंदर्य—

1. श्रमिक के अभ्युत्थान के लिए कवि ने चेतावनी दी है। 2. **भाषा**—खड़ीबोली। 3. **रस**—रौद्र। 4. **शब्दभक्ति**—लक्षणा। 5. **अलंकार**—'आशा की अफीम' में रूपक; रूपकातिशयोक्ति, अनुप्रास।'

(ग) इतिहास न तुमको .... मत मन्द करो।

संदर्भ—पूर्ववत।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने मानव-समाज के कर्णधारों को समाज-कल्याण के लिए प्रोत्साहित किया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि समय परिवर्तनशील है; अत: हमें जो शुभ अवसर प्राप्त हुआ है, उसका सदुपयोग किया जाना चाहिए अन्यथा यश के स्थान पर अपयश मिलेगा। यदि हमने समय का सदुपयोग न किया तो आनेवाला समाज हमारी अकर्मण्यता और कर्तव्यहीनता पर हमें धिक्कारेगा। इस समय का जो इतिहास लिखा जाएगा, उसमें किसी भी व्यक्ति को उसकी अकर्मण्यता के लिए क्षमा नहीं किया जाएगा। सत्ताधारियों को संबोधित करते हुए कवि कहता है कि तुम्हारी अकर्मण्यता से पूरब में उगनेवाले सूरज की रुणिमा पर भी कालिख पुत जाएगी, उसकी महत्ता समाप्त हो जाएगी और फिर शताब्दियों तक इस प्रकार की उन्नतिशील घड़ियाँ आएँ अथवा न आएँ, हमें यह भी ज्ञात नहीं है; अत: हमें अपने समय का उचित उपयोग करना चाहिए।

समय की परिवर्तनशीलता को देखते हुए प्रगति के प्रवाह को रोकने का प्रयास मत करो। क्या पता कि फिर इस प्रकार सुखद वायु में साँस लेने का अवसर मिले या न मिले? इसलिए तुम समस्त खिड़कियों तथा दरवाजों को खोल दो। जीवन की आनंददायक किरणों का प्रकाश प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचने दो। इन आनंदमयी घड़ियों का उपयोग मात्र धनीवर्ग तक ही सीमित न रह जाए। तुम ऐसा प्रयास करो, ताकि उन किरणों का प्रकाश साधारण जनता के आँगन तक पहुँचे सके। नव-निर्माणरूपी महान् यज्ञ की ज्वालाओं को धीमा करने का प्रयत्न मत करो, अपितु उसको और अधिक प्रज्वलित होने दो।

काव्य-सौंदर्य—

1. यहाँ कवि की प्रगतिवादी भावना व्यक्त हुई है। 2. वह साधनों समान बँटवारे का पक्षपाती है। 3. देश के प्रत्येक नागरिक को विकास के समान अवसर मिलने चाहिए। समय व्यतीत होने पर पुन: लौटकर नहीं आता है। 4. **भाषा**—ओजपूर्ण खड़ीबोली। 5. **रस**—वीर। 6. **शब्दशक्ति**—लक्षणा तथा व्यंजना।

काव्य-सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नांकित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—

(क) काव्य-सौंदर्य—1. कवि कहता है कि प्रत्येक काँटे में किसी न किसी का दुख-दर्द कसकता है। 2. **भाषा**—सरल खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **शब्दशक्ति**—लक्षणा। 5. **अलंकार**—अनुप्रास।

(ख) काव्य-सौंदर्य—1. कवि कहता है कि नदी की उठती-बहती लचकदार प्रत्येक लहर मन को डस लेती है अर्थात् मन पर अपना प्रभाव छोड़ती है। 2. **भाषा**—सरल खड़ीबोली। 3. **रस**—शांत। 4. **शब्दशक्ति**—लक्षणा। 5. **अलंकार**—रूपक।

2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों के नाम लिखिए—

उत्तर—

(क) यमक अलंकार। (ख) पुनरुक्तिप्रकाश।

3. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रसों का नाम लिखिए तथा उनके स्थायी भाव भी बताइए—

उत्तर—

(क) **रस**—रौद्र, **स्थायी भाव**—क्रोध। (ख) **रस**—शांत, **स्थायी भाव**—निर्वेद।

संस्कृत-खण्ड

1 वन्दना

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (ख) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (क) **7.** (घ) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (ग) **13.** (क) **14.** (घ) **15.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

- विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ पर आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

उत्तरम्— **1.** भक्त: ईश्वरं तेज: वीर्यं बलम् ओजश्च याचते।

2. भक्तस्य ईश्वरं प्रति प्रार्थनाऽस्ति यत् माम् असत: सत्यं प्रति नम, तमस: ज्योतिं प्रति नम, भृत्यो: अमृतं प्रति नम।

3. भक्त: सत्यं ज्योतिम् अमृतं प्रति च गन्तुम् इच्छति।

4. भक्त: प्रतिज्ञां करोति यत् ॠतं वदिष्यामि सत्यं च वादिष्यामि।

5. ईश्वरस्य 'ब्रह्म' इति स्वरूपम् अस्ति।

6. ईश्वर: सत्यारमकम् अस्ति।

अनुवाद संबंधी प्रश्न

- **निम्नलिखित श्लोकों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्— **1. असतो मा सद् .... मृत्योर्माऽमृतं गमय॥**

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठय-पुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** के अंतर्गत **'वन्दना'** नामक पाठ से लिया गया है।

अनुवाद—हे ईश्वर! मुझे असत् (बुराई) से सत्य (सच्चाई) की ओर ले चलो, मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

2. यतो यत: समीहसे, ... न: पशुभ्य:॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठय-पुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** के अंतर्गत **'वन्दना'** नामक पाठ से लिया गया है। इसमें ईश्वर से सब लोगों से कल्याण के लिए प्रार्थना की गई है।

अनुवाद—हे ईश्वर! जिस-जिससे आप चाहते हैं उससे हमें निर्भय करो। हमारे प्रज्ञा जनों के लिए कल्याण करो, हमारे पशुओं के लिए भी कल्याण करो।

3. सत्यव्रतं सत्यपरं .... शरणं प्रपन्नाः॥

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठय-पुस्तक के **'संस्कृत-खण्ड'** के अंतर्गत **'वन्दना'** नामक पाठ से लिया गया है।

अनुवाद—हे ईश्वर! आप सत्यव्रत हैं अर्थात् सत्य ही आपका व्रत है, आप सत्य स्वरूप हैं, आप तीनों कालों (भूत, वर्तमान भविष्य) में सत्य से स्थित रहते हैं, आप सत्य के उत्पत्ति स्थान हैं और सत्य ही में निहित हैं, विराजमान हैं, आप भौतिक जगत् (पंच भूतों) के नष्ट होने पर भी सत्य हैं, यथार्थ तथा सत्य को दिखाने वाले हे सत्यात्मक (सत्यस्वरूप)! हम आपकी शरण में प्राप्त हुए हैं अर्थात् आपकी शरण में आए हैं।

- **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्— **1.** अहं सत्यं वदिष्यामि। **2.** हे ईश्वर! त्वं मयि तेजः धोहि।

3. त्वं मां तमसः ज्योतिं प्रति नम। **4.** त्वं वीर्य मसि।

5. मयूरः वने नृत्यति।

व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

उत्तरम्— तेजोऽसि — **तेजः + असि** वीर्ययसि — **वीर्यम् + असि**, मामृतं — **मा + अमृतं**, ज्योतिर्गमय — शन्नः — **शम् + नः**, त्वमेव — **त्वम् + एव**, ब्रह्मासि — **ब्रह्म + असि**

2. निम्नलिखित धातु रूप किस धातु, लकार, वचन और पुरुष के हैं—

उत्तरम्—
असि — **अस् (धातु), लट् लकार, एकवचन, मध्यम पुरुष**
कुरु — **कृ (धातु), लोट् लकार, एकवचन, मध्यम पुरुष**
वदिष्यामि — **वद् (धातु), लृट् लकार, एकवचन, उत्तम पुरुष**
अवतु — **अव् (धातु), लोट् लकार, एकवचन, प्रथम पुरुष**

3. निम्नलिखित शब्दों के विभक्ति एवं वचन लिखिए—

उत्तरम्—
असतः — **पञ्चमी विभक्तिः, एकवचनम्**
तमसः — **पञ्चमी विभक्तिः, एकवचनम्**
ब्रह्मणे — **चतुर्थी विभक्तिः, एकवचनम्**
त्वाम् — **द्वितीया विभक्तिः, एकवचनम्**

विचारणीय प्रश्न

उत्तरम्— विद्यार्थी स्वयं करें।

2 सदाचारः (उत्तम आचरण)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (घ) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (घ) **13.** (क) **14.** (ग) **15.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

- विद्‌यार्थी स्वयं करें।

पाठ पर आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–**

उत्तरम्– **1.** सम्यक आचरणं व्यवहारं वा इति सदाचारः।

2. सज्जनानाम् आचारः सदाचारः भवति।

3. सज्जनाः ते भवन्ति ये सद् एव विचारमन्ति, सद् एव वदन्ति, सद् एव आचरन्ति।

4. विनयः सदाचारात् उद्‌भवति।

5. मनुष्याणां परमं धनम् आचारः अस्ति।

6. महापुरुषणाम् आचारः अनुकरणीयः।

7. आचारात् आयुः धनं कीर्तिं च लभते।

8. विनयः मनुष्याणां भूषणं अस्ति।

9. यः जनः निममेन अधीते, यथासमयं शेते, ज्ञागर्ति, खादित पिबति च सः अभ्युदयं गच्छति।

10. सर्वलक्ष्णहीनोऽपि यः श्रद्धालु द्वेषरहितः सदाचारवान् चास्ति सः नरः शतं वर्षाणि जीवति।

11. विनयः सदाचारात् उद्‌भवति।

12. महाभारते उक्तं यत् अस्माभिः सदा चरित्रस्य रक्षा कार्या, धनं तु आयाति याति च, परं यदि चरित्रं नष्टं स्यात् तर्हि सर्वं विनष्टं भवति।

13. सर्वलक्ष्णहीनोऽपि यः श्रद्धालु द्वेषरहितः सदाचारवान् चास्ति सः नरः शतं वर्षाणि जीवति।

अनुवाद संबंधी प्रश्न

- **निम्नलिखित अंशों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए–**

उत्तरम्– **1. सतां सज्जनानाम् .... व्यवहारं कुर्वन्ति।**

सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठय पुस्तक के अंतर्गत '**संस्कृत खण्ड**' के '**सदाचारः**' नामक पाठ से लिया गया है। इसमें सदाचार के महत्व पर प्रकाश डाला

गया है।

अनुवाद—सत् अर्थात् सज्जनों का आचरण सदाचार है। जो लोग सत्य ही विचार करते हैं, सत्य ही बोलते हैं,सत्य ही आचरण करते हैं, वे ही सज्जन होते हैं। सज्जन जैसा आचरण करते हैं वैसा ही आचरण सदाचार होता है। सदारचार से ही सज्जन अपनी इंद्रियों को वश में करके सबके साथ शिष्ट व्यवहार करते हैं।

2. विनयः हि मनुष्याणां .... आचारः अनुकरणीयः।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—विनय ही मनुष्यों का आभूषण है। विनयशील व्यक्ति सब लोगों का प्रिय होता है। विनय सदाचार से ही उत्पन्न होता है। सदाचार से न केवल विनय अपितु अनेक प्रकार के दूसरे सदगुण भी विकसित होते हैं; जैसे—धैर्य, उदारता, संयम, आत्मविश्वास निर्भीकता। हमारी भारतभूमि की प्रतिष्ठा संसार में सदाचार के कारण ही थी। पृथ्वी पर सब मनुष्यों को अपना-अपना चरित्र भारत के सदाचार का पालन करने वाले मनुष्य से सीखना चाहिए। भारतभूमि अनेक सदाचारी पुरुषों की जननी है। इन महापुरुषों का आचरण अनुकरणीय है।

3. ये केऽपि पुरुषाः .... अपि वर्णितः।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—जो कोई भी पुरुष महान हुए हैं वे संयम और सदाचार से ही उन्नति को प्राप्त हुए हैं। जो व्यक्ति नियम से पढ़ता है, समय पर सोता है, जागता है, खाता है और पीता है, वह निशचय ही उन्नति को प्राप्त करता है। सदाचार की महिमा शास्त्रों में भी वर्णित है।

4. सर्वलक्षणहीनोऽपि .... परमं धनम्॥

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—सभी शुभ लक्षणों से रहित होने पर भी जो मनुष्य सदाचारी, श्रद्धालु और द्वेष से रहित है, वह सौ वर्षों तक जीवित रहता है। मनुष्य (उत्तम) आचरण से दीर्घ आयु पाता है, (उत्तम) आचरण से धन-संपत्ति पाता है, (उत्तम) आचरण से यश पाता है। सदाचार सबसे श्रेष्ठ धन है।

5. वृत्तं यत्नेन .... हतो हतः॥

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन आता है और जाता है। धन से क्षीण मनुष्य क्षीण नहीं होता अपितु चरित्र से हीन होकर (मनुष्य) नष्ट हो जाता है।

- **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्— **1.** सताम् आचार एव सदाचार: भवित।

2. सज्जना: सद् एवं वदन्ति सद् एव च कुर्वन्ति।

3. विनय: मनुष्याणां भूषणम् अस्ति।

4. विनय: सदाचारात् उद्भवति।

5. संयमेन जनाः महान्तः भवन्ति।
6. इन्द्रियसंयमः कलं सम्भवम्?
7. सदाचारेण सद्गुणाः विकसन्ति।
8. सदा वृत्तं संरक्षेत्।

व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

उत्तरम्—

तथैव	— **तथा + एव**	सदाचारः	— **सत् + आचारः**
सज्जनः	— **सत् + जनः**	अभ्युदयम्	— **अभि + उदयम्**
आचाराल्लभते	— **आचारात् + लभते**		

2. निम्नलिखित शब्द रूप किस विभक्ति और वचन के हैं—

उत्तरम्—

पुरुषाः	— **प्रथमा विभक्तिः, बहुवचन**
वशे	— **सप्तमी विभक्तिः, एकवचन**
सर्वैः	—
सज्जनानाम्	— **षष्ठी विभक्तिः बहुवचन**
पृथिव्यां	— **सप्तमी विभक्तिः, एकवचन**
कीर्तिम्	— **द्वितीया विभक्तिः, एकवचनम।**

3. निम्नलिखित वाक्य में मोटे छपे शब्दों में प्रयुक्त कारक विभक्ति का नाम लिखिए—

उत्तरम्—

(अ)	चरित्रहस्य	— **सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति), रक्षा-कर्म कारक**
(आ)	उन्नतिं	— **कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)**
(इ)	निश्चयेन	— **करण कारक (तृतीया विभति)**
(ई)	सज्जनाः	— **कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)**

4. निम्नलिखित क्रिया-पदों के धातु रूप और लकार लिखिए—

उत्तरम्— **भवति (लट् लकारः)**

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमः	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यमः	भवसि	भवयः	भवथ
उत्तमः	भवामि	भवावः	भवामः

यच्छति (लट् लकारः)

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमः	यच्छति	यच्छतः	यच्छन्ति
मध्यमः	यच्छसि	यच्छथः	यच्छल
उत्तमः	यच्छामि	यच्छावः	यच्छायः

कुर्वन्ति (लट् लकारः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम:	करोति	कुरुत:	कुर्वन्ति
मध्यम:	करोषि	कुरुप:	कुरुथ:
उत्तम:	करोमि	कुर्व:	कुर्म:

क्रीडति (लट् लकारः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम:	क्रीडति	क्रीडत:	क्रीडन्ति
मध्यम:	क्रीडसि	क्रीडय:	क्रीडथ
उत्तम:	क्रीडामि	क्रीडख:	क्रीडाम:

विचारणीय प्रश्न

उत्तरम् — विद्यार्थी स्वयं करें।

3 पुरुषोत्तमः रामः (पुरुषों में श्रेष्ठ राम)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (क) **6.** (क) **7.** (घ) **8.** (ग) **9.** (क) **10.** (घ) **11.** (क) **12.** (क) **13.** (घ) **14.** (क) **15.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

- विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ पर आधारित प्रश्न

उत्तरम् — **1.** राम: इक्ष्वाकु वंशे उत्पन्न: आसीत्।

2. राम: अजानुबाहु: आसीत्।

3. रामस्य विशिष्टा: गुणा: आसन्?—नियतात्मा, महावीर: द्युतिमान, धृतितान्, वशी।

4. राम: बुद्धिमान, नीतिमान, वाडमी, श्रीमाञ्छत्रुनिर्बहण: इत्येतै: गुणै: उपेत: आसीत्।

5. राम: प्रजापतिसम: श्रीमान् आसीत्।

6. राम: धनुर्विधायां निपुण: आसीत्।

7. राम: साङ्गवेदविद् आसीत्।

8. रामस्य जननी कौशल्या आसीत्।

9. राम: क्रोधे प्रशान्तारमा आसीत्।

10. राम: वीर्ये इन्द्र सदृश: आसीत्।

अनुवाद संबंधी प्रश्न

- **निम्नलिखित श्लोकों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्— **1. इक्ष्वाकुवंशप्रभवो .... धृतिमान वशी।।**

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठय पुस्तक के अंतर्गत **'संस्कृत खण्ड'** के **'पुरुषोत्तमः रामः'** नामक पाठ से लिया गया है। इसमें भगवान राम के गुणों का वर्णन किया गया है।

अनुवाद—लोगों द्वारा सुने हुए इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न राम आरमा को वंश में रखने वाले, महाबलशाली, कांतिमान, धैर्यवान और जितेंद्रिय हैं।

2. बुद्धिमान् नीतिमान् .... कम्बुग्रीवो महाहनुः।।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—(राम) बुद्धिमान, नीतिमान, बोलने में कुशल, शोभा वाले, शत्रु-विनाश ऊँचे कंधे वाले विशाल भुजाओं वाले, शंख के समान गर्दन वाले, बड़ी ढोड़ी वाले हैं।

3. धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च .... समाधिमान्।।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—वे राम धर्म को जानने वाले, सत्य प्रतिज्ञा वाले, प्रजा के हित में लगे रहने वाले, यशस्वी, ज्ञानी, पवित्र, जितेंद्रिय और एकाग्रचित्त है।

4. स च नित्यं .... नोत्तरं प्रतिपद्यते।।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—और वह राम नित्य शांत मन वाले, मृदुभाषी और स्वाभिमानी होने पर भी कठोर वचन नहीं कहते।

5. कदाचिदुपकारेण .... शक्तया।।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—यदि कभी कोई एक ही उपकार कर देता है तो उसी से संतुष्ट हो जाते हैं। अपनी आत्मशक्ति के कारण किसी के द्वारा किए गए सौ उपकारों को भी याद नहीं करते हैं।

6. सर्वविद्याव्रतस्नातो .... त्याग-संयम-कालवित्।।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—भगवान राम सभी विधाओं में पारंगत हैं, उसी प्रकार वेदोंके छह अंगों के ज्ञाता हैं। उनका क्रोध और हर्ष व्यर्थ नहीं जाता है, वे त्याग और संयम के समय को जानने वाले हैं अर्थात् किस समय वस्तुओं का संग्रह करना चाहिए इसे भली प्रकार जानते हैं।

- **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्— **1.** रामः मृदुभाषी आसीत्। **2.** सः अपरेषां कल्याणं करोति स्म।

3. सः लोकरक्षकः आसीत्।	**4.** सः धृतिमान् आसीत्।
5. रामः अजानुबाहुः आसीत्।	**6.** सः नीतिज्ञः बुद्धिमान् चासीत्।
7. सः धनुर्वेदे निष्ठितः आसीत्।	**8.** रामः स्वजनान् रक्षति स्म।
9. श्रीरामः मर्यादा पुरुषोत्तमः आसीत्।	**10.** रामः प्रजायाः हितरतः आसीत्।

व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

उत्तरम्—

नियतात्मा	— **नियत + आत्मा**	विपुलांसः	— **विपुल + अंसः**
प्रशान्तात्या	— **प्रशान्त + आत्मा**	नोत्तरं	— **न + उत्तरं**
पुरुषोतमः	— **पुरुषः + उत्तमः**	धनुर्वेदे	— **धनुः + वेदे**
विशालाक्षः	— **विशाल + अक्षः**	कृतेनैकेन	— **कृतेन + एकेन**

2. निम्नलिखित शब्द रूपों में विभक्ति एवं वचन लिखिए—

उत्तरम्—

रामात्	— **पञ्चमी विभक्तिः, एकवचनम्**
रामेभ्यः	— **चतुर्थी-पञ्चमी विभक्तिः बहुवचनम्**
रामाणाम	— **षष्ठी विभक्तिः, बहुवचनम्**
रामाभ्याम्	— **तृतीया-चतुर्थी-पञ्चमी विभक्तिः द्विवचनम्**
रामौ	— **प्रथमा-द्वितीया विभक्तिः द्विवचनम्**

3. 'भानु' शब्द के तृतीय एवं सप्तमी विभक्तियों के रूप लिखिए।

उत्तरम्— भानु — **भानुना भानुभ्याम् भानुभिः (तृतीया विभक्तिः)**
भानौ भान्वोः भानुषु (सप्तमी विभक्तिः)

4. 'भू' धातु के लट् लकार में प्रथम पुरुष

उत्तरम्—

एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम**
भवति	भवतः	भवन्ति
भवसि	भवथः	भवथ
भवामि	भवावः	भवामः

4 सिद्धिमंत्रः (सफलता का मंत्र)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए—**

उत्तरमाला

1. (ख) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (घ) **11.** (क) **12.** (ख) **13.** (क) **14.** (घ)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

- विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ पर आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

उत्तरम्— **1.** नारायणपुरे रामदास: निवसति।

2. रामदास: प्रात:काले उत्थाय नित्यकर्माणि करोति, नारायणं स्मरति, तत: परं पशुभ्य: घासं ददाति।

3. रामदास: पुत्रेण सह स: क्षेत्राणि गच्छति।

4. रामदास: धर्मदासाय एतं मन्त्रम् अददात् यत् नित्यं सूर्योदयात् पूर्वम् उत्तिष्ठ, स्वपशूनां च उपचर्यां स्वयमेव कुरु प्रतिदिनं च क्षेत्रेषु कर्मकराणां कार्माणि निरीक्षस्व इति।

5. धर्मदासस्य दारिद्रयस्य इदं कारणमासीत् यत् तस्य एकलं कार्यं सेवका: सम्पादयन्ति स्म। सेवकानाम् उपेक्षया तस्य पशव: दुर्बला: आसन् क्षेत्रेषु च बीजमात्रमपि अन्नं नोरपद्यते स्म। एवं तस्य पैतृकं धनं शनै: शनै: समाप्तम् अभवत्।

6. सिद्धिमन्त्र अस्ति 'कर्म'।

7. रामदास: नारायणपुरे निवसति।

8. नित्यं प्रात: जागरणेन नियमेन च पशूनां पोषणेन, कर्मकाराणां कृविकार्ये श्रमनिष्ठया कार्यं करणेन धर्मदास: सम्पन्न: अीवत।

9. कर्म इति मन्त्रास्य अनुष्ठानेन मनुष्या अभीष्ट फलं लभन्ते।

10. धर्मदासनेन वर्षपर्यन्त श्रम कृत्वा इदं ज्ञातं यत् 'कर्म' एव स सिद्धिमन्त्र:।

11. लक्ष्मी: निवासहेतो: उत्साहसम्पन्नम् अदीर्घ सूत्रं, क्रियाविधिरां, व्यसनेष्वसक्तं, शूरं, कृतज्ञं दृढ़ सौहृदं च याति।

12. रामदास: धर्मदासम् अपृच्छयत् यत् मित्र! अपि कुशल ते, वर्धते किं तव अनुष्ठानम्? किं तं महात्मानं अपच्छाव इति।

13. नित्यं प्रात: जागरणेन धर्मदास्य स्वास्थ्यम् अवर्धत।

अनुवाद संबंधी प्रश्न

- **निम्नलिखित अवतरणों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्— **1. रामदासः नारायणपुरे .... धनधान्यादिपूर्णम् अस्ति।**

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठय पुस्तक के अंतर्गत **'संस्कृत खण्ड'** के **'सिद्धिमंत्रः'** नामक पाठ से लिया गया है। इसमें श्रम के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

अनुवाद—रामदास नारायणपुर में रहता है। वह रोजाना ब्रह्म मुहूर्त (सवेरे) में उठकर नित्य कर्म करता है, भगवान का स्मरण करता है, उसके बाद पशुओं को घास देता है। इसके बाद वह पुत्र के साथ खेतों को जाता है। वहाँ वह कठिन परिश्रम

करता है। उसके परिश्रम और देखभाल से खेती में अधिक अन्न उत्पन्न होता है। उसके पशु हृष्ट-पुष्ट अंगों वाले हैं और घर धन-धान्य आदि भरा है।

2. एकदा वनात् प्रत्यागत्य .... दास्यति इति।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—एक दिन वन में लौटकर रामदास ने अपने द्वार पर बैठे हुए कमजोर और दुखी धर्मदास को देखकर पूछा, ''मित्र धर्मदास! बहुत समय बाद दिखाई दिए हो! क्या किसी रोग से ग्रस्त हो जिससे ऐसे कमजोर हो गए हो।'' धर्मदास प्रसन्न मुख वाले उस (मित्र) को बोला, ''मित्र! मैं बीमार नहीं हूँ, किंतु धन नष्ट हो जाने से कुछ और-सा हो गया हूँ। यही सोचता हूँ कि किस उपाय, मंत्र अथवा तंत्र से धनवान हो जाऊँ।'' रामदास ने उसकी गरीबी का कारण उसी की अकर्मण्यता (आलस्य) ऐसा विचार कर इस प्रकार कहा, ''मित्र! पहले किसी दयालु साधु ने मुझे एक धनवान करने वाला मंत्र दिया, यदि आप भी वह मंत्र चाहते हैं तो उसके द्वारा बताए गए अनुष्ठान को (कर्य को) करो।'' ''मित्र! उस अनुष्ठान को जल्दी बताओ जिससे मैं दोबारा धनवान हो जाऊँ।'' रामदास बोला, ''मित्र! रोजाना सूर्योदय से पहले उठो और अपने पशुओं की सेवा स्वयं करो। रोजाना खेतों में मजदूरों के कार्यों का निरीक्षण करो। इससे तुम्हारे अनुष्ठान से प्रसन्न वेमहात्मा एक वर्ष के अंत में तुम्हें अवश्य सिद्धिमंत्र देंगे।''

3. विपन्नः धर्मदासः सम्पत्तिम् .... धनधान्यपूर्णं जातम्।

सन्दर्भ—पूर्ववत।

अनुवाद—दुखी धर्मदास ने संपत्ति की इच्छा करते हुए एक वर्ष तक जैसा कहा गया था अनुष्ठान (कार्य) किया। रोजाना सुबह जागने से उसका स्वास्थ्य बढ़ गया अर्थात् ठीक हो गया। उसके द्वारा नियमपूर्वक पोषित पशु-स्वस्थ और सबल हो गए। गायों और भैसों ने बहुत दूध दिया। उस समय उसके मजदूर भी खेती के काम में जुट गए। इसलिए उस वर्ष उसके खेतों में बहुत अन्न पैदा हुआ और घर धन-धान्य से पूर्ण हो गया।

4. एकस्मिन् दिने प्रातः .... यथास्थानम् अगच्छत्।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—एक दिन सुबह रामदास ने खेतों को जाते हुए दूध से भरे बर्तन हो हाथि में लिए हुए प्रसन्न मुख वाले धर्मदास को देखकर बोला, ''तुम कुशल से तो हो, क्या तुम्हारा काम बढ़ रहा है? क्या उस महात्मा केपास मंत्र के लिए चलें?'' धर्मदास ने उत्तर दिया, ''मित्र! साल-भर मेहनत करके मैंने यह अच्छी प्रकार जान लिया कि 'कर्म' ही वह सिद्धिमंत्र है। उसी के अनुष्ठान से मनुष्य सब कुछ मनचाहा मनुष्य फल पाता है। उसी अनुष्ठान ने प्रभाव से इस समय मैं दोबारा सुख और संपन्नता अनुभव कर रहा हूँ।'' वह सुनकर प्रसन्न और संतुष्ट रामदास यथास्थान चला गया।

5. उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं .... याति निवासहेतोः॥

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—उत्साह से युक्त, आलस्य से रहित, काम करने की सिधि को जानने वाले, बुरे कामों वो न लगने वाले, शूरवीर, किए हुए उपकार को माननेवाले और पक्की मित्रता रखने वाले पुरुष के पास लक्ष्मी (धन-संपत्ति) स्वयं निवास के लिए जाती है।

- **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्— **1.** रामदासः नारायणपुरे वसति। **2.** धर्मदास खिन्नः आसीत्।
3. धनेषु श्रम एवं उत्तमं धनमस्ति। **4.** सः क्षेत्रे कार्यं करोति।
5. कर्म एवं सिद्धिमन्त्रः। **6.** तस्य पैतृकं धनं समाप्तम् अभवत्।
7. सः कठिनं श्रमं करोति। **8.** एकदा रामदासः धर्मदासम् अपृच्छत्।
9. तस्य समस्तानि कार्याणि सेवकाः कुर्वन्ति।
10. नित्यं सूर्योदयात् पूर्वम् उत्तिष्ठत।

व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि विच्छेद कीजिए—

उत्तरम्—

नोत्पद्यते	—	**न + उत्पद्यते**	केनोपायेन	—	**केन + उपायेन**
सूर्योदयात	—	**सूर्य + उदयात**	यथोक्तम्	—	**यथा + उक्तम्**
सत्यमेव	—	**सत्यम् + एव**	तस्यैव	—	**तस्य + एव**
वर्षान्ते	—	**वर्ष + अन्ते**	प्रत्यागत	—	**प्रति + आगत**

2. निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए—

उत्तरम्— अत्र + एव **अत्रैव** न + अहं **नाहं**, महा + आत्मा **महात्मा**,
अभि + इष्टम **अभीष्टम्**, केन + अपि **केनापि**, मन्त्र + अर्थम् **मन्त्रार्थम**,
धान्य + आदि **धान्यादि**।

3. निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति और वचन लिखिए—

उत्तरम्—

रागेण	—	**तृतीया विभक्तिः एकवचनम्**
अनुष्ठानेन	—	**तृतीया विभक्तिः, एकवचनम्**
क्षेत्रषु	—	**सप्तमी विभक्तिः, बहुवचनम्**
पशुम्यः	—	**चतुर्थी-पञ्चमी विभक्तिः, बहुवचनम्**
कृषिकार्ये	—	**सप्तमी विभक्तिः, एकवचनम्**
उपेक्षया	—	**तृतीया विभक्तिः एकवचनम्**

4. निम्नलिखित धातु-रूपों के मूल धातु, लकार, पुरुष एवं वचन लिखिए—

उत्तरम्—

		मूल धातुः	लकार	पुरुष	वचन
दास्यति	—	**दा, यच्छ्**	**ऌट्**	**प्रथमः**	**एकवचनम्**
अभवत्	—	**भू, भव्**	**लङ्**	**प्रथमः**	**एकवचनम्**
आचरतु	—	**आचार्**	**लोट्**	**प्रथमः**	**एकवचनम्**
करोति	—	**कृ**	**लट्**	**प्रथमः**	**एकवचनम्**
अगच्छत	—	**गम्, गच्छ्**	**लट्**	**प्रथमः**	**एकवचनम्**

5 सुभाषितानि (सुन्दर उक्तियाँ)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (क) **6.** (ख) **7.** (क) **8.** (घ) **9.** (क) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (ख) **13.** (क) **14.** (घ) **15.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

- विद्यार्थी स्वयं करें।

(क) पाठ पर आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

उत्तरम्— **1.** चन्द्रः तमः हन्ति। **2.** आसुधुं साधुना जयेत।

3. स्वादु हितकरं च औषधं दुर्लभम्।

अथवा

क्रोध अक्रोधेन जयेत।

4. क्रोधम् अक्रोधेन जयेत्।

5. अनृतं सत्येन जयेत्।

अथवा

अनृनं सत्येन जयेत्।

6. कदर्यं दानेन जयेत्।

7. ते मानवाः वन्दनीयाः भवन्ति ये मनसि वचसि कामे पुष्प पीयूषपूर्णाः भवन्ति, परोपकारैः त्रिभुवनमपि प्रीष्यन्ति, परमाणु इत परगुणान् पर्वतसमं पश्यन्ति निजहृदि च प्रसन्नाः तिष्ठन्ति।

8. सतां मार्गः सर्वोत्तमः भवति। **9.** यः साधु समागमः करोति।

10. यः जनः चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा लोकं प्रसादमति।

11. यः जनः चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा लोकं प्रसादमति सः सर्वेषां जनानां प्रियः भवति।

12. लोकः सः प्रसीदति यः चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा सर्वैः सह प्रेम्णा व्यवहरति।

13. अन्धकारे प्रवेष्टव्ये यत्नेन दीपो वार्याताम्।

14. यः सत्याधारः तपस्तैलं दयावर्तिः क्षमाशिखास्यः अस्ति तादृशः दीपः यत्नेन वार्यताम्।

अनुवाद संबंधी प्रश्न

- **निम्नलिखित श्लोकों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम् — 1. मनीषिणः सन्ति .... हितं च दुर्लभम्।।

सन्दर्भ—प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठय पुस्तक के अंतर्गत **'संस्कृत खण्ड'** के **'सुभाषितानि'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें नीतिपूर्ण शिक्षाओं का वर्णन किया गया है।

अनुवाद—जो विद्वान हैं वे हितैषी (भला चाहने वाले) नहीं हैं, जो हितैषी हैं वे विद्वान नहीं हैं, जो विद्वान भी हो और हितैषी ीाी हो, ऐसा व्यक्ति मनुष्यों में उसी प्रकार दुर्लभ है, जिस प्रकार स्वादिष्ट और हितकारी औषधि दुर्लभ है।

2. अक्रोधेन जयेतु .... सत्येन चानृतम्॥

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—क्रोध को बिना क्रोध किए अर्थात् शांति से जीतना चाहिए, दुष्ट को सज्जनता से जीतना चाहिए। कंजूस को दान से जीतना चाहिए और असत्य को सत्य से जीतना चाहिए।

3. अकृत्वा .... तद् बहु॥

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—दूसरों को दुखी न करके, दुष्ट के घर न जाकर, सज्जनों के मार्ग का उल्लंघन न करके जो थोड़ा कुछ भी मिल जाता है, वही बहुत है।

4. सत्याधारस्तपस्तैलं .... यत्नेन वार्यताम्॥

सन्दर्भ—पूर्ववत।

अनुवाद—सत्य का आधार वाले, तपरूपी तेल वाले, दयारूपी बत्ती वाले, क्षमारूपी लौ वाले दीपक को अंधकार में प्रवेश करते समय यत्नपूर्वक जलाना चाहिए।

5. त्यज दुर्जन .... नित्यमनित्यताम्॥

सन्दर्भ—पूर्ववत।

अनुवाद—दुर्जनों की संगति का त्याग करो, सज्जनों के साथ मेल-मिलाप करो अर्थात् उनके साथ बैठो, दिन में पुण्य कर्म करो और रात्रि में नित्य उस अनित्य अर्थात् ईशवर का स्मरण करो।

6. मनसि वचसि .... सन्तः कियन्तः॥

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—मन, वाणी और शरीर में पुण्यरूपी अमृत से भरे हुए, परोपकारों के द्वारा तीनों लोकों को प्रसन्न करने वाले, दूसरों के परमाणु अर्थात् बहुत छोटे गुणों को भी पर्वत के समान बड़ा करके अर्थात् देखकर और नित्य अपने हृदय से सदा प्रसन्न रहने वाले सज्जन इस संसार में कितने हैं अर्थात् ऐसे लोग बहुत कम हैं।

- **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्—
1. रमज दुर्जन संसर्गम्।
2. भज साधुसमागमम्।
3. अहोरात्रं पुण्यं कुरु।
4. दानेन यशः वर्धते।
5. विनयः मनुष्याणाम् आभूषणम् अस्ति।
6. एकः चन्द्रः अन्धकारं (तमः) नश्यति।
7. अहिष्णुताम् औदार्येण जयेत्।
8. सः सत्यं वदति।
9. कदर्मं दानेने जयेत्।
10. एको एव गुणी पुत्रः श्रेष्ठः भवति।

व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

उत्तरम्—

वरमैक:	—	**वरम् + एक:**	यथौषधम्	— **यथा + औषधम्**
शतैरपि	—	**शतैः + अपि**	चानृतम्	— **च + अनृतम्**
सुहृच्च	—	**सुहृत् + च**	स्वल्पमपि	— **सु + अल्पम् + अति**
चतुर्विधम्	—	**चतुः + विधम्**	तपस्तैलं	— **तपः + तैलम्**

2. निम्नलिखित शब्द-रूपों के विभक्ति एवं वचन लिखिए—

उत्तरम्—

वाचा	—	**तृतीया विभक्तिः, एकवचनम्**
चक्षुषा	—	**तृतीया विभक्तिः, एकवचनम्**
नृणाम	—	**षष्ठी विभक्तिः, बहुवचनम्**
यत्नेन	—	**तृतीय विभक्तिः, बहुवचनम्**
मनसि	—	**सप्तमी विभक्तिः, एकवचनम्**

3. निम्नलिखित धातु-रूपों का लकार, वचन तथा पुरुष लिखिए—

उत्तरम्—

हन्ति	—	**लट् लकारः, एकवचनम, प्रथमः पुरुषः**
जयेत	—	**लट् लकारः, एकवचनम् प्रथमः पुरुषः**
त्यज	—	**लोट् लकारः, एकवचन मध्यम पुरुषः**
सन्ति	—	**लट् लकारः बहुवचनम् प्रथमः पुरुषः**
प्रसीदति	—	**लट् लकारः एकवचनम् प्रथम पूरुषः**

4. 'हरि' शब्द के प्रथम और द्वितीया विभक्ति के रूप लिखिए।

उत्तरम्— हरि — **हरिः हरी हरयः (प्रथमा विभक्ति)**

हरिम् हरी हरीन् (द्वितीया विभक्ति)

6 परमहंसः रामकृष्णः (रामकृष्ण परमहंस)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (क) **6.** (ख) **7.** (घ) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (ख)
11. (क) **12.** (घ) **13.** (क) **14.** (घ) **15.** (क)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

- विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ पर आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

उत्तरम्— **1.** रामकृष्ण: परमहंस: एक: विलक्षण: महापुरुष: आसीत्।

2. रामकृष्णस्य जन्म बङ्गेषु हुगलीप्रदेशस्य कामारपुकुर स्थाने अभवत्।

3. स्वामिन: रामकृष्णस्य जन्म बङ्गेषु हुगलीप्रदेशस्य कामारपुकुर स्थाने अभवत्।

4. रामकृष्णस्य महान् सन्देश: अस्ति—ईश्वरानुभव: दु:खितानां जनानां सेवया पुष्यति, इति।

5. स्वामी विवेकानन्द: रामकृष्णस्य शिष्य: आसीत्।

6. रामकृष्णस्य मुख्य: शिष्य: स्वामी विवेकानन्द: आसीत्।

7. रामकृष्णपरमहंसस्य श्रेष्ठ: शिष्य: स्वामी विवेकानन्द: आसीत्।

8. रामकृष्ण: स्वकीयेन योगाभ्यासबलेन महान् सञ्जात:।

9. रामकृष्ण परमहंसस्य विषये महात्मना गान्धिना उक्तं यत् परमहंसस्य रामकृष्णस्य जीवनचरितं धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते। तस्य जीवनम् अस्मभ्यम् ईशवरदर्शनाम शक्तिं ददाति। तस्य वचनानि न केवलं कस्यचित् नीरसानि ज्ञानवचनानि अपतु तस्य जीवन ग्रन्थस्य पृष्ठानि एव। तस्य जीवनम् अहिंसाया: मर्तिमान् पाठ: विद्यते।

10. रामकृष्ण–सेवाश्रमा: स्वामिना विवेकानन्दने अन्यै: शिष्यैश्च स्थापिता:।

11. विवेकानन्द: समाजसेवाये स्थाने स्थाने रामकृष्ण सेवाश्रामाणां स्थापनाम् अकरोत।

12. रामकृष्ण परमहंस विलक्षण: पुरुष: आसीत्।

13. रामकृष्णस्य पितरौ परमधार्मिकौ आस्ताम्।

14. रामकृष्णा: तां विद्याम् आवाञ्छत् यमा हृदये ज्ञानस्य उदमो भवति।

15. ईश्वरानुभव: दु:सितानां जनानां सेवया पुष्यति।

अनुवाद संबंधी प्रश्न

- **निम्नलिखित अवरणों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्— **1. रामकृष्ण: एक: .... मूर्तिमान् पाठ: विद्यते।**

सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठय पुस्तक के अंतर्गत 'संस्कृत खण्ड' के 'परमहंस: रामकृष्ण:' नामक पाठ से उदधृत है।

अनुवाद—रामकृष्ण एक अलौकिक महापुरुष थे। उनके विषय में महात्मा गांधी ने कहा—''परमहंस रामकृष्ण का जीवन-चरित धर्म के आचरण का प्रयोगात्मक (व्यावहारिक) विवरण है। उनका जीवन हमें ईशवर-दर्शन की शक्ति प्रदान करता है। उनके वचन न केवल किसी नीरस ज्ञान के वचन हैं अपितु जीवनरूपी ग्रंथ के पृष्ठ ही हैं। उनका जीवन अहिंसा का साकार पाठ है।''

2. परमसिद्धोऽपि स: .... सिद्धे: प्रदर्शनेन।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—परमसिद्ध होने पर भी हो सिद्धियों के प्रदर्शन को उचित नहीं मानते थे। एक बार किसी भक्त ने किसी की महिमा का इस प्रकार वर्णन किया—''वे महात्मा खड़ाऊँ से नदीपार कर जाते हैं, बड़े आशचर्य का विषय है।'' परमहंस रामकृष्ण धीरे से हंसे और बोले, ''इस सिद्धि का मूल्य केवल दो पैसे है। दो पैसे से सामान्य व्यक्ति नावद्वारा नदी पार कर जाता है। इस सिद्धि से केवल दो पैसे का लाभ होता है। ऐसी सिद्धि के प्रदर्शन से क्या लाभ है।''

3. रामकृष्णस्य विषये .... लोके प्रसिद्धाः।

सन्दर्भ—पूर्ववत।

अनुवाद—रामकृष्ण के विषय में इस प्रकार की बहुत-सी कथाएँ प्रचलित हैं, प्रसिद्ध हैं। वे आजीवन आतम-चिंतन में लीन रहते थे। एक विषय में उनके अनेक अनुभव संसार में प्रसिद्ध है। उन्हीं के वचनों में उनके अध्यात्म के अनुभव वर्णित हैं—**1.** ''जैसे जल में डूबे हुए प्राण बाहर निकलने के लिए व्याकुल होते हैं वैसे ही ईश्वर दर्शन के लिए भी उत्सुक हो जाएँ तब उनके (ईश्वर के) दर्शन हो सकते हैं।''

2. ''किसी भी साधना को पूरा करने के लिए मुझे तीन दिन से अधिक समय नहीं चाहिए।''

3. ''मैं भौतिक सुखों को प्रदान करने वाली विद्या नहीं चाहता हूँ, मैं तो उस विद्या को चाहता हूँ जिससे हृदय में ज्ञान का उदय होता है।''

4. विश्वविश्रुतः स्वामी .... महान् सन्देशः।

सन्दर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—संसार में प्रसिद्ध स्वामी विवेकानंदन इन्हीं महानुभाव के शिष्य थे। उन्होंने न केवल भारतवर्ष ये अपितु पाश्चात्य (पश्चिमी) देशों में भी व्यापक मानवधर्म का डंका बजाया, उच्च स्वर में उदघोष किया। उन्होंने और उनके दूसरे शिष्यों ने लोगों के कल्याण के लिए स्थान-स्थान पर रामकृष्ण-सेवाश्रम स्थापित किए। ईशवर का अनुभव दुखी लोगों की सेवा से पुष्ट होता है, ऐसा रामकृष्ण का महान संदेश है।

- **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्— **1.** रामकृष्णः एकः विलक्षणः महापुरुषः आसीत्।

2. तस्य जीवनम् अस्मभ्यं शक्तिं प्रददाति।

3. तस्य जन्म बङ्गे अभवत्

। **4.** तस्य ईश्वरे सहजा निष्ठा आसीत्।

5. तस्य जीवनं शुद्धम् आसीत्।

6. सः सर्वेषु स्निह्यति स्म।

7. तस्य पितरौ परमधार्मिकौ आस्ताम्।

8. गङ्गा नदी हिमालयात् निस्सरति।

9. अहं भौतिक सुखं न वाञ्छामि।

10. तौ विद्वांसौ आस्ताम्।

व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए—

उत्तरम्—

धर्माचरणस्य —	**धर्म + आचरणस्य**	आरधनावसरे —	**आराधना + अवसरे**
नोचितम् —	**न + उचितम्**	देशेष्वपि —	**देशेषु + अपि**
बलेनैव —	**बलेन + एव**	अध्यात्मानुभवा: —	**अध्याम + अनुभवाः**
तदानीमेव —	**तदानीम् + एव**	अस्यैव —	**अस्य + एव**
ईश्वरानुभव: —	**ईश्वर + अनुभवः**	सेवाश्रमा —	**सेवा + आश्रमाः**

2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति और वचन लिखिए—

उत्तरम्—

नौकया —	**तृतीया विभक्तिः, एकवचनम्**
तेन —	**तृतीया विभक्तिः, एकवचनम्**
अस्मभ्यम —	**चतुर्थी विभक्तिः, बहुवचनम्**
परमहंसस्य —	**षष्ठी विभक्तिः, एकवचनम्**
बङ्गेषु —	**सप्तमी विभक्तिः, बहुवचनम्**

3. निम्नलिखित शब्दों में धातु, लकार, पुरुष और वचन लिखिए—

उत्तरम्—

	धातुः	**लकारः**	**पुरुषः**	**वचनम्**
अभवत्	**भू, भव्,**	**लङ्**	**प्रथमः**	**एकवचनम्**
आस्ताम	**अस्**	**लङ**	**प्रथमः**	**द्विवचनम्**
भवति	**भू, भव्**	**लट्**	**प्रथम**	**एकवचनम्**
अर्हति	**अर्ह्**	**लट्**	**प्रथमः**	**एकवचनम्**
वाञ्छामि	**वाञ्छ्**	**लट्**	**उत्तमः**	**बहुवचनम्**

4. 'अस्मद्' तृतीया विभक्ति के रूप लिखिए।

उत्तरम्— अस्मद् — **मया आवाभ्याम् अस्माभिः (तृतीय विभक्तिः)**

7 कृष्णः गोपालनन्दनः (गोपालनन्दन कृष्ण)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क) 6. (ख) 7. (क) 8. (ग) 9. (क) 10. (ग) 11. (क) 12. (ग) 13. (क) 14. (क) 15. (घ)।

उच्च विचारात्मक प्रश्न

- विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ पर आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए—**

उत्तरम्— **1.** कृष्ण: लोकोत्तये महापुरुष: आसीत्।

2. कंस: श्रीकृष्णस्य मातुल: एक: अत्याचारी शासक: आसीत्।

3. श्रीकृष्ण: स्वोत्तमै: गुणै: परोपकाराभावनया च लोकप्रिय: अवभत्।

4. श्रीकृष्णस्य जन्म मथुरायाम् अवभत्।

अथवा

श्रीकृष्ण: कारागारे जात:।

5. बालकृष्णं हन्तुं कंस: बहून् राक्षस्यन् प्रैषयत्।

6. श्रीकृष्ण: स्वसौन्दर्येण बाललीलया च जनानां मनांसि अहरत्।

7. वासुदेवन सद्योजात: कृष्ण: तं नन्दमृहं प्राययित्वा अरक्षत्।

8. आकाशवाणीं श्रुत्वा कंस: देवकी वसुदेवौ कारागारे न्याक्षिपत्।

9. कंस: अत्याचारी शासक: आसीत्।

10. संस्कृत भाषायां कृष्णस्य बाललीलाय: वर्णनं महाकविना व्यासेन कृतम्।

11. हिन्दीभाषायां श्रीकृष्णस्य बाललीलाया: वर्णनं भक्त कवि: सूरदास: अकरोत्।

12. अद्यापि जनानां हृदयेषु श्रीकृष्ण: विराजमान: अस्ति।

13. श्रीकृष्णस्य मातुल: कंस: अत्याचारी शासक: आसीत्।

14. श्रीकृष्ण पितु: नाम वसुदेव: आसीत्।

15. श्रीकृष्णस्य जनम भाद्रपदमासस्य कृष्णपक्षस्य अष्टम्यां तिथौ अवभत्।

अनुवाद संबंधी प्रश्न

- **निम्नलिखित अवतरणों का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्— **1. श्रीकृष्णस्य मातुल: कंस: .... श्रीकृष्ण: जात:।**

संदर्भ—प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठय पुस्तक के अंतर्गत '**संस्कृत खण्ड**' के '**कृष्ण: गोपालनन्दन:**' नामक पाठ से उद्‌धृत है।

अनुवाद—श्रीकृष्ण कामामा कंस अत्याचारीशासक था। उसने पहले अपनी बहिन देवकी का विवाह श्री वसुदेव के साथ किया, बाद में आकाशवाणी के द्वारा देवकी-पुत्र के द्वारा अपनी मृत्यु का समाचार जानकर दोनों को ही जेल में डाल दिया। वहीं कारागार में श्रीकृष्ण पैदा हुए।

2. श्रीकृष्णस्य जन्म .... हृदयवल्लभ: अभवत्।

संदर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि को मथुरा में हुआ था। आधी रात में जब ये पैदा हुए तब आकाश में घटाओं से घिरे बादलों ने

मूसलाधार बारिश की। उस समय रात अंधकारपूर्ण थी। किंतु वसुदेव पुत्र की रक्षा के लिए तुरंत पैदा हुए अर्थात् उस नवजात को लेकर ऊँची लहरों वाली यमुना को पारकर गोकुल में नंद के घर पहुँच दिया। वहाँ बचपन से ही श्रीकृष्ण लोगों हृदय के प्रिय हो गए।

3. बाल्यकाले अयं .... तस्मिन् स्निह्यन्ति।

संदर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—बचपन में इन्होंने (श्रीकृष्ण ने) अपने सौंदर्य से और बाललीलाओं से सब लोगों के मनों को हर लिया अर्थात् जीत लिया। कोई गोपिका उन्हें गोरी में लेकर अपने घर ले जाती है, दूसरी उन्हें दूध पिलाती है और अन्य कोई उन्हें मक्खन देती है। श्रीकृष्ण प्रेम से दिया गया दूध पीते हें और मक्खन खाते हैं, अवसर पाकर वे अपने मित्रों ग्वालों के साथ किसी घर में घुसकर दही खाते हैं, मित्रों को देते हैं, शेष दही जमीन पर गिराते हैं और कभी-कभी दही के बर्तन तोड़ देते हैं। यह सब करते हुए भी उनके शील और सौंदर्य से प्रभावित कोई भी उन पर क्रोध नहीं करता है अपितु सब उनसे स्नेह करते हैं।

4. एकदा वर्षाकाले .... लोकप्रियः अभवत्।

संदर्भ—पूर्ववत्।

अनुवाद—एक बार वर्षा काल में गोकुल में यमुना का जल तेजी से बढ़ने लगा, तब श्रीकृष्ण ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना सब गोकुलवासियों की रक्षा की। ऐसे ही आग लग जाने पर इन्होंने सब पशुओं और ग्वालों की उससे रक्षा की। इस प्रकार निरंतर गोकुलवासी लोगों के कष्टों को दूर करते हुए उनके हृदय में स्थान बना लिया। इसलिए श्रीकृष्ण बचपन से ही अपने उत्तम गुणों से और परोपकार की भावना से लोकप्रयि हो गए।

- **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—**

उत्तरम्—
1. श्रीकृष्णस्य जन्म मथुरायाम् अभवत्।
2. श्रीकृष्ण: लोकोत्तर: महापुरुष: आसीत्।
3. श्रीकृष्ण: जनानां हृदयेषु विराजमान: अस्ति।
4. बाल्यकालादेव जना: अस्मिन् स्निह्यन्ति स्म।
5. स: गोकुलवासिनां महत् कल्याणमकरोत्।
6. स: स्व सौन्दर्यम प्रसिद्ध: आसीत्।
7. श्रीकृष्ण: बाल्यकालादेव लोकप्रिय: अभवत्।
8. कंस: श्रीकृष्णस्य मातुल: आसीत्।
9. स: अर्जुनाय गीताया: उपदेशम् अददत्।
10. स: वनं गत्वा धेनून् चारयति।

11. सः दुग्धं पिबति नवनीतं च खादति।

12. तदा रात्रिः अन्धकारपूर्णा आसीत्।

- **व्याकरण संबंधी प्रश्न**

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए—

उत्तरम्—

लोकोत्तरः	—	**लोकः + उत्तरः**	अद्यापि	—	**अद्यः + अपि**
पदायं	—	**पद + अयं**	रक्षार्थ	—	**रक्ष + अर्थ**
कोऽपि	—	**कः + अपि**	परोपकारः	—	**पर + उपकारः**
तत्रैव	—	**तत्र + एव**	स्वोत्तमैः	—	**स्व + उत्तमैः**
उभावपि	—	**उभौ + अपि**			

2. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त धातु, लकार, पुरुषएवं वचन बताइए—

उत्तरम्—

शब्दः	**धातुः**	**लकारः**	**पुरुषः**	**वचनम्**
आसीत्	**अस्**	**लङ्**	**प्रथमः**	**एकवचनम्**
अभवत्	**भू, भव्**	**लङ्**	**प्रथमः**	**एकवचनम्**
पिबति	**पा, पिब्**	**लट्**	**प्रथमः**	**एकवचनम्**
ददानि	**दा**	**लोट्**	**उत्तमः**	**एकवचनम्**
शृण्वन्ति	**श्रु**	**लट्**	**प्रथमः**	**बहुवचनम्**

3. 'राम' शब्द के चतुर्थी विभक्ति के रूप लिखिए।

उत्तरम्— राम — **रामाभ्य रामाभ्याम् रामेभ्यः**

एकांकी-खण्ड

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के चार उत्तर लिखे हुए हैं, सही उत्तर के सम्मुख सही (✓) का निशान लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (घ) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (ग)

1 दीपदान (डॉ० रामकुमार वर्मा)

(जन्म : सन् 1905 ई० - मृत्यु : सन् 1990 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के तीन उत्तर लिखे हुए हैं, सही उत्तर के सम्मुख सही (✓) का निशान लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (ख) **7.** (क) **8.** (ख) **9.** (क) **10.** (क) **11.** (ख) **12.** (ग) **13.** (ग) **14.** (ग)

अभिकथन-करण सम्बन्धित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

कूट आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित में से क्या वीरों के हाथ में खिलती है?

उत्तर– (क) केवल (i)

2. निम्नलिखित में से कौन रावल सरूपसिंह की लड़की है?

उत्तर– (ग) (iii)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

1. ____________ **दीपदान एकांकी के लेखक हैं।**

उत्तर– (ग) डा० रामकुमार वर्मा

2. ____________ **दीपदान का त्योहार नहीं मना रही है।**

उत्तर– (ख) पन्ना

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

उत्तर– (क) (ii) (i) (iv) (iii)

सत्य/असत्य कथन

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

1. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

2. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. डॉ० रामकुमार वर्मा की मुख्य एकांकी संग्रहों की सूची निम्नलिखित हैं—1. पृथ्वीराज की आँखें, 2. रेशमी टाई, 3. चारुमित्र, 4. विभूति, 5. सप्तकिरण, 6. रूपरंग, 7. रजत-रश्मि, 8. ऋतुराज, 9. दीपदान, 10. दीपदान, 11. रिमझिम, 12. इंद्रधनुष, 13. मयूर पंख, 14. इतिहास के स्वर।

2. छात्र स्वयं करें।

3. पन्ना धाय जैसी राष्ट्रप्रेमी और बलिदानी महिलाएँ हैं—1. रानी लक्ष्मीबाई, 2. झलकारी बाई, 3. अहिल्याबाई, 4. रानी चेन्नमा।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर—

1. 'दीपदान' एकांकी के लेखक का नाम डॉ० रामकुमार वर्मा है।

2. 'दीपदान' एकांकी की नायिका पन्ना धाय है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर—

1. बनवीर की कुटिल प्रकृति से पन्ना भली-भाँति परिचित थी। उसे यह आभास हो गया था कि बनवीर कुँवर उदयसिंह की हत्या करना चाहता है; अत: वह कुँवर उदयसिंह को हर तरह से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से दीपदान का उत्सव और नृत्य देखने नहीं गई।

2. 'दीपदान' उत्सव का आयोजन चित्तौड़ के तत्कालीन संचालक बनवीर नेभावी शासक कुँवर उदयसिंह की हत्या के उद्देश्य से किया था। बनवीर की योजना थी कि जब सभी उत्सव देखने में तल्लीन रहेंगे तो वह रात्रिके अंधकार में चुपचाप जाकर कुँवर उदयसिंह की हत्या कर देगा।

3. 'दीपदान' एकांकी के अनेक स्थल मुझे प्रिय लगते हैं। इनमें प्रमुख हैं—पन्ना के वीरतापूर्ण ये कथन—**1. ''राजपूतनी व्यापार नहीं करती, महाराज! वह या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।''**

2. ''चित्तौड़ रास-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।''

उपर्युक्त संवादों के अतिरिक्त सोना और पन्ना और बनवीर के कई संवाद अत्यंत प्रेरणास्पद और हृदय में वीरता के भाव का संचार करनेवाले हैं। पन्ना द्वारा कुँवर उदयसिंह को छिपाकर महल से बाहर सुरक्षित भेज देना, सोना को 'दीपदान' उत्सव पर प्रताड़ित करना और क्रूर बनवीर का निर्भीकतापूर्वक सामना करते हुए उस पर कटार से वार करना, इस एकांकी के मर्मस्पर्शी स्थल हैं। उदयसिंह की रक्षा कर उसके स्थान पर अपने पुत्र चंदन का बलिदान कर देना तो 'दीपदान' का सर्वाधिक मार्मिक अंश है।

'दीपदान' एकांकी के ये सभी स्थल हृदय में अनेक मानवीय भावों का एक साथ संचार करते हैं। अपने वंश, जाति अथवा देश की आनके लिए सर्वस्व न्योछावर करने की प्रेरणा, अपनी स्वार्थलिप्सा के वशीभूत होकर अमानवीयतापूर्ण कार्यों को न करने की प्रेरणा भी इनस्थलों का अध्ययन करने से प्राप्त होती है।

4. पन्ना को सोना के व्यवहार और उसके कथनों तथा सामली द्वारा दी गई सूचना के फलस्वरूप यह आभास हो गया था कि बनवीर उदयसिंह के विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहा है। सामली से उसे यह ज्ञात होता है कि अपने भाई विक्रमादित्य की हत्या करने के बाद बनवीर यहकह रहा है कि वह उदयसिंह को भी जीवित नहीं छोड़ेगा। उसने बनवीर के सैनिकों द्वारा उदयसिंह के महल को घेरे जाने की सूचना भी पन्ना को दी।

5. चन्दन की हत्या कराने के अतिरिक्त पन्ना बनवीर से यह भी कह सकती थी कि उदयसिंह उसके साथ ही उत्सव देखने गए थे और अभी तक वापस नहीं लौटे हैं। वह अन्य किसी स्थान पर भी कुँवर को छिपा सकती थी अथवा पहले ही उदयसिंह को कीरतके टोकरे में छिपाकर, कहीं भेज सकती थी। महल के किसी सैनिकको लोभ देकर भी वह चंदन और उदयसिंह सहित स्वयं किसी सुरक्षित स्थान पर जा सकती थी।

6. इस एकांकी की मुख्य पात्र पन्ना धाय ने चित्तौड़गढ़ के राजकुमार उदयसिंह की प्राणरक्षा के अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए अपने पुत्र के प्राणों का बलिदान कर दिया, अर्थात् अपने घर के दीप का दान कर दिया। इसलिए इसका शीर्षक 'दीपदान' पूरी तरह से सार्थक शीर्षक है।

7. इसमें संदेह नहीं है कि बनवीर उदयसिंह को मारने आया था, न कि चन्दन को; परंतु पन्ना एक स्वामिभक्त एवं कर्तव्यनिष्ठ नारी थी। अपने कर्तव्य के निर्वाह और स्वामिभक्ति का परिचय देने के लिए ही उसने इतना बड़ा त्याग किया। उस विकट स्थिति में कुँवर उदयसिंह को बचाने के लिए उसके सामने अन्य कोई विकल्प शेष नहीं बचा था; अत: अपनी ममता के ममत्व को दबाकर उसने अपने पुत्र की हत्या हो जाने दी और इस प्रकार अपनी सूझ को साकार रूप देकर बनवीर से उदयसिंह को बचा लिया। वस्तुत: वह भारतीय इतिहास की महान नारियों में अपना अग्रणी स्थान रखती है। उसने अपने कर्तव्य के लिए अपनी ममता का भी बलिदान कर दिया। इसलिए पन्ना को कलंकिनी कहना अथवा उसके आचरण को सर्पिणी-सा सिद्ध करना पूर्णत: अनुपयुक्त एवं अनुचित है।

8. पन्ना उदयसिंह की शैया पर चन्दन को इसलिए सुला देती है जिससे कि बलवीर चंदन को उदयसिंह समझकर उस पर वार करे और उदयसिंह जीवित बच जाए।

9. 'दीपदान' एकांकी का मुख्य उद्देश्य पन्ना का चिरत्र-चित्रणकरना है। पन्ना देश प्रेम को पुत्र-प्रेम से भी अधिक महत्व देती है। अपने कर्तव्य-पालनके लिए वह अपनु पुत्र का भी बलिदान कर देती है। माता की ममता और धाय के कर्तव्यपालन के बीच पन्ना धाय का अंतर्द्वंद्व बड़ी करुणा के साथ उभरकर आया है। उसकी आँखों के सामने उसके पुत्र की हत्या कर दी गई, किंतु देशके लिए उसने इस दु:ख को भी सहन किया। इस प्रकार पन्ना के बलिदानऔर उसके चरित्र के माध्यम से एकांकीकार ने यह बताने की चेष्टा की है कि राष्ट्रहित के लिए व्यक्तिगत हित का बलिदान कर देना चाहिए। त्याग से मनुष्य महान और स्वार्थ लिप्सा से नीच बन जाता है।

दीर्घ उत्तरीयप्रश्न (समीक्षात्मक प्रश्न)

उत्तर—

1. **'दीपदान एकांकी की कथावस्तु (कथानक)**

डॉ० रामकुमार वर्मा ने ऐहिासिक नाटकों की रचना करके हिंदी-नाटय-साहित्य में अपना नाम अमर कर लिया है। इन नाटकों के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति को जीवित कर दिया है। 'दीपदान' डॉ० रामकुमार वर्मा का एक प्रसिद्ध एकांकी है। इस एकांकी में उन्होंने बलिदान और त्याग की मूर्ति पन्ना धाय की ऐतिहासिक गौरव-गाथा का चित्रण किया है। संक्षेप में 'दीपदान' एकांकी की कथा इस प्रकार है—**1. दीपदान-उत्सव का आयोजन**—चित्तौड़गढ़ के राजा संग्रामसिंह की मृत्यु के पश्चात चित्तौड़गढ़ के वास्तविक उत्तराधिकारी का प्रश्न उठा। वास्तव में राज्य संग्रामसिंह के पुत्र कुँवर उदयसिंह को मिलना चाहिए था, किंतु उदयसिंह अल्पवयस्क था; अत: उदयसिंह के संरक्षक के रूप में संग्रामसिंह के भतीजे बनवीर को चित्तौड़गढ़ की गद्दी सौंप दी गई। बनवीर बड़ा दुष्ट था। वह राजय को अपने अधिकार में करना चाहता था; अत: उसने उदयसिंह की हत्या का षडयंत्र रचा और मयूरपक्ष नामक कुंड में दीपदान के उत्सव का आयोजन किया।

2. बनवीर के षडयंत्र की जानकारी—पन्ना धाय उदयसिंह की धाय माँ थी। उसे बनवीर के षडयंत्र का पता चल गया। वह कुँवर उदयसिंह की रक्षा के लिए व्याकुल हो उठी।

3. उदयसिंह की जिद—कुँवर उदयसिंह ने दीपदान-उत्सवमें जाने की जिद की, किंतु पन्ना ने उन्हें उत्सव में नहीं जाने दिया। वे रूठकर सो गए। इसी बीच सोना नामक दासी उदयसिंह को उत्सव में ले जाने के लिए आई, किंतु पन्ना ने उसको फटकारकर भगा दिया।

4. पन्ना के पुत्र का प्रवेश—इसके बाद पन्ना का पुत्र चंदन आया। पन्ना ने उदयसिंह को वहाँ से बाहर भेज देने की योजना तैयार की और अपने पुत्र को उदयसिंह के साथ सुला दिया।

5. उदयसिंह की रक्षा की योजना—पन्ना धाय ने समारोह का लाभ उठाया और उदयसिंह को कीरतबारी की टोकरी में छिपाकर किले के बाहर सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया।

6. बनवीर का प्रवेश—कीरतबारी के जाने के बाद बनवीर अपने हाथ में नंगी तलवार लेकर उदयसिंह के कक्ष में आया। जागीर का प्रलोभन देकर उसने पन्ना को अपने षडयंत्र में सम्मिलित करने का प्रयास किया, किंतु पन्ना अपने कर्तव्य पर दृढ़ रही। उसने बनवीर द्वारा दिए गए लालच को ठुकराते हुए कहा— **राजपूतनी व्यापार नहीं करती, महाराज! वह या**

तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।

इसी के साथ ही वह बनवीर से उदयसिंह के प्राणों की भिक्षा माँगने लगी। बनवीर ने पन्ना की एक न सुनी। हारकर पन्ना ने कटार से बनवीर पर प्रहार किया, किंतु बनवीर ने उसके प्रहार को असफल कर दिया।

7. चंदन की हत्या—इस सारी घटना ने बनवीर को बहुत क्रोधित कर दिया। क्रोधित बनवीर ने भ्रंतिवश पन्ना धाय के पुत्रचंदन को ही उदयसिंह समझा और पन्ना की आँखों के सामने ही उसे तलवार से मौत के घाट उतार दिया। इस स्थल पर बनवीर का संवाद, उसकी क्रूरता का परिचय देने के लिए पर्याप्त है—

यही है मेरे मार्ग का कंटक। आज मेरे नगर में स्त्रियों ने दीपदान किया है। मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज! लो इस दीपका को। यह मेरा दीपदान है।

बनवीर के इस क्रूर कांड और पन्ना के अपूर्व त्याग के साथ ही एकांकी समाप्त हो जाता है।

2. 'दीपदान' के कथानक की समीक्षा

कथावस्तु एकांकी का प्रमुख तत्व होता है। इसके अभाव में एकांकी की कल्पना नहीं की जा सकती। 'दीपदान' की कथावस्तु ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। इसकी विशेषताओं का विवेचन इस प्रकार किया जा सकता है—**1. संगठित कथानक**—'दीपदान' का कथानक सुसंगठित है। इसकी घटनाँ एक-दूसरे से पूरी तरह जुड़ी हुई हैं। इसी कारण एकांकी का कथानक नदी की धारा के समान अपने गंतव्य की ओर प्रवहमान् दिखाई देता है।

2. प्रभावोत्पादकता—यह एकांकी इतिहास की वास्तविक घटना पर आधारित है। डॉ० रामकुमार वर्मा ने अपनी नाटयकला द्वारा इस घटना को पूरी तरह जीवंत और प्रभावोत्पादक बना दिया है। पन्ना का महान् बलिदान और त्याग पाठकों को रोमांचित कर देता हे।

3. संक्षिप्तता और स्पष्टता—एकांकी का कथानक सरल और प्रभावी है। लेखक ने जिस उद्देश्य को लेकर इसकी रचना की है, उस उद्देश्य में निहित संदेश को वह अपने पाठकों तक सरलता से पहुँचा देता है। एकांकी में व्यर्थ का विस्तार और घटनाओं की भरमार नहीं है। इसके पात्र भी सीमित हैं।

4. मौलिकता—प्रस्तुत एकांकी की कथा लोकप्रसिद्ध है, फिर भी एकांकीकार ने इसमें अपनी मौलिकता का पूर्ण परिचय दिया है। लेखक ने अपनी बात प्रतीकात्मक शैली में कहीं है,जो उसकी मौलिक प्रतिभा की परिचायक है।

5. कौतूहलपूर्ण—एकांकी का कथानक कौतूहलपूर्ण है। घटनाक्रम का विकास निरंतर कौतूहल की सृष्टि करता है। इस प्रकार जिज्ञासा, कौतूहल और अंतर्द्वंद्व से भरा हुआ कथानक तीव्रगति से चरमसीमा तक पहुँचता है। पन्ना और कुँवर उदयसिंह के वार्त्तालाप से एकांकी का प्रारंभ होता है। सोना के प्रवेश से कथावस्तु का विकास होता है और पन्ना के अंतर्द्वंद्व और मनोवैज्ञानिक सुकुमारता के साथ कथानक चरमसीमा पर पहुँचता है। चंदन के वध के साथ एकांकी का करुण अंत हो जाता है।

3. पन्ना धाय का चरित्र-चित्रण

भारतीय नारीकोमलता, ममता, स्नेह और प्रेम की प्रतिमूर्ति होती है। उसे स्थान-स्थान पर

अबला कहा गया है, किंतु उसका रक्त जब कभी उबाल खाता है तो वह सिंहनी भी बन जाती है। ऐसे क्षणों में वहदेश तथा समाज कीरक्षा के लिए सर्वस्व बलिदान कर देती है। पन्ना धाय भारतीय इतिहास के ऐसे ही गौरवपूर्ण शिखर पर विद्यमान है। 'दीपदान' एकांकी में डॉ० रामकुमार वर्मा ने पन्ना के चरित्र की जिन विशेषताओं का उदघाटन किया है, उनका वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—**1. आदर्श संरक्षिका**—पन्ना के एक आदर्श संरक्षिका के दायित्व को भली-भाँति निभाया है। उस पर कुँवर उदयसिंह के पालन-पोषण का भार है। उसने इस भार को उठाते हुए कुँवर को कोई गलत कार्य नहीं करने दिया।व सदैव कुँवर के हित में संलग्न रहती है। इस विषय में सोना का यह कथन पूर्णत: सार्थक सिद्ध होता है—**धाय माँ, तुमने उदयसिंह के सामने तो अपने पुत्र चंदन को भी भुला दिया।**

2. कर्तव्यपरायण—पन्ना कर्तव्यपराण नारी है। एक माता के कर्तव्य को निभाने के साथ-साथ वह कुँवर को भावी शासक के रूप में ढाल देना चाहती है। जब उदयसिंह दीपदान के उत्सव में जानेकी जिद करते हैं तो वह कहती है—

तुम तो चित्तौड़ के सूरज हो। महाराणा साँगा जी के छोटे कुँवर। सूरज कीतरह तुम्हारा उदय हुआ है। तभी तो तुम्हारा नाम कुँवर उदयसिंह रखा गया है।

बनवीर उदयसिंह की हत्या करने के उद्देश्य से पन्ना के कक्ष में प्रवेश करता है। वह पन्ना से उदयसिंह के विषय में पूछता है और तरह-तरह के प्रलोभन भी देता है, किंतु पन्ना उसके प्रत्येक प्रस्ताव को ठुकरा देती है और उसके झाँसे में नहीं आती। वह बनवीर के आने से पहले ही उदयसिंह को राजमहल से बाहरभेज देती है।

3. सच्ची क्षत्राणी—पन्ना का चरित्र एक वीर क्षत्राणी का चरित्र है। उसमें क्षत्राणियों जैसा अदम्य साहस, असीम त्याग और शौर्य है। बनवीर की क्रूरता के सम्मुख वह नतमस्तक नहीं होती। जब बनवीर उसे प्रलोभन देता है तो वह स्पष्ट रूप से कहती है—

राजपूतनी व्यापार नहीं करती, महाराज! या तो वह रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।

4. दूरदर्शी—पन्ना दूरदर्शी और अपने कर्तव्य के प्रति सचेत भी है। बिना किसी कारण आयोजित किए जाने वाले दीपदान उत्सव के विषय में जानकर वह तुरंत समझ जाती है कि बनवीर ने उदयसिंह को अपने रास्ते से हटाने के लिए ही यह आयोजन किया है। बनवीर द्वारा कुछ करनेसे पहले ही वह उदयसिंह को राजमहल से बाहर भेज देती है। इस प्रकार पन्ना की दूरदर्शिता से ही चित्तौड़ के भावी शासक के प्राणों की रक्षा हो सकी।

5. स्वदेश-प्रेमी और राज्य-भक्त—पन्ना में अपने देश के लिए प्रेम एवं राज्य के प्रति भक्ति कूट-कूटकर भरी हुई है। वह बनवीर को राज्य का उचित शासक नहीं मानती। देशप्रेम के वशीभूत होकर ही वह उदयसिंह के प्राणों की रक्षा करती है। अपनी राज्य-भक्ति की भावना को प्रकट करते हुए वह सामली से कहती है—**मेरे महाराणा का नमक मेरे रक्त से भी महान् है।**

6. त्याग की साक्षात प्रतिमा—राजस्थान के इतिहास में पन्ना स्वर्णाक्षरों से अंकित है। पन्ना त्याग की साक्षात् प्रतिमा है। उसका त्याग उस समय चरम सीमा पर पहुँच जाता है, जब वह कुँवर उदयसिंह की रक्षा के लिए अपने प्रिय पुत्र का भी बलिदान कर देती है। ऐसा अद्वितीय

त्याग इतिहास में कहीं पर भी दिखाई नहीं देता।

7. आदर्श भारतीय नारी—पन्ना आदर्श भारतीय नारी का सच्चा उदाहरण है। भारतीय नारी के समस्त गुण उसके चरित्र में विद्यमान हैं। उसमें माँ की ममता है, स्वामी और देश के लिए बलिदान की भावना है, स्त्री-जाति के समान करुणा और दया है तथा एक सेविका की सहनशीलता भी है। वस्तुत: वह एक सच्ची भारतीय नारी है।

8. ममतामयी माँ—पन्ना के हृदय में ममतामयी माँ का वात्सल्य विद्यमान है। कुँवर उदयसिंह का पालन-पोषण उसने माँ के रूप में किया है। वह हर समय कुँवर की चिंता में लीन रहती है। अपने पुत्र चंदन के प्रति भी उसके मन में ममत्व का सागर लहराता रहता है। वह यह जानती है कि आज उसके पुत्र के प्राण संकट में हैं। ऐसी स्थिति में वह अत्यधिक विह्वल हो उठती है, किंतु शीघ्र ही स्वयं को सँभाल लेती है।

पन्ना 'दीपदान' एकांकी की नायिका है। एकांकीकार डॉ० वर्मा ने उसके चरित्र की विशेषताओं को इतनी कुशलता के साथ उभारा है कि उसके चरित्र का एक-एक गुण प्रकाशित हो उठा है।

4. बनवीर का चिरत्र-चित्रण

'दीपदान' एकांकी में जहाँ पन्ना धाय के महान् बलिदानको चित्रित किया गया है, जो कर्तव्य की बलिवेदी पर अपने एकमात्र पुत्र का भी सहर्ष उत्सर्ग कर देती है, वहीं दूसरी ओर बनवीर का चरित्र है; जो स्वार्थलिप्सा के वशीभूत होकर राज्य के वास्तविक उत्तराधिकारी एक छोटे-से बालक उदयसिंह की हत्या का षडयंत्र रचने में भी संकोच नहीं करता। वह अपने कुल का कलंक, निर्दयी, विलासी और विश्वासघाती व्यक्ति है। उसके चरित्र की विशेषताओं को निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत स्पष्ट किया गया है—

1. महत्वाकांक्षी—बनवीर चित्तौड़ के राजा राणा साँगा के भाई पृथ्वीराज का दासी-पुत्र था। राणा साँगा की मृत्यु की पश्चात उसे राणा साँगा के पुत्र उदयसिंह का संरक्षक और राज्य का संचालक बनाया गया था, परंतु बनवीर राज्य के वास्तविक उत्तराधिकारी उदयसिंह को मारकर स्वयं ही राज्य प्राप्त करना चाहता था। पन्ना धाय जब उससे उदयसिंह के प्राणों की भीख माँगती है तो वह उसे दुत्कारता हुआ कहता है—**दूर हट दासी! यह नाटक बहुत देख चुका हूँ। उदयसिंह की हत्या ही तो मेरे राजसिंहासन की सीढ़ी होगी। जब तक वह जीवित है, तब तक सिंहासन मेरा नहीं होगा।**

2. क्रूर एवं हिंसक—बनवीर अत्यंत निर्दयी और हिंसक प्रवृत्ति का शासक था। वह स्वयं राज्य का उत्तराधिकारी न होते हुए भी, स्वयं ही निष्कंटक राज्य करना चाहता था। पने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने अपने भाई विक्रमादित्य की निर्दयतापूर्वक हत्या कर दी। उसकी इस निर्दयता की चरमसीमा उस समय प्रकट होती है, जब वह अपने स्वार्थ के लिए एक अबोध बालक चंदन की (उदयसिंह के धोखे में) भी हत्या कर देता है।

3. कूटनीतिज्ञ—अपनी दूषित महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए वह किसी भी नीति को प्रयुक्त करना अनुपयुक्त नहीं समझता है। उदयसिंह की हत्या में सहयोग प्राप्त करने के लिए वह पन्ना को जागीर का लोभ देना चाहता है। जब पन्ना उसका विरोध करती है तो वह उसे

भयभीत करने का भी प्रयास करता है। नाच-गाने की योजना बनाकर उसने जनता का ध्यान दूसरी ओर आकर्षित कर दिया और साम, दाम, दंड एवं भेद की नीतियों का प्रयोग करते हुए, अपनी स्वार्थ-सिद्धि का प्रयास किया।

4. विलासी—बनवीर विलासी शासक था। उसे नाच-गाने का शौक था। 'दीपदान' के उत्सव पर उसने रावल की पुत्री सोना को भी अपने पैरों में नूपुर बाँधकर नाचने के लिए प्रेरित किया। बनवीर के चरित्र की इस कमजोरी पर क्षुब्ध होकर ही पन्ना धाय सामली के सम्मुख कहती है—**विलासी और अत्याचारी राजा कभी निष्कण्टक राज्य नहीं कर सकता है।**

5. विश्वासघाती—बनवीर में मानवीयता का सर्वथा अभाव हे। उसका चरित्र अवगुणों की खान है। वह येन-केन-प्रकारेण अपनी इच्छाओं की पूर्ति में ही विश्वास करता है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह अपने भाई की हत्या कर देता है और राज्य के वास्तविक उत्तराधिकारी की हत्या का षडयंत्र कर अपने कुल और अपने राज्य के साथ भी विश्वासघात करता है।

6. कायर—बनवीर एक कायर पुरुष है। सोए हुए अपने भाई की हत्या करना उसकी कायरता का प्रमाण है। उसकी कायरता का एक अन्य घृणास्पद प्रमाण उस समय सामने आता है, जब वह उदयसिंह के धोखे में सोते हुए बालक चंदन की भी हत्या कर देता है। सोते हुए बालक पर वार करते हुए भी उसका हृदय हृदय उसे नहीं धिक्कारता ओर अपनी कायरता को अपना पराक्रम समझते हुए वह चंदन को मार डालता है।

5. 'सोना' दीपदान एकांकी की दूसरी प्रमुख पात्र है। उसकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ निम्नवत् हैं—**1. अत्यंत सुंदर**—सोना रावल सरूपसिंह की अत्यंत रूपवती लड़की है। उसकी आयु 16 वर्ष है। वह कुँवर उदयसिंह के साथ खेलती है।

2. वाक्यपटु एवं शिष्टाचारी—सोना बोलने में निपुण व राजमहल के शिष्टाचार से परिचित है। उसके शिष्टाचार व वाकपटुता का उस समय पता चलता है जब वह महल में कुँवर उदयसिंह को दीपदान उत्सव के लिए लेने आती है। महल मेंप्रवेश कर वह पन्ना धाय को प्रणाम करती है और उनसे उदयसिंह केविषय में पूछती है। पन्ना के कहनेपर "वे थक गए हैं, सोना चाहते हैं।" तब वह प्रत्युत्तर देती है, "सोना चाहते हैं! तो मैं भी तो सोना हूँ।"

3. सरल स्वभाव—सोना स्वभाव से सरल है। वह राजमहल में होने वाले षडयंत्रों से अनभिा है। पन्ना के सम्मुख नृत्य की बात करना, बनवीर द्वारा कही गई बातों को खेल-खेल में पन्ना को बता देना, मयूरपक्ष कुंड उत्सव की बातों का वर्णनकरना उसके सरल स्वभाव के ही प्रमाण है।

4. अस्थिर—सोना स्वयं को स्थिर नहीं रख पाती। वह भ्रमित-सी दिखाई पड़ती है, क्योंकि वह एक ओर कुँवर उदयसिंह से प्रेम करती है और दूसरी ओर बनवीर के प्रलोभन में आ जाती है।

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सोना में अल्हड़ कन्या की समस्त विशेषताएँ है।

6. छात्र स्वयं करें।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  मेरा लाल सो ....(सिसकियाँ लेती है।)

उत्तर–

(i) प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के एकाकी–खण्ड के 'दीपदान' नामक पाठ से उद्धृत है, जिसके लेखक डॉ० रामकुमार वर्मा है।

(ii) पन्ना धाय ने उदयसिंह की जान बचाने के लिए, अपने पुत्र का बलिदान कर दिया। इस प्रकार उसने मेवाड़ के कुलदीपक की रक्षा की।

(iii) पन्ना धाय ने राट्रभक्ति ो पुत्र से ज्यादा महत्व दिया।

(iv) पन्ना ने एक माँ होते हुए भी अपने राष्ट्र के लिए पुत्र को बलिदान कर दिया। इस प्रकार उसने सत्य और धर्म के प्रति अपनी निष्ठा दिखाई।

2 नए मेहमान (उदयशंकर भटट)

(जन्म : सन् 1898 ई० - मृत्यु : सन् 1966 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के तीन उत्तर लिखे हुए हैं, सही उत्तर के सम्मुख सही (✓) का निशान लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (ग) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (क) **6.** (ग) **7.** (क) **8.** (ख)

अभिकथन-करण सम्बन्धित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **चित्र को देखकर बताइए कि नए मेहमान एकांकी अनुसार घर में रहने वाले लोग किन प्रकार की समस्याओं से प्रतिदिन दो–चार होते हैं। क्या इन परिस्थितियों में किसी मेहमान का आगमन उन्हें प्रसन्नता प्रदान करेगा अथवा उन्हें किसी प्रकार के दुख का अनुभव होगा?**

उत्तर–नए मेहमान एकांकी के अनुसार घर में रहने वाले लोग स्थान की कमी, खराब पड़ोसियों व गर्मी–घुटन से प्रतिदिन परेशान होते हैं। ऐसी परिस्थितियों में किसी मेहमान का आगमन उन्हें दुख ही देगा।

कूट आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन–सा उदयशंकर भट्ट का जन्म स्थान है?

उत्तर– (ग) केवल (iii)

2. निम्नलिखित में से कौन-सा भट्ट जी का प्रमुख एकांकी संग्रह है?

उत्तर– (क) केवल (i)

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए**

  1. जयशंकर भट्ट का जन्म वर्ष ____________ है।

उत्तर– (ग) सन् 1898 ई०

  2. नए मेहमान एकांकी के लेख ____________ हैं।

  (a) प्रमोद, विनोद (b) राकेश, मोहन (c) उदयशंकर भट्ट

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

उत्तर– (ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

सत्य/असत्य

- **'नए मेहमान' में विश्वनाथ के चरित्र के विषय में कौन-सा कानि सही नहीं है?**

उत्तर– (घ) केवल (iv)

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें। **2.** छात्र स्वयं करें। **3.** छात्र स्वयं करें।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर–

1. 'नए मेहमान' एकांकी के लेखक का नाम उदयशंकर भट्ट है।
2. 'नए मेहमान' एकांकी के दो मेहमानों के नाम हैं—1. नन्हेमल 2. बाबूलाल।
3. 'नए मेहमान' एकांकी के प्रमुख पुरुष पात्र का नाम विश्वनाथ है।
4. 'नए मेहमान' एकांकी के प्रमुख नारी पात्र का नाम रेवती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर–

1. 'नए मेहमान' एकांकी का शीर्षक उपयुक्त है। क्योंकि मेहमान उस आगंतुक को कहा जाता है जो बिना बताए ही आ जाए। प्रस्तुत एकांकी में विशवनाथ व रेवती के घर तीन मेहमान आते हैं—बाबूलाल, नन्हेमल व रेवती का भाई जिनमें नन्हे मल व बाबूलाल अपरिचित (पराए) मेहमान हैं तथा रेवती का भाई अपना। एकांकी में ये तीनों ही मेहमान बिना बताए रेवती वे विशवनाथ के घर आते हैं। सर्वप्रथम एकांकी में बाबूलाल व नन्हें विशवनाथ के घर आते हैं जो भूल से उनके घर आ जाते हैं तथा जिनके कारण विशवनाथ व रेवती दुविधा में पड़ जाते हैं। जैसे ही वे विदा लेते हैं एक और नया मेहमान, रेवती का भाई आ जाता है। जिसे देखकर वे होनों प्रसन्न हो जाते हैं। इस प्रकार इस एकांकी का शीर्षक उपयुक्त है क्योंकि यह आने

वाले मेहमानों को इंगित करता है।

2. बड़े नगरों में जगह की समस्या एक प्रधान समस्या बन चुकी है। इसके साथ ही पानी, पर्याप्त हवा व धूप, महँगाई तथा पड़ोसियों की समस्या भीत्रस्त किए रहती है। इस प्रकार की स्थितियों में बिना बुलाए, घर को धर्मशाला समझनेवाले और फरमाइश पर फरमाइश करनेवाले मेहमान के कारण तो एक प्रकार का संकट ही सामने खड़ा हो जाता है। घरवालों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है और वे मेहमान के चले जाने के कई दिन बाद तक भी अनेक समस्याओं से घिरे रहते हैं। महानगरों के मध्यमवर्गीय समाज की आवाससे संबंधित इी समस्या को आधार बनाकर इस एकांकी की रचना की गई है; अत: यहएकांकी एक समस्याप्रधान एकांकी है।

3. 'नए मेहमान' एकांकी सामाजिक समस्या प्रधान हास्य-एकांकी है। इस एकांकी के माध्यम से एकांकीकार ने एक ओर महानगरों की आवास-समस्या को उठाया हे तो दूसरी ओर मध्यमवर्गीय जीवन की समस्याओं को भी उजागार किया है। सीमित साधनों वाले व्यक्ति,जिनके पास एक खुली छत भी नहीं होती, मेहमानों के आने पर किस प्रकार चिन्तित हो उठते हैं, इस तथ्य को भी एकांकीकार ने हास्य-व्यंग्यपूर्ण शेली में स्पष्ट किया है।

4. यदि नन्हेमल और बाबूलाल जैसे बिन बुलाए मेहमान अचानक ही हमारे घर आ जाएँ तो हमारी स्थिति भी विशवनाथ और रेवती जैसी ही हो जाएगी। जब हमारे पास स्वयं के सोने के लिए ही पर्याप्त जगह नहीं है तो उनके सोने की व्यवस्था कैसे करेंगे? उनके स्नान के लिए समय पर पानी का प्रबंध करना, बाजार से महँगी वस्तुएँ लाकर उनकी आवभगत करना, मेहमानों से पड़ोसियों को कोई असुविधा न हो जाए, इस बात का हर क्षण ध्यान रखना, ऐसी ही अनेक समस्याएँ हमें भी घेर लेंगी। उसमें भी घर को मुसाफिरखाना समझने वाले और स्वार्थी किस्म के मेहमानों सेतो हम संकट में ही फँस जाएँगे और ईशवर से पल-पल यही प्रार्थना करेंगे—"हे प्रभु! जितनी जल्दी हो, इन्हें यहाँ से विदा कराओ और हमें बचाओ।"

5. विश्वनाथ मेहमानों के आगमन से इसलिए प्रसन्न नहीं था क्योंकि वह मेहमानों को पहचानता नहीं था और मेहमानों ने भी अपना परिचय सही ढंग से नहीं दिया था।

6. विश्वनाथ संकोची स्वभाव का था, अत: वह मेहमानों से स्पष्ट परिचय पूछने से हिचकता था। साथ ही उसे इस बात का संदेह भी था कि यदि ये लोग उसके परिचित निकले तो कहीं स्पष्ट परिचय पूछना उसके लिए असम्मानजनक न हो जाए।

7. इसमें संदेह नहीं है कि बड़े नगरों में विश्वनाथ जैसी स्थिति के लोगों का जीवन अत्यंत दयनीय है। बड़े नगरों में आवास की विकट समस्या है। उसमें भी यदि मकान किराये का है तो समस्या और भी बढ़ जाती है। घर में उठने-बैठने, सोने, पढ़ने आदि के लिए वैसे ही कम जगह होती है जो स्वयं के लिए ही अपर्याप्त रहती है। मेहमानों के लिए एक रात को सोने की व्यवस्था कर पाना, एक परेशान करने वाली समस्या बन जाता है। बड़े नगरों में कई-कई घंटे बाद केवल कुछ देर के लिए ही पानी आ पाता है। ऐसे में मेहमानों के लिए समय पर स्नान का प्रबंध करना कितना हो जाता है, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। मेहमानों के कारण यदि पड़ोसियों का कोई असुविधा हो जाए, तो वे अलग से ताने मारते हैं—"यदि मेहमान ही बुलाने हैं तो कोई बड़ा मकान खरीदो न।" बड़े नगरों में हर वस्तु महँगी मिलती

है, जिससे मेहमानों की आवभगत कर पाना और अधिक कष्टपूर्ण हो जाता है। उसमें भी यदि नन्हेमल और बाबूलाल जैसे मेहमान आ टपकें तो स्थिति और भी विषम हो जाती है।

8. 'पराये' और 'अपने' के प्रति भावों में अंतर होना, स्वाभाविक ही होता है। रेवती के भावों में पराये और अपने के प्रति इस अंतर की स्पष्ट होना, स्वाभाविक ही होता है। रेवती के भावों में पराये और अपने के प्रति इस अंतर की स्पष्ट रूप से झलक देखने को मिलती है। नन्हेमल और बाबूलाल उसके लिए 'पराये मेहमान' हैं। दोनों ही उससे अपरिचित हैं और उसके लिए बोझस्वरूप सिद्ध हो रहे हैं। वह उनका अतिथि-सत्कार करने से बचती है और तरह-तरह के बहाने बनाती है। जब उनके लिए खाना बनाने को कहा जाता है तो वह सिर दर्द का बहाना बनाती हे। जब उनके लिए खाना बनाने कोकहा जाता है तो वह सिर-दर्द का बहना बना देती है।

इसके विपरीत जब उसका भाई आता है तो वह इस 'अपने मेहमान'को देखते ही प्रसन्न हो उठती है। उसका सिर-दर्द गायब हो जाता है। वह कहती है—''अब क्या, मैं खाना बनाऊँगी। भैया भूखे नहीं सो सकते।''

इस प्रकार 'पराये मेहमान' और 'अपने मेहमान' के प्रति रेवती के भावों में पर्याप्त अंतर परिलक्षित होता है।

9. शाब्दिक रूप में 'मेहमान' का आशय उस आगंतुक से होता है, जो बिना बताए ही आ जाए। मेहमान भी दो प्रकार के होते हैं—एक अपने और दूसरे पराये। एकांकी में रेवती के घर तीन मेहमान आते हैं—नन्हेमल व बाबूलाल तथा रेवती का भाई। पहले आने वाले मेहमान—नन्हेमल और बाबूलाल हैं, जो बिना जान-पहचान के ही रेवती के यहाँ आ धमकते हैं और रेवती के लिए सिर-दर्द बन जाते हैं। उनके किसी प्रकार घर से चले जाने के उपरांत घर के नीचेसे फिर किसी मेहमान की आवाज आती है। पहले मेहमानों से ही दु:खी हुई रेवती इस नए मेहमान की आवाज को सुनकर एक बार तो चौंक जाती है कि 'अरे फिर! परंतु जब वह देखती है कि यह नया मेहमान उसका भाई है, तो उसकी सभी सुख-सुविधाओं का पूर्ण ध्यान रखी है। प्रस्तुत एकांकी में रेवती का हय भाई ही 'नये मेहमान' के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (समीक्षात्मक प्रश्न)

उत्तर—

1. **जीवन परिचय**—सुविख्यात साहित्यकार उदयशंकर भट्ट का जन्म 3 अगस्त, सन् 1898 ई० में, उत्तर प्रदेश के इटावा नगर में ननिहाल में हुआ था। इनके नाना का परिवार शिक्षा, भाषाएवं साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशेष रुचि प्रदर्शित करता था। नाना के यहाँ बचपन में ही भट्टजी को संस्कृत भाषा का ज्ञान करा दिया गया था। काशी हिंदू विशवविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत, भट्टजी ने पंजाब से 'शास्त्री' और कलकत्ता से 'काव्य-तीर्थ' की उपाधि भी प्राप्त की। सुशिचित होने के उपरांत आप बहुत समय तक लाहौर में एक शिक्षक के रूप में भी कार्य करते रहे। आपने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और विभाजन के उपरांत दिल्ली में आकर बस गए। भट्टजी ने दीर्घकाल तक आकाशवाणी के परामर्शदाता एवं निदेशक के रूप में भी अपनी महत्वपूर्ण सेवाएँ अर्पित की। 22 फरवरी, सन् 1966 ई०को इस महान साहित्यकार का निधन हो गया।

कृतियाँ—उदयशंकर भट्ट ने कई प्रसिद्ध नाटकों एवंउपन्यासों की रचना की। इनके द्वारा लिखे गए एकांकी अत्यंत लोकप्रिय हुए। बहुमुखीप्रतिमा से संपन्न इस रचनाकार ने अनेक पठनीय प्रहसन, कविताएँ और गीत-नाटय भी लिखे। फिर भी नाटक और एकांकी के क्षेत्र में भट्टजी को विशेष सफलता प्राप्त हुई। इन्होंने एकांकी विधा को नई दिशा प्रदान की। रंगमंच एवं रेडियो-प्रसारण दोनों ही क्षेत्रों में इनके एकांकी सफल सिद्ध हुए। किसी भी समस्या को जीवंत रूप में प्रस्तुत कर देना भट्टजी के एकांकियों की सर्वप्रथम विशेषता है। भट्टजी के एकांकी पौराणिक, हास्यप्रधान, समस्याप्रधान और सामाजिक विषयों पर आधारित हैं। इनके द्वारा लिखे गए लोकप्रिय एकांकी है—'समस्या का अंत', 'परदे के पीछे', 'चार एकांकी' 'अभिनव एकांकी' और 'अन्त्योदय'।

2. **'नए मेहमान' की कथावस्तु (सारांश)**

'नए मेहमान' उदयशंकर भट्ट का यथार्थवादी एकांकी है। इसमें महानगरों के मध्यमवर्गीय जीवन का सजीव और यथार्थ चित्रण हुआ है। बड़े-बड़े नगरों में आवास की समस्याएँ बहुत अधिक बढ़ गई हैं। यहाँ तक कि जीवन की सामान्य सुविधाएँ भी आसानी से उपलब्ध नहीं हो पातीं। मेहमानों के आ जाने पर ये समस्याएँ कितनी अधिक बढ़ जाती हैं, इस तथ्य का बड़ा रोचक और विनोदपूर्ण चित्रण प्रस्तुत एकांकी में हुआ है। इस एकांकी का सारांश इस प्रकार है—**1. नायक विश्वनाथ की आवास-समस्या**—एकांकी का मुख्य पात्र विश्वनाथ है। वह एक बड़े नगर की घनी बस्ती में रहता है। उसका मकान बहुत छोटा है। उसी में वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जीवन व्यतीत कर रहा है। गर्मी का दिन है, उसका छोटा बच्चा बीमार है और पत्नी का गर्मी के कारण बुरा हाल है। मकान की छत बहुत छोटी है, उस पर चारपाई बिछाने का भी स्थान नहीं है। पड़ोसिन बहुत कठोर स्वभाव की है। वह अपनी खाली छत का प्रयोग नहीं करने देती। इस कारण विश्वनाथ बहुत दु:खी है।

2. मेहमानों का आगमन—जैसे ही वे दोनों सोने की तैयारी करते हैं, वैसे ही बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है। विश्वनाथ दरवाजा खोलता है। दो अपरिचित व्यक्ति बिस्तर और संदूक के साथ अंदर प्रवेश करते हैं। उनके नाम बाबूलाल ओर नन्हेमल हैं। वे बेशर्मी से घर में जम जाते हैं और विश्वनाथ उनका पता पूछता है तो वे दोनों बातों में उड़ा देते हैं। विशवनाथ संकोचके कारण कुछ नहीं कह पाता। उसकी पत्नी खाना बनाने की तैयारी नहीं होती और अपने पति से जिद करती है कि पहले इनका पता-ठिकाना पूछो। जब विशवनाथ साफ-साफ पूछता है तो पता चलता है कि वे भूल से उसके घर आ गए हैं। वास्तव में उन्हें पड़ोस के कविराज रामलाल के घर जाना था और वे भूल से कवि विशानाथ के घर आ गए थे। इस पर विश्वनाथ के बच्चे उन्हें सही स्थान पर पहुँचाकर आते हैं।

3. रेवती के भाई का आगमन—जैसे ही पति-पत्नी इन दोनों से मुक्त होते हैं, वैसे ही रेवती का भाई आ जाता है। अपने भाई के आगमन से रेवती अत्यधिक प्रसन्न होती है। उसे इस बात का दु:ख है कि उसका भाई भी उनका मकान ढूँढ़ता रहा और बहुत देर बाद सही स्थानपर पहुँचा है। वहभाई के बार-बार मना करने पर भी खाना बनाती है और बच्चों को बर्फ और मिठाई लाने के लिए भेजती है। विशवनाथ मुसकराकर व्यंग्य में कहता है—**''कहो, अब?''** इस पर रेवती कहती है—**''अब क्या—मैं खाना बनाऊँगी, भैया भूखे नहीं सो सकते''**

और यहीं पर एकांकी समाप्त हो जाता है।

3. 'नए मेहमान' एकांकी के मुख्य पात्र विश्वनाथ है। वह आधुनिक नगरों में रहनेवाले मध्यमवर्गीय नागरिकों का प्रतिनिधित्व करता है। उसकी चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—**1. उदार युवक**—विश्वनाथ मध्यमवर्गीय उदार युवक है। वह नौकरी करता है और अपने सीमित साधनों से अपने परिवार का पालन-पोषण करता है। वह उन सभी समस्याओं से ग्रस्त है, जो आधुनिक नगरों में सीमित साधनोंवाले व्यक्तियों को सहन करनी पड़ती हैं, किंतु वह उन सबको सरलता के साथ सहता है। वह अपनी पत्नी के साथ ठीक प्रकार निर्वाह करता है और अपने अपरिचित मेहमानों के आ जाने पर भी झुँझलाता नहीं है।

2. विनम्र स्वभाव—विश्वनाथ संकोची और विनम्र स्वभाव का नवयुवक है। अपनी संकोची प्रकृति के कारण वह अपरिचित मेहमानों से उनका ठीक-ठीक परिचय भी नहीं पूछ पाता और उनकी सेवा में लग जाता है। पड़ोसियों के निर्दयी और अशिष्ट व्यवहार पर भी वह उनसे कुछ नहीं कहता और विनम्रतापूर्वक क्षमा माँग लेता है।

3. मकान की समस्या से दुःखी—विश्वनाथ बड़े शहर में मकान की समस्या से दु:खी है। उसके पास खुला हुआ हवादार मकान भी नहीं है। शहर की भीषण गर्मी में वह अपने दिन उसी मकान में काटता है। मकान की समस्या पर प्रकाश डालता हुआ वह कहता भी है—**मकान मिलता नहीं, आज दो साल से दिन-रात एक करके ढूँढरहा हूँ।**

4. समझौताप्रिय—विश्वासनाथ जानता है कि परिस्थितियों से समझौता करना आवश्यक है। वह हर परिस्थिति से समझौता कर लेता है। नए मेहमानों के आने पर जब उसकी पत्नी सिर में दर्द के कारण खाना बनाने में असमर्थता प्रकट कर देती है तो वह उससे कुछ भी कहे बिना बाजार से खाना लाने को तैयार हो जाता है।

5. अतिथि-सेवक—अपने सीमित आर्थिक साधनों में भी वह अतिथियों की सेवा करने की भावना रखता है। जब जब नन्हेमल और बाबूलाल उसके घर आ ही जाते हैं तो वह कहता है—**कोई भी हों, जब आए हैं तो खाना जरूर खाएँगे, थोड़ा-सा बना लो।**

इस प्रकार 'नए मेहमान' एकांकी का मुख्य पात्र विशवनाथ सभ्य, सज्जन, संकोचशील, सत्कार-पसंद, नम्र और धैर्यशाली व्यक्ति है। एकांकीकार भट्टजी ने उसके चरित्र को कुशलता के साथ उभारा है।

4. **रेवती का चरित्र-चित्रण**

रेवती 'नए मेहमान' एकांकी के प्रमुख पात्र विश्वनाथ की पत्नी है। वह एक मध्यमवर्गीय परिवार की गृहस्वामिनी का प्रतिनिधित्व करती है। एकांकी में उसके चरित्र को इस प्रकार चित्रित किया गया है—**1. परिवार की समस्याओं से दुःखी**—रेवती परिवार की समस्याओं से खिन्न रहती है। उसका बच्चा बीमार है। वह और उसका पुत्र तेज गर्मी से पीड़ित हैं। अपने परिवार की समस्याओं से खिन्न होकर वह झुँझला पड़ती है और कहती है—**जानेकब तक इसे जेलखाने में सड़ना होगा।**

2. पड़ोसी के अशिष्ट व्यवहार से पीड़ित—पड़ोसियों का व्यवहार उसके प्रति अच्छा नहीं है; अत: वह इस बात से दु:खी रहती है। वह लाला की औरत के विषय में अपने पति

विश्वनाथ से शिकायत भी करती है। विश्वनाथ लाला से बात करना चहता है तो वह कहती है—**क्या फायदा? अगर लाला मान भी ले तो वह दुष्ट नहीं मानेगी।**

3. तुनकमिजाज एवं शंकालु—परिस्थितियों ने रेवती को तुनकमिजाज बना दिया है। अपरिचित मेहमानों के आ जाने पर वह खाना नहीं बनाती और उनके प्रति शंका प्रकट करते हुए विश्वनाथ से कहती है—**दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है, फिर खाना बनाना इनके लिए और इस समय? आखिर ये आए कहाँ से हैं?**

4. समझदार स्त्री—रेवती समझदार स्त्री है। विश्वनाथ अपने संकोची स्वभाव के कारण मेहमानों से उनका परिचय पूछने से झिझकता है, परंतु रेवती एक समझदार स्त्री की भाँति विश्वनाथ को बार-बार प्रेरित करती है। आखिर में पता चलता है कि मेहमान भूल से गलत स्थान पर आ गए हैं।

5. भाई के प्रति प्रेम—रेवती को अपने भाई से प्रेम है, इसलिए सिरदर्द होते हुए भी वह उसके लिए खाना बनाने के लिए तैयार हो जाती है और कहती है। ''भैया भूखे नहीं सो सकते। इस प्रकार हम देखते हैं की अपने पति से विपरीत स्वभाववाली रेवती आधुनिक मध्यमवर्गीय नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

5. नन्हेमल और बाबूलाल चाचा-भतीजे हैं और बिजनौर के रहनेवाले हैं। नन्हेमल की उम्र 35 वर्श और बाबूलाल की उम्र 24 वर्ष है। वे कविराज से मिलने के लिए आए हैं, परंतु कविराज का सही पता ज्ञात न होने के कारण 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' कहावत को चरितार्थ करते हुए वे विश्वनाथ के धर में घुस जाते हैं। विश्वनाथ का उनसे कोई भी पूर्व-परिचय नहीं हैं, फिर भी वे बेहिचक तरह-तरह की फरमाइशें करते चले जाते हैं। दूसरों की स्थिति अथवा परेशानी की उन्हें कोई परवाह नहीं है। वे कभी स्नान करने के लिए पानी माँगते हैं और कभी खाने के लिए भोजन।

दोनों ही पूर्णत: स्वार्थी, निर्दयी और लज्जाविहीन हैं। वे अत्यंत वाचाल हैं और हर प्रकार की बात बनाने में माहिर। विशवनाथ जिस किसी का भी नाम उनके सामने लेता है, उसी से वे अपना कोई-न-कोई संबंध बता देते हैं। दोनों का चरित्र लापरवाह और घाघ किस्म के व्यक्तियों के रूप में सामने आता है। उन्हें यही पता नहीं है कि जिसके घर उन्हें जाना है, उसका सही पता क्या है। विश्वनाथ उनसे कविराज का पता पूछता भी है तो वे बार-बार टालते रहते हैं और अपनी वाचालता से विश्वनाथ को बहकाने का प्रयास करते रहते हैं।

इस प्रकार प्रस्तुत एकांकी में नन्हेमल और बाबूलाल का चरित्र आज के युग के स्वार्थी, वाचाल, लज्जाहीन और लापरवाह व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

6. 'नए मेहमान' एकांकी के कथानक बड़े-बड़े नगरों की आवास-समस्य और आनेवाले मेहमानों की गतिविधियों को लेकर लिखा गया है। बड़े-बड़े नगरों में व्यक्ति स्वयं ही सामान्य सुविधाओं से वंचित है। मेहमानों के आगमन पर तो उसकी दशा और भी खराब हो जाती है। इसी तथ्य को रोचक चित्रण इस एकांकी में हुआ है। इस एकांकी के कथानक की समीक्षा इस प्रकार की जा सकती है—**1. सुगठित कथानक**—इस एकांकी की कथावस्तु सुगठित एवं सुव्यवस्थित है। एक के बाद दूसरी घटना इस प्रकार पिरोई हुई है कि उसमें कहीं पर भी शिथिलता नहीं आ सकी है। एकांकी में कोई भी घटना ऐसी नहीं है,जिसे अनावश्यक मानकर

निकाला जा सके। कथानक में प्रवाह है, कहीं पर भी उठहराव का अनुभव नहीं होता। इस प्रकार 'नए मेहमान' एकांकी की कथा सुसंबद्ध, सुगठित और सुव्यस्थित है।

2. स्वाभाविक विकास—'नए मेहमान' एकांकी का विकास बड़े स्वाभाविक ढंग से हुआ है। आरंभ में गर्मी से पीड़ित परिवार की समस्या का आभास मिल जाता है। रेवती की बातों से पड़ोसियों के असहयोग का भी ज्ञान हो जाता है। नन्हेमल और बाबूलाल के अगामन से कथा का विकास होता है। विशवनाथ के संकोच, रेवती के नाक-भौं सिकोड़ने और नए मेहमानों की निर्लज्जता से कथा आगे बढ़ती है। मेहमानों के जाने पर ऐसा लगता है कि कथा ठहर जाएगी, तभी रेवती के भाई का आगमन होता है और कथा में नाटकीय मोड़ आ जाता है। इस प्रकार उस एकांकी की कथा क्रमश: विकसित हुई है।

3. रोचक और जिज्ञासापूर्ण संक्षिप्त कथानक—'नए मेहमान' एकांकी का कथानक रोचक और जिज्ञासापूर्ण है। नये मेहमानों द्वारा दरवाजा खटखटाए जाने पर ही यह जिज्ञासा बढ़ जाती है कि इतनी भयंकर गर्मी में कौन आ गया है। फिर नए मेहमानों के अपरिचय के कारण भी जिज्ञासा बनी रहती है। इस प्रकार संक्षिप्त-सी कथा में पाठकों का कौतूहल बना रहता है।

4. संकलन-त्रय का निर्वाह—इस एकांकी में संकलन-त्रय का पूर्ण निर्वाह हुआ है। पूरा एकांकी एक ही कमरे में तथा मात्र आधे घंटे में भोगे गए यथार्थ का नाटकीय चित्रण करता है।

निष्कर्ष—इस प्रकार यह एकांकी कथानक की दृष्टि से एक सफल एकांकी है। इसका कथानक, स्वाभाविक, सुसंबद्ध, रोचक, प्रभावशाली, स्पष्ट, संक्षिप्त और कौतूहलपूर्ण है।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए**
  विश्वनाथ : ओफ, बड़ी .... सड़ना होगा।

उत्तर–

(i) उपर्युक्त गद्यांश में नायक विश्वनाथ और उसकी पत्नी रेवती गर्मी के कारण परेशान है।

(ii) रेवती का गर्मी से सिर फट रहा है और वह बेचैन हैं।

(iii) **सारांश–**विश्वनाथ गर्मी से परेशान होकर पंखा जोर-जोर से करने लगता है। वह कहता है कि ये मकान तो किसी भट्ठी की तरह तप रहा है। तभी उसकी पत्नी रेवती गर्मी से परेशान, आँचल से पसीना पोंछती हुई आती है। उसका सिर दर्द कर रहा है। वे बेचैन होकर कहती है कि साँस बंद हो रही है। विश्वनाथ पानी पी-पीकर परेशान है, लेकिन उसकी प्यास नहीं बुझती। वह रेवती से पानी माँगता है। रेवती बताती है कि पानी गरम है। आँगन के घड़े में रखा पानी भी हवा न चलने से गर्म हो गया हैं। वह अपने घर को जेलखाने के समान बताती है।

(iv) रेवती घर को जेलखाना कह रही है।

3 सेठ गोविन्दास (व्यवहार)

(जन्म : सन् 1896 ई० - मृत्यु : सन् 1974 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के तीन उत्तर लिखे हुए हैं, सही उत्तर के सम्मुख सही (✓) का निशान लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (क) **6.** (क) **7.** (ग) **8.** (ख) **9.** (क) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (ख) **13.** (ख) **14.** (ग)

अभिकथन-करण सम्बन्धित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

कूट आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित में से जमींदार के खिलाफ किसानों को भड़कान के लिए जिम्मेदार है?

उत्तर– (ख) (ii) व (iii)

2. निम्नलिखित में से क्या व्यवहार एकांकी का दूसरा दृश्य है?

उत्तर– (क) केवल (i)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

1. चूरामन के पुत्र का नाम ____________ था।

उत्तर– (ख) क्रांन्तिचन्द्र

2. क्रान्तिचन्द्र के अनुसार जमींदार ____________ दावत देता था।

उत्तर– (ग) व्यवहार के लिए

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए**

उत्तर– (घ) (ii) (i) (iv) (iii)

सत्य/असत्य कथन

- **व्यवहार एकांकी में 'नर्मदाशंकर' के चरित्र के विषय में कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (ग) (ii) व (i) (d) (iv)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

1. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य

2. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर— **1.** छात्र स्वयं करें। **2.** छात्र स्वयं करें। **3.** छात्र स्वयं करें।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर—

1. 'व्यवहार' ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित सामाजिक एकांकी है।
2. 'व्यवहार' एकांकी के लेखक का नाम सेठ गोविंददास है।
3. 'व्यवहार' एकांकी के दो प्रमुख पात्रों के नाम हैं—1. रघुराज सिंह, 2. क्रांतिचंद्र।
4. 'व्यवहार' एकांकी के जमींदार का नाम रघुराज सिंह है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर—

1. **'व्यवहार' शीर्षक की उपयुक्तता**—शास्त्रीय दृष्टि से एक उपर्युक्त शीर्षक में तीन विशेषताओं का होना आवश्यक है—1. कथानक का संकेतक होना, 2. संक्षिप्त होना, 3. कौतूहलवर्द्धक होना।

   इस दृष्टि से 'व्यवहार' एकांकी का शीर्षक सब प्रकार से उपयुक्त है; क्योंकि यह कथानक का संकेतक है। इसके नाम से ही प्रतीत होता है कि इसका कथानक किसी प्रकार के व्यवहार पर आधारित है। वास्तव एकांकी का आरंभ 'व्यवहार' लेने की कशमकश से होता है और उसका अंत भी उसी से होता है। एकांकी में 'व्यवहार' (विवाह आदि अवसरों पर दिया जानेवाला उपहार) ही जमींदार रघुराजसिंह के व्यवहार को परिवर्तित कर देता है और वह जमींदारी की तौक अपनेगले से निकालकर किसानों का सच्चा हितैषी बनकर अपना जीवन व्यतीत करने का निर्णय लेता है। 'व्यवहार' एक शब्द का शीर्षक है; अत: संक्षिप्तता की विशेषता भी इसमें उपस्थित है।

   कौतूहलवर्द्धकता का गुण भी इस शीर्षक में है; क्योंकि शीर्षक को पढ़कर ही मन में यह कौतूहल उत्पन्न होता कि न जाने इस एकांकी में किस प्रकार के व्यवहार को एकांकीकार चित्रित करना चाहता है। यह उत्सुकता एकांकी में अंत तक बनी रहती है कि जमींदार रघुराजसिंह व्यवहार लेगा अथवा नहीं। किसान लोग विवाह की दावत में सम्मिलित होंगे अथवा नहीं, क्योंकि वे जमींदार को व्यवहार नहीं देना चाहते। किसान प्रतिनिधि क्रांतिचंद्र की दावत के निमंत्रण को अस्वीकार करने की चिट्ठी पानेके पशचात भी एकांकी में कौतूहल बना रहता है। यह कौतूहल एकांकी की समाप्ति पर जमींदार के इस संवाद के साथ ही समाप्त होता है। **''...... या जमींदारी की तौक को गले से निकाल, जिनके हित की मैं डींग मारता हूँ,उनहीं का-सा हो,उन्हीं के सच्चे हित में अपना जीवन ...... अपना जीवन व्यतीत कर दूँ।''**

   इस प्रकार 'व्यवहार' शीर्षक ही इस एकांकी के लिए सर्वथा उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त इसका और कोई उपयुक्त शीर्षक हो ही नहीं सकता।
2. जब तक देश के मजदूर-किसान शिक्षित और संगठित नहीं होंगे, तब तक इनका शोषण होता

रहेगा। स्वयं शोषक वर्ग को भी उनकी परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए रघुराजसिंह की भाँति उनके कल्याण के लिए आगे आना चाहिए, यही संदेश देना एकांकीकार का मुख्य उद्देश्य रहा है। लेखक का मानना है कि 'व्यवहार' लेने की परंपरा के लिए यह भी आवश्यक है कि 'व्यवहार' के आकांक्षी लोगों पहले अपने व्यवहार में परिवर्तन करके उस वर्ग को इस योग्य बनाएँ कि व्यवहार देते समय व्यवहारीजनों को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

3. रघुराजसिंह जमींदार ने किसानों की भलाई के लिए उनका सारा कर्ज माफ कर दिया था। किसानों की जिन जमीनोंपर ज्यादा लगान था, उनका लगान घटा दिया था। गरीब किसानों को बिना कोई नजराना लिए जमीनें दी थीं।

4. क्रांतिचंद्र ने शिक्षित, बुद्धिमान, तार्किक युवा और किसानों के हितैषी के रूप में विरोध किया है।

5. रघुराजसिंह को किसानों का हित करने के लिए अपने पूर्वजों द्वारा अपनाई जोनवाली शोषणपूर्ण कार्य पद्धति को त्यागकर किसानों की भलाई के कार्य करने होंगे और किसानों को यह विश्वास दिलाना होगा कि वह उनका शत्रु नहीं बल्कि शुभचिंतक है। उसे किसानों को यह विश्वास दिलाना होगा कि उसके द्वारा किए जानेवाले कार्य स्वयं की स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं, बल्कि किसानों के हित के लिए हैं। उसे किसानों को समानता का अधिकार देना होगा और किसानों के हित में निरंतर प्रयत्नशील रहना होगा, जिससे किसान उस पर विश्वास कर सकें।

6. 'व्यवहार' एकांकी के अनुसार भोज में आमंत्रित व्यक्ति जमींदार के सम्मान में जो कुछ भी अर्थात् अधिक से अधिक रुपया-पैसा उपहार-स्वरूप जमींदार को देता है, उसे ही व्यवहार कहा जाता है।

7. छात्र स्वयं करें।

8. रघुराजसिंह किसानों को समानता का अधिकार देना चाहता है रघुराजसिंह अपनी बहन की शादी में सभी किसानों व मजूदरों को सपरिवार बुलाता है जबकि उसके पूर्वज अपने परिवार की शादियों में केवल चुने हुए घरों के केवल पुरुषों को बुलाया जाता था। वह अपने मैनेजर से अपनी बहनके विवाह में आने वाले किसी भी व्यक्ति से व्यवहार न लेने की बात कहता है। वह किसानों का सारा कर्ज माफ कर देता है और जमीनों का लगान घटाता है तथा बिना नजराना लिए जमीन देता है। ये कार्य उसके किसी पूर्वज ने कभी नहीं किए थे।

दीर्घ उत्तरीयप्रश्न (समीक्षात्मक प्रश्न)

उत्तर—

1. **जीवन परिचय**—सेठ गोविन्ददास का जन्म सन् 1896 में मध्य प्रदेश राज्य के जबलपुर शहर में हुआ था। उन्होंने घर पर रहकर ही हिंदी और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। इनके घर का वातावरण आध्यात्मिकता की भावना से परिपूर्ण था। गोविंददासजी को नाटक और श्रीकृष्ण-लीलाओं को देखने का विशेष शौक था। नाटक लिखने की प्रेरणा भी इन्हें यही से प्राप्त हुई। साहित्य में रुचि होने के साथ ही अपने देश के स्वाधीनता आंदोलन मेंभी सक्रिय रूप से भाग लिया और अनेक बार जेल गए। आपका अधिकांश जीवन राजनैतिक सक्रियता में ही व्यतीत हुआ। आपने अपनी अधिकांश रचनाएँ जेल में ही लिखीं। सन् 1974 में आपका

निधन हो गया।

कृतित्व—आपने अधिकांशत: नाटक एवं एकांकियों की रचना की। नाटक लिखने में आपकी प्रारंभ से ही रुचि थी। 'विशव प्रेम' आपके द्वारा लिखा गया सर्वप्रथम नाटक है। आपके नाटक पाश्चात्य नाटयशास्त्र से भी प्रभावित हैं। पाश्चात्य नाटककार बर्नार्ड शाँ, इब्सन व ओ'निल की नाटय-शैलियों का आपके नाटकों पर विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है, फिर भी आपके नाटकों की मुख्यधारा भारतीयता पर ही आधारित है। आपके द्वारा लिखे गए एकांकियों की भाशा पात्रानुकूल है व पात्र-चयन सार्थक बन पड़ा है। एकांकियों के कथानक जीवंत एवं प्रभावपूर्ण हैं। रंगमंच की दृष्टि से भी आपके एकांकी पूर्णत: सफल सिद्ध हुए हैं। 'कर्तव्य', 'हर्ष' और 'प्रकाश' इनके द्वारा लिखे गए प्रसिद्ध एकांकी हैं। सेठ गोविन्नदास ने सौ से अधिक एकांकियों की रचना की उनके समस्त एकांकी 'गोविनन्दास ग्रन्थावली' में संकलित है।' इसके अतिरिक्त इनके प्रमुख एकांकी संग्रह हैं—'पंचभूत', 'अष्टदल', 'एकादशी' और 'आश्बीती-जगबीती'।

सेठ गोविन्द दास के जीवन और कृतियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2. 'व्यवहार' एकांकी की कथावस्तु (सारांश)

'व्यवहार' पूँजीपति (जमींदार) और किसान-मजदूर वर्ग के संघर्ष और उससे उपजे अंतर्द्वंद्व को चित्रित करता एकांकी है। सेठ गोविंददास के इस एकांकी में सर्वथा नवीन बता यह है कि इसमें जमींदार वर्ग की युवा पीढ़ी को गरीब किसान-मजदूरों के हित का चिंतन करते दिखाया गया है। एकांकी तीन दृश्यों में विभाजित है, इसकी कथावस्तु का सार इस प्रकार है—

प्रथम दृश्य जमींदार रघुराजसिंह के महल की बालकनी से आरंभ होता है। वह 25 वर्ष की आयु का युवा है। उसने अपनी बहन के विवाह की दावत में अपनी जमींदारी के अंतर्गत आनेवाले सभी किसाना-मजदूरों को सपरिवार बुलाया है। उसे आनेवाले किसानों की संख्या का ठीक-ठीक अनुमान नहीं है; अत: वह दावत की व्यवस्था को लेकर थोड़ा चिंतित दिखता है। इसलिए वह अपने 65 वर्षीय मैनेजर नर्मदाशंकर से दावत में आनेवाले लोगों की संख्या के विषय में पूछता है। नर्मदाशंकर दावत में आनेवाले लोगों की संख्या पच्चीस हजार बताते हुए कहता है कि पहले की शादियों में केवल चुने हुए घरों के केवल मर्दों को बुलाया जाता था कि पहले का निर्णय लाभ का सौदा हुआ करता था और अब आपका यह निर्णय घाटे का सौदा है; क्योंकि पहले प्रत्येक घर से जो एक आदमी दावत खाने आता था, उसपर मुश्किल से चार आना का खर्च आता था और वह व्यवहार मेंकम-से-कम एक रुपया देकर जाता था। कुछ लोग दो, चार, पाँच, सात, ग्यारह और इक्कीस रुपये तक देकर जाते थे। इस बार की दावत में खानेवाले अधिक आएँगे और व्यवहार देनेवाले कम। इसी क्रम में मैनेजर जमींदार केकिसानों के साथ सारा कर्ज माफ करने, जमीनों का लगान घटाने औरबिना नजराना लिए जमीन देने केनिर्णयों को भी अनुचित बताता है। रघुराजसिंह दावत में आनेवाले किसी भी व्यक्ति व्यवहार न लेने की बात कहता है तो मैनेजर स्तब्ध रह जाता है।

द्वितीय दृश्य गाँव के एक मकान के कोठे से आरंभ होता है, जहाँ बहुत-से किसान बैठे हैं, जो भिन्न-भिन्न अवस्थाओं के हैं। इन्हीं में 22-23 वर्ष का एक युवा है, देखने में वह किसान नहीं लगता। वह 60 वर्षीय किसान चूरामन का बेटा क्रांतिचंद्र है। ये लोग इस बात का निर्णय

करने के लिए किसान-मजदूरों के प्रतिनिधि के रूप में एकत्र हुए हैं कि जमींदार रघुराजसिंह की दावत के निमंत्रण को स्वीकार किया जाए अथवा अस्वीकार। क्रांतिचंद्र इस बात से क्षुब्ध है कि निर्णय लेने में इतनी देर क्यों की जा रही है, जबकि दावत का समय नजदीक आता जा रहा है। क्रांतिचंद्र निमंत्रण को अस्वीकार करना चाहता है; क्योंकि उसे स्वीकारकरना किसान-मजदूरों का अपमान है। उसे मालूम है कि दावत खानेके लिए जानेवालों का कैसा अपमान किया जाता है। उन्हें खाने में चोकर की पूड़ियाँ, जो कि नाली के गंदे-सड़े पानी जैसे तेल में तली जाती हैं, दी जाती हैं। उन्हें घुड़साल में बैठाकर खाना खिलाया जाता है, जहाँ घोड़ों के मूत्र और लीद की दुर्गंध से लोगों को बुरा हाल रहता है। फटी हुई पत्तलों और फूटे सकोरों में उन्हें भोजन परोसा जाता है और उसके पशचात उनसे दुर्व्यवहार के साथ व्यवहार के रुपये की वसूली की जाती है।

क्रांतिचंद्र की बात का उसका पिता चूरामन विरोध करता है; क्योंकि उसका मानना है कि यदि निमंत्रण अस्वीकार कर दिया जाएगा तो जमींदार नाराज हो जाएगा और उसका दंड सभी को भुगतना पड़ेगा। नाराज होकर यदि जमींदार किसानों को बेदखल कर देगा अथवा लगान बढ़ा देगा तो सभी के सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो जाएगा। कुछ अन्य किसान भी चूरामन की बात का समर्थन करते हैं और जमींदार द्वारा किए गए उपकारों का स्मरण उसे कराते हैं। क्रांतिचंद्र उन्हें कर्ज माफी, लगान कम करने, बिना नजराना लिए जमीन देने के उपकारों की असलियत तथ्यों सहित बताता है कि जमींदार ने ये उनके ऊपर उपकार नहीं किए हैं, वरन् अपना खजाना भरने के लिए उपाय सोचे हैं। यही बात सबको दावत का निमंत्रण देने की है। जमींदार खिलाएगा चार आना का और प्रत्येक व्यक्ति से वसूलेगा चार-चार रुपया। इस प्रकार क्रांतिचंद्र दावत के निमंत्रण को स्वीकार करने को किसान-मजदूरों का अपमान सिद्ध कर उसे अस्वीकार करने हेतु वहाँ से निकल जाता है। इससे सभी स्तब्ध रह जाते हैं।

एकांकी का तृतीय दृश्य जमींदार रघुराजसिंह की बालकनी से ही आरंभ होता है। रघुराजसिंह बेचैन बालकनी में घूम रहा है, तभी उसका मैनेजर नर्मदाशंकर किसान-प्रतिनिधि क्रांतिचंद्र की एक चिट्ठी हाथ मेंलिए बदहवास-सा वहाँ आता है और रघुराजसिंह को वह चिट्ठी दे देता है। वह चिट्ठी किसानों द्वारा निमंत्रण को अस्वीकार करने से संबंधित है,जिसे पढ़कर रघुराजसिंह का सिर शर्म से झुक जाता है। मैनेजर नर्मदाशंकर इसे किसानों की बदमाशी बताता है। यह किसानों द्वारा जमींदार को बेइज्जत करनेवाला कार्य हे। रघुराजसिंह क्रांचिंद्र की बातें ठीक मानता है—''मेरी गलती थी, जो मैं यहसमझता था कि किसानों का मैं हित कर सकता हूँ। जमींदार रहते हुए कोई जमींदार किसानों का हित नहीं कर सकता। मुझे ..... तो अब दूसरी ही बात सोचनी है।'' और अंतत: वह जमींदारों की तौक गले से निकलकर किसानोंके सच्चेहित में अपना जीवन व्यतीत करने का निर्णय लेता है। यहीं यवनिका के साथ एकांकी का अंत होता है।

3. 'व्यवहार' एक समस्यात्मक सामाजिक एकांकी है। इसमें जमींदारी प्रथा के अंतर्गत गरीब मजदूर-किसानों के जमींदारों द्वारा किए जाने वाले शोषण की समस्या का प्रकाश डाला गया है। समस्या के प्रस्तुतीकरण और उसके समाधान को भली-भाँति स्पष्ट करने के लिए कथावस्तु को तीन दृश्यों में विभक्त किया गया है। प्रथम दृश्य, जो कि जमींदार रघुराजसिंह

के महल से आरंभ होता है, में किसानों की शोषण की समस्या और जमींदारों की शोषण वृत्ति का परिचय कराया गया है। द्वितीय दृश्य गाँव के किसी किसान के कोठे से आरंभ होता है, जिसमें युवा किसान-नेता क्रांतिचंद्र की उपस्थिति में शोषण से मुक्ति के लिए राजनीति पर विचार-विमर्श होता है। तृतीय दृश्य पुनः जमींदार के महल में संपन्न होता है, जिसमें समस्या का समाधान प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार संपूर्ण एकांकी में दो सैटों का विधान है। इस एकांकी के कथा-संघटन की विशेषताएँ इस प्रकार हैं—**1. सुसंगठित कथावस्तु**—एकांकी की कथावस्तु अत्यंत सुगठित और व्यवस्थित है। कहीं पर भी अव्यवस्था दृष्टिगत नहीं होती, जिस कारण पूरी कथा तेजी के साथ आगे बढ़ती है। यद्यपि कथानक तीन दृश्यों में विभक्त है, तथापि तीनों दृश्य एकसूत्र में पिरोए लगते हैं, पूरी तरह अगली कड़ी के रूप में एक-दूसरे से संबद्ध। यह एकांकीकार के कथा-संघटन के कौशल का ही प्रमाण है कि तीनों दृश्यों में से किसी भी अंश को हटाना संभव नहीं है।

2. स्वाभाविक विकास—एकांकी के माध्यम से कथावस्तु के रूप में जिस समस्या को प्रस्तुत किया गया है, उसका यहाँ स्वाभाविक विकास दर्शाया गया है। प्रथम दृश्य में युवा जमींदार रघुराजसिंह और उसके मैनेजर नर्मदाशंकर के वार्त्तालाप के माध्यम से किसानों के शोषण की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। यह एकांकीकार के कथा-कौशल का ही परिचायक कि प्रथम दृश्य में ही उसने जमींदार रघुराजसिंह को किसानों केप्रति नम्र दिखाकर समस्या के समाधान के बीज बो दिए हैं। द्वितीय दृश्य में युवा किसान-नेता क्रांतिचंद्र, उसके पिता चूरामन और किसानों के वार्त्तालापके माध्यम से शोषण के विरुद्ध की जानेवाली क्रांति की रूपरेखा तैयार करने के साथ-साथ जमींदार के लुभावने निर्णयों का विश्लेषण किया गया है कि जमींदार ने जो किसान के हित में निर्णय लिए हैं, वे वास्तव में उसके अपने हित में लिए निर्णय हैं। अंततः जमींदार के विरोध में सर्वसम्मति न बनती देख क्रांतिचंद्र विरोध की बात कहकर सभा से चला जाता है। यह कथा का चरमबिंदु है। तृतीय दृश्य में जमींदार रघुराजसिंह को जब उसका मैनेजर नर्मदाशंकर दावत के निमंत्रण को अस्वीकार करने-संबंधी क्रांतिचंद्र की चिटठी लाकर देता है तो वह सन्न रह जाता है। यह कथा का उतार (ढलान) है। अंततः जमींदार रघुराजसिंह द्वारा जमींदारी की तौक गले से निकल फेंकने के निर्णय के साथ समाधान के रूप में एकांकी की कथा का समापन हो जाता है।

3 कौतूहल—कौतूहल एकांकी के कथानक का मुख्य गुण है। एकांकीकार ने कथावस्तु का संघटन इस रूप में किया है कि एकांकी में आद्योपांत कहीं भी कौतूहल का ह्रास नहीं हो पाया है। प्रथम दृश्य में लगता है कि रघुराजसिंह अपने मैनेजर की बात मानकर किसान-हित में लिए गए निर्णय वापस ले लेगा और बहन के विवाह की दावत के संबंध में भी वह अपनी परंपरागत परिपाटी का ही पालन करेगा। द्वितीय दृश्य में लगता है क्रांतिचंद्र अपने पिता और अन्य किसानों के आगे विवश होकर जमींदार के विरोध की बात से पीछे हट जाएगा। उसका क्षुब्ध होकर सभा से निकल जाना कौतूहल को चरम पर पहुँचा देता है कि अब न जाने क्या होगा। तृतीय दृश्य में भी निकल जाना कौतूहल को चरम पर पहुँचा देता है कि अब न जाने क्या होगा। तृतीय में भी अंतिम संवाद तक कौतूहल बना रहता है, जिस कारण एकांकी अत्यंत रोचक बन गया है।

4. संकलन-त्रय—एकांकी के कथावस्तु के समायोजन में संकलन त्रय बहुत महत्वपूर्ण तत्व हैं; क्योंकि इसके अभाव में एकांकी अभिनेय के स्थान पर पठनीय रह जाता है। समय, स्थान और वातावरण की एकता (सामंजस्य) ही संकलनत्रय है। इस एकांकी में सेठ गोविंददास ने संकलनत्रय का लगभग पूर्णत: पालन किया है। स्थान के रूप में कुछ गतिरोध माना जा सकता है, किंतु दोनों दृश्यों के स्थान के अनुरूप आसानी से सेट तैयार किए जा सकते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सेठ गोविंददास द्वारा रचित 'व्यवहार' एकांकी की कथावस्तु सजीव, स्वाभाविक, संक्षिप्त और स्पष्ट है। एकांकी में अंत तक कौतूहल बना रहता है। अत: कथावस्तु के दृष्टिकोण से यह एकांकी पूर्णत: सफल है।

4. जमींदार रघुराजसिंह के चरित्र की विशेषताएँ

रघुराजसिंह 25 वर्ष की आयु का युवा जमींदार है। वह गौरवपूर्ण, ऊँचा-पूरा किंतु दुबला सुंदर मनुष्य है। शिक्षित होने के साथ-साथ उसमें नए जमाने की नई सोच भी है। जमींदार होने के बाद भी उसमें किसानों के हित-चिन्तन की नई विचवारधारा विद्यमान है। उसके चरित्र की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं—**1. बुद्धिमान**—जमींदार रघुराज बुद्धिमान व्यक्ति है। यह उसकी बुद्धिमानी ही है कि वह कुछ ऐसे निर्णय लेता है, जो देखने में तो किसान-हितकारी लगते हैं, किंतु उनसे किसानों काहित कम और उसका अपना हित अधिक सधता है। जैसे—किसानों से नजराना लिए बिना जमीनें उठाना देखने में किसान हितकारी निर्णय अवश्य लगता है,और कुछ किसान-हितकारी है भी, किंतु उसके इस निर्णय से उसकी वार्षिक आय में पच्चीस हजार रुपयों की वृद्धि हुई है। इस प्रकार उसका यह निर्णय उसका अपना हितकारी अधिक है। किसानों की वाहवाही वह मुफ्त में प्राप्त करता है।

2. समानता का पक्षपाती—आधुनिक युग की नई रोशनी में जीनेवाला रघुराजसिंह व्यक्ति-व्यक्ति में भेद नहीं मानता। यही कारण है कि वह अपनी बहन के विवाह की दावत में छोटे-बड़े सभी किसानों को एक-समान रूप में परिवारसहित आमंत्रित करता है, जबकि इससे पहले ऐसे समारोहों में सिर्फ चुनिंदा किसानों को परिवारसहित बुलाया जाता था। बाकी किसानों में से घर-पीछे एक आदमी को दावत में बुलाया जाता था।

3. स्पष्टवादी—जमींदार रघुराजसिंह स्पष्टवादी युवा है। वह स्पष्ट बात कहनेमें कभी नहीं चूकता, भले ही वह बात उसके अपने परिवार अथवा कुल की परंपरा के विपरीत ही क्यों नहो। उसकी दृष्टि में जो बात सही है, वह सही और जो गलत है, गलत ही है। इसीलिए वह अपने पूर्वजों की इस बात को गलत मानता है कि विवाह-समारोह जैसे अवसरों पर दी जाने वाली दावत है में भी छोटे-बड़े का भेदभाव किया जाए। वह इस संदर्भ में अपने मैनेजर नर्मदाशंकर से साफ-साफ कहता है—**''पर यह गलत बात थी, मैनेजर साहब! सिर्फ मर्दों को, और वह भी चुने हुए घरों के तथा घर-पीछे एक ही आदमी को बुलानेका क्या अर्थ है?''**

4. दूसरों का सम्मान करनेवाला—रघुराजसिंह यद्यपि जमींदार है, फिर भी वह छोटे-बड़ों का मान-सम्मान करना जानता है, भले ही वह उसका कर्मचारी ही क्यों नहो। वह अपने मैनेजर नर्मदाशंकर का खूब सम्मान करता है। जब वह दावत के संदर्भ में घर-पीछे से एक आदमी को बुलाने का अर्थ नर्मदाशंकर से पूछता है तो नर्मदाशंकर उससे माफ करने की बात

कहकर सब कुछ बाताना चाहता है। इस पर वह नर्मदाशंकर से कहता है—"**आप मेरे पिताजी के समय सेकाम कर रहे हैं, शायद चालीस वर्ष आपको कम करते-करते बीत गए। मैं आपके सामने पैदा हुआ पिताजी की मृत्यु के बाद मेरी नाबालगी में आपनेही कुल काम किया, आज भी आपही मैनेजर हैं; आपको मैं अपना बुजुर्ग मानता हूँ; आपको कोई बात कहने से पहले माफी माँगने की जरूतर है।**" इसके अतिरिक्त वह क्रांतिचंद्र से उस समय भी नाराज नहीं होता, जब वह उसकी दावत के निमंत्रण को अस्वीकार करने की चिट्ठी भेजता है।

5. सहिष्णु—अपने संदर्भ में कहीं गई कटु बात अथवा अपने निर्णयों की आलोचना को धैर्यपूर्वक सुनने की योग्यता रघुराजसिंह में है। यही कारण है कि वह अपने मैनेजर नर्मदाशंकर से अपने एक-एक निर्णय के औचित्य के संदर्भ में पूछता है और नर्मदाशंकर उसके प्रत्येक निर्णय को गलत ठहराता है। अपने सभी निर्णयों के गलत होने की आलोचना को वह शांति सेसुनता है। एकांकी के अंत में क्रांतिचंद्र द्वारा भी अपनी आलोचना किए जाने पर वह विचलित नहीं होता और उसकी आलोचना के अनुरूप स्वयं को परिवर्तित करने का निर्णय करता है। ये सब बातें उसके सहिष्णु होने को दर्शाती है।

6. गतिशील व्यक्तित्व—जमींदार रघुराजसिंह का व्यक्तित्व अत्यंत गतिशील है। उसका उत्तरोत्तर विकास एकांकी में दिखाया गया है। अंतत: वह उचित का पक्ष लेता हुआ अपनी जमींदारी प्रवृत्ति को त्यागकर सच्चे किसान-हितैषी का जीवन व्यतीत का निर्णय लेता है—**पर .... पर ...... मैनेजर साहब, किसानों के प्रतिनिधि क्रांतिचंद्र ने ठीक से लिखा है-"भक्षक और भक्ष्य का कैसो व्यवहार?" ..... जमींदार रहते हुए कोई जमींदार किसानों का हित नहीं कर सकता। मुझे..... तो अब दूसरी ही बात सोचनी है। ...... इस जमींदारी की तौक को गले से निकाल, जिनके हित की मैं डींग मारता हूँ, उन्हीं का-सा हो, उन्हीं के सच्चे हित में अपना जीवन .... अपना जवीन व्यतीत कर दूँ।**

इस प्रकार हम देखते हैं कि रघुराजसिंह जन्म से जमींदार अवश्य है, किंतु चरित्र में जमींदारोंवाली शोषक सोच नहीं है। वह तो समत्व का पोषक है, निर्धनों का पालक है। उसका चरित्र एक आदर्श समाजवादी की विशेषताओं से युक्त है। एकांकीकार ने उसके चरित्र का विकास बड़ी निपुणता से किया है।

5. क्रांतिचंद्र का चरित्र-चित्रण

'व्यवहार' एकांकी में जमींदार रघुराजसिंह और किसान प्रतिनिधि क्रांतिचंद्र दो ही मुख्य पात्र हैं। दोनों ही युवा पात्रों को नायक की श्रेणी में रखा जा सकता है, किंतु एकांकी का फल क्रांतिचंद्र को प्राप्त होता है; वही एकांकी का नायक है। उसका चरित्र-चित्रण अग्रांकित शीर्षकों के अंतर्गत किया जा सकता है—**1. साहसी और शिक्षित युवा**—क्रांतिच्रंद 22-23 वर्ष का अत्यंत साहसी और शिक्षित युवा है। वहकिसान चूरामन का बेटा है। वह जमींदार द्वारा किए जाने वाले किसानों के शोषण को रोकने के लिए कटिबद्ध है। वह नहीं चाहता है कि किसान जमींदार के द्वारा भेजे गए दावत के निमंत्रण को स्वीकार करके उसे व्यवहार के रूप में धन दें। अभी तक कोई भी किसान जमींदार का विरोध करने का साहस नहीं जुटा पाया है; क्योंकि सभी को जमींदार के नाराज होने का भय है। वह जमींदार के निमंत्रण को

अस्वीकार करके अपने साहस का परिचय देता है।

2. स्वतंत्रता का पोषक—किसी के अधीन रहना क्रांतिचंद्र को पसंद नहीं है, इसीलिए वह अपने नाम के साथ 'प्रसाद' अविा 'दास' जैसे उपनाम भी नहीं लगाना चाहता; क्योंकि ये उपनाम उसे दीन-हीनता के प्रतीक लगते हैं। यही कारण है कि जब उसका पिता चूरामन उसे रेवाप्रसाद कहकर पुकारता है तो वहक्रोधित होकर अपने पिता से स्पष्ट कह देता है—''**मेरा नाम रेवाप्रसाद नहीं है, पिताजी मैंने कई बार आपसे कह दिया, मैंन किसी का प्रसाद हूँ, न किसी का दास**'' वह स्वयं तो आजाद रहना ही चाहता है, सभी किसानों को भी अज्ञान के अंधकार से निकालकर प्रकाश में लाकर वह उनहें जमींदार के शोषण से मुक्ति दिलाना चाहता है, तभी तो वह अपने पिता से कहता है—''**अंधकार में रहने वाले व्यक्ति को यदि प्रकाश में ले आया जाय तो प्रकाश में लानेवाला कोई भूल नहीं करता।**''

3. भूलों से सीखनेवाला—क्रांतिचंद्र भूलों से सीख लेनेवाला युवा है, इसका मानना है कि जो लोग भूलों से सीख नहीं लेते, वे अंततः दुर्दशा को प्राप्त होते हैं। वह किसानों की दुर्दशा का भी यही कारण मानना है कि वे अपनी भूलों से सीा नहीं लेते—''**पर भूल पर भूल और उस पर भी भूल। भूलों की झड़ियों ने ही तो हमारी यह दशा कर दी है। भूल की बातों में भूल होना सबसे बड़ी भूल है।**''

4. स्वाभिमानी—क्रांतिचंद्र उन लोगों में है, जो स्वाभिमान के साथ विष पी सकते हैं, किंतु अपमान के साथ जिन्हें अमृत भी स्वीकार्य नहीं। उसका पिता चूरामन और अन्य किसान जमींदार के दावत के 'निमंत्रण' को अपने लिए बड़ी बात मानते हैं, जबकि क्रांतिचंद्र इसे अत्यंत तुच्छ मानता है; क्योंकि उसे पता है कि किसानों को किस अपमान के साथ दावत खिलाई जाती है। उसे अपने बचपन की उस दावत की यादा ताजा हो उठती है, जब उसने भी ऐसे ही एक निमंत्रण पर अपने पिता के साथ घुड़साल में जमींदार के यहाँ दावत खाई थी। घोड़ों की लीद-मूत्र की दुर्गंध से नाक सड़ी जाती थी।

5. निर्भीक—सत्य को सत्य कहने से क्रांतिचंद्र बिल्कुल भयभीत नहीं होता, इसीलिए वहजमींदारको डाकू, लुटेरा कहने से नहीं चूकता। उसका पिता 'दीवारों के भी कान होते हैं' कहकर उसे चुप कना चाहता है, किंतु वह निर्भीकता के साथ कहता है—''**सच्ची बात कहने में काहे का डर पिताजी? दूसरों के श्रमपर बिना कोई श्रम किए जो तरह-तरह के गुलछर्रे उड़ाते हैं, वे लुटरे नहीं तो क्या हैं? श्रम करनेवाले भूखे और नंगे रहते हैं और ये आरामतलब बिना कोई काम किए अलमस्त। ऐसे लोग खून चूसनेवाले नहीं तो और क्या कहे जा सकते हैं?**''

6. बुद्धिमान् और तार्किक—शिक्षित होने के कारण क्रांतिचंद्र बुद्धिमान् और तार्किक युवा है। किसान जमींदार के कर्ज माफ करने, लगान कम करने और बिना नजराना लिए जमीनें जोतने के लिए देने के निर्णयों से बहुत खुश हैं। वेजमींदार को किसानों का सच्चा हितैषी मानते हैं इसलिए वे उसके दावत के निमंत्रण को ठुकराकर स्वयं को कृतघ्न नहीं कहलाना चाहते। तब बुद्धिमान क्रांतिचंद्र जमींदारके प्रत्येक किसान-हितकारी कार्य के निर्णय का खुलासा करता है कि ये निर्णय किसानों के हित में नहीं लिए गए हैं, बल्कि इनसे जमींदार के ही खजाने में वृद्धि होगी। वह तर्क देकर किसानों को अपनी बात से सहमत कर लेता है।

इसीलिए तो किसान उसका साथ देते हैं और वह जमींदार के निमंत्रण को स्वीकार न करने की चिटठी उसके पास भिजवा देता है। उसका यह कदम जमींदार को सही मार्ग पर ले आता है।

इस प्रकार क्रांतिचंद्र अपने अभियान में सफल होता है। फल की प्राप्ति यद्यपि सभी किसानों को होती है, किंतु उनका नेता होने के कारण वास्तव में उसी को फल की प्राप्ति होती है। इस कारण वह एकांकी का नायक सिद्ध होता है। उसमें कुशल नेता के सभी गुण विद्यमान हैं। वास्तव में आज ऐसे ही नेताओं की आवश्यकता है।

6. **नर्मदाशंकर का चरित्र-चित्रण–**

नर्मदाशंकर जमींदार रघुराजसिंह के स्टेट का मैनेजर है, जिसकी आयु लगभग ६५ वर्ष है। वह 40 वर्षों से रघुराजसिंह के स्टेट का मैनेजर है। जमींदार का हित सोचना ही उसका परम कर्तव्य है। नर्मदाशंकर के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—**1. जमींदारी प्रथा का समर्थक**—नर्मदाशंकर जमींदारी प्रथा का समर्थक है। वह जानता है कि इस प्रथा का अंत हो जाने पर उसका महत्व खत्म हो जाएगा। इसलिए वह चाहता है कि जमींदार रघुराजसिंह व किसानों के बीच द्वंद्व चलता रहे। तभी उसका महत्व बना रहेगा। इसलिए वह रघुराजसिंह को किसानों के विरुद्ध भड़काने का प्रयास करता है।

2. जमींदार रघुराजसिंह का शुभचिंतक—नर्मदाशंकर जमींदार रघुराजसिंह का शुभचिंतक है। वह रघुराजसिंह के किसानों के हित मेंलिए गए फैसलों—कर्ज माफ करना, लगान कम करना, बिना नजराना लिए जमीन देने का विरोध करता है। जब रघुराजसिंह सभी किसानों को भोज पर परिवार सहित आमंत्रित करता है तो रघुराजसिंह की आर्थिक हानि की ओरइशारा करते हुए वह कहता है—''**किसानों का भोज खर्च का नहीं, आमदनीका कारण होता था, वह अब खर्च का कारण हो जाएगा।**''

3. किसानों का विरोधी—नर्मदाशंकर किसानों का प्रबल विरोधी है। रघुराजसिंह किसानों के हित की जो बात सोचता है उसका वह विरोध करता है तथा उनके लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है जिससे रघुराजसिंह के हृदय में उनके लिए दुर्भावना पैदा हो और किसानों के हितों के लिए रघुराजसिंह द्वारा किए गए कार्यों को अनुचित बताते हुए कहता है—"**चोर-चोर मौसेरे भाई, राजा साहब।**''

4. अहंकारी—नर्मदाशंकर एक अहंकारी व्यक्ति है। वह किसानों को हेय दृष्टि से देखता है। किसानों द्वारा भोज-बहिष्कार का निर्णय लेने पर वह रघुराजहिंस से कहता है—''**इन दो कौड़ी के किसानों की यह मजाल! इनकी यह हिम्मत! इनका यह साहस, इनकी यह हिमाकत।**''

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नर्मदाशंकर एक अहंकारी, किसानों का विरोधी और जमींदारी प्रथा का समर्थक है। उसके हृदय में दया, करुणा, सहानुभूति जैसी कोमल भावनाएँ नहीं हैं। उसमें वे सभी गुण विद्यमान हैं जो शोषण करने वाले व्यक्तियों के सहयोगी में होने चाहिए।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  जमींदार और किसान .... कर सकता है?

उत्तर–

(i) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक सेठ गोविन्ददास हैं।

(ii) गद्यांश में लुटेरा और डाकू जमींदार को कहा गया है।

(iii) जमींदार किसानों का शत्रु है।

(iv) किसानों ने बल रहते हुए भी स्वयं को निर्बल मानने की भूल की है।

4 उपेन्द्रनाथ 'अश्क' (लक्ष्मी का स्वागत)

(जन्म : सन् 1910 ई० – मृत्यु : सन् 1996 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के तीन उत्तर लिखे हुए हैं, सही उत्तर के सम्मुख सही (✓) का निशान लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (क) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (ग) **13.** (ग) **14.** (क)

अभिकथन-करण सम्बन्धित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–

(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए चित्र को देखिए और एकांकी के परिप्रेक्ष्य में यह बताइए कि रोशन के माता-पिता उसकी शादी का शगुन क्यों स्वीकार करते हैं जबकि उनका पौत्र मरने की अवस्था में है और स्वयं रोशन इस विवाह के लिए इच्छुक नहीं है।**

उत्तर–रोशन के माता-पिता धन और दहेज के लोभी हैं। वे एक अमीर घर से आए रिश्ते के लिए, अपने मरणासन्न पौत्र और स्वयं रोशन की इच्छा की परवाह नहीं करते हैं। और शगुन स्वीकार कर लेते हैं।

कूट आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित में से सियालकोट के व्यापारी किसका रिश्ता लाए थे?

उत्तर– (ग) केवल (iii)

2. निम्नलिखित में से माँ रौशन को शादी के लिए मनाने को किससे कहती है।

उत्तर– (घ) (iv)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

1. उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का जन्म सन् ____________ को हुआ था।

उत्तर– (ख) 1910

2. रौशन के पुत्र को कौन-सा रोग था?

उत्तर– (ग) डिप्थीरिया

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ग) (ii) (i) (iv) (iii)

सत्य/असत्य कथन

- **रोशन के चरित्र के विषय में कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (ग) केवल (iv)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

  1. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

  2. (क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर— **1.** छात्र स्वयं करें। **2.** छात्र स्वयं करें। **3.** छात्र स्वयं करें।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर—

1. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के प्रमुख पात्र का नाम रौशन है।
2. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के लेखक का नाम उपेंद्रनाथ 'अश्क' है।
3. अश्क जी के एक एकांकी-संग्रह का नाम है—तूफान के पहले।
4. 'लक्ष्मी का स्वागत' एक भावना प्रधान सामाजिक और पारिवारिक एकांकी है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर—

1. प्रस्तुत एकांकी 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का संपूर्ण कथानक लक्ष्मी के स्वागत, अर्थात् दहेज में धन प्राप्त करने की मानसिकता पर ही आधारित है। रौशन के माता-पिता दहेज-लोलुप हैं। उनके पुत्र रौशन की पत्नी की मृत्यु हो चुकी है और उसका एकमात्र पुत्र गंभीर रूप से बीमार है। रौशन इसी कारण बहुत दु:खी है और दूसरे विवाह के लिए बिल्कुल भी इच्छुक नहीं है। रोशन के माता-पिता को उसकी भावनाओं और दु:खद स्थिति की कोई परवाह नहीं है। वे रौशन के प्रति सहानुभूति रखने के स्थान पर,उसे दूसरे विवाह के लिए तैयार करने में

लगे हुए हैं। इनका कारण यह है कि नई वधू का रिश्तो लेकर आनेवाले लोग धनवान् हैं और उनसे दहेज में अधिक धन मिलने की संभावना है। वे किसी भी दशा में घर आती लक्ष्मी कोठुकराने के स्थान पर उसके स्वागत के लिए ही अपना संपूर्ण प्रयास करते दिखई देते हैं। इस प्रकार इस एकांकी का शीर्षक पूर्णत: उपयुक्त है।

2. छात्र स्वयं करें।

3. छात्र स्वयं करें।

4. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी एक सामाजिक एकांकी है। सामाजिक यथार्थ के घटनाक्रम पर आधारित इसका संपूर्ण कथानक भावना प्रधान और अत्यंत मर्मस्पर्शी है।

एकांकी के संपूर्ण कथानक में एक ओर रौशन का चरित्र है, जो अपनी पत्नी के वियोग और पुत्र की गंभीर बीमारी के कारण दु:खी है। पत्नी की मृत्यु के कारण वह घोर अवसाद की स्थिति में उसी की यादों में खोया हुआ है। विगत जीवन की स्मृति आते ही, उसकी मन:स्थिति अत्यंत व्यथापूर्ण हो जाती है। इस घोर पीड़ादायी स्थिति में उसका मित्र उससे सहानुभूति दर्शाता है, परंतु फिर भी वह भावनात्मक दृष्टि से संतुलित नहीं हो पाता और उसे अपना वर्तमान केवल भारस्वरूप ही दिखाई देता है। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद ही उसे एक और दु:खद त्रासदी झेलनी पड़ती है, जब बीमारी के कारण उसका पुत्र मरणासन्न स्थिति में पहुँचजाता है। पुत्र-मोह के कारण उसकी मानसिक दशा पागलों जैसी हो जाती है। पुत्र के इलाज हेतु वह अपने भाई को डॉक्टर के यहाँ दौड़ाता है और किसी भी प्रकार अपने पुत्र को बचा लेना चाहता है।

रौशन के संवादों से उसकी व्यथा का पूर्ण आभास हो जाता है। उसका चरित्र हमारे मन को आंदोलित करदेता है और उसके प्रति करुणा एवं सहानुभूति के भाव जाग्रत हो जाते हैं।

दूसरी ओर रौशन के माता-पिता का चरित्र है, जो अत्यंत निर्दयी, दहेज-लोभी और पाषाण-हृदय लोगों में से हैं। वे अपने बेटे और पोते की दु:खद स्थिति के प्रति पूर्णत: उदासीन हैं। उन्हें अपने बेटे के सुख ओर मरणासन्न पोते की लेशमात्र भी परवाह नहीं हे। उन्हें केवल ऐसी बहू की आवश्यकता है, जो अपने साथ दहेज में ढेर सारा धन लेकर आए। वे सब तरफ से अपनी आँखें बंद किए हुए, अपने बेटे को बलि का बकरा बनाने में लगे हुए हैं। उनका सारा ध्यान केवल इस बात की ओर है कि कब उनका बेटा दूसरे विवाह के लिए हामी भरे। उनकी इस प्रकार की मानसिकता के प्रति पाठक के मन में घोर वितृष्णा के भाव उत्पन्न होते हैं।

इस प्रकार पत्नी एवं पुत्र के प्रति सच्चे प्रेम और दूसरी ओर धन एवं बहू की लालसा को दर्शानेवाला यह भावनाप्रधान एकांकी अत्यंत मर्मस्पर्शी है और भारतीय समाज की यथार्थ मानसिकता का स्पष्ट बोध कराता है।

5. **रंगमंचीयता और अभिनेयता**—अश्क जी कोरंगमंच का विशेष ज्ञान रहा है। इसीलिए उनके सभी एकांकी अभिनय के सर्वथा अनुकूल हैं। प्रस्तुत एकांकी रंगमंच और अभिनय दोनों की दृष्टि से पूर्ण सफल है। इसमें एकांकीकार ने यत्र-तत्र पर्याप्त रंग-संकेत दिए हैं। पात्रों के वार्त्तालाप से पूर्व उनकी मुख-मुद्रा, भंगिमा और उतार-चढ़ाव का उन्होंनेपूर्ण ध्यान रखा है। अभिनेयता की दृष्टि से कथानक सुगठित है। पात्रों की संख्या कम ही है। संवाद सरल व रोचक हैं। भाषा व्यावहारिक है। अश्कजी को ज्ञात है कि कौन-सा पात्र कब, किधर से ओर

किस मुखमुद्रा में आना चाहिए, अत: एकांकी में सीाी निर्देश यथासंभव विद्यमान हैं।

6. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का उद्देश्य

उपेंद्रनाथ अश्क द्वारा रचित 'लक्ष्मी का स्वागत' उनका पर्याप्त चर्चित एकांकी रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य है—पुनर्विवाह की समस्या। रौशन की पत्नी सरला की एक माह पूर्व मृत्यु हो चुकी है। इसलिए रौशन के माता-पिता उसका दूसरा विवाह शीघ्र ही कर देना चाहते हैं; क्योंकि **''अभी तो चार नाते आते हैं, फिर देर हो गई तो इधरकोई मुँह भी न करेगा।''**

प्रमुख उद्देश्य के साथ-साथ कतिपय गौण उद्देश्य भी देखे जा सकते हैं; जैसे—दूषित सामाजिक मान्यताओं व रीति-नीति का चित्रण, मानव की हृदयहीनता व धन-लिप्सा पर व्यंग्य।

एकांकीकार ने माँ के माध्यम से सामाजिक रीति-नीति और मान्यताओं का उल्लेख किया है। रौशन के पुनर्विवाह का समर्थन करती हुई माँ सुरेंद्र से कहती है—**तुम जानते हो बच्चा, दुनिया-जहान का यह नियम है। गिरे हुए मकानकी नींव पर ही दूसरा मकान खड़ा होता है। रामप्रताप ही को देख लो, अभी दाह-कर्म संस्कार के बाद नहाकर साफा भी न निचोड़ा था कि नकोदरवालों नेशगुन दे दिया।** इतना ही नहीं, वह रौशन से भी उसके पिता के विषय में बताती हुई कहती है कि **तुम्हारे पिता ने भी तो पहली पत्नी की मृत्यु के दूसरे महीने ही विवाह कर लिया था ....।**

सामाजिक रीति-नीति के मूल में **मानव की हृदयहीनता और क्रूरता** का आभास होता है। रौशन के माता-पिता बच्चे अरुण की बीमारी की ओर कुछ ध्यान न देकर सियालकोट से आनेवाले बड़े व्यापारी के स्वागत और सत्कार में लग जाते हें। रौशन अपने मित्र सुरेंद्र से स्पष्ट कहता है—**यह घर इस बच्चे के लिए वीराना है। ये लोग इसका जीवन नहीं चाहते, बड़ा रिश्ता पाने के रास्ते में इसे रोड़ा समझते हैं। इसकी मौत चाहते हैं।** इतना ही नहीं, वह डॉक्टर से भी कहता है कि **''आप नहीं जानते डाक्टर साहब, ये सब पत्थर-दिल हैं।''**

मानव की क्रूरता का कारण है—धन-लिप्सा। आज बढ़ती हुई धन की महत्ता तथा इच्छा ने मनुष्य को कितना पतित बना दिया है—इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है—रौशन का पिता। रौशन के बार-बार मना करने पर भी वे अंत में शगुन ले ही लेते हैं क्योंकि एक महीने में उन्होंने अच्छी तरह पता लगा लिया है कि सियालकोट वालों के यहाँ हजारों का तो लेन-देन होता है। इसलिए वे कहते हैं—**घर आई लक्ष्मी का निरादर नहीं कर सकता।**

प्रस्तुत एकांकी में एकांकीकार ने यथार्थ का सशक्त चित्रण करते हुए मनुष्य की धन-लिप्सा पर कठोर व्यंग्य किया है। रोशन पिता पर व्यंग्य करते हुए कहता है—**हाँ, आप लक्ष्मी का स्वागत कीजिए।** (खट से दरवाजा बंद कर लेता है)।

इस प्रकार 'लक्ष्मी का स्वागत' एक सोद्देश्य रचना है।

दीर्घ उत्तरीयप्रश्न (समीक्षात्मक प्रश्न)

उत्तर—

1. एकांकी की कथानक

'लक्ष्मी का स्वागत' उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा लिखित एक मर्मस्पर्शी एवं हृदयविदारक एकांकी

है। इस एकांकी की कथावस्तु पारिवारिक होते हुए भी दूषित सामाजिक मान्यताओं और परंपराओं की ओर संकेत करती है और आज के मानव की धन-लिप्सा, स्वार्थ-भावना, हृदयहीनता तथा क्रूरता का यथार्थ रूप प्रस्तुत करती है। एकांकी की कथावस्तु इस प्रकार है—जिला जालंधर के एक मध्यम श्रेणी परिवार का सदस्य रौशन अपने पुत्र अरुण की बढ़ती बीमारी सेबहुत दु:खी है। वह बार-बार अपने बेटे की तड़फड़ाती स्थिति को देखकर घबरा उठता है। उसकी पत्नी सरलता को मरे हुए अभी एक माह ही तो हुआ है। उसके दु:खको वह अभी भूल भी न पाया था कि बच्चा डिफ्थीरिया (गले के संक्रामक रोग) से पीड़ित हो गया। उसकी हालत प्रतिक्षण गिरती जा रही है। वह अपने छोटे भाई भाषी को डॉक्टर बुलाने के लिए भेजता है। बाहर मूसलाधार वर्षा, आँधी और ओले जैसे उसके मन को भयभीत कर रहे हैं। वह अपने मित्र सुरेंद्र से कहता है—**मेरा दिल डर रहा है सुरेंद्र, कहीं अपनी माँ की तरह अरुण भी मुझे धोखा न दे जायगा?** डॉक्टर आकर बताता है कि बच्चे की हालत नाजुक है। एक इंजेक्शन दे दिया है और गले में पंद्रह-पंद्रह मिनट बाद दवाई की दो-चार बूँदें डालते रहें। इसका कोई दूसरा इलाज नहीं। बस! भगवान् पर भरोसा रखें। इसी बीच रौशन की माँ आकर बताती है कि सियालकोट के एक बड़े व्यापारी अपनी लड़की का रिश्ता लेकर आए हैं, जो रौशन को एक बार देखना चाहते हैं। वह रौशन के मित्र सुरेंद्र से भी कहती है कि रौशन को समझाकर वह नीचे ले आए। रौशन पुत्र-प्रेम में पागल-सा हो गया है। उसे इस समय कुछ भी अच्छा नहीं लगा रहा। वह माँ से क्रोध में भरकर कहता है—**उनसे कहो—जहाँ से आए हैं, वहीं चले जायँ। मैं नहीं जानता, मैं पागल हूँ या आप! शादी, शादी, शादी! क्या शादी ही दुनिया में सबकुछ है? घर में बच्चा मर रहा है और तुम्हें शादी की सूझ रही है।** इतना होने पर भी रौशन के पिता शगुन लेने को तैयार हैं। वे कहते हैं—**इस वर्षा, आँधी और तूफान में उन्हें अपने घर से निराश नहीं लौटा सकता। घर आई लक्ष्मी का निरादर नहीं कर सकता।** रौशन के पिता ने पता लगा लिया है कि सियालकोट में इनकी बड़ी भारी फर्म है और इनके यहाँ हजारों का लेन-देन है। अंत में रौशन के पिता शगुन लेकर माँ को बधाई देने आते हैं। इसी समय अरुण संसार से विदा ले रहा है। फानूस टूटकर धरती पर गिर पड़ता है। रौशन आक्रोश भरे स्वर में कहता है—**हाँ, नाचो, गाओ, खुशियाँ मनाओ!** पिता के हाथ से हुक्का गिर पड़ता है। माँ चीख मारकर धम्म से सिर-थामे बैठ जाती है। सुरेंद्र कहता है—**माँजी, जाकर दाने लाओ और दीये का प्रबंध करो।**

इस प्रकार संपूर्ण कथानक कारुणिक एवं व्यथित करनेवाला है। कथानक का प्रारंभ नाटकीय, अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण और अंत हृदयस्पर्शी है। वास्तव में एकांकीकार ने सामाजिक रीति-नीति के मूल में छिपी हुई मानव-मन की निष्ठुरता और हृदयहीनता को ही वाणी दी हे। रौशन स्पष्ट कहता है कि **दुनिया की रीति-इतनी निष्ठुर, इतनीनिर्मम, इतनी क्रूर! नहीं जानती कि जो मर जाती है, वह भी किसी की लड़की होती है, किसी के लाड़-प्यार में पत्ती होती है।**

निश्चय ही 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का कथानक अत्यधिक संवेदशील और भाव विभोगर करनेवाला है। कथानक सुगठित, सशक्त एवं प्रभावशाली बन पड़ा है, जिससे अश्कजी की एकांकी-कला का समृद्ध रूप सामने उपस्थित होता है।

2. रौशन का चरित्र-चित्रण

'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का प्रमुख पात्र है—रौशन। यह जालंधर के इलाके में रहनेवाले एक मध्यमवर्गीय परिवार का सदस्य है। इसका बच्चा अरुण डिफ्थीरिया (गले के संक्रामक रोग) से पीड़ित है। इसकी पत्नी सरला की एक महा पूर्व मृतयु हो चुकी है। इसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—**1. खिन्न एवं निराशा**—रौशन अपने पुत्र अरुण की बीमारी से अत्यधिक खिन्न एवं निराश है। बच्चे की रुकती साँस, लाल आँखें और गर्म शरीर उसे बहुत दु:खी कर रहे हैं। पत्नी की मृत्यु के बाद वह पुत्र में ही पत्नी का रूप देख रहा था। इसीलिए सुरेंद्र से कहता है—**क्या अरुण भी मुझे सरलता की तरह दगा दे जाएगा। मैं तो उसे देखकर सरलता का दु:ख भूल चुका था, लेकिन अब ...... अब ...... (हाथों से चेहरा छिपा लेता है।)**

2. भावुक—रौशन पूर्णरूपेण भावुक है। पत्नी की मृत्यु से वह पहले ही बहुत परेशान था। फिर दूसरे विवाह की बात सुनकर वह औरभी अधिक व्यथित हो उठता है। वह सुरेंद्र से कहता है—**जो मर जाती है, वह भी किसी की लड़की होती है, किसी के लाड़-प्यार में पली होती है, फिर ....।** भावुकता के कारण ही वह ईशवर में भी विशवास खो बैठता है। अरुण की बीमारी में जब डॉक्टर व सुरेंद्र; भगवान् पर भरोसा रखने के लिए कहते हैं, तब वह कहता है—**मुझे उस पर कोई विश्वास नहीं रहा। उसका काम सताए हुओं को और सताना है, जले हुओं को और जलाना है।**

3. अंतर्द्वंद्व से ग्रस्त—रौशन अन्तर्द्वंद्व से ग्रस्त है। बच्चे की क्षण-प्रतिक्षण बढ़ती बीमारी उसके दु:ख को लगातार बढ़ा रही है। वह कभी दीर्घ नि:श्वास छोड़ता है तो कभी पर्दा हटाकर डॉक्टर के आने की राह देखता है। कभी हवा की साँय-साँय और किवाड़ों की खड़खड़ाहट से समझता है कि डॉक्टर आ गया। वर्षा, आँधी, तूफान, ओले और बिजली की कड़क से वह भयभीत हो उठता है। अत: बेचैनी से कमरे में घूमता रहता है।

4. अविचल एवं दृढ़—रौशन अपने विचारों में अविचल एवं दृढ़ रहनेवाला है। माँ के बार-बार कहने पर भी वह सियालकोट के रिश्ते का समर्थन नहीं करता। वह क्रोध से परिपूर्ण हो माँ से कह देता है—उनसे कहो—**जहाँ से आए हैं, वहीं चले जायँ।** इतना ही नहीं, पिता के बुलाए जाने पर भी वह कहता है—**मेरे पास समय नहीं! × × × मैं नहीं जा सकता।**

5. परंपरागत मान्यताओं का विरोधी—रौशन को परंपरागत नीति-रीति अथवा मान्यताओं में जरा भी विश्वास नहीं है। अपने विवाह के प्रसंग में वह सुरेंद्र से कहता है—**दुनिया की रीति-इतनी निष्ठुर, इतनी निर्मम, इतनी क्रूर!** बच्चे की बीमारी के प्रसंग में उसे माँ की घुट्टी आदि में कोई रुचि नहीं। हकीम की दवा का कोई भरोसा नहीं। इसलिए वह आजकल के डॉक्टर में विश्वास रखता है।

निष्कर्ष—इस प्रकार स्पष्ट होता है कि रौशन शिक्षित होने के साथ-साथ समझदार,भावुक, दृढ़ एवं दूषित मान्यताओं का विरोधी है। अश्कजी ने मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर उसके चरित्र को सजीव एवं स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है। इसके माध्यम से वास्तव में एकांकीकार ने समाज की परंपरागत मान्यताओं के प्रति विद्रोह प्रदर्शित किया है।

3. रौशन की माँ के चरित्र की विशेषताएँ

'लक्ष्मी का स्वागत' नामक एकांकी में रौशन की माँ प्रमुख पात्रों में से एक है।वह एक वर्गगत पा९है। उसका विचार है कि रौशन की पहली पत्नी सरलता की मृत्यु के बाद शीघ्र ही दूसरा विवाह कर लेना चाहिए। इसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

1. रूढ़िवादी एवं व्यावहारिक—रौशन की माँ पूर्णत: रूढ़िवादी और व्यावहारिक है। इसीलिए वह रौशन को रामप्रताप का उदाहरण देकर समझाती भी है कि उसे भी रामप्रताप की तरह जल्दी दूसरा रिश्ता कर लेना चाहिए; क्योंकि **अभी तो चार नाते आते हैं, फिर देर हो गई तो इधर कोई मुँह भी न करेगा।** फिर उसके पिता ने भी तो पहली पत्नी की मृत्यु के दूसरे महीने ही विवाह कर लिया था।

2. दूरदर्शी—रौशन की माँ के कथनों से उसकी दूरदर्शिता भी झलकती है। वह रौशन का शीघ्र रिश्ता इसलिए भी ले लेना चाहती है कि यदि देर हो गई तो ''**लोग सौ-सौ लांछन लगाएँगे और फिर कोन ऐसा क्वाँग है ....।**'' सुरेंद्र के कहने पर कि तुम्हारा रौशन बिन-ब्याहा न रहेगा, वह स्पष्ट कहती है कि सियालकोट वाले भले आदमी हैं, लड़की भी पढ़ी-लिखी और सुशील है। इतना ही नहीं, वे बड़े व्यापारी भी हैं। उनके यहाँ हजारों का लेन-देन है। इसलिए अच्छा रिश्ता लेने में चूक नहीं करनी चाहिए।

3. ताने और व्यंग्य से परिपूर्ण—रौशन की माँ अपने समय और काम की चर्चा करके सदा ताने देने और व्यंग्य करने में तत्पर दिखाई देती है। उसे तो अपनी घुटटी और हकीम की दवा में ही विशवास है। इसलिए डॉक्टर का आना उसे जरा भी अच्छा नहीं लगता। वह सुरेंद्र से ताना मारती हुई कहती है—**हमने तो बाबा, बोलना ही छोड़ दिया है। ये डॉक्टर जो न करें, थोड़ा है। जिगर का बुखार ही तो था, दो-दो बरस भी रहता है, पर यह डॉक्टर को लाए बिना न मानना ओर उन्होंने दे दिया दिल का फतवा। आखिर मैंने भी तो पाँच-पाँच बच्चे पाले हैं। बीमारियाँ हुईं, कष्ट हुए, कभी डॉक्टरों के पीछे भागी-भागी नहीं फिरी।**

4. चिन्तित—सियालकोट से आनेवाले अतिथियों को देखकर वह प्रसन्न हो उठती है। वह रौशन को बुलाकर समझाती है कि वह इस रिश्ते की स्वीकृति दे दे, परंतु रौशन के क्रोध करने पर वह कहती है—**हम तुम्हारे ही लाभ की बात कर रहे हैं।** बच्चे की बिगड़ती स्थिति से वह कुछ चिन्तित हो उठती है। पिता से कहती है—**वह तो बात भी नहीं सुनता, जाने बचचे की तबियत बहुत खराब है।** दूसरी चिंता उसे रिश्तेवालों की भी होती है कि ''**बहू की बीमारी का पूछते होंगे**'' ''**बच्चे को पूछते होंगे!**'' अरुण की मृतयु के साथ जब फानूस टूटकर धरती पर गिर पड़ता है तब माँ भागकर दरवाजे पर जाती है और रौशन को जोर-जोर से आवाज लगाती है। अरुण की मृतयु के समाचार से वह 'मेरा लाल' कहकर और चीख माकर सिर थामे धम से बैठ जाती है।

5. चरित्र में स्वाभाविकता—माँ के चरित्र में आदि से अंत तक स्वाभाविकता विद्यमान है। घरकी बड़ी-बूढ़ियाँ जिस स्वभाव की होती हैं और जैसी बातचीत करती हैं, माँ उसका सुंदर उदाहरण है।

निष्कर्ष—इस प्रकार स्पष्ट होता है कि रौशन की माँ का चरित्र प्रभावशाली एवं परिस्थितियों के अनुरूप चित्रित किया गया है। एकांकीकार ने मनोवैज्ञानिक दृष्टि से माँ के चरित्र में

स्वाभाविकता तथा यथार्थता का समावेश किया है।

4. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी में भाषी रौशन का छोटा भाई और सुरेंद्र उसका मित्रहै। इन दोनों की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं—**भाषी की चरित्रगत विशेषताएँ**—भाषी का चरित्र एक आदर्श भाई के रूप में सामने आता है। अपने भतीजे अरुण के प्रति वह अत्यंत संवेदनशील और दु:खी हो जाता है और किसी भी प्रकार उसे बचा लेना चाहता है। सहृदयता और कर्तव्यनिष्ठा उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं। वह आज्ञाकारी और अत्यंत परिश्रमी है। वह मूसलाधार वर्षा, ओले, आँधी और तूफान में भी अरुण के लिए डॉक्टर बुलाने निकल पड़ता है। वह अत्यंत विनम्र, सुशील और मानवीयता की भावना से ओत-प्रोत है।

सुरेंद्र की चरित्रगत विशेषताएँ—सुरेंद्र एक सहृदय नवयुवक है। वह रौशन का सच्चा मित्र है। रौशन के सुख-दु:ख में वह समान रूप से सहभागी है। रौशन को दु:खी देखकर वह उसकी हिम्मत बँधाता है और अपनी पूर्ण सहानुभूति प्रदर्शित करता है। रौशन को घोर अवसाद की स्थिति में देखकर वह साए की तरह उसके साथ लगा रहता है और उसे एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ता। अरुण को गंभीर रूपसे बीमार देखकर वह चिन्तित हो उठता है और बड़ी बेचैनी से डॉक्टर की प्रतीक्षा करता है। स्पष्टवादिता उसके चरित्र का एक अन्य महत्वपूर्ण गुण है। रौशन की माँ उससे बार-बार कहती है कि वह रौशन से विवाह के लिए अपनी सहमति देने को कहे, परंतु वह अरुण की गंभीर हालत देखते हुए, स्पष्ट रूप से ऐसा कहने के लिए मना कर देता है। "मुझसे यह नहीं हो सकता, माँ जी" कहकर वह अपनी स्पष्टवादिता का परिचय देता है।

5. प्रस्तुत एकांकी की कथावस्तु जिला जालंधर के एक मध्यम श्रेणी परिवार की है। रौशन अपने पुत्र अरुण के बीमार हो जाने पर डॉक्टर के आने की प्रतीक्षा कर रहा है। अरुण की हालत प्रतिक्षण बिगड़ती जा रही है। उसे साँस लेने में परेशानी हो रही है। डॉक्टर आने पर बताता है कि अरुण को डिफ्थीरिया (गले का संक्रामक रोग, जिसमें साँस बंद हो जाने से मृत्यु हो जाती है) हो गया है। वह इंजेक्शन व दवाई देकर चला जाता है। इसी बीच रौशन की माँ आकर बताती है कि सियालेकोट के एक बड़े व्यापारी रौशन से अपनी लड़की का रिश्ता तय करने आए हैं। रौशन से अपनी लड़की का रिश्ता तय करने आए हैं। रौशन की पत्नी सरला की मृत्यु को अभी एक माह ही हुआ है। माँ कहती है—**तुम जानते हो बच्चा, दुनिया-जहान का यह नियम है। गिरे हुए मकान की नींव पर ही दूसरा मकान खड़ा होता है।** रौशन पुत्र में ही पत्नी का रूप देखकर अपने हृदय को थामे हुए था। अपने पुनर्विवाह की बात सुनकर वह क्रुद्ध हो उठता है। इतने पर भी रौशन के पिता शगुन ले लेते हैं क्योंकि उन्होंने अच्छी तरह पता लगा लिया है कि सियालकोट में इनकी बड़ी फर्म है। एक ओर अरुण संसार से विदा ले रहा है, दूसरी ओर पिता शगुन लेकर माँ को बधाई देते हैं। रौशन का मित्र सुरेंद्र कहता है—**माँ जी, जाकर दाने लाओ और दीये का प्रबंध करो।**

इस प्रकार संपूर्ण कथावस्तु मार्मिक और संवेदना से परिपूर्ण है। अश्कजी ने एकांकी का प्रारंभ पर्याप्त नाटकीय ढंग से किया है। मूसलाधार वर्षा, आँधी और ओले पृष्ठभूमि के रूप में रौशन के हृदय की व्यथा के प्रतीक हैं। एकांकी का मध्य कौतूहलपूर्ण है तो अंत कारुणिक। कथावस्तु का मुख्य भाग है—रौशन का अंतर्द्वंद्व व संघर्ष, जिसे एकांकीकार ने चरमबिंदु पर

पहुँचाया है।

क्रेस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्य आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए**
  मैं नहीं जानता, ... कहने लगा था।

उत्तर–

(i) गद्यांश में रौशन अपनी माँ पर गुस्सा कर रहा है।

(ii) रौशन की पत्नी का देहांत हो गया था।

(iii) रौशन का पुत्र बीमार था।

(iv) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक उपेन्द्रनाथ अश्क हैं।

5 सीमा-रेखा (विष्णु प्रभाकर)

(जन्म : सन् 1912 ई० - मृत्यु : सन् 2009 ई०)

बहुविकल्पीय प्रश्न

- **निम्नलिखित प्रश्नों के तीन उत्तर लिखे हुए हैं, सही उत्तर के सम्मुख सही (✓) का निशान लगाइए–**

उत्तरमाला

1. (ख) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ख)

अभिकथन-करण सम्बन्धित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

कूट आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन जनता की सरकार की गोली का शिकार हो गया?

उत्तर– (ग) केवल (iii)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—**

1. सुभाष और ____________ भीड़ में कुचले गए।

उत्तर– (क) विजय

सत्य/असत्य कथन

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए**

1. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

1. छात्र स्वयं करें। **2.** छात्र स्वयं करें।

3. 'सीमा-रेखा' एकांकी विष्णु प्रभाकर का एक राष्ट्रीय-चेतना प्रधान एकांकी है। आज भारत में जनतंत्र के वास्तविक स्वरूप में जो विसंगतियाँ उभर आयी हैं उनसे राष्ट्रीय हित की निरंतर हत्या हो रही है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में दिन-प्रतिदिन के आंदोलनों में राष्ट्रीय संपत्ति की हानि चिंता का विषय बन गयी है। एकांकीकार ने इस एकांकी में उक्त समस्या को उठाया है।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'सीमा रेखा' एकांकी के स्त्री पात्रों में सर्वोत्त्कृष्ट पात्र सविता है।

2. 'सीमा रेखा' एकांकी के लेखक का नाम विष्णु प्रभाकर है।

3. विष्णु प्रभाकर के एक एकांकी-संग्रह का नाम 'प्रकाश और परछाईं' है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'सीमा-रेखा' एकांकी का संपूर्ण कथानक 'सीमा-रेखा' शीर्षक पर ही आधारित है। एकांकी के प्रारंभ में अरविंद की और एकांकी के अंत में विजय और सुभाष की मृत्यु संबंधित घटनाक्रमों को दर्शाया गया है। एकांकी में अरविंद व सुभाष को जन-हित में अपना बलिदान देने वाले पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जबकि विजय की मृत्यु को सरकार की हानि माना जाता है। सभी मृत्यु प्राप्त पात्र एक ही परिवारके होनेसे अन्नपूर्णा रोते हुए कहती है कि मेरा तो परिवार ही चला गया, जबकि सविता कहती है कि यह देश का नहीं परिवार का अहित हुआ है। इसके विपरीत शरत कहता है कि जनता की हानि सरकार की हानि है और सरकार की हानि जनता की हानि है; क्योंकि जनता और सरकार के बीच कोई सीमा-रेखा नहीं होती है। वस्तुत: शरतचंद्र के इस कथन की सत्यता को अनुभूत कराने के उद्देश्य से ही प्रस्तुत एकांकी की रचना हुई है। दूसरे शब्दों में जनता एवं सरकार के बीच की सीमा-रेखा को मिटाने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही इस एकांकी की रचना की गई है।

अत: एकांकी का शीर्षक कथानक की दृष्टि से पूर्णत: उपयुक्त है। साथ ही यह शीर्षक संक्षिप्त, रोचक एवं कौतूहलपूर्ण भी है।

2. 'सीमा-रेखा' राष्ट्रीय भावना पर आधारित एकांकी है। एकांकी के चार प्रमुख पात्र— लक्ष्मीचंद्र (व्यापारी), शतरचन्द्र (उपमंत्री), सुभाषा (जन-नेता) और विजय (पुलिस कप्तान) स्वतंत्र भारत के चार वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन पात्रों के माध्यम से एकांकीकार ने जनतंत्र में परिलक्षित होने वाली वर्तमान विसंगतियों का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है।

एकांकीकार का प्रमुख उद्देश्य सरकार, पुलिस और नेताओं के जनता के साथ संबंधों, व्यवहारों और इनसे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण करना है। जनतंत्र में उभरी अनेक विसंगतियों की अनुभूति कराकर वह यह स्पष्ट करना चाहता है कि राष्ट्रीय हित की उपेक्षा करके किसी का भी सरकार से और सरकार को जनता से अलग करके नहीं देखा जा सकता। सरकारी तंत्र को जनहित में आत्मोत्सर्ग के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। आज जनता व सरकार के बीच की खाई बढ़ती जा रही है, जबकि सच्चे जनतंत्र में जनता और सरकार के बीच कोई भी सीमा-रेखा नहीं होती है। आज अपनी माँगों के लिए आए दिन आंदोलन होते

हैं, लाठीचार्ज होता है, गोली चलती है और अरविन्द जैसे निरीह व निर्दोष लोग उसके शिकार हो जाते हैं। जो भड़काने वाले, स्वार्थी और अपराधी चरित्र के होते हैं, वे साफ बचकर निकल जाते हैं।

3. अरविन्द, सुभाष तथा विजय की मृत्यु को अन्नपूर्णा, सविता तथा शरत भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से देखते हैं। इनकी मृत्यु अन्नपूर्णा के लिए केवल अपने परिवार की क्षति प्रतीत होती है, जबकि सविता इनकी मौत को सारे देश की क्षति मानती है। वह कहती है—**यह उनकी नहीं ,सारे देश की क्षति है ,देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग हैं।** शरत इसे जनता और सरकार दोनों की क्षति मानता है और कहता है कि समग्र रूप से यह सारे देश की ही क्षति है। उनके अनुसार जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक-रेखा नहीं होती।
4. लेखक ने सुभाषचन्द्र का बलिदान उत्तेजित भीड़ को शांत कराने के लिए कराया है।
5. आज के राजनीतिज्ञों के लिए एकांकीकार का यह सन्देश है कि जनतंत्र में जनता और सरकार के बीच कोई विभाजन-रेखा नहीं होती।
6. 'सीमा-रेखा' एकांकी विष्णु प्रभाकर का एक राष्ट्रीय-चेतना प्रधान एकांकी है। आज भारत में जनतंत्र के वास्तविक स्वरूप में जो विसंगतियाँ उभर आयी हैं उनसे राष्ट्रीय हित की निरंतर हत्या हो रही है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में दिन-प्रतिदिन के आंदोलनों में राष्ट्रीय संपत्ति की हानि चिंता का विषय बन गयी है। एकांकीकार ने इस एकांकी में उक्त समस्या को उठाया है।
7. विजय अनियन्त्रित भीड़ पर गोली इसलिए नहीं चलाता क्योंकि उसके द्वारा पहले चलवाई गई गोली से 20 लोग घायल हो जाते हैं व पाँच लोग मर जाते हैं। मरने वाले लोगों में विजय का 10 वर्षीय भतीजा अरविन्द भी होता है। सरकार द्वारा चलाई गई गोली की सभी लोग निंदा करते हैं। अरविंद की मृत्यु का प्रायश्चित्त करने के लिए विजय गोली नहीं चलाता है और वह भीड़ को समझाकर उसे शांत करना चाहता है।

दीर्घ उत्तरीयप्रश्न (समीक्षात्मक प्रश्न)

1. 'सीमा-रेखा' एकांकी की कथावस्तु (सारांश)

'सीमा-रेखा' विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत एकांकी है। लेखक का मत है कि जनतंत्र के वास्तविक स्वरूप में अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इसके कारण राष्ट्रीय हित की निरंतर हत्या हो रही है। जनता में राष्ट्रीय चेतना का अभाव है। वह आंदोलन करती है, परिणामस्वरूप राष्ट्रीय संपत्ति की अपार क्षति होती है। एकांकीकार ने इस समस्या को ही अपने एकांकी की कथावस्तु बनाया है। प्रभाकरजी ने चार भाइयों के रूप में स्वतंत्र भारत के चार वर्गों के प्रतिनिधियों के द्वंद्व को प्रस्तुत किया है। विभिन्न घटनाओं के माध्यम से इस बात को भी सिद्ध किया गया है कि जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई सीमा-रेखा नहीं होती। संक्षेप में इस एकांकी की कथावस्तु इस प्रकार है—

एकांकी का पर्दा उपमंत्री शरतचंद्र की बैठक में खुलता है। तभी उन्हें फोन द्वारा सूचना मिलती है कि पुलिस ने उग्र भीड़ पर गोली चला दी है। इस गोलीबारी में पाँच आदमी मारे गए हैं और बीस घायल हो गए हैं। घायलों को अस्पताल में पहुँचा दिया गया है। शरतचंद्र की पत्नी इस कार्य को अनुचित बताती है, परंतु शरतचंद्र के बड़े भाई लक्ष्मीचंद्र पुलिस के इस

कार्य को एकदम उचित बताते हैं। पुलिस कप्तान विजय जो कि शरत और लक्ष्मीचंद्र का भाई है, वह भी अपने कदम को उचित बताता है। वह कहता है कि जनता को कानून अपने हाथ में लेने का कोई अधिकार नहीं है।

इसी बीच सुभाष आता है। वह जन-नेता है और उक्त तीनों का भाई है। वह भी पुलिस के गोलीकांड की निंदा करता है और उपमंत्री महोदय से यह निवेदन करता है कि इस घृणित कार्य के लिए उत्तरदायी पुलिस अधिकारी को निलंबित किया जाए। सुभाष और सविता पुन: कहते हैं कि जनतंत्र का अर्थ ही जनता का राज्य है।

तभी यह सूचना मिलती है कि लक्ष्मीचंद्र का पुत्र अरविंद पुलिस की गोली का शिकार हो गया है। अब लक्ष्मीचंद्र और उसकी पत्नी इसे विजय की क्रूरता कहते हैं। भीड़ फिर से अनियंत्रित होकर आगे बढ़ती है। विजय और सुभाष उसे रोकने का प्रयास करते हैं। विजय भीड़ पर गोली चलाने से इनकार कर देता है। परिणामस्वरूप असामाजिक तत्वों के हमले में विजय और सुभाष कुचलकर मारे जाते हैं। सारा वातावरण करुणा और गंभीरता से परिपूर्ण हो जाता है। भीड़ शांत हो जाती है। तीनों के शव बैठक में लाकर रख दिए जाते हैं। शरतचंद्र तीनों को देखकर कहते हैं कि ये अरविंद और सुभाष हैं—यह जनता की क्षति है और इधर यह विजय है—यह सरकार की क्षति है। अन्नपूर्णा इसको घर की क्षति बताती है। इस पर सविता कहती है कि यह सारे देश की क्षति है, देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग हैं।

शरत उसकी बात का समर्थन करता है और कहता है कि वास्तव में यह हमारे देश की ही क्षति है। जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती।

2. 'सीमा-रेखा' के कथा-संगठन की समीक्षा

सीमा-रेखा के कथा-संगठन की समीक्षा निम्न प्रकार हैं—**1. आरंभ**—कथावस्तु का आरंभ उपमंत्री शरतचंद्र की बैठक से होता है। उन्हें फोन पर आंदोलनकारियों की बेकाबू भीड़ पर पुलिस द्वारा गोली चलाने की सूचना मिलती है। जिसमें उनके बड़े भाई का दस वर्षीय पुत्र अरविंद मारा जाता है। उन्हें 20 लोगों के घायल होने तथा 5 लोगों के मारे जाने की सूचना मिलती है।

2. स्वाभाविक विकास—अरविंद की मृत्यु व भीड़ के अनियंत्रित होने के साथ कथानक का विकास होता है। जिससे सरकार, पुलिस, विपक्ष व जनता के बीच का संघर्ष सामने आता है। पुलिस कप्तान विजय और जननेता सुभाष भीड़ को नियंत्रित करने के लिए जाते हैं।

3. चरम सीमा—विजय और सुभाष भीड़ को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। विजय भीड़ पर गोली चलाने का आदेश नहीं देता। भीड़ संतुलन खो बैठती है। वह 'अरविंद कहाँ है' चिल्लाता है। विजय भीड़ से कहता है—"मैंने अरविंद को मारा है, तुम मुझसे इसका बदला लो।" विजय और सुभाष दोनों बेकावू भीड़ में कुचलकर मारे जाते हैं। यहीं पर एकांकी की चरम सीमा है।

4. अंत—एक ही परिवार केतीन लोगों कीमृत्यु से भीड़ शांत हो जाती है। इन तीनों की मृत्यु एक घर की नहीं राष्ट्र की क्षति है। अंत में एकांकी यही संदेश देता है कि जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच विभाजक-रेखा नहीं होती।"

3. 'सीमा-रेखा' की समीक्षा कीजिए।

'सीमा-रेखा' एकांकी की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—**1. कथानक**—प्रस्तुत एकांकी राजनैतिक चेतनाप्रधान एकांकी है, जिसमें सरकार एवं जनता के पारस्परिक संबंधों पर आधारित जनतंत्रात्मक विसंगतियों को प्रकाश में लाया गया है। एकांकी की संपूर्ण कथा सुगठित एवं जीवंत है। कथानक को स्वाभाविक रूप से धीरे-ीरे आगे बढ़ता हुआ दिखाया गया है।

2. पात्र-योजनाओं एवं चरित्र-चित्रण—एकांकी में लक्ष्मीचंद्र, शरतचंद्र, सुभाषचंद्र और विजय पुरुष पात्र हैं। लक्ष्मीचंद्र व्यापारी है, शरतचंद्र उपमंत्री, सुभाषचंद्र नेता तथा विजय पुलिस कप्तान है। सत्री पात्रों के अंतर्गत तारा, अन्नपूर्णा, सविता और उमा का चरित्र प्रस्तुत किया गया है। सुभाष इस एकांकी का प्रमुख पुरुष पात्र और सविता प्रमुख सत्री पात्र है। सुभाष को एक जन-नेता के रूप में दर्शाया गया है। वह प्रजातंत्र का समर्थक, साम्यवादी चिारधारा का पोषक, लोकप्रिय नेता, कर्तव्यनिष्ठ, स्पष्टवादी और एक महान् बलिदानीके रूप में चित्रित किया गया है। सवि जन-नेता सुभाष की पत्नी है। वह भी सुभाष के समान हीजन-सेविका, धैर्यवान, निर्भीक एवं उदार हृदयवाली नारी है। एकांकी में इन सभी का चरित्र-चित्रण अत्यंत कुशलता से किया गया है। पात्र-योजना सजीव एवं यथार्थ धरातल पर आधारित है।

3. उद्देश्य—एकांकीकार का प्रमुख उद्देश्य जनतंत्र में उभरी विसंगतियों को स्पष्ट करना है। वह यह अनुभूत कराना चाहता है कि जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई सीमा-रेखा नहीं होती, जबकि आज सरकार और जनता के बीच की खाई निरंतर बढ़ती जा रही है।

4. देशकाल एवं वातावरण—इस एकांकी में आज के जनतंत्र का यथार्थ चित्रण करते हुए देशकाल संबंधी आवश्यकताओं को पूर्णरूप से ध्यान में रखा गया है। वातावरण की दृष्टि से भी इस एकांकी को उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है। वातावरण के यथार्थ चित्रण की दृष्टि से सुभाष का यह कथन देखिए—**जब तक सरकार और उनके अधिकारी ठीक आचरण नहीं करेंगे तब तक जनता प्रदर्शन करती ही रहेगी, कानून हाथ में लेती ही रहेगी। भाई साहब, इस नौकरशाही ने, शासन की उस भूख ने आपको जनता से दूर कर दिया है।**

5. अभिनेयता—'सीमा-रेखा' की रचना मुख्यत: एक रेडियो-रूपक के रूप में की गई है। साथ ही इसे मंच का सफलतापूर्वक अभिनीत भी किया जा सकता है।

6. भाषा-शैली—एकांकी की भाषा सरल, सरस, व्यावहारिक एवं वातावरण के अनुकूल है। आवश्यकतानुसार भावात्मक, विचारात्मक, संवादात्मक आदि विभिन्न शैलियों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया है। उर्दू के शब्दों के प्रयोग से भाषा में स्वाभाविकता एवं गतिशीलता उत्पन्न हो गई है—**इनका मतलब केवल अपने से नहीं है। भीड़ इनका ही नुकसान करके न रह जाती। वह सारे शहर को बर्बाद कर देती है।**

7. कथोपकथन—प्रस्तुत एकांकी के संवाद सरल, संक्षिप्त, रोचक, सरस एवं कथा के अनुरूप हैं। संवादों के माध्यम से एकांकी ने पात्रों की भावनाओं एवं विचारधाराओं को व्यक्त करने में विशेष सफलता प्राप्त की है।

4. सविता का चरित्र-चित्रण

सविता 'सीमा-रेखा' एकांकी की मुख्य सत्री पात्र है और वही उस एकांकी की सर्वोत्कृष्ट

पात्र भी है। सविता का चरित्र-चित्रण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है—**1. जन-सेवा में रुचि**—सविता अपने पति सुभाष के समान ही जन-सेवा में अपनी रुचि प्रदर्शित करती है। वह लोक-कल्याणकारी सिद्धांतों के लिए अपना बलिदान देने हेतु भी तत्पर रहती है। वह प्रजातंत्र में प्रत्येक शासक को जनता का सेवक मानते हुए शरतचंद्र कहती है—**आप भूल गए हैं कि जन-राज में शासक कोई नहीं होता। सब सेवक होते हैं।**

2. उदार-हृदया नारी—सविता करुण, परोपकार एवं त्याग के भावों से ओत-प्रोत नारी है। वह सभी केप्रति समानता का भावरखती है। अहंकार अथवा स्वार्थ जैसे दुर्गुणों का उसमें पूर्ण अभाव परिलक्षित होता है।

3. विवेकशील—वह एक विचारशील स्त्री है और किसी भी बात के प्रत्येक पक्ष पर गहनता से विचार करने में सक्षम है। सत्य बात कहते समय वह किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करती और निर्भीकतापूर्वक अपनी बात कहती है। वह जानती है कि नाते में शरतचंद्र उससे बड़े हैं, फिर भी वह नि:संकोच उनसे अपनी बात कहती है—**इस नाते-रिश्ते से ऊपर भी तो हम खुद हैं। हम स्वतंत्र भारत की प्रजा हैं, हम एक स्वतंत्र देश के नागरिक हैं।**

4. स्पष्टवादी एवं निर्भीक—सविता एक निर्भीक एवं स्पष्ट बात कहनेवाली सत्री है। वह प्रत्येक स्थिति का निर्भीकतापूर्वक सामना करने के लिए तैयार रहती है। गोली चलने की घटना की जानकारी मिलने पर भी वह अपना धैर्य और साहस नहीं खेती और कहती है—**पुलिस क्या करेगी? चलिए मैं चलती हूँ।**

5. धैर्यवान् एवं राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत—सविता एक धैर्यशील नारी है। वह अपनेदेश से अथाह प्रेम करती है और देश के प्रति अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वाह करने में विशवास रखती है। अपने पति की मृत्यु पर वह धीरज बनाए रखती है और लेशमात्र भी विचलित हुए बिना अपने राष्ट्रीय दायित्वों पर विचार करती है।

5. सुभाष की चाारित्रिक विशेषताएँ

प्रजातांत्रिक शासन के अंतर्गत सरकार के साथ ही विरोधी दलों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हुआ करती है। विरोधी नेता ही वास्तव में जनता ही मौन आवाज को शासन के कानों तक पहुँचाते हैं। सुभाष भी इस एकांकी में विरोधी दल का नेता है। उसके चरित्र की कतिपय विशेषताएँ इस प्रकार हैं—**1. प्रजातंत्र का समर्थक**—सुभाष जन-नेता है और जनता के दु:ख-दर्द से प्रभावित होता है। वह जनतंत्र में विशवास रखता है और अपने भाई शरतचंद्र से, जो कि शासन में मंत्री हैं, स्पष्ट रूप से कहता हैं—**मैं जनता का प्रतिनिधि हूँ। में माननीय उपमंत्री श्री शरतचंद्र को बताने आया हूँ कि उनके एक अधिकारी के निहत्थी जनता पर गोली चलाकर जो बर्बर काम किया है, उसकी जाँच करवानी होगी।**

सुभाष इस बात को स्वीकार करता है कि प्रजातंत्र में शासन सेवा-भाव से चलता है, गोलियों के बल पर नहीं।

2. लोकप्रिय—सुभाष एक लोकप्रिय नेता केरूप में चित्रित किया गया है। जनता उसका चाहती है और वह जनता कोचाहता है। इसी लोकप्रियता के कारण वह अनियंत्रित भीड़ पर काबू पा लेता है। जब शरत पूछता है कि तुम जनता के नेता हो, तुमने कौन-सा तीर मार लिया

तो सुभाष उनकी बात का उत्तरदेता हुआ कहता है—**मैंने क्या किया है, यह मेरे मुँह से सुनकर क्या करेंगे, पर इतना कहे देता हूँ कि जनता संयत न रहती तो कप्तान विजयचंद्र यहाँ बैठे दिखाई न देते।**

3. साम्यवादी विचारधारा का पोषक—सुभाष साम्यवादी विचारधारा का पोषक है, फिर भी वह स्वयं को कम्युनिस्ट कहलाना पसंद नहीं करता। वह अपने पूँजीपति भाई को भी खरी-खोटी सुनाता है और कहता है—**दादाजी आप ने बोलें, आप व्यापारी हैं। आपका सिद्धांत आपका स्वार्थ है............।**

4. कर्तव्यनिष्ठ—सुभाष एक कर्तव्यनिष्ठ जन-नेता है। उसका कर्तव्य है—जनता की आवाज को शासन के बहरे कानों तक पहुँचाना और वह अंत तक अपने इस कार्य में लगा रहात है। उसकी कर्तव्यनिष्ठता इन पंक्तियों में साकार हो उठी है—**कर्तवय का पालन करते हुए मरना यदि आदर्शवाद है तो मैं कहूँगा कि विश्व के प्रत्येक नागरिक को ऐसा ही आदर्शवादी होना चाहिए।**

5. स्पष्टवादी—सुभाष निर्भीक नवयुवक है। वह अपनी बात निर्भीकता और स्पष्टता के साथ कहता है। इसके लिए उसे अपने प्राणों का भी मोह नहीं है। स्पष्टवादी होने के कारण वह अपने बड़े भाई को भी खरी-खरी सुनाता है—**जब तक सरकार ओर उसके अधिकारी ठीक आचरण नहीं करेंगे तब तक जनता प्रश्न करती ही रहेगी, कानून हाथ में लेती रहेगी।**

6. महान् बलिदानी—एकांकी के अंत में सुभाष जनता के लिए स्वयं को बलिदान कर देता है। उसका यह बलिदान व्यर्थ नहीं जाता। अनियंत्रित जनता भी मौन साधकर खड़ी हो जाती है। इस प्रकार वह मरकर भी जनता को कर्तव्यनिष्ठा का पाठ पढ़ा जाता है।

इस प्रकार 'सीमा-रेखा' एकांकी में सुभाष को एक सच्चे जन-नेता के रूप में चित्रित किया गया है। एकांकीकार को इस प्रयास में पूर्ण सफलता मिली है।

6. शरतचन्द्र का चरित्र-चित्रण

शरतचंद्र प्रस्तुत एकांकी का महत्वपूर्ण पात्र है। एकांकी का अधिकांश भाग उसकी बैठक में ही घटित होता है। वह वर्तमान सरकार में मंत्री-वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो प्राय: जनता से दूर हो जाते हैं। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—**1. राजनीतिज्ञ**—शरतचंद्र वर्तमान शासन में मंत्री है, इसीलिए उसके राजनैतिक चरित्र को उभारने का पूरा प्रयास हुआ है। टेलीफोन पर जब उसे दंगे-फसाद और गोलीकांड की सूचना मिलती है तो वह पुरस्लि के कार्य का समथ्रन करता है और कहता है किजनता को आंदोलन करने का अधिकार नहीं है। जब अन्नपूर्णा कहती है कि **'अपने राज में भी गोली चलती है?'** तो शरत उसका उत्तर इन शब्दों में देता है—**''अपना राज समझता कौन है? जब तक अपना राज नहीं समझेंगे तब तक गोली चलेगी ही?''**

2. व्यस्त व्यक्ति—प्रशासन में मंत्री होने के नाते शरतचंद्र अत्यधिक व्यस्त दिखाई देते हैं। उन्हें दंगे-फसाद, परिवारजनों के व्यवसाय, पारिवारिक असंतोष, जनता का विक्षोभ तथा सरकारी बैठकें परेशान और व्यस्त किए रहती हैं।

3. सरकार का समर्थक—मंत्री सरकार का अंग होता है और उसे सरकार के कार्यों और

नीतियों का समर्थन करना पड़ता है। शरत भी सहकारी मंत्री; अत: वह भी सरकार की नीतियों और उसके कार्यों का समर्थन करता है। यहाँ तक कि उसनेपुलिस के गोलीकांड को भी अपना नैतिक समर्थन प्रदान किया है।

4. जनता से दूर—सुभाष और शरत का संवाद इस बात का परिचायक है कि सरकार में मंत्री होते हुए भी शरत जनता से दूर है। उसके इस चरित्र पर प्रकाश डालते हुए सुभाष कहता है—**आप डरते हैं। यदि न डरते तो घर में छिपकर बैठे रहने के बजाय जनता के पास जाते। तब यह नौबत न आती।**

5. संयत और गंभीर—एक कुशल राजनीतिज्ञ होने के नाते शरतचंद्र को एक गंभीर और संयत व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। यद्यपि अपने भाइयों द्वारा उलाहना दिए जाने पर वह अंदर-ही-अंदर तिलमिला जाता है, फिर भी बाहर से अपने को संयत किए रहता है। अपने दो भाइयों और एक भतीजे के शव को देखकर भी वह गंभीर ही बना रहता है।

एकांकी के अंत में शासन के समर्थक शरत यह बात स्वीकार कर लेते हैं कि जनता और शासन के बीच में कोई विभाजक-रेखा नहीं होती; क्योंकि वर्तमान शासन जनता के प्रतिनिधियों द्वारा ही चलाया जाता है; अत: जनता ही शासक है।

इस प्रकार श्री विष्णु प्रभाकर ने 'सीमा-रेखा' एकांकी में शरतचंद्र के चरित्र की रेखाओं को बड़ी कुशलता से रंग दिया है। उनका चरित्र प्रारंभ से अंत तक प्रभावी बना रहता है।

काव्य सौन्दर्य के तत्त्व

बहुविकल्पीय प्रश्न

उत्तरमाला

(क) रस

1. (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (क) **6.** (ख) **7.** (क) **8.** (ख) **9.** (घ) **10.** (क)

(ख) छन्द

1. (क) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ग) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (ख) **10.** (क)

(ग) अलंकार

1. (क) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (घ) **9.** (क) **10.** (क)

हिन्दी व्याकरण तथा शब्द-रचना (आन्तरिक मूल्यांकन)

बहुविकल्पीय प्रश्न

उत्तरमाला

1. (क) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (ख) **11.** (घ) **12.** (क) **13.** (घ) **14.** (क) **15.** (क)।

संस्कृत व्याकरण

बहुविकल्पीय प्रश्न

उत्तरमाला

1. (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (क) **10.** (ग) **11.** (क) **12.** (क) **13.** (ख)

Note

Note